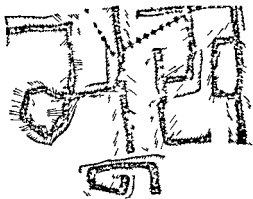




राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली



अमृतलाल नागर

मूल्य सात रुपये (7 00)



राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, से पट्टी वार प्रकाशित 1970

© अमृतलाल नागर

रूपाभ प्रिंटर्स, शाहदरा दिल्ली, में मुद्रित

BHOOKH (Novel) by Amrit Lal Nagar

---

## भूमिका

आज म इक्कत्तर वष पहले मन १८६६ १६०० ई० यानी सबन् १६५६ वि० म रास्थान के अकाल ने भी जनमानस का उभी तरह स झिझोडा या जसे सन '४३ के बग दुर्भिक्ष ने । इस दुर्भिक्ष ने जिम प्रकार अनेक साहित्यिका और कनाकारा की मजनात्मक प्रतिभा का प्रभावित किया था उसी प्रकार राजस्थान का दुर्भिक्ष भी साहित्य पर अपनी गहरी छाप छोड गया है । उम समय भूख की खपटा से जनन हुए मारवाडिया क दल के दल एक आर गुजरात और हूमरी ओर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के नगरा म पहुचे थे । कई बरस पहले गुजराती साहित्य के एर वरष्य कवि शामद स्व० दामातरदास सुशालताम बाटादकर की एक पुरानी कविता पनी थी जो कश्य रस से ओत प्रीत थी । मूगे जस्तियपजर म पापी पट का गडग घसाए पयराइ आला बाल रिरियाने हुए मारवाडी का बडा ही मार्मिक चित्र उस कविता म अंकित हुआ है । मन '४७ म जागर म अपने छाट नाना स्व० रामकृष्ण जी देव न मुझे उक्त अकाल स मबधिन एक लोक-कविता भी मुनने का मिली थी जिमकी कुठ पकिया इस समय याद जा रही है—

'आयो री जमाईने धम्यया जीव कहा से लाऊ शक्कर धीव—  
छपनिया अकाल फेर मती आदजा म्हारे मारवाड म ।'

सन '४३ के बग दुर्भिक्ष म मनुष्य की चरम दयनीयता जीर परम दानवता के दृश्य मैन कवकत म अपनी आया स देग थ । सियातन्ह

(घ)

स्टेशन के प्लेटफाम कलकत्ते की सड़क व फुटपाथ एसी बीभत्स कम्पास भरे थे कि दस दगडर आठा पहर जी उमडता था। कलकत्ताना को उन दृश्या से घिर जान क कारण अपना शहर काटता था। इननी बडी भूख क घातावरण म लोग स मुह म कीर तन नही बनता था। बहुत से एस भी थे जिनके ऊपर उन दृश्या का उतना ही असर होता था जितना चिकन घड पर पानी का हाता है। दुनिया दुरगी मकारा सराय कही खूब खूबा कही हाय हाय। यही हाल था।

धनाभाव म अथवा अपने स शक्तिशाली क द्वारा मखे रहने पर विवश किए जान और स्वच्छा स व्रत लेकर निराहार रहने म बात एक होन पर भी जमीन जासमान का अतर होता है। सन ४१ म एक बार अर्थाभाव के कारण मुच बबई म चार दिना तक भूख की ज्वाला सहनी पडी थी। सन ४५ क अत म कलकत्ते से वापस लौटने पर मैं स्वेच्छा से चार दिना तक भूसा रहा था। पहल अनुभव म बडी घुटन बबसी जीर विद्रोह भावना पाई दूसरे अनुभव म सहनशक्ति बडी जीर चेतना गहराई। मरा मन उन दिना कलकत्त क दृश्या स इतना भरा हुआ था कि अपनी इच्छा स जारापित भूख को जनमन की कर्णा म लय करके सहज विसार देता था। इस उपयास के आरम्भिक नोटस मैंने अपने उसी उपवास क दौर म लिखे थे। लेकिन यहा पर अपना एक और अनुभव लिखे बिना बात अधरी ही रह जाएगी। सन् ४४ म अपन फिल्मी घघे स एक महीन की छुट्टी लकर बबई स आगरे आने पर जब मैं इस कथानक के दृश्य बाधन लगा ता गुरू के जाठ-दस दिना तक मुझे भूख ने बेहत्त मताया। लिखत लिखते बीच म कुछ खाने को मचल मचल उठता था। बाद मे घट मनोविकार स्वय ही दूर भी कर लिया।

सन ४३ का वग दुर्भिक्ष दबी प्रकोप न हाकर मनुष्य के स्वाथ का एक अत्यंत जषय रूप प्रश्नन और उसना स्वाभाविक परिणाम था। भारत क एक प्रसिद्ध अथशास्त्री प्रा० महालनवीस ने उा त्तिना सहो आकं प्रम्नुन करके यह मिद्ध कर दिखनाया था कि उस साल बगान म धान की

उपज के हिमाचल स अगान पन्न की ताइ मभावना ही नही थी । द्वितीय महायुद्ध म गता फमाण हुए तत्कालीन ब्रिटिश सरकार और निहित स्वार्थो भरे अफसर-वफारिया के पडयत्र के कारण ही हजारों लाख भूला तडप-नडपकर मर गण, सबडा गृहिणिया बेश्याए बनाई जात के लिए और मकडो वच्चे गुलामो की तरह दो मुट्टी चावल क मोन दिव गण । महायुद्ध की पृष्ठभूमि मे तस्वीर या बनती थी कि एग शक्तिशाली पुष्प द्वार निबल के मुह का निगारा छीन और खुद गाकर तीसर शक्ति शाला न मारने या मर जाने की टाकर लड़ रहा था । उसके दमो हट म रमभव मभव हा गया । उही जमभत्र सभव इस उपयास म अकित ह । उत्तर प्रदेश के एक बडे कम्पनिस्ट नेता, मरे मिता रमेश सिन्हा ने मुनसिद्ध फागो चित्रकार धीरुत चित्ताप्रसाद म बबई म मरी भेंट करा दी । उहान अनालप्रस्त क्षेत्र म जाकर बई सौ चित्र खींचे थे । चिना बाबून मुस उन चित्रो के पीछे की घटनाए भी सुनाई थी । श्रीगुन्, जैनुन आब्दीन के बनाए रेखाचित्र भी देखने की मिले थे । मातृगीय वरणाके उन मार्मिक चित्रों मे सौ प्रेरणा पाई थी बन इनका कृतता ह ।

इस उपयाम का पहला मस्करण सन् '४६ म प्रकाशित हुआ था । तब म अब तक कइ विद्वान जालोचना और उपयाम माहित्य पर शाघ प्रबध प्रस्तुत करनेवान अनेक छात्रा ने इस उपयाम को अपनी अपनी कसा टिया पर कमकर इमे जीवन का सही दस्तावेज बनलाया है । कसने का कष्ट उठाने के लिए उन सबके प्रति कृतपता अनुभव करता ह ।

इस सम्करण म उपयाम का पुराना नाम बदल देने के लिए भी सफाई देना आवश्यक है । प्रकाशक को लगा कि नाम बदल देना चाहिए । उनकी इस बात से सहमत हाने के लिए मेरे पास भी एक कारण था । लगभग गान सवा सान पहले एक सज्जन, जिहाने इस उपयाम का नाम नर ही सुना था, मुगमे पूछन तमे—क्या यह पौराणिक उपयाम है । उनक इस प्रश्न से लगा कि जानाम २६ वष पहले अकाल की स्मति ताड़ी

(घ)

होन के कारण पाठकों के मन में अपना स्पष्ट अर्थ बोध करा सकने में समर्थ था वह अब अकाल से मरघटित जन-स्मृति के पुरानी पड़ जान के कारण शायद दुरुह हो गया है। जिन भावा शोधकर्ता छात्रों का नाम परिवर्तन के कारण कुछ अडचन महसूस हागी उनसे अभी ही क्षमा माग लता हूँ। बाकी पाठकों के लिए नाम परिवर्तन से कोई समस्या उत्पन्न होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

श्रीक लखनऊ ३

—समतलाल नागर

६ जनवरी १९७० ई

## कथा-प्रवेश

बर्मा पर जापानिया का कब्जा हो गया। हिंदु  
स्तान पर महायुद्ध की परछाई पडने लगी।

हर शब्द के दिल से ब्रिटिश सरकार का  
विश्वास उठ गया। 'कुछ होने वाला है—बुछ  
होगा।'—हर एक के दिल में यही डर ममा गया।

यथाशक्ति लोगों ने चावल जमा करना शुरू  
किया। रइसा न बरसो के खान का इतजाम कर  
लिया। मध्यवर्गीय नौकरपशा गृहस्थो ने अपनी  
शक्ति के अनुसार दो तीन महीने से लगाकर छ महीने  
तक की पूराक जमा कर ली। बेतिहर मजदूर भूत  
से लडने लगा।

व्यापारियों ने लोगो को कम चावल देना गृह  
किया।

हिन्दू और मुगलमान व्यापारी धीरे धीरे बग,  
अपनी अपनी कौमों को थोडा बहुत चावल देत रह।  
बेतिहर मजदूर भीख मागन पर मजबूर हुआ।  
शुरूम भीख दे देते थे, फिर अपनी ही कमी का



रोना रोने लग । दया दान की भावना मरने लगी ।

भूख ने मेहनत मजदूरी करनेवाले ईमानदार  
इंसाना का खूस्वार लुटेरा बना दिया ।

भूख ने सतियो का वश्या बनने पर मजबूर किया ।

मौत का डर बन्दे लगा ।

मौत का डर आदमिया को परेशान करने लगा,  
पागल बनाने लगा ।

और एक दिन चिर जाशकित चिर प्रत्याशित  
मृत्यु भय का दूर करने के समस्त साधना के रहते हुए  
भी भूखे मानव को अपना आहार बनाने लगी ।

तब आशावादी मानव कठोर होकर मृत्यु से लड़ने  
लगा । उपास का प्रारम्भ यही से हाता है ।

मोहनपुर ऐंग्नी बगानी स्कूल के बरामदे में पैर रखते ही हडमास्टर पाबू गोपाल मुखर्जी को ध्यान हुआ था कि हीरू बाग्नी का लडका गणेश लगानार दस दिन तक मनरियाग्रस्त शरीर की सारी शक्ति के साथ भूख में लडकर, आज सबेरे चल गया।

पाबू ने अपने दिन पर एक गहरा धक्का महसूस किया। उस लगा जैसे कि आज उसका स्कूल मर गया। चार दिनों के अटूट उपवास और काल भविष्य की चिन्ता भी जा आघात उसे न पट्टा सकी थी, वह सहमा गंगा के मरने की खबर से उसे पट्टा था। लगा, जैसे मौत बहुत निकट में उस अपना परिश्रम देने के लिए आई है।

अकाल की न हन हान वाली समस्या 'क्या होगा प्रश्न के साथ, सारी मानसिक और शारीरिक शक्ति छीनकर, घोर अंधकार के 'कल' में जब उसे फँस देती था तब वह मोहवश अपने जाने जाने कल को टीक टीक देख न पाता था। लेकिन आज गणेश की मृत्यु ने सहमा उसकी और उसके परिवार के आने वाले कल की तरकीर उसके सामने लाकर खड़ी कर दी थी।

आँकों के आगे अंधेरा छा गया। सहमा पाबू का किसी सहारे की जरूरत महसूस हुई। उसका हाथ अपने आप खम्भ की तरफ बढ़ गया

और उसके सहारे, गिरते शरीर को टेक दकर उसन अपने को सभाल लिया ।

घम्भे के सहारे टिरा हुआ वह गणेश की सिफ गणेश की बात सोचने लगा । गणेश बाग्नी उसका पहला शिष्य था ।

पाचू की आखा व सामन वे सब तिन एक बलक दिखाकर तेजी स जापस म धुल मिल गए । फिर एक एक बात उस याद आने लगी । इण्टर मीजिएट पास करने व बाद एन ओर सहकारी बजीफा लेकर आगे पढने का प्रलाभन और दूसरी ओर मा का पत्र । जीवन म पहली बार उसे अपना कतव्य सोचने क लिए गम्भीर होना पडा था ।

पाचू अपनी वतमान परिस्थितियों को बीत दिना की बातें सोचकर बहलाने लगा— 'अगर मैं बराबर पढता ही जाता ! कितना अच्छा करियर था मरा । प्रिंसिपल जाडन मुझ शर्तिया स्कालरशिप दिला देते लेकिन उसस क्या आज की परिस्थिति म कुछ सुधार हो जाता ?

पाचू के विचारा को सहसा एक झटका लगा । अपने कल्पित स्वग को ठाकर से तीन-तरह करने के लिए उसन फिर सोचा— मैं होता इंग्लण्ड म और यहा घर भर सब खतम हो चुका होना । आई० सी० एस० होकर ही मुझे कौन सुख मिलता ।

पाचू को अपना आई० सी० एस० न होना अच्छा लगा । इनन सिविल सर्वेण्ट होकर आए और अभागे दश के सर पर डासन के बूट धाडकर चले गए । भारतीय नागरिका के नौकर भारतीय नागरिको के हुकराम बनकर अपनी असलियत और अपना कतव्य भूल गए ।

पाचू सोचने लगा— वह भी इसी तरह का एक नागरिक नौकर होता । एस० डी० जो० होकर वह भी शायद इसी तरह भुखमरा का निरीक्षण करने जाता । दयाल जमीन्दार का आतिथ्य ग्रहण कर स्वाचि हुस्वी के जार पर नवाबी प्लटें हजम करता । मोनाद बनिया इसी तरह उसक अहलवार के सामने घीमें निपोर निपोरकर अहलवार की जेब को फुना दता । और थोडी ही दर बाद अहलवार की जेब की अधिकाश सूजन

बुद उसकी—एम० डी० ओ० पाचू गापाच मुगर्जी भाई० सी० एम० की—जेब का उडनी बीमारी की तरह छू जाती ।

पाचू को अपने गाव म एस० डी० ओ० की 'विशिट' याद जाने लगी । दयाल जमीनार के यहा जिन तरह जोर जा कुछ उसन दखा था एम० सी० जो० के रूप म उसी तरह अपने लिए भी वह उसकी कल्पना करने लगा ।

सहसा पाचू का मन घुणा से भर उठा । ध्यान दूमरी तरफ करने के लिए उसने स्कूल के बरामद के सामन फैल हुए मोहनपुर गाव की तरफ से अपनी खोई हुई आंखें फिरा लीं खम्भे का सहारा धीरे धीरे हाथ हटाकर छोटा और कनाम रूम की तरफ चला । लीवाल पर स्कूल म लगाए जाने के लिए भेजे गए सरकारी पास्टर बियके थ । कनास के दरवाजे के पास ही पहला पोस्टर था—'अन्न की पदावार बढ़ाओ ।'

घणा की भावना का एक शोका उमे फिर लगा । झुल्लाहट म उसके मह म अपने आप ही निकल पडा—“किसके लिए ?”

फिर उसके हाथ न चटककर पोस्टर को चीर टाला ।

पाचू ने जस बदला ल लिया हो । उसकी उत्तेजना कम हुई । तभी उसके मन मे एक आशका भी उठ खरी हुई—किसीने उसे पोस्टर पाडते कहीं देख न लिया हो ।'

पाचू ने झटपट मुत्ककर सामने की ओर देखा । आमपास मे कोई नहीं था । दूर, मोनाई बनिय की दुकान पर जीवित नर कवाला की भीड़ हो टूलनड मचा रही थी । शायद किसीकी निगाह उसपर नहीं पडी ।

पाचू न एक नि प्रवास छाडी और कमर का ताला खोलन लगा । वह सोच रहा था—'अगर किसीन देख लिया हो नहीं नहीं मान लो, अगर बाई देख लेना ? मोनाई की दुकान पर पुलिसमन ता खडा ही है, अगर उसका नजर पड गई हो तब ता बडी आपन होगी । वह आया हाथ पमारंगा तही तो फिर थाने म रिपोट ! दूगा कहा से साने को ? देने को ही होना तो आज चार दिन से घर म म एकदशी न होनी

पर वह क्या समझे ? गाव म तो सब यही समझत है कि पाचू मास्टर न न जाने कहा-कहा की जमा गाडकर रत ली है ।’

पाचू ने मुडकर फिर देखा, कही कोर आता नही रहा है । फिर पटपट कनास म म घुस गया जम बह सुरक्षित जगह म पट्टच जाना चाहता हो ।

कमरा स्तंभ । डेस्को और बेंचा की तम्बी लम्बी चार बतारें डेस्का पर स्याही व तमाम दाग और गू की पत कुर्मी मज दीवाला पर टंगे हुए बगाल, हिन्दुस्तान और योरप के तीन नक्शे, कोने म छोटी सी मज पर रखा हुआ ग्लोब, बनक बोड पर लिखी हुई अंग्रेजी की एक कविता ।

पाचू का ध्यान उधर गया । बाट पर भी घूल जम रही थी । आज हपने भर से स्कूल का चपरासी नही जाया था । जब से वह गाव छाडकर गया है तब से किसीने स्कूल की सफाई नहीं की, उसन भी नही । एक दिन था जब वह हर शनिवार की शाम को छट्टी से पहले लडका के साथ सुद मार स्कूल की सफाई करता था ।

पाचू के हाठा पर एक फीका सी लमी की रेखा खिच गई । उन दिन की चहन-पहल वह जोश उसका और उसके स्कूल का वह एश्वय

मोठे स्वप्न सी इस तेज याद का पाचू का चार दिन का भूखा शरीर और चिंताक्षत मन सह न सका । बनी मुश्किल से अपने शरीर को मभान कर कुर्मी पर अपने थापको जसे छोडकर वह बठ गया । दोनो बाह मेज पर टिकाकर उमन सिर झुका लिया ।

तो क्या स्कूल बन्द हो जाएगा ?’

यह प्रश्न इतना साफ साफ और कुछ इस तरह स्पष्ट होकर पाचू के मन म आज उठ आया था माना पहले इस प्रश्न स उसका कभी वास्ता ही नही पडा हो । असल वान यह थी कि अब स पहले इस प्रश्न के उठने की सम्भावना होने पर पाचू अपन मन को बलान म सफल हो जाता था किन्तु आज गणेश की मृत्यु न उमकी आखा क सामने से भुलावे का पर्दा

हटा दिया था।

‘तो फिर ?’

यह एक ऐसा प्रश्न था जो स्कूल बन्द हो जाने की कल्पना के बाद पाचू के मन में फास की तरह चुभता था और अंधेरे में भूत की तरह उसकी सारी शक्तियाँ को स्तम्भित कर देता था।

ग्यारह आदमियों के परिवार का यह स्कूल ही तो आगरा था। तुनसी दस साल पार लगनी। मा के मिर से बिना का दास उतर जाता। लेकिन जान कहाँ स आ गया यह अकाल। क्या हाँ गया, कुछ समय में नहीं आता—‘दुनियाँ जाएगी किधर ? क्या यह अकाल कभी खत्म न होगा ? क्या यही प्रलय है ?’

पाचू के दिमाग की प्रलय के घनघोर वादला न डक लिया। उसकी बन्द जाखो के जाग घना अधरा-सा छा गया। उसे लगा जैसे उस घन अंधेरे में वह रही बहुत ऊँचे पर से नीचे की तरफ, तजों के साथ खींच कर ले जाया जा रहा हो।

पाचू के लिए यह एक नया अनुभव था—क्या मैं मर रहा हूँ ? लेकिन मरना किम तरह ? गणेश की मूर्तों के साथ साथ उसका इनना पुराना मलेरिया भी नो था। मैं तो खाली भखा ही हूँ—और मा-बा सब लाग भी बस भूख ही हैं। फिर चार दिन की भय भी काई भूख है ? हिन्दू का घर हमारा यहा चातुर्मास का उपवास जाना है। और वम तो आज ग्राम तक खानल मिल ही जाएगा। कुछ नहीं, डर की काई बात नहीं है।’

एक बार अपनी सारी शक्तियाँ का बटारकर पाचू ने मज पर स अपना सिर उठाया। फिर उसी जोश में कुर्मी से उठकर क्वास रुम में टहनने लगा। दो चक्कर पूरे किए तीसरा चक्कर नगान ही एक डेस्क पर हाथ टेककर खड़ा हो गया।

अंधेरे में नीचे का तरफ विचत चले जाने के कल्पनामिथित अनुभूत न पाचू के मन का जस कील दिया था। मृत्यु के समान उस स्तम्भना घघन स अपनी की मुक्त करने के लिए ही जस उमने उठकर टहनना

पर वह क्या समझे ? गाव म तो सब यही समझत ;  
न जाने कहा कहा की जमा गाकर रख ली है ।'

पाचू न मुडकर फिर देखा, वही कोई था  
घटपट ब्लास रुम म घुस गया जम वह सुरक्षित  
चाहता ही ।

कमरा स्तब्ध । डेस्को ओर बेंचा की नम-  
डेस्का पर स्याही के तमाम दाग और गन् की पा  
पर टगे हुए बगाल हिन्दुस्तान और योरप के ती  
सी मेज पर रखा हुआ ग्लोब, ब्लक बोर्ड पर नि  
बविता ।

पाचू का ध्यान उधर गया । बोर्ड पर भी ।  
हपन भर स स्कूल का चपरासी नहीं आया था ।  
गया है तब स किसीन स्कूल की सफाई नही -  
शिन था जब वह हर शनिवार की शाम को छ  
पुद सारे स्कूल की सफाई करता था ।

पाचू के हाठा पर एक फीकी भी रसी न  
की चहल पहल यह जोश उसका जोर उस  
भीठे स्वप्न सी इस तेज याद का पाच -  
जोर चिन्ताक्षत मन सह न सका । बडी मुर्  
कर कुर्सी पर अपन आपको जस छोकर  
पर टिकाकर उसन सिर झुका लिया ।

तो क्या स्कूल बन्द हो जाएगा ?'

यन् प्रश्न इतना साफ साफ और कृ-  
मन म आज उठ आया था माना पहले -  
ही नही पडा हो । असल वान यह थी नि  
की सम्भावना हाने पर पाचू अपन मन व  
नकिन आज गणेश की मृत्यु न उमका २

पर एक नम्बी लकीर और उसके नीचे राई तीन हाथ की नम्बी मूछें, उसी गोल के अन्दर ममाई हुई।

एक छोटे गोले की एक बहुत बड़ गोले से मित्रान के लिए गले से बाबा आत्म के पुल का काम लिया गया है। मासूम पड़ता है, कच्ची से गला मन मुताबिक बटन सका इसलिए बाप के धुन्ड से फिनिशिंग टच दिया गया है। बड़ गोल में से जो मुसल्लम हाथ और दो पर निकालन में किस मशकत से काम किया गया है इसकी गवाही कच्ची और कटाई का रंग देती है। पैरो के नीचे जमीन है और उसपर अंग्रेजी अक्षरों में लिखा हुआ है— 'दिम इज न कानाई मास्टर स्टटूवीर।'

पाचू देखने ही हस पड़ा—“लडके भी बस शैतान होत है।”

मन बहल गया। शायद और कुछ हा, यह देखन के लिए दरवाजे जग बाहर खींची। अंग्रेजी किताब का फटा हुआ एक वक् पाचू न देखा— 'सिसन नम्बर टक्कीफोर, हम्प्टी डम्प्टी पढ़न क्या है, कम्बहन किताबों से कुरती लडते हैं।'

पाचू ने उसी हेडमास्टराना तिनतिनाहट और बदले हुए तपरा में पत्रके दूसरी तरफ देखा। कौने पर दा जुदा जुदा लिखावट में कुछ लिखा हुआ था। पहले बगला में लिखा था 'खुट्टी', और उसके नीचे अंग्रेजी में दम्नधती लिखावट से डी० आर०। दूसरी लिखावट, उसके ठीक नीचे ही अंग्रेजी में 'ग्राटेड, बबलम खुद तीन हफ, जी० के० सी०। नीचे ठाठ से लकीर मारकर तारीख तक लिख दी गई थी—२७ १ ४३।

“जी० के० सी०, ये कौन बिगडदिल है?” पाचू अपने शिष्या में छुट्टा घाट करनेवाले जी० के० सी० महाशय की पहचानन की कोशिश करन लगा—‘गोशाल, दच्छा! अपना वो काकी नम्बर आठ का भतीजा।’

पडोस के रिषने से रिटापड सब पोस्टमास्टर रामतनु बाबू पाचू के बाबा हुए। रामतनु बाबू की निस्मत का गुरू सही जोरना का नाशत करने की आशय थी, लेकिन य काकी नम्बर आठ मालूम पड़ता है बाबा को ही पचाकर मारेंगी। इस अकाल में भी अमर रहन की चुनौती देती



लिया। उस पक्ष ता यह कुछ बाना नहीं कियाव सेकर घना गया। पार दिन बाद आया कियाव सामन पटक की और जनाव ता जा गुरु किया ता पहले पज के नौमा-नोना पुनम्टोंग म सगाकर प्रग का भूमें मक ज्या की त्या पुनमङ्गी की तरह जवान स दानिन हूने लगी। तात पटे म सारी कियाव सतम—धान म पुननक म अन्न म छपी हूई प्रकाश म जय प्रकाशता की सूचा भी, गुल सारीफा म माय, गुना डानी मजि-अजि-के दाम तक। तब पानी पिया।

बानाई मिस्त्री की यह सनक दूर-दूर तक बहायत बन गई थी। पाचू ता जब स्कूल शुरू किया ता सारा गांव खिलाफ। इधर स्कून भा धरावर घालू रखना और बीच-बीच म प्रिमियल जॉडन स मन् और गनाहू मागन के लिए शहर भी जाना। बड़ी मुसीबत हो गई थी। घर म मिम्मा बघान वाली एक अबली मा थी, जब कह तो मटी—‘पाचू घबराता मन बटा मुनीबत म ही तो नारायण परीक्षा सेन हैं। उन्हें जब उवारना हाना है तो आप आते हैं।’

एक दिन बानाई मिस्त्री आया आत ही बडे रोव म माथ महन लगा—‘तुम्हारे साहस को देखकर मुने तुमपर थडा हा गई है। तुम हमारे गाव के नेपोलियन बोनापाट हो !’

फिर कुछ सोचकर बानाई बिलबुल नजदीक आ गया और धीरे धीरे कहन लगा—‘मेरे पास कोई जमा तो है नही भाई। हा जो बमाई है उस हैसियत से जो कहो तुम्हारे स्कूल की सेवा कह।

पाचू को उस समय पसे स अधिक सहयागी की चाह थी। बानाई छाती भरकर बोला— जहा तक मैं पढा हू सब लडका को पढा दूगा। तुम बफिकर रहो। शहर जा के स्कूल के लिए मदद मागा। यहा मैं सभाल लूगा। बाकी एक बार ऐसा स्कूल बनाओ मास्टर कि लाट साहब को भी यहा आना पड। तब इन गाववाला को मानूम हागा कि विद्या पत्न म कोई जात छोटी बडी नही है।

यह बहके उसने पाचू के कंधे पर हाथ स एक धपकी दी और बस बाबू

राइट अवाउट टन ! पाचू को एक सेकड़ लगा, जैसे मा के नारायण ही दिमाग से निकलकर कानाई के रूप में सामने दिखाई दिए हा । चित्त की सिमकनी हुई अवस्था में उसे कानाई का यह अयाचित, अप्रत्याशित सहारा मिला था ।

प्रसन्नता मिश्रित आश्चर्य से मन्व्य पाचू अभी कानाई के बारे में सोच ही रहा था कि कानाई फिर स कमर में लीटकर बोला—'उस वक्त यानन में मुझमें कुछ भ्रूज हो गई थी, पाचू बाबू । मैंने तुम्हें भूल से गाव का नपाविषन बोलापाट बह दिया । दरअसल मैं तुम्हें शेक्सपियर कहना चाहता था । तुम भी शेक्सपियर से कम विद्वान नहीं हो, पाचू बाबू । उसने 'पोयट्री' निकलकर लोगों को पढाया और तुम स्कूल खोलकर पढाते हो ।'

फिर ज़रा एक सेकड़ निश्चय करते बोला—“बस यही ठीक है । तुम शेक्सपियर हा, नैपाविषन वालापाट तो लडता था ।”

‘ह ह ह !’

ज़ोर ज़ोर से हसन की अपनी ही आवाज़ को सुनकर पाचू को होश आया । दीमका भरी दराज़ सामने आई । अकाल, इस अकाल न ही कानाई मास्टर को छुड़ाया । गाविंद मास्टर भी माच के पहल हफ्त में चले गए—'बारह रुपये में अब पामाता नहीं, पाचू बाबू । कोई दयाल जमींदार से पूछे, सास के बिना भी आदमी जी सकता है जो बैल खोलकर ले गए । इससे तो भीस मागकर जीना भला । चार पेटों की आग से तो बचा रहूंगा ।

चले गए, गोविंद मास्टर भी चले गए—सब चल गए—गणेश भी चला गया । ये स्कूल भी आज बन्द हो जाएगा । इस बंद करना ही पड़ेगा । अब तो यहा भी जी नहीं लगता । फिर ?

इस 'फिर' की खोज में पाचू ने एक बार इधर उधर, अपने चारों ओर, ख़ाई हुई-सी आँखा से देखा ।

जी न लगने की समस्या पाचू के दिमाग में घुन बनकर समा गई

धी। घर में जी नहीं लगता। गाव जरा बाटने का दोड़ना है। कहीं जाए ? स्कूल में एक लड़का न जाने पर भी पाचू नियमित रूप में रोज स्कूल आता है, दिन भर बटा रहता है और आई गई, नई-गुरानी बाता से अपना जी बहलाया करता है। लेकिन आज गणेश की मृत्यु न स्कूल का विलिडिंग से उसका मन एकदम उचाट कर लिया है किंगी तरह भी मन नहीं लगता। अब वह अपना जी कस बहलाए—महा जाए ?

पाचू का मन इस वकन चिड़चिड़ा हा रहा था।

बाहर निकालकर डस्क पर रखी हुई दीमका भगी दगाज से पाचू के हाथ अपने आप ही खेलन लग। इससे उसका ध्यान बग। उमन अपने हाथों को उस दीमकावाली दराज पर महमूस किया। उमने चौंकर फौरन अपने हाथ हटा लिए। उस अनायास ही एसा महमूस हांन लगा जैसे दीमको वाली दराज पर इतनी देर तक हाथ रखकर उसने कोई बहुत बड़ी गलती की है।

“दीमका की यह दराज ! मतलब यह कि दीमका की फीज की फीज डटी है। वह यहा से नहीं हटगी। और साहब क्या हटे ? लकड़ी कागज बगरा उसकी सुराक है। और आदमी न उसपर भी अपना अधिकार कर लिया है—वह भी खाने के लिए नहीं। ओपफोह इतना अच्यय ! भला सोचिए हजारो साल से जब से आदमी ने लकड़ी पर अपना अधिकार कर उसका प्रयोग करना सीखा दीमका की जाति में अकाल पड रहा होगा ! ओपफोह इस तरह दीमकें हजारो साल से अकाल की यातनाएं भुगत रही है ? बेचारी !

पाचू की आंखों में आसू छलछला उठे। अकाल की सारी यातनाओं को सहते हुए, अपने को मजबूत बनाने के लिए वह बार बार आसुआ का दमन करता आया है। लेकिन अगर आज हजारो साल से अकाल पीडित दीमक-जाति की दुदशा की कल्पना से उसकी आंखों में आसू दिखाई पड गए तो इसका यह अर्थ नहीं कि उसका धर्म घुटने टेक रहा है। नहीं, उसका धर्म भग नहीं हो सकता। उसका धर्म अडिम है।

और, उसने अपने अटिंग घंघ को और भी अधिक अडिग बनाने के लिए दीमको के अकाल पर आमू आ जाने की बात के बारे में, अंग्रेजी में, बड़ चढ़कर सोचना शुरू किया—

“जस्ट इमेजिन, देयर चिल्डरन—सम डाटग, नेपयूज, नीस—ज, नीम—यस, यम, नीस बालसो। नीस मस्ट वी दयर, मूड वी देयर, आट टू वी ”

पाचू ने एकाएक अपने में एक हल्की-सी चेतना का अनुभव किया। उसे लगा कि वह विचारों में बहक रहा है। पर यह चेतना उसे अच्छी न लगी। मन को भुलावा देकर बहलाने का और कोई साधन उसके पास नहीं था। अपन 'विचारों का जवदन्ती 'यायपूबक' सत्य सिद्ध करने के लिए जो कुछ भी वह सोच रहा है वह सब निहायत ही समझदारी के साथ सोच रहा है। विधि का विधान ही ऐसा है। हमने दीमको को भूखा मारा और दीमक हम "रिमम्बर दिम आन्वेज माई ब्वाय, देयर इज लिमिटेड फॉर एवरीथिंग तुम अभी दीमका पर चाहे जितना बर्ताचार कर लो, लेकिन दीमको की सहनशक्ति का भी अन्त होता है। तो ? लेकिन वह तुम्हारा बिगाड़ ही क्या सकती है ?”

पाचू ने एकदम से अपने दोना हाथा को बहुत पास लाकर देखना शुरू किया। गौर से देखा। इतनी देर से दीमकावाली दर्राज पर हाथ रखे हुए थे, शायद एक आघ चढ़ गई हो।

“तब फिर ? काटोगी ? जरूर काटेगी। अरे, जब लकड़ी और बागज को काट सकती है तो आदमी के मांस में क्या रखा है—मुलायम गोश्त और पीने को आदमी का गम-नाम खून। अगर कहीं दीमका की जवान को चस्का लग गया। फिर तो क्या होगा ? अरे, अभी ह्पन में ६ मौतें हुई हैं, तब छ सौ, छ हजार, लाख, दस लाख, करोड़, दस करोड़, अरब, पचा, शंख महाशंख—इसके माने सब गिनती छलम। तब तो बस प्रलय—एकदम प्रलय।”

पाचू अपने दिल को बेलगाम बहलाए जा रहा था—“दीमका द्वारा

पृथ्वी का जल ? ऐसा तो बही ”

तभी पट से ध्यान आया—“अरे अपन वाल्मीकि ! जरूट इमजिन, आदमी इतना बेहोश कि शरीर पर दीमक चढ़ने की खबर न हुई। नान सेस दरअसल इसका अर्थ है कि इस वार आदमी पर दीमका की विजय होगी—वाल्मीकि विजय। ठीक तो है, पहली प्रलय म मनु बचे और उनकी सतान—मानव, निकम्मी सिद्ध हुई। इस वार प्रलय के बाद वाल्मीकि की सताना से नया ग्लोब बसगा। वाल्मीकि के राम राज्य की अमर कल्पना। प्रलय के बाद—हा मट प्रलय ता है हा। दीमकों की दीमक प्रलय !”

पाचू एकाएक चौंकर उठा। उसे अपन दिमाग की इस हालत पर बड़ी शम आने लगी। अब इतना भी अपन दिमाग पर अधिकार न रहा। उस अपने दिमाग की कमजोरी दूर करने के लिए दवा खान की ज़रूरत एकाएक महसूस होने लगी। वह कौन सी दवा जाए ? उसकी दराज म एस्प्रा की टिकिया है। जब सर्दिया म एक दिन सिर दुखा था तब यही ता मगा के लाई थी और बाकी यही दराज म रख दी थी। ज़रूर होगी।

पाचू कुछ सभला। लेकिन मज की दराज मे भी अगर कही दीमके छि वाट नानसेस फिर बहका। बुरी बात। यू काण्ड अफोड टु टु दिस मिस्टर पी० मुखर्जी, तुम्हारे ऊपर इतनी बड़ी जिम्मेदारी है, सारे घर की जिम्मेदारी है।

तबिन कहा ? मैं सतक तो हू। मैंने अभी तक कोद गरन बात नहीं की। मैं बिलकुल ठीक हू। तब फिर मह दवा किसलिए एस्प्रा की टिकिया

दम बकन तक पाचू अपनी मेज के पास पहुँचकर कुर्सी पर बैठन वाला था कि यह विचार जात हो यह एकदम गभीर हा गया। उसके हाथ मज पर टिक गए, और वह बस लकवर लक खटा सोचन लगा—‘गाऊ कि न गाऊ ?’

पूरी चतना के साथ निष्पक्ष भाव से, उसने अपने स्वास्थ्य की मन

ही मन परीक्षा लेनी शुरू की—“कहीं दद है ? हाथ परा म, पेट म, सिर म ?”

बगर जबान चलाए उसने पूरी चेतना के साथ अपने आपसे सवाल जबाब करना शुरु किया और महसूस किया कि एंडी से लेकर चौटी तक रग रग म, पोर पोर म, दद समाया हुआ है। इसके बाद उसने महसूस किया कि उसकी आँखें जल रही हैं, और उसका बदन भी गम है। तब तो दवा जरूर ही खानी चाहिए। हा, सास भी गम है।

पाचू ने अपन हाथ को नाक के पास ले जाकर सास को महसूस किया—“इमके माने मे कि मुझे बुखार है मलेरिया।”

मलेरिया का खयाल आते ही उसे तुरत ध्यान आया कि वह भूखा भी है। डर ने उसे फिर घेरना शुरू किया। उसे फिर स चक्कर आने लगा, मज पर टिक्के हुए हाथ कापने लगे, पर एकदम मुन्न पड गए—उनम जैसे दम न रहा हो।

अपना सारा मानसिक बल शरीर को देकर वह फिर सीधा तनकर खडा हो गया—“मैं बिलकुल ठीक हू। मुझे कोई बीमारी नहीं है। जरा भी बुपार नहीं है। ये सब मेरी खामखयाली है। मैं बडा बक्बूफ हू जो यह सब घुरापात सोचता हू। मेरी समझ मे नहीं जा रहा है कि आखिर मैं यह सब मोचता ही क्या हू ? नहीं, नहीं, अब ऐसे वेहूदे विचार अपन मन म आन ही न दूंगा।”

अपने को जगाकर पाचू दिल का बहलाने के लिए फीरन ही काम की सोचन लगा। उसने एक बार चारा तरफ नजर डाली—ऊब प्लेटफाम पर मेज और कुर्सी रखी थी। कुर्सी पर बंटे हुए पाचू की आँखें, अपनी दृष्टि के क्षेत्र को बहुत सकुचित कर, अपनी बाइ तरफ से दाहिनी ओर तक अघ-चद्रावार म श्रमज प्लेटफाम के सहारे घूमन लगी। आँखों को फोकस करते हुए पहले फ्रेम मे उसने प्लेटफाम के नीचे सीमेण्ट बालू के पश को खरा दूर तक देखा। सीमेण्ट के चौके जडे हुए हैं, यह शुबहा दिलाने के लिए ही शायद इमारत बनानेवाले कारीगरो ने पश भर मे ये चौकोर

सकीरें काटी हागी ।

प्लेटफाम के चारों ओर जड़ चद्रावार म अपनी जायें घुमान हुए दृष्टि सीमा पहले फ्रेम म ही, मेज का कोना आ जाता था । गानाद्ध म यात्रा करती हुई आखें मेज की सतह को छूती हुई उसके ऊपर स गुजरी—तीन चार डेस्का के सामने दिखाई पडनवाल हिस्त पर स हाती हुई । पाचू सोचने लगा, समझो बलास म सब सटके मौजूद हैं । जिस हूँ तब पाचू की आखें प्लेटफाम के भास पास उस गोलाद्ध म घूमी थी उस हूँ म मारा दर्जा लडको से भरा होने पर भी व उसके लिए जदृश्य ही रहत थ ।

पाचू की गदन इन डस्का को देख घूमन घूमते जरा थम गई । जांघा की पुतलिया को उसी सीमा के अदर वापस लौटावर उसन आया स डेस्को को महसूस किया और पुतलिया फिरन के साथ ही गदन फिर उसी सीमा म घूमती और नमश आनवाले कुछ प्यादा उजान का दखती प्लेटफाम के नीचे जरा दूर तक सीमेण्ट बालू के चौके बटे हुए पश पर टिक गई । सूर्य का प्रकाश दरजाजे से कमरे म मद्धिम होकर आ रहा था । सीलन की हल्की सी नमी लिए हुए सीमेण्ट-बालू के चौके बटे हुए पश पर वह मद्धिम रोगनी उसे बडी हल्की और शीतल मालूम हुई । उसने अपने आपम सतोष का बोध किया और इससे उसको आनंद हुआ ।

गोलाद्ध म नजर दौडाने की क्रिया के इस एक सेकंड म पाचू ने अपने आपम एक तरह की उमग का अनुभव किया । और उसी उमग के सहारे उसने अपने को यह सोचने दिया कि तमाम बेंचा पर लडके बठे हैं । उसने उनु सबा को कुछ काम दे रखा है—गाय पर लेख लिखने के लिए आना दी है और वह स्वयं मेज पर झुका हुआ—रजिस्टर पर—फीस का हिसाब जोड रहा है ।

उसने अपना फाउण्टेनपेन बमीज की जेब से निकालकर मेज पर रखा । फिर ताला खोलकर दरवाज बाहर खींची । चाक स्टिका का आधा भरा हुआ डिब्बा ब्लक बोड साफ करने के लिए 'डस्टर' बाजल-बाली की एक दवात और पीछे की तरफ बंधे हुए कागजा का एक बडल था ।

‘चाक चुराने का शौक लडकों में कितना होता है ! जिस दिन दराज जरा देर के लिए भी खुली रह गई कि चार पाच चाकें गायब !”

पाचू अपने मन को गुदगुदान लगा—“मैं अभी जरा देर के लिए दराज खुली छोड़कर बाहर चला जाऊँ लेकिन नडके कहा है ?”

पाचू इस बात अपने को धोखा न दे सका—सटमा उसके मुह से मच निकल ही पडा।

सूने क्लास रूम को देखने के लिए, फामी के तख्ते पर कदम रखे हुए गद्दी की दृढ़ता के साथ, पाचू ने अपना सिर ऊंचा उठाया।

कमरा स्तब्ध। डेस्का और बेंचा की लम्बी-लम्बी चार सूनी कतारें, डेस्का पर स्याही के तमाम दाग और उनपर गद का पत। अंदर आते ही मामनवाली डेस्क पर उसने ताना खोलकर रखा था। पीतल के उस बड ताले पर पाचू का ध्यान एक सेकंड के लिए अटका। ताला इस जगह कभी भी नहीं रखा जाता। दीवाला पर टंगे हुए बगाल, हिंदुस्तान और योरप के तीन नक्शे, कान में छोटी-भी भेज पर रखा हुआ एक ग्लोब। ध्वजवाड पर जपेजी की एक कविता और उसपर घूल जमा हुई। पाचू का रस घुटने लगा। तीव्र पीडा तीर की तरह सनसनाती हुई उसके दिल में समा गई।

सूनापन, अपनी असमयता और निष्क्रियता का अनुभव कर उसका हृदय फटने सा लगा।

दराज खुली हुई थी। सामने ही चाक स्टिका में आधा भरा हुआ डिब्बा रखा था। आज इसका क्या उपयोग है ? आज इस चुरानेवाला कौन है ? आज उसके दर्जे में अगर लडके घटे होते तो वह कहता—‘लो, यह सब लूट ले जाओ।’

काश कि जपन स्कूल का सब कुछ लूटाकर इन सूनी डेस्का को एक बार भी लडका से भरी हुई अगर आज वह देग सकता !

अपनी असमयता पर उसे बड़ी जोर से धुंथलाहट आ गई। चाँक-स्टिका से आधे भरे हुए डिब्बे पर छूत्ते ही उसकी नजर गई और उसने



उसके घर में भी अकाल पड़ रहा है। किसीने भात की एक कनी भी मुह में नहीं लगाई। उसकी दस बरस की छोटी बहन कनक ने भी अपने छोटे छोटे भतीजा—दानू और परेश के पक्ष में अपना हिस्सा त्याग दिया है। सिर्फ दूहा दाना को दा चार बार खिलाकर चावल का माड पिला दिया जाता है। लेकिन वह उनका पेट भरने के लिए काफी नहीं। सारा दिन 'भात भात' चिल्लाते ही बीतता है। उसकी आठ महीने की नही-सी भतीजी चुन्नी भूख के मारे रोते राते अधमरी-भी हा गई है। मा का दूध पीती है, जब उस ही खान को नहीं मिलता तो वह बेचारी दूध कड़ा से पाएगी? चावल का माड उस भी थोड़ा बहुत चटा दिया जाता है। मा, बीदीदी, उसकी पत्नी मगला तुलसी कनक बाबा दादा और वह खुद भी तो आज चार दिन से बस पानी पी पीकर ही जी रहे हैं।

लेकिन आज तो शाम को दयाल जमींदार के यहां से चावल मिल ही जाएगा। पर इस तरह कितने दिन चलेगा? आवक कब तक बचेगी? फिर आवक किसकी बचेगी और किससे बचेगी? घर घर में यही ठंडे चूल्हे हैं। क्या कुनीन क्या अकुनीन—एक मोनाई और दयाल जमींदार तथा उनका जैसे दस पाच को छोड़कर अब किसका यहां चूल्हा में बराबर आग ज्वालाई दनी है? सारा गांव इसी तरह भूल से तड़प-तड़पकर जान देगा। पावती काकी मरी हारान भरा तिनकीड़ी मरा गणेश मरा। गांव में बराबर मौतें होती जा रही हैं। और इसी तरह एक दिन उसके घर के साथ भी एक एक करके

'ओह ! —पाचू के भावे पर सिबुडनें पड़ गई। चट्टा बिजलाहट से भर उठा। उसका जी बुरी तरह से विचलित हो गया।

साथ में चाहने पर भी बार बार अपने विचारों में मृत्यु तक पहुंच जान की जाम टुलना पर पाचू की आत्मा में आसू बरबग छलछला उठे। इन आसूग्रा पर वह और भी खीझ उठा—वह यह सब वानें सोच ही क्यों रण है? क्या उम टुनिया में और कोई काम नहीं है?

घोनी के छार से आगे पाटनर पाचू ने गुनी दरवाजे की तरफ देखा।

पीछे की तरफ कागजा का बडल बंधा रखा था। उसन पट उसे बाहर निकालकर उसपर बधी हुई मुतली खोल डाली। उममे चिट्ठिया पत्रिया, डिग्रिया के सर्टिफिकेट वगरा, बंधे रखे थे। एक वार जब उसके दादा ने अपने जोम म आकर उमका एक सर्टिफिकेट फाड डाला था, तव स वह अपने निजी कागज-पत्र स्कूल की दराज म ही रखता है।

पांचू ने कागजा को उलटना शुरू किया। प्राफेसर वनर्जी का दिया हुआ सर्टिफिकेट, जॉडन साहब का सर्टिफिकेट, जाडन साहब की चिट्ठी, फिर जाडन साहब की दूसरी चिट्ठी, राय भुवन मोहन सरकार की चिट्ठी गणेश की लिखावट

सुचारु रूप से बगला लिखना-पढना सीख लेने के बाद गणेश एक वार कुछ दिना के लिए अपने काका के पास ढाका गया था। वहा से उसने यह चिट्ठी लिखी थी— 'श्रीचरण कमलेषु '

अपने दिल के अंदर ही अंदर उसने यह जाना कि गणेश के इस पत्र पर जरा-सा ध्यान देते ही फौरन मृत्यु उसके विचारा म आ जाएगी। और जब तक मृत्यु स्पष्ट रूप से उसके दिमाग म आए आए, उसे अपना ध्यान किसी और तरफ '

अरे हा बह तो पिछले महीने की फीस का हिसाब देखन बैठा था न।

उसने अपने आगे रखे हुए कागजो को बायें हाथ से पटककर एक बार सरका दिया। कागज ऊचे नीचे होकर जरा बिखर गए।

फौरन ही दूसरी दराज का ताला खोलकर उसम रखे हुए दोनो रजिस्टर उसने बाहर निकाल लिए। रजिस्टर बाहर निकालत समय बीच से कोई चीज खिसककर प्लेटफाम पर जा पडी। पांचू न उस देखा। उसकी आँखें खुशी स चमक उठी—एस्प्रो का पकेट।

फौरन ही रजिस्टरो को मेज पर पटक और फुर्ती स झुककर उसन एस्प्रो का पकेट उठा लिया। लिफाफे क अंदर दो टिकिया रखी थीं।

'खा लू ? यानी बीमार नहीं जी बीमार नहीं, या ही सिर म दद है। सच ? हा हा, इतने डग डुडग विचार सिर म समाए हुए हैं तो

क्या दद भी न होगा । ज़रूर दद हो रहा है ।”

कागज़ के अंदर चमकती दो सफेद टिकिया की पाचू ने भूखी आंखा से देखा । फिर कागज़ फाड़कर उसने दोनों टिकिया हाथ में रखी और इससे पहले कि कोई नया तक दिमाग में उठे, पाचू ने अपने से चुराकर उह झट से मुह में रख लिया ।

‘निगल जाऊ ?—नहीं, चबाना चाहिए । ज़रा देखें तो इसका स्वाद कैसा होता है ।’

कट कट, दोनों टिकिया दांतों में बोल गई । जैसे कोई खाने की बजनी चीज़ हो, इस तरह उसने उन दोनों टिकिया को चबाया और फिर फिर चबाना चाहा । लेकिन वे तो धूलने लगी । दाता की अक्षमता को समझकर पाचू ने धुली हुई टिकिया के बारीक कणों को जबान से तालू में रगड़ रगड़ कर जीभ भी घुसाना शुरू किया । मुह में कमला लुआव बढ़ने लगा । पाचू उह घुसाता ही रहा । दोनों गालों में फूलन की हद तक वह लार को घोंट कर बगाना ही रहा—यहां तक कि उसके जबड़े दद करने लगे । तब वह मजबूरन उस पी गया ।

कमला ही सही आज चार दिन के बाद पाचू की पीकी जबान का किसी तरह का स्वाद तो मिला था । इससे उस एक तरह का सतोप हुआ ।

पानी पीना चाहिए । वह उठा और बाहर आया ।

मुह का वह कमलापन अब धीरे धीरे पीकेपन में बदल चुका था । यह पाचू को असरान लगा । उसकी भूख एकदम तज़ हो गई । मिर की शानसनाहट बग्न गई । स्कूल के पीछे ही पोगर थी । पाचू कदम बग्नकर वहां पन्चा । दाता हाथा की अजुनी बाघकर उसमें पानी पिया । पाना पानी पट में लगा । उसमें फिर पिया तीसरी बार चौथी बार, पाचवीं, छठी बार—गानवी बार उसमें अजुनी भरकर फिर छाग दी ।

उमका पट तन गया था । उसमें अब पाना पीन का ताव नह्य थी । लेकिन पानी से अभा मन न भर्य था । उसमें अपना मुह धोया मिर पर छाग मार, बुल्ला किया और घानी में छार से मुह और हाथ पाछने हुए

गठ गन्ना हुआ। उमन जानबूझकर जपान में एक ताड़गी महसूम करा  
शुरू किया और मोचना शुरू किया कि उसका पट भरा हुआ है, वह अन्न  
मजे में है।

पेट भरा हान की झलपना उसके विचारा का अपने परिवार की ओर  
सोच ल गई।

उन सबाने भी पानी पी लिया होगा। वे सब भी मजे में होंगे। यम,  
जब दर ही कितनी है। दिन के बनने ही

पाचू न घूप से अदाज लगाया, ढाई बजे रह हाम। एक घटा और  
यही बठना चाहिए साढ़े तीन बजे चलना ठीक होगा। लेकिन रोड़ तो  
साढ़े चार पाच तक जाना है। दयान बाबू अपने मन में साचगे कि आज  
चावल लना है इसलिए जल्दी चला आया। ऊह, सोचगे ता सोच लें।  
कह दूंगा कि कोई काम तो था नहीं, इसलिए मोचा, साओ जल्दी ही पढा  
आऊ। और जब जल्दा ही जाना है तो अभी क्या न चना जाए? नहीं  
सभी जाना ठीक नहीं। तब ता साफ धुल जाएगा कि चावल के लिए इतनी  
जल्दी की गई है। मगर यह कोई झूठ बात थोड़ी है। हा, आबरू का सबान  
खरूर है। आबरू चनी गई तो लाल का आदमी धाक का।

पाचू के मन में प्रश्न उठा—'तो क्या चावल मागने से आबरू नहा  
गई? नहीं, इसमें आबरू का कोई सबाल नहीं उठता। तनपवाह न ली,  
चावल ले लिया। लेकिन चावल ता मोनाई की दूकान से भी '

आठ दिन पहले जब न्याय जमींदार से उसन वेतन के रूपया के बजाय  
चावल मागा था और दयाल ने उस देना स्वीकार कर लिया था तभी से  
उस आशा उध गई थी कि दयाल बाबू वेतन के रूपया से चावल न लौंगे।  
वह मोनाई तो है नहीं, जमींदार ह इतन बडे, और फिर उस इतना मानते  
है। वह उनके लडके का गुरू है उह अघवार पन्कर सुनाता है, साहवा  
के लिए उनकी चिटिठया अंग्रेजी में लिख देना है। इन सबका कभी एक  
पैसा आज तर उसने नहीं लिया। कोई किसी तरह से नमजता है, कोई  
किसी तरह से। लेकिन आठ रूपये में मन दा मन तो उठाने देन से रह।

जरे, क्यादा स क्यादा पाच सर के दस सर दे देंगे, बग ! क्या भी द सकते है । हा भाई, जमीदार जो ठहरे । भला राजा के घर मातिया का काल ? वो चाह तो उठाकर मन दो मन दे द । उनके लिए कौन बगी बात है ? घर, इतना तो नही, अगर पन्द्रह सर भी द लिया तो ठाठ स महीना बीत जाण्गा । आध सर म रोज घर भर निबट लिया करेगा । न सही भर पेट, जरे नहोने स तो कान मामा ही भले । फिर क्या क्या जाए ? जमाना कसा जा लगा है ! जब तक लडाई चलेगी ये अकाल नही जाने का । लडाई की वजह से ही तो यह अकाल है ।

पाचू ने अखवार म दूसरे प्रान्त स यहा के लिए अनाज भेजे जान की खबरें पनी थी । गाव गाव म यूनियन वोडे छोले जा रहे हैं जा मिट्टी क मोल चावल बेचेंगे । यह सुनकर दयाल भी हसे थे मोनाइ भी हसा था । और उन दोनो की हसी म सोने के बगाल के मरघट हो जाने की सूचना छिपी थी, उनके साथ इतने दिनों के अपने सबध की वजह मे पाचू यह भी समझता था । फिर भी अगर उसे और उसके परिवार को दयाल जमीदार से रोज आध सेर चावल मिलता रहे तो वह अपनी सारी सहृदयता को बगाल के साथ ही मरने दे सकता है ।

पाचू सोच रहा था— 'आठ रुपये म तो वह हर महीन पन्द्रह सेर देने से रहे । हा अगर वह तनख्वाह बढ़ा दें तो अलबत्ता गुजारा हो सकता है । अच्छी बात है, तो आज मैं दयाल बाबू से तनख्वाह बटाने की बात कटूंगा । मान जाएंगे ? जरे मैं उनका कोई दूसरा काम कर दिया करूंगा । कलकीं ही सही, किसी तरह मरा घर तो पेट की ज्वाला म जलने से बचे । वह तो मैं उनकी सारी जमीदारी म खाडू लगाया करू । जान है तो जहान है । पेट भरे पर जावर भी भली लगती है । हे भगवान् बस ऐसा ही कर दा । ह नाथ, मेरी सुन लो । किसी तरह दयाल बाबू मान जाए वम ऐसा बुड कर दो !

प्राथना स हृदय गदगद हो उठा । पाचू इस वकन तनख्वाह वलास रुम क दरवाजे के सामन पटूच चुका था । फट हुए पोस्टर पर नजर गई । पाचू ने

सट से पनटकर मोनाई की दूकान की तरफ देखा—पुलिसमैन ? नहीं जा रहा ! पाचू एक निसास छोड़कर कमरे में दाखिल हुआ । और कमरे की तमाम चीजाँ से जबरन निगाह बचाकर वह कुर्सी पर बठ गया ।

वह अब सूनी डेस्को की बात नहीं मोचेगा, दीमका की भी नहीं । भाड में जाए स्कूल, उसे अब करना ही क्या है ? वस, दयाल जमींदार के यहाँ उसे काम मिल जाए ।

दराज के अन्दर रख दान के लिए उसने दाना रजिस्ट्रार को उठाया । उनके नीचे उसके कागज बिखरे हुए पड़े थे । छटने ही उसकी नजर पडी—मा की लिखावट । ढाई बरस पहले जिस पत्र ने उसे आई० सी० एस० होने संशोक दिया था उस पत्र के ऊपर का कुछ हिस्सा दूसरे कागजात में दबा हुआ था । जहाँ से दिखाई देता था, पाचू उस पत्र को वही से पढ़न लगा—

“ कल रात तुलमी के ब्याह के लिए बनवाए हुए सारे गहने जुए में हार आया । मेरे सिरहान से कुजी निकालते समय बहू की नजर पड गई थी । मैं छन पर खडी रामतनु की परवाली से बातें कर रही थी । बहू जब तक कहने आए वह अपना काम कर चुका था । तेरे बाबा के काना में जब कोठरी और सडूक के ताले खुलने की खटर-पटर गई, तो वह बौन है, बौन है' कहके पुकारने लगे । तू तो जानता ही है, अपनी कोठरी में बठे बैठे वे इसकी कसी ताक बजान रहे हैं । पर वे पुकारा करें, बन्दा बोला तक नहीं । और मैं जब घबराकर नीचे आई तो बाहर के दरवाजे से निकल रहा था । कितना पुकारा, 'शिवू ! शिवू !' पर शिवू किसकी सुनना है ? जब मा थी, तब थी । अब तो वह अपने मन का हो गया है भैया । क्या बच्चे जो लिखा के लाई हूँ वह भोगना ही पडेगा । तेरे बाबा आज या नहीं जानती और आगे क्या-क्या देखना बदा है । शिवू आज ऐसा न उठता तो भगवान के चरण पक्कर अपनी मौत मागनी । मेरे ऐसा सोहाग किस स्त्री का है ? जिसके दो-दो जमान बेटे हा, उस मा को चिन्ता रह ? पर

बटा एस तप मैंने किए कहा थ ? मेरी हालत तो बजूस के धन सा है जो  
इश्वर की दया से सब कुछ हान सोत भी उसका सुख नहीं भोग सकता ।

' मैं अब शिवू की या तरी बात नहीं सोचती बेटा ! तुम लोग तो,  
नारायण कृपा कर अपन हाथ पर ब हो गए हा । शिवू बहू के गहन पहले  
भी बच चुका है । दो बार ता उस मारा भी । बहू न कल तक मुभसे य  
सब बातें छिपाकर रखी । जुआ खेलने लगा है यह बात तो बहू ने एक बार  
पहले भी कही थी । मना करन पर कहता था तबगीर का व्यापार है जो  
लगाऊगा दूना दस गुना मिलगा । बार बार न सही तो बस इकटठा एक  
ही दाव म । ओर भी बहुत सी बातें बनाना रहा । जोर जुलुम भी शुरू  
हुए । बहू से लड़ता था यह तो मैंन भी कई बार सुना । पर इतना नहीं  
समझी थी । शिवू की यही दशा रही तो घर का भगवान ही मालिक है ।  
ओर मैं तो बेटा जब तक जिउगी चिंता करती रहूंगी—बहूकी तुलसी ब  
ग्याह की । बनब भी अब दस बरस की हो गई है । इसब अलावा अब तो  
दीनू ओर परेश की भी चिन्ता है । वे दुधमुहे बच्चे क्या समझ कि उनका  
बाप जुआरी है ओर जुआरिया ब बटे सदा पराया मू ही जोहने हैं ।

कल की घटना पर तरे बाबा स भी बातें हुई । गहन लग, जब तक  
आंखें रही तब तक दुनिया को न देख पाया । ओर अब जघा होन पर,  
जिस दुनिया का भयानक रूप मैं अपनी आंखा स देख चुका था उसका  
अंत कसा भयावक होगा यह साफ साफ देख रहा हू ।

मुझस कहन सगे—जिउ तुम्हारे ही साह्यार ब कारण हाथ स  
निकल गया । बच्च को एक उम्र स ज्योत जगर बच्च का तरह हा रगागी  
ता उमका गर डिम्भारिया का सात साप भी तुम्हार ऊपर ही आएगा ।  
धगर मट जानती हाना बग कि मा का प्यार आशीवा न होकर बभी  
बभा गग बनकर बच्चा को लग जाता है ता बनज का पत्थर बनान का  
कारिग बनती । पाच बच्चा का घरला माना की गा म दरर जिउ का  
मू दया था । इमानिए उम गा म उतारन भा दरना थी । तू हाना पर  
विष गया है पाथ मा का यह बात ममम मरगा । पर अब तू ओर जितना

पढ़ेगा पाचू ? तू अपने मन म कहेगा, मा मरी तरक्की होने भी नहीं देख सकती । पर बेटा, एक तेरी ही सोचनी रहू तो ये तुलसी, बनक कहा जाएगी ? दीनू, परेश का क्या होगा ? तुलमी अब सोलह बरस की हो गई है । इसकी पढ़ाई-सी उमर कब तक दुनिया की आखा से छिपाती रहगी । सात बरस म तार-तार जाइकर इनन गहने बने थे सो भी भगवान ने छीन लिए । कसे बेटा पार लगेगा ?

“तूने निया है छुट्टिया मे नही आऊगा, विलायत तो पढाइ पत्नी है । सो ठीक है, पर एक बात मुझे बना दे । तू तो विलायत चला जाएगा लेकिन तेरी मा कहा जाएगी ? किसे अपना दुखडा मुनाएगी ?

“जो मन की थी सो तेरे जागे कह चुकी । आगे तू समझदार है । नहीं तो फिर भगवान तो हैं ही बेग । तू जहा भी रहे सुखी रहे । मेरे जो से तो सदा यही जसोस निबलती है ।’

पत्र पूरा होने ही एक ठडी माम पाचू के मुह म निकल गई । उसने अपनी पीठ कुर्सी से टिका दी । बीन हुए दिन एक एक करके उसके मन की आवा क सामने आने लगे । लाख अनिच्छा होने पर भी उसे अपनी मा के इन पत्र के सामने चुकना पडा था । और वह एक बार घर आया था, यह मोचन क लिए कि अब क्या किया जाए ।

दादा उमस चिडत है । पाचू जानता है अपना निरक्षर रह जाना उह ललता है । जिसका छोटा भाई इनना तेज है उमे उमसे भी बढकर फुछ होना चाहिए इसी एक धुन ने दादा को जुआरी बनाया है । बाबा जो कहते हैं कि मा के लाठ प्यार ने ही दादा को हठी स्वार्थी और निक्म्मा बना दिया, सो कुछ झट बान नहीं है । मा को अभी भी दादा का बटुन पक्षपान है ।

मा का पत्र पाकर पाचू जब गाव आया, शिशू दिन म दस बार उस पर अपने बड़प्पन का शान गाडने से नहा चुकता था ।

घर आकर पाचू अभी यह साव ही रहा था कि जीवन निबाहने क लिए उसे कौन-सा काम करना चाहिए कि एक दिन गाव का हीरू बाग्दी अपने



बाठ घरस क लडके रणेश के साथ आवर गगम बटन लगा— एकट समा करवेन मन ठानुर । जापकी दगकर एक वात मर मा मय जाद कि हमारी तो सात पुरसा स आय लोपा न चरना म बट गई । बाकी इन लडका की न निभगी । य लाग तो अभा स हा गाधी बाबा का सण्डा उठाते हैं । बडे होकर मिट्टी घराव हो जाएगी इनकी । दगस जा य गनसा चार जच्छर गस नो के सीय लगा आपकी दयासे ता सहर म बहा नोकरा पा जाएगा । जोर भेरा बुनापा भी आपके चरना की दया स बन जाएगा ।’

पाच को उसी दिन यह मालूम हुआ कि गरई-गाव क डोम-बाग्निया मे भी अब इतनी समझ आ गई है । यह समझते हुए भी पाच के सस्कारी मन की डोम बाग्दिया का अंग्रेजी शिक्षक बनन म सकोच हुआ । वह उस मना करने जा ही रहा था कि पास पडे हुए बूटे रामलाल चप्रवर्ती, जा उधर स जाते हुए हीरू पाच की बात सुनने क त्रिए खडे हो गए थ अपन सम्पूर्ण ब्रह्मतेज को आखा म दरशाकर बोल उठे—“छोट जानर मुन आगुन ! शालार ब्याटा डोम-बाग्नी अब ऊच जाति की घरावरी करन चले हैं ?

दूसरे के मुह स विशेषकर एक ऊची जाति वाले के मुह स छोटी जाति वालो के लिए गालिया सुनकर शहर की राजनीतिक और सामाजिक हलचलो से प्रभावित पाच की साम्यवादिता चेतन हो गई । उसका हृदय ऊची जाति वालो के प्रति विद्रोह से भर गया । उसकी निगाह गणेश के चेहरे पर जा पडी । भोला सा चेहरा, आशा भरी दृष्टि स उसकी ओर देख रहा था । रामदुलाल खूडा के व्यग्य की प्रतिक्रिया स्वरूप उस लगा गणेश को न पढाकर वह सरस्वती का अपमान करेगा । और उसन राम दुलाल के देखते ही हीरू को आश्वामन दिया कि जब तक वह गाव म है गणेश उससे पढन आ सकता है ।

गाव वाले कितने नाराज हुए थे । खुद उसके घर म उसकी मा न भी पहले उसे मना किया । दादा ने तो कहनी न कहनी सभी सुना डाली ।

सारा गाव उमकी निंदा करने लगा। और ज्या ज्या गाव का विद्रोह बढ़ता गया, पाचू का हठ भी जोर पकड़ता गया—“मक्का विद्या पढने का सामान अधिकार है।”

पाचू के जीवन म नया रस आ गया। केवल अपने उत्साह के बल ही वह अपनी जिद पर अट गया था। और उसी जोश में एक दिन उसने गाव-भर के ‘छोट लोग’ के लड़कों को एकत्रित कर पेड़ के नीचे बठकर पढ़ाना शुरू कर दिया।

वह आया था घर के लिए कुछ सहारा करने, कहा इस मुसीबत को गले डाल लिया? लेकिन अब ता वात पर वात अट गई थी। उसने निश्चय किया कि बड़े स्कूल छोलेगा और धीरे धीरे आगे चलकर स्कूल की ही अपनी आमदनी का जरिया बनाएगा।

जब सारा गाव स्कूल के खिलाफ, पाचू के खिलाफ, तब काराई मिस्त्री ही बढकर उससे हाथ मिलाने आया था—“शहर जाके स्कूल के लिए मदद मागो। यहाँ मैं सभाल लूंगा। बाकी एक बार ऐसा स्कूल बनाओ मास्टर, कि पाट साहब को भी यहाँ आना पड़े।”

काराई की शुभकामना फली। शहर जाकर प्रिंसिपल जाडन के अदम्य उत्साह और सहयोग के कारण अनक धनवान और सम्मानित नागरिकों से उसने अपने स्कूल के लिए सहायता प्राप्त की। उन दण्डों से जब वह किताब, स्लैट, पिसिल आदि लेकर गाव आया तब लड़के कितने खुश हुए थे। और एक दिन जब अमेरिकन मिशनरी जाडन अपने कुछ दिलायती और दशो मित्रों के साथ उसका स्कूल देखने के लिए आए थे, तब गाव-वाला पर उसका कितना प्रभाव पड़ा था।

प्रिंसिपल जाडन ने उसके स्कूल के लिए पक्की इमारत बनवा देने का वचन दिया। गवर्नमट काँट्रक्टर राय भुवन भोहन सरकार तथा उनके द्वारा आगपास के बड़े-बड़े जमींदारों का सहारा पाकर स्कूल की इमारत दण्ड दण्डत खड़ी हो गई। कलक्टर आए बड़े बड़े लोग आए, जल्सा हुआ, लड़कों को मिठाया बाँटी गई। दयाल जमींदार भी अब उसकी पीठ

हाथ रखने लगे, उम्र अपने लड़के का शिक्षण नियुक्त किया। अपने पिता की मृत्यु के बाद रामदुलाल खन्गरी का लड़का गोविन्द भी किसी गंव वाले माले की परवाह न कर शुभ काम में हाथ बटान पाचू के स्कूल में मास्टर हो गया।

गोविन्द मास्टर के आन से गांव में चलबली-सा मच गई। रामदुलाल शर्मा से पाचू के स्कूल में सबसे बड़ा विरोधी था। जब उद्दीया लड़का नीच जाति को पढ़ाने लगा तो चार उमलिया गोविन्द पर उठी। गोविन्द ने अपने काय का समर्थन करने के लिए ब्रह्मास्त्र लोज निवाला— साम कलेक्टर साहब ने पाचू बाबू से यह स्कूल खुलना है। वह सबको रात भाषा सिखाना चाहते हैं। बल यही डोम-बागिया के लड़के अग्रणी पत्रर हमारे ऊपर रात करेंगे और कलेक्टर साहब के हुकूम से बामन-बायसा से मला उठवाएंगे—दख लेना। इतने बड़े-बड़े आदमा एका दशारे पर नीचे चले जाए। हमारे पाचू बाबू क्या काइ मामूली जादमी हैं? कलेक्टर साहब के बड़े जिगरी दोस्त हैं। जा उनके स्कूल में गिलाफ वालेगा उसीका जल हो जाएगी।

गोविन्द मास्टर की अतिशयोक्ति में थोड़ी-बहुत गुजाइश रखन हुए भी गांव वाला को यह मानना पड़ा कि पाचू मामूली लड़का नहीं है। उसके स्कूल के विरोधी का जेल न सही, खुमना अवश्य हो सकता है। लोग उसके पभाव के कारण अब उसके आदर भी करने लग। पर बामन बायसा की नाक न कटे, इसलिए सधि के प्रस्ताव में एक शत यह रखी गई कि स्कूल में नीच जाति के लड़को से अगर ऊंचा की अलग बाने की राजी हो तो सब जने अपने लड़का को पढाएंगे। प्रस्ताव पाचू की मा की माफन आया, और मा के विशेष आग्रह पर पाचू को एसी व्यवस्था करनी पनी।

पाचू की आन भी याद है अपनी इतनी बड़ी सफलता पर बच्चों की तरह उत्सुक हो गणेश की पीठ थपथपाते हुए उसने कहा था—'गणेश अगर तू न आया हाता तो गांव में आज यह स्कूल भी न होना।'

बालक गणेश का भोला सा मुह उस समय आत्म गौरव और प्रसन्नता में चमक उठा था। आज भी पाचू की आँखों के सामने वही चेहरा फिर रहा है।

‘ आज गणेश नहीं रहा, यह स्कूल भी नहीं रहा । ’

पाचू की इच्छा हुई कि वह फूट फुटकर रोए। गणेश और स्कूल जानों, शरीर और प्राण की तरह एक थे। एक के न रहने पर दूसरे का न रहना भी ठीक उसी तरह स्वाभाविक था। गणेश को फिर से लाकर अपने स्कूल को पुनर्जीवित करने की असमर्थता को, आंतरिक विद्रोह और पीडा के साथ अनुभव करता पाचू विफल हो उठा।

छाटे बच्चे जिम तरह किसी चीज को पाने के लिए पैर रगड़ रगड़-कर मचलते हैं, पाचू का मन उस समय ठीक उसी तरह गणेश को पाने के लिए मचल रहा। उसकी कल्पना कमरे के ज़र्रे-ज़र्रे से गणेश को खोज निकालने लगी। वह महसूस करने लगा, गणेश दरवाजे से अंदर आ रहा है। गणेश डेस्क पर है—गणेश सब डेस्कों पर है। वह चाके बंदोर रहा है। ग्लोब के पास—हाँ, ग्लोब के पास गणेश ही खड़ा है। उसने ग्लोब घुमाया। सचमुच ग्लोब घूम रहा है? नक्शों के अंदर से भी गणेश निकलता हुआ दिखाई दिया। उसे एवसाय वह जगह से गणेश अपने पास आता हुआ महसूस हुआ।

“सर !”

पाचू ने चौंकर अपने पीछे देखा। कुछ भी नहीं। ‘ लेकिन आवाज गणेश की ही थी—साफ गणेश की। तब क्या ? ’

सहसा उसने झिलखिलाकर हसने की आवाज महसूस की। पाचू का दिल धक धक करने लगा। साथ ही साथ दिमाग के अंदर एकदम मुन्न पड़ जाने का अनुभव हुआ। पाचू का मिर अपना आप ही आका खा गया।

सारी शक्ति के साथ कुर्सी के पीछे लटकन हुए दोनों मुन्न हाथों को उसने अपने आगे मेड पर लाकर पटक दिया, फिर हथेलियाँ पर अपने

शरीर का सारा भार टिकाकर प्राणपण से उगन अपने शरीर का उठान की वाशिश की—जोर यह उठ लडा हुआ । घट वऱ्वाग होकर कमरे से बाहर दारटकर निकला । बरामद में आकर कमर की तरफ देवन हुए उगन महसूस किया कि उसका दिल अभी भी धडक रहा है उसकी सांग तज हो रही है । तो क्या सचमुच

पाचू की चेतना वापस लौट आई । समनकर उसन अपने को फट कारा— फिर बहके ! नहीं नहीं मगर दो आनाजें और वा ?”

पाचू की सास अपनी भसली गति से चलने लगी, निल की घडवन भी स्वाभाविक हुई— सब मरी कल्पना थी और कुछ नहीं । सब कुछ भा सब कुछ भी नहीं था ।

एक दृच्छा हुई अतर चलकर बठे । पर उसने एकाएक घूमकर घूप को देखा । साडे तीन बज रह ढगि, बल्कि अब तो पीने चार हाग । चलना चाहिए ।

तेकिन ये रजिस्टर कागज—अजी पडा रहने दो इहें । कौन धाना है महा ?

ताला दो कदम अदर जाकर डेस्क पर रखा था । उठाता हू—हा उठा लाऊगा । कोई बात महा है । कर्म तीलते हुए पाचू का साहस स्वय उसे भी चकित कर लपककर ताला अदर से उठा लाया, और दोनो हाथा से खीचकर कमर के दरवाजे अद कर णिए ।

दरवाजे की कुण्डी लगाते हुए पाचू जरा मुस्कराया—“बेकार में डर गया । डरा नहीं जी अच्छा होगा दयाल बाबू क यहा जाना है । वक्त से उठ जाया नहीं तो खयाला में ही बठा रह जाता ।

साला लगाते लगाते वह सोचने लगा— क्या सचमुच दयाल बाबू ने मुझे आज चावल देन का वायदा किया था—या यह भी मरी कल्पना ?

नहीं बिलकुल सच है । तत्क्षण दूसरे विचार ने उसके मस्तिष्क में आग्रहपूर्वक प्रवेश किया जोर आत्मा की दृढता के साथ उसने अपने

को विश्वास निलाया कि श्याम न उस भावल देने का वचन दिया था ।  
फिर एकदम से पांचू को हमी आ गई ।

२

बड़ी बहू 'चलो, उला । बखन न गबाओ । चट्टा सजात तयार रला  
मा । और पानी की पत्ती नी गरम हान को रग दो । पांचूक जाने ही चारल  
उमम डाल दिया जाएगा—बम, छिन भर म भात रधकर तैमार । '

पानी पीकर रीता गिलास हाथ मे लिए पावती मा, एक सुर म  
बोलती हुइ, गिलास माजन मे अपनी सारी पुर्नी दिखान गयी ।

शिवू की बहू, दालान मे बठी, पाम ही चटाद पर पढी हुइ चुन्नी को  
थपकी देकर सुला रही थी । अभी अभी उसकी आख समी है, बडी मुश्किल  
से सोई है ।

पाम ही बनक भी सो रही री । शिवू की बहू चुनी को धीर धीरे  
थपथपाती ही रही । साम की बात पर मुस्करात हुए उमन सिर उठाया  
और धीर से बोनी— लकिन, ठाकुर-पो (दवर) का घडी मे तो अभी  
बडा सबेरा ही दिगाई दता है न । '

बान कहन हुए उसके मुह का रुख दीवाल म टिककर बंठी, दोना  
पुटना की 'बकिग टविल सो बगाकर तन्विक गिलाफ पर हरे-लाल  
डोरों स 'गुड लक काढने म लीन, पांचू का पत्नी मगना की तरफ ही था ।

यावाज के अदाज पर मगना का चेहरा उठा । चहरे की विशेषता के  
रूप म मगना की उडा बडी सपना भरी आखा की पुनलिया चमककर  
शिव की बहू की आखा म समा गइ, और दो जोनी हाठों पर सैतान  
मुस्कराहट खिलवाट कर गइ ।

वात छत्रम करन के बाद उसने जरा जहिसा से एक सद आह का सलामी मगला को गुनात हुए छोड़ दी। बागपटी आह भरन म नसक भूखे शान्त पेट म एक गति-सी मालूम हुई। यह उगव पेट म ठडो-मी भली मालूम हुई।

सपना भरी आग्या की पुनतिया म गुम्मा का बहाना घरमाकर फिर अपन काम म लगी हुई मगला चट-ग बाग उठी— अरे अभी ना जमाना की घडी म दोपहर और शाम भी बीनन को पडी है। और फिर जमी गर की घडी ठहरी—उसम बव जाने दोपहर हा और बव शाम। भद्र वकुलफल तुम तो भूल ब मार अभी म ही बच्ची बनी जा रही हो।

'तुम चाह जैसे समयो। आज तो तर उनकी बाट म मैं भी तरी तरह ही मन मार बडी ह सयी। हाय तुझ राज इतनी बाट जाहनी पडती है।'

बडी बहू ने फिर एक लम्बी सद आह छीचकर मगला की तरफ पकी लेकिन इस बार ठडक पाकर पेट कुडमुडान लगा।

मजाक करत-करते ही बडी बहू अनमनी हा गई। पेट की कुम्मुचट्ट से बचन हा उस भूलन के लिए बहू गयी हो गई। निठानी को उठन देग मगला भी काम म हाथ बटाने के खयाल स अपना सारा सामान बटार कर ऊपर अपने कमरे म रग आने के लिए उठी।

मूरज की रोगनी की एक लकीर दालान के आग की टूटी मन्राव स गुजरकर दालान के जहर की पीवाल पर पड रही थी। मगला के रग हान पर रोगनी उसकी गन हाठ नाक और सिर के कुछ हिम्म पर पडन लगी। उस रोगनी म नाक की सोन की बान में जडा हुआ लान नग दमक उठा। आज चार दिन स जग से इस घर म भवाल आया है पावती मा न बक खुचे एक एक, दो-दो गहने सब लडकी बहुआ का पहना लिए है। रसोइघर म भी जरूरत से ज्यादा बतन बनवन है। जीरतें जरूरत से ज्यादा काम काज म व्यस्त सग की भाति ही आज भी जीवन म मन म पूण निश्चिन्ताबन्धा वा अभिनय करन के विफत प्रयत्न म

प्राणपण से लगी हैं।

पिछनी शाम पाचू बट सब देववर हस पण या। बहने नगा— 'मा,  
अगर बोइ अन्ववार का रिपोटर इस समय तुम्हारे घर म आए ता उसे

यहा जरा भी जवाल नजर नही आएगा। मेरी समय म नही जाता कि  
तुम छिपाती किसने हो ? सबके घरा म यही तमाशा तो है।'

पावती मा पिसियानी हसी हसकर बोनी— 'बाहे जो हा पर  
आवर तो मभालनी ही पटती है न। भगवान न यही तो छोटे लोग से  
हम लोग म फरक रखा है। नही तो हम लोग भी उनकी तरह गली गली  
गाव गाव मे भीख न माग्ने होने सूट मार न बरत हाने।'

पाचू ने इसपर फिर हसकर जवाब दिया— 'पर बब तक नही  
करते मा ?' आवर से पेट तो भरता नही, फिर उसे बचावर रखने से भी  
बया लाम ?'

पावनी मा को कुछ जवाब न सूया हारकर बहने लगी— 'तेरा मन  
तो सारी दुनिया से निराला है। भला आवर के बघन भी वही छूटते हैं ?  
कुनीना को आवरु तों चिता तक साय जाती है वेटा।'

पर पुरानी घाती के हजार पैब-दो की तरह कुलीनी की आवरु भी  
अब अपनी असलियत को, लाख कोशिश करने पर भी, छिपा नही पाती  
मा।"

"ये तो सच है। किया भी क्या जाए। नगे की तो दानो टागें उघाडो,  
तब भी बट किसी तरह लाज तो समेटता ही है वेटा।'

इसके जरा देर बाद ही रामतनु की घरवाली आ गइ। पावती मा  
उनमे बातें करने म लगी। सारा घर काम बाज म व्यस्त हो गया। लेकिन  
बीच मे ही दीनू ने भूख भूख चिलाना शुरू कर दिया, परेश भी उसका  
साय देने लगा। डाट घमकी बहलान फुसलाने से काम नही चला।  
आवरु की रक्षा म मा को हार मानन दम शिवू भी आ गया और उसने

सडका को मारना पीटना शुरू कर दिया।

पाचू किसी तरह दोना भतीजो को शिवू से छुडाकर ऊपर अपने



कमरे में ल गया। उमक वाग उमा अपना डायरी में लिखा — आबरू के असत्य से दूर की सताम रगनवाता गन्ता जवांमन अगर वाई इम दग में मिन सवता है ता वह वाई छाटी उम का बच्चा ही हागा, जा भूग सपने की इंसानी कमजारी के लिए उग भा लग्गिता रही।

बास की छोटी सी मज पर मगला के हाथ का बन्ना हुआ मन्त्रयोग बिछा हुआ था। घीन में शीशे का छाया का बन्मन्त्र रखा था बिसवी दोना दवाना की स्याही मूग गई थी।

बाइ तरफ एक इट के दा टक्डे पर उगपर पनी चन्कर, ऊपर से मगला के बन्ना माम के रगीन मानिया की चानर पछी हुई थी। इय तरह दोना इटा के सहार से उनके बीच में जाट-सत कित्तों सजाकर रखी गई थी। दाहिनी आर पीतल की अन्वार बनी हुई छाटी सी धूपदानी और मज के ऊपर दीवाल पर भारतीय चाय का एक कलण्डर टगा था। दीवान के दोनो तरफ गाव की ओर खुलती हुई दा खिडकिया था। दीवाल से सटी हुई बडी चारपाई उसपर करीब से बिस्तर लगा हुआ। चारपाई से लगी हुई दीवाल के ठीक बीचबीच एक राधाकृष्ण की तस्वीर बगल बगल सुभाष बोस और जवाहरलाल की तस्वीरें। एक तरफ तीन सडूक एक दूसरे पर चुन हुए रखे थे, उसके ऊपर के आल में रही अखबार बिछाकर एक शाशा, कच्चा तेल आलता की शीशिया और बनारस की बनी हुई लकडी की सिन्दूर की डिबिया रखी हुई थी।

मगला ने मेज पर धूपदानी के पास, जपन बान्ने-बुनने का सामान रख दिया।

डायरी खुली हुई सामन ही रखी थी। बीच में पसिल रखी हुई थी। मगला ने पाचू का लिखा एक बार पन्ना। पसिल उठाकर बलमदान में रख दी और डायरी बन्द कर कित्तों के पास। फिर शीशे में एक बार मुहू देखा कथ स वाला को जरा सा टक्क दिया और नीचे जाने लगी। दरवाजे के इधर से ही फिर लौटी खिडकी बन्द करन के लिए। बाहर देखा, पाच छ आन्मिया के बीच में बठा हुआ शिवू जोर जोर से कह रहा

था—“खुद मोनाई ने मुनसे कहा कि सरकार जबरदस्ती फौज व लिए उससे मारा अनाज खरीद ले जाती है। थर ”

मगला ने लिटकी बंद कर दी और नीच चली गई।

वह सोच रही थी—“चावन लेकर जाते हाने।”

जीने के नीचे पर रना ही था कि बाहर के दरवाजे स तुलसी और दीनू परेश अदर धाते दिखाइ दिए।

मगला को देखने ही वच्चे एवसाय ही बोल उठे—“काकी मा, हमने छ-देच काये, दो-दो।”

सारे घर का ध्यान वच्चा की तरफ चला गया।

पावती मा थीर बटी वह चीके म बटी थी। वनव तब तक जाग चुकी थी। हथेली पर सिर टिकाकर लेटी हुई, चटाई की सीक लोडकर दाना से चवा रहा थी, उठ बठी। पावती मा ने पूछा—“मदेश कहा पाए दीनू?”

वच्चो से पहले तुलसी बोल उठी—“काकी नम्बर आठ के भाई आए है कलकत्ते से।”

घात काटकर पावती मा बीच ही म घुडन पडी—“फिर कहा काकी न० आठ। तुझे भी पाचू की आदत पड गई है? रामतनु की घरवाली मुनेगी तो क्या कहगी? खबरदार, जो आज के पीछे फिर कभी कहा तो।”

तुलसी चुप हो गई। वच्चे सहमकर वही ने कहा लडे रह गए।

एक सेकण्ड चुप रहकर पावती मा फिर म्निग्र स्वर मे बानी—“गोपान का वाप सदेश जामा होगा। कव थाया वो?”

‘अभी दिन मे ही ता जाए हैं। गोपाल को ले जाएगे।’ तुलसी ने सिर मुकाकर कहा।

परेश दादी के पास जाकर बोला—“यातुम्मा छ-देच काया। मीया मीया।”

दीनू स भा दूर न रहा गया पावती मा के पाम जाकर बहन गया—

‘टाकुम्मा हमका ता मामा ने लय पर दिया जोर चुआ ता ता थो म पिनाए।’

तुलसी एत मदग छिगार लाई थी। उस चुपके ग वनन वा दरज वह उमके पास ही चटाई पर बैठ गई थी। तब स डपट पनी — झूठ बानना है। दो लिए ये मुझना। मैं तो बटुन मना करना रही मा।’

दीनू भी कम नहीं, लड पडा—‘नई, दो तो अपन हान म तुम गिनाए त मामा न। हमने गिना ता—एक दा—था जय वारी लाई थी कम म, आ।

और तुम लोगा को भी तो दो-दो दिए थ उहान।’

‘वो तो हम बाद म वानी न० आ।’

‘फिर कहा आ तो सही।’ पावती मा दीनू पर घुडक पडी।

दीनू चट स भागकर चाची के परो से चिपक गया। मगना तुलसी म डप के आस पास बुहार रही थी। दीनू व अचानक परा म था लिपटन स वह जरा लडखडाई फिर समन गई।

‘अरे अरे।’

‘काकी मा’ दीनू न उमके धीरे धीरे कहना शुरू किया—‘काका मा सच्ची। अमको तो एक एक सत्थ दिया मामा ने और चुआ को ता बीत स सदेश प्री दिए और बीत सा प्यार वी किया। अमको तो प्यार वी नई किया मामा ने।’

दीनू हठी हुई आवाज म धीरे धीरे कह रहा था। बीच बीच म अपनी दादी की तरफ भी देखता जाता था गोया इशारा हो—‘तुमन हमारी शिकायत नहीं सुनी तो हम अब सुनाने के भी नहीं, हम तो अपनी चाची को मुना रहे हैं चुपके चुपके।’

गुस्त को बंधसी से दबाए सक्पकाई हुई नजर से, तुलसी दीनू का तरफ ही देख रहा थी। मगला न यह बात सुनकर क नजर से तुलसी की तरफ दया। बाखें मिलते उसन आख चुरा चटाई की

वह दीनू-परेश को बाँकी न० आठ के यहाँ अपने साथ ले ही क्या गई। पर उसे मालूम थाड ही था कि मामा आए हैं, और मामा उसके साथ ऐसा बर्ताव करने लगेंगे।

मामा के बर्ताव का ध्यान आते ही तुलसी ने अपनी रग रग म गुदगुदी से भरी हुई सिहरन महसूस की। बुका हुआ चेहरा अपनी तमनमाहट को रोकने के लिए दोना घुटना के बीच और भी गड गया। बाल की एक लट खिसककर चेहरे पर आ गिरी। तुलसी अपन सारे बदन को और भी सिकोडकर बठ गई। मामा के रूप म एक पुष्ट ने आज उसकी कल्पना की दुनिया म पहली बार कदम रखा था। घर मे, पास-पड़ोस मे बराबर की ब्याही हुई लडकियों म, बकिम शरत् के उपयासो मे, और अपनी उम्र के तवाजे स, सारी समझी-समझाई हुई बातों को वह जिस तरह आप-बीती बनान के लिए पिछले दो-ढाई बरसो से दिल ही दिल म तडपा करती थी मामा से उही वाता का कुछ-कुछ आभास उसने पाया था। फिर दीनू परेश गडबड कर उठे। बाकी न० आठ आ गइ। उह देखते ही वह कमी घब्स रह गई थी। फिर बाकी की मुस्कराहट और मतलब भरी निगाहा से उसकी और मामा की तरफ देखना, फिर दीनू परेश को बहलाकर बाहर ले जाना। उसके बाद मामा की रसीली बातें उनकी वह प्यार भरी छेड़-छाड। वह लाज के मार पसीना-पसीना हो गई। बाहो से निकलकर भागी। मामा की बकरारी, कमर के दरवाजे पर चट से उसका हाथ पकडकर मामा ने कहा—“शाम को आना। जरूर-जरूर। उमा दीदी कुछ न कहगी—किमीम कुछ न कहेंगी ।”

शाम का आना। शाम को आना।”—गदन उठाने की ताव नही, वह देखे कस कि अघेरा हो रहा है शाम हो रही है !

तभी कनक न उसका हाथ झटककर पूछा— मामा ने तुम्हें कितने सदेश दिए थे दीदी ?”

‘कह ता लिया कि दो—एक तुझे ठुसा तो दिया ।”

तुलसी तडपकर उठ खडी हुई लेकिन उसकी समझ म

था कि वह घर में और कहा जाकर बड़े। उमके गिण कहा पशान नहीं। पर म हर एक का चेहरा उम दुखमन जसा उजर आ गन था। उमना सारा बदा अकन रहा था। गडे रहने की ताय न थी। वन बही जाकर चुपचाप लट जाना चाहती थी, अपने में गो जाना चाहती थी।

‘अरे सुनती हा, एक गिलास पानी ता दे जाना। बाबा की कोठरी में जावाज आई।

आवाज के बाना में पडते ही तुलसी के सयाला ने बरबट ली। शाम का आना।—वह जानती है जब बाबा पानी मागत हैं तो मा का जाना पडता है। तुलसी ने अपने में स्फूर्ति का अनुभव किया। आगे मा की आर उठ गई।

पावती मा मन ही मन में बटो जा रही थी। झुपनाहट पेशानी की नसों में तनी जा रही थी। लटके हुए गाला पर शम का बोध पन रहा था जिस उठाना अब उनकी उम्र के लिए दुभर था। बाज कि बान बहरे हो जाते। उनकी आखें क्या पूटी हैं कि दिन और रात का लिहाज भी न रहा।

‘अरे सुना नहीं तुलसी। अपनी मा से कह एक गिलास पाना दे जाए।—फिर आवाज आई।

दासान में खटी हुई तुलसी ने फौरन ही बडे उत्साह के साथ कहा—  
‘मा बाबा पानी माग रहे हैं।’

पावती मा की आत्मा पर तमाचा पडा। वह तिलमिला उठी। जवान जवान बहुरे बेटिया—तीन-तीन पोती-पोता की दान्नी के पन की प्रतिष्ठा को आधात लगा। गुरसा उतारा तुलसी पर— तो मूस ऐसा खडी खडी सुन क्या रही है? दे क्यों नहीं आती एक गिलास पानी उह? अघे क्या हो गए हैं मरी जान पर सकट आ गया है। दिन रात हाय हाय, हाय हाय। पानी चाहिए ओ पान चाहिए ओ पत्ता चाहिए। बठ के बूटों का तरह में राम का नाम नहीं दिया जाता। उह।’

अपनी कोठरी में बशव बाबू चारपाई पर अधलेट से पड थ। पावती

मा का एक एक शब्द उनके दिल को अघी आखा पर ही, चुभता हुआ महसूस हो रहा था। मोतियाबिंद स भरी हुई आखा की पुतलिया इधर-उधर फुफुंडान लगी। फीके चेहर पर तमतमाहट छा गई। केशव बाबू एक बार उठकर बैठ गए। बेताबी और झुसनाहट स उनके ध्यान म एक किस्म की फुरती आ गई। मगर दूसरे ही क्षण वह फिर निढाल होकर तकिये क सहारे टिक गए, टांगें ऊपर की जोर समेट ली।

एक हल्की-सी निमास केशव बाबू ने छोड़ दी।

आज पाच बरसों से वह अघ होकर पड़े हैं। राम का नाम भी काई कहा तक लेता रहे। चौबीस घंटे काठरी म पड़े रहा। नरक के कुत्ते की तरह दो राटिया ग्या नी, बस। कोई बात भी पूछनेवाला नहीं अरे जब पत्नी ही अपन कह की न रहो तब और किससे आशा की जाए ? वो तो भाई अत्र जवान जवान बटो की मा है। कमाऊ-घमाऊ बेटे है, बहुए हैं। मेरी बात भला अब वा क्या पूछेगी ? परन्तु उते बेटोवाली बनाया किसन ? आज मैं अघा हो गया हू तो क्या मरी बात भी नहीं सुनेगी ?”

पानी वा गिलाम लेकर आए हुए तुलसी की एक मिनट से ऊपर ही हो चुका था लेकिन वह चुपचाप खड़ी हुई बाबा की तरफ देख रही थी। केशव बाबू का चेहरा उस घुघली रोशनी म भी भारी और तमतमाया हुआ उसे दीख रहा था।

केशव बाबू ने एक भारी निमास छोड़ी और टांगें फैलाकर तकिये क सहारे जरा और झुक गए। तब कड़ी आवाज म तुलसी ने कहा — बाबा, पानी।’

तुलसी की आवाज बाना म पड़ते ही केशव बाबू उत्तेजित हो उठे। लडका क हाथ पानी भेज लिया। अब इतनी अवहलना हागी मेरी नहीं चाहिए मुझे उमका एहमान।

‘नयी चाहिए पानी-बानी ले जा।’ जब भगवान न आखें ही छीत लो, अन ही छीन लिया तब पानी पीकर क्या बन्गा।

केशव बाबू ने अपनी अघी आखा को तुलसी की आवाज के अ

पर टिकाकर गुस्से से कहा। पावनी मा की इस अवहेलना ने केशव बाबू के पुरप मन को विरक्ति से भर दिया था।

प्राणा से अधिक प्यार किया—उसका ये फल दे रही है मुझे ? इच्छा करते ही पचास विवाह कर सकता था। एक से एक बड़ी चढ़ी इद्र की अप्सराएँ इन चरणों पर शीश झुकाती। वने वने श्रीमान् और धीमान् जिसके जागे हाथ जोड़े खड़े रहते थे उसकी अवहेलना करती है यह नारी ! जाखिर तो ठहरी स्त्री की जाति, जवानी रह की साथी।— फिर जरा सा भी बुलाओ तो हजार नखरे पर दोष तो मेरा ही है। मैंने ही इसको लाड कर करके सिर पर चढा लिया है। जो यह कहती थी, करता था। इसका दिल न दुखे इसलिए शिवू को इसके पास ही रहन दिया। इसके कारण ही मैं उस पढा लिखा न सका नही तो आज वह भी पाबू की तरह ही विद्वान् होता। अरे विद्वान् के बेटे विद्वान् ही होंगे—परन्तु यह भूर्त्ता मेरी कन्तर क्या समझें ? फिर अपने को बड़ी पतिपरायणा और बुद्धिमती समझती है। पत्थर पडेँ ऐसी बुद्धि पर ! आना चाहे तो सौ वहाने निकाल कर आ सकती है। मगर नही इसमें भी जैसे उसकी कोई जमा जाती है। दो घड़ी इस शुष्क जीवन में रम आ जाता है, सो भी इसे

केशव बाबू के खन में फिर गर्मी चटने लगी। अपनी परवशता पर वह मन को मसोसा मसोसकर रह जात थे। भूखे शरीर और भूखी वासना के घात प्रतिघात से उनका मन जजर हुआ जा रहा था। सिर में चक्कर जान लगा। तन थकने लगा। सात भारी चलने लगी।

केशव बाबू ऊब गए हार गए। सारा मन घीझ से भर गया। अगर ये लडक-बच्चे न हान तो अवश्य चली आती। लडक बच्चे, बहूए पोती पान उन्हें जहर से लगने लगे। इहीके कारण वह इच्छा करने पर अपने जीवन में रम नहीं पा सकत। पत्नी के ऊपर भी क्रोध आ रहा था—

इशारा नही समझती। पत्थर है पत्थर ! अपनी इच्छा ही तो मारी दुनिया की आत्मा में घूल झाँककर मर पाम आ सकती है। पर तु इच्छा करे तब न ! ताने और मांग बनकर वह भूल गई है कि पहल वह पत्नी है। शास्त्रा

न पत्नी के लिए पतिमेवा ही श्रेष्ठ धर्म बताया है। परन्तु किसका शास्त्र? किसकी पत्नी? ये सब मोह हैं। मायाविनी! नारी आविर है तो माया की ही मोहिनी। बड़े बड़े ऋषि मुनिया की तपस्या भंग कर दी। अर, दूर कहा जाऊ—मुझे ही इसने पथभ्रष्ट कर दिया, अथवा आज लोक परलोक सुधर गया होना मेरा। किन्तु नारी। नरक का द्वार! हरे! हरे! कहा इस गृहस्त्री के माया जाल में फँस गया? गोविन्द! गोविन्द! इस स्त्री ने मुझे बहूत लुभाया।'

केशव बाबू की अघी आखा न कोठरी में इधर उधर दौड़कर चारों तरफ टांडा पर लदे हुए धनक ग्रयो और पोथिया के बस्तां को अनुमान से देख लिया। स्वयं शास्त्री, तकरत्न निमग्न विद्यावागीश के पुत्र! बड़े बड़े इनकी विद्वत्ता का लोहा आज भी मानन हैं। ढाका कॉलेज में संस्कृत के प्रोफेसर थे। इन अघी आखों न उहें कही का न रखा। और इस नारी नरक द्वार

कोठरी के दरवाजे की कुण्डी घीमे में खनक उठी। सारा दशन, तान और पाण्डित्य कपूर की तरह पल भर में उड़ गया। "आई शायद पसीमी"—केशव बाबू की अघी आखें जाशा की ज्योति से चमक उठी। किन्तु 'चू चू चू—चिड़िया थी। कुण्डी पर आकर बैठी, और फिर पर फन्फनाकर उड़ गई।

केशव बाबू के मुह से घरबस एक ठडी आह निकल गई—'अरे वह भला क्या आने लगी। कुछ नहीं, अब तो बस सयास ले लूंगा। एस घर से लाभ ही क्या? ऐसी पत्नी से सुख ही क्या? या ही देश के ऊपर इश्वर का कोप हो रहा है। और उसके ऊपर घर में अपनी पत्नी ही जब अपने सुख की शत्रु हो जाए हो जाने दो नारी नरक का द्वार! गोविन्द! गोविन्द!

धाम-धामना की उत्तेजना शोध बनकर फिर धीरे धीरे, मन ही मन में, विरक्ति भाव धारण कर मन को सयासी बना चुकी थी। परन्तु यह कोई नई बात नहीं। ऐसा अक्सर होता है। केशव बाबू का पुण्य-अन्य



रस नहीं पाता तो स'यासी हो जाता है । और एक बार तो ऐसे ही स यासी पन क 'मूड म उ'होन खिन्नलाकर दीवाल से अपना सिर फोडकर खून निवाल लिया था । जब स यास आता, तब शकराचाय की चपट मजरी का पाठ जारम्भ कर दत है । आज भी हारे हुए स'यासी मन न चपट मजरी की शरण ली । विरह कातर क्षीण वाणी को स'यास का धुशता चटान लग—

का त काता वस्ते पुत्र  
ससारोऽप्यमतीव विचित्र ।  
वस्य त्व वा कुत आयात  
तत्त्व चित्तय तदिद भ्रात ।

भज गोवि'द भज गोपाल गोवि'द भज मूढमते ।

शिव् की बहू चलहे के पास बठी थी । मगला चलहे म जलाने क लिए सनडिया लेकर आई थी वही सडी थी । पावती मा जरा दूर पीढे पर बठी थी । बाबा की कोठरी से चपट मजरी सुनाई पडने लगी । शिवू की बहू न मतलब भरो आये ऊपर उटाइ । मगला की आंघा स मिली । दो जाटी हाटा पर शतान मुस्कराहट छिनवाड कर गई ।

सास की तरफ मगला की पीठ थी शिवू की बहू ने अपनी मुस्कराहट छिगाने क लिए मुह फिर लिया फिर भी पावती मा स छिपा न रहा । पन गौरव और बुढ़ापे की छुन्नलाहट बेवसी म झप बनकर रह गई । बहूए जानती है साम भी स्त्री है ।

चपट मजरी भज गोवि'द भज गोपाल तक पढूच गई । यदि कुछ दर तक और वसी तरह मू मन का गावि'द गोपाल भजन पच तो सिर फोडन की नौबत आ जाणगी यह दर पावती मा को समपण के लिए धीर धीरे प्रस्तुत कर रहा था । अठारह बीस साल की जवान वट्टा की बधा म बटन हुए सहागिन साम की उभ्र का अचतालीसवां बरस सूड़ी साज क घूघट स जवान बनकर पाकने लगा— फिर क्या किया जाए नहा मानन तो ।

पर जबान कुशारा बेटिया के आगे दिन दहाडे सयासी पति को फिर से गृहम्य बनाने के लिए जाने हुए बूढ़ी सुहागिन क पैर कैसे उठेंगे ?

चपट मन्नरी का पाठ चल रहा था— प्राप्त समिहित मरणे ”

“तुनमी ! जा बेटो, रामतनु की घरवाली मे पूछ तो आ, एकादशी कव की है ?”

जधे को जम आवें मिल गइ । तुलसी चल दी । कनक को एक ही सदेश मिला था, वह भी उठ खड़ी हुई—‘ मैं भी जाती हूँ मा ! ’

‘तू क्या करगी बलकर ?’ तुलसी भडकी ।

मगला तुनसा को कच्ची निगाह से देखकर बोल उठी—‘ ले जाओ न उसको । कनक, दीनू परेश को भी ले जाओ । और तुम नोग सब मामा क पास ही रहना—अच्छा ! ’

तुलसी झुझना उठी—‘ तो फिर कनक ही पूछ आए न, मैं क्या करूँगी जाकर ? ’

“ पुत्रादपि धनभाजा भीति ”बाबा की कोठरी बोल रही थी ।

मा तडक्कर बोली—‘ ले क्या नहीं जाती उसे ? विचारी दिन भर से कहीं गई नहीं, आइ नहीं । और वो भला क्या पूछेगी एकादशी दुआदशी ? खेल मे भूल जाएगी, भेरा बरत रह जाएगा । जा, और दिया-जल स पहले ही लौट आना—भला ! और किसीको सदेश न मागन देना, सुना ? ’

कनक, दीनू और परेश पहले ही जा चुके थे । तुलसी गुस्से मे मुह लटकाने मुनी अनमुनी मी करके तेजी से निकल गई ।

कोठरी स आवाज तजी पकड रही थी—‘ भज गाविंद, भज गापाल—भज गाविंद, भज गापाल ’

‘ ऊह मौत भी नहा आती मुझे नसीबाजली को । ’ बहते हुए पावती मा पीडे स उठी । खड-सडे एक सगड के लिए टिठकी, फिर कोठरा की तरफ फिर झुकाए हुए चल दी ।

बड़ी बहू और मगला ने आज्ञादी के साथ मुस्वरान क लिए गिर... उठाया । साम का पीडा पाम खीचकर उसपर बैठने हुए मगला ने कहा—

“तुम क्या हसती हो रानी ? जब सास बनोगी तब मालूम पड़ेगा । ज्यादा माशाइ आखिर हैं तो अपन ही बाप के बेटे । तुझे बुढ़ापे में माला जपने के लिए छोड़ थोड़ी देंग ।

मजाक करने का होसला और चेहरे की मुस्कराहट एकदम गायब हो गई— जान द दूगी अगर ऐसी नीबत आएगी तो ।

बात कहने कहने बड़ी बहू का चेहरा तमातमा उठा । अपनी बेबसी से विद्राह करते हुए वह केवल मौखिक रूप से ही जान द सकती है बड़ी बहू इमे अच्छी तरह जानती है । तन की मशीन जिंदा रखनेवाली अंतिम सास तक वह अपने स्वामी की मिलिक्यत है । पारसाल एक सौ तीन डिगरी के भरे बुधवार में भी न छोड़ा था—मरने से बची थी उस वार ।

बड़ी बहू सिहर उठी । भूख की कमजोरी से दिमाग की उत्तेजना उसे चक्कर देने लगी । किसी तरह अपने को सभालकर एन उसास लेती हुई बोली— स्त्री जीवन भी भला कोई जीवन है ! मा पर तरस आता है भुजे तो ।

‘ पर मैं कहती हू दोष इसमें मा का ही है । कठोर वन के बठ जाए बाबा कर ही क्या लेंगे ? एक वार सिर फोड़ेंगे दो वार फोड़ेंगे—अत में पित्त मारकर आप ही बैठ जाएंगे ।

“भोला भाला पा गई है न ! सारी दुनिया के मरदा को ठाकुर-पो जसा हा समझती है तू ता । उनके ऐसा

चुनी जाग पड़ी थी रोना शुरू हो गया था । दालान की तरफ एक वार दखकर बड़ी बहू बात कहते-कहते रुक गई । तन और मन की ध्यान चेहर और आस्ता क भावा में उभरकर सामने आइ । रीठ की हठी उचका कर पीठ का तानते हुए बड़ी बहू ने दीनता भर स्वर में मगला स कहा— ‘ उम उठा ता ल पुत्र ! मरे बन्धन में तो सन नहीं रहा ।

पुत्री क रान और मा क फज में आत्मायता की नाशुक डार मज ग्राह दूध-मा विच रण थी । दूध उतरता नहीं, नहीं-मा जान रान राने मना क लिए ममान हा जाएगी । मा अपनी छानिया में दूध बहा स पना कर ?

और अपने कनेजे की कोर के विलख विलखकर भूछे मर जाने की कल्पना सभा का दिल अपनी पूरी शक्ति के साथ क्या न भडक उठे ? क्या न चील उठे ?

चुन्नी के आसू बड़ी बहू की आग्रा म आ गए । आसू आत गए बढत गए । गोदी के बच्चे की तरह उमका बचन मन अपने शरीर की जिम्मेदारियाँ को उठा सकन म अशकन होने के कारण हुमड-हुमडकर रोन लगा ।

चुन्नी के रोने की आवाज धराधर नजदीक आते-आते बड़ी बहू के काना म वहीं गुम हो गई । चुन्नी का लेकर मगला रमोई घर म जा गई थी । चुन्नी—बड़ी बहू की सावन बरसाती हुई आखा ने उसे 'शायद दवा—बाखें अपनी आदत से साचार होकर सिफ अपना फज्र अदा कर रही थी तबिन मन उनसे अलग हाकर आसुआ म डूबता जा रहा था । डूबता ही चला गया—वही थाह नहीं, वहीं थाह नहीं । मन के पैर उखटने लगे, दम घुटन लगा । दिमाग नहीं, शरीर नहीं सिफ दम है—और वह आसुआ के योजन से दबता जा रहा है घुटता जा रहा है । आसुआ मे ज्ञान का साथ अब छूट रहा है । अघेरा, भूरा, मटमला सा घुआ—  
"घुआ"

"फल, ओगो !"

वही अमीम-अनन्त से फिर प्राणा के साथ शरीर का नाता जुडता हुआ जान पडा । प्राण हिल रह है, ऊपर उठ रह हैं । शरीर हिल रहा है । वही दूर से एक परिचित स्वर सुनाई पड रहा है—'फूल ओगो ।'

डूबने हुए मन का शब्द का सहारा मिला । चेतना से दूर उस अघेरे म व परिचित शब्द प्राण और चेतना के बीच की टून्ती हुई कटी को जाड रह हैं—'फूल ओगो ओगो ।'

ये शब्द उस म घाटनेवाले अघेरे मे उस उबार रहे हैं । उम सतीप मिल रहा है । प्राणा म उगाह आ रहा है । आसुआ के वेग का चीरकर वह उस परिचित स्वर का अपनी चेतना का सङ्ग सुनाना चाहती है ।

स्वर का उद्गम बढ रहा है । प्राण फिर तेजी से अपनी शक्तियों का

सचय कर रहे है। आवाज को अपनी ताकत मिल रही है। आवाज अपनी पूरी ताकत के साथ बहना चाहती है कहती है— 'ह ज वा ह ज प्रा ।'

मगला झकी बककी सी हो गई थी। चुन्नी को लेकर आई। दया बकुनपून रो रही है। अरु क्या हुआ का रा रही है? किना ही पूछा, कुछ जवाब नहीं देती। रोता जा रही है पून फूटकर रो रही है। हिच किया घुन घुटकर जा रही है। उसने दया, बडी बहू का शरीर अपने बावू म नहीं रहा है। गिरना ही चाहती है। उसकी गोम म चुन्नी थी। वह भी रो रही थी। मगला पन भर के लिए तो घबरा गई। फिर अपने को झपट सभालकर चुन्नी को जल्दी स वही जमीन पर लिटा दिया और बडी बहू का लपककर उसन दांना हाथा से रोक लिया। बडी बहू के कधा को जोर से झकथोरकर उसन घबराहट के साथ पुकारा— फूल, जोगो फूल फल ।'

बडी बहू बोनी— ह । हा ।

क्या हो गया है तुम्हे? अरी बोलती क्या नहीं बोल ना ।

बडी बहू न अब तन अपन को काफी सभाल लिया था। वह सुबकिया स लड रही थी। सुबकिया का काफी तीर पर उमने अपने कब्जे म कर लिया। गला खपारकर साफ किया।

अरी क्या हा गया तुम्हे? मगला न फिर पूछा और अपने आचल स उसके जामू पाठनी हुई वाली— पागन कहा की। इस तरह अपने का मिटाने है भला। पगलो, कहा की बात कहा जोड ले गई। ले, लडकी को सभाल। रात राने गला बठा जा रहा है बिचारी का।

मगला न चुन्नी को उठाकर उसकी गोद म दे दिया। बडी बहू ने अब तक अपन का अकठी तरह सभाल लिया था। जाखें और नाक अपनी धानी के पत्न स पाठकर उमने चुन्नी का ठीक तरह से अपनी गोदी म लिटा लिया और घुनन हिलाते हुए उस थपकिया देकर चुप कराने लगी।

मगला की सपना भरी जाख बराबर अपनी सहेली के चेहरे का ही टकटकी बाधकर ग्य रही थी। जिस दिन स इस घर म आई उसी दिन

से इन दाना में बहनापा जुड़ गया। एक दिन के लिए भी देवरानी जिठानी बनकर नहीं रही। ब्याह के बाद एक बार मगला मँके गई थी ता साम स कहकर इस भी अपन माय ले गई। बड़ी बहू क मा वाप नहीं थ। मामा न किसी तरह ब्याह के बाद अपना पिंड छत्राया और फिर कभी नाम भी न लिया।

बचपन में मामा की लडकी बहन थी जो सदा दस दुतकारती रही, घर में मामी ने इस नीकरानी की तरह जातकर रखा इसलिए बाहर कोई सखी सहेत्री मिल न पाई। इस घर में जाद तो किस्मत बदल गई। उम सास नहीं मिली, मा मिली। पाचू तुनसी, कनक, बाबा—सभी उम दाने अच्छे मिल थे। शुरू शुरू में ता शिवू भी उसे अच्छा लगता था। अब भी वह उसे प्यार करती है, लेकिन

बड़ी बहू और मगला की आँखें मिली। आँखें चार होत ही रिश्ता प्यार की गहराई में उतर गया। गीली गीली आँखें अनुराग से चमक उठी। हाठ फटके। दा जोड़ी हाठा पर प्यार भरी मुस्कान की रखाए खिंच गए।

'शतान कहा की। रो रो के मरा जी दहला दिया कमबख्त ने।'' मगला रसाईपर के दरवाजे की तरफ मुन्त हुए वाली—'एक तो भूख की मारो, दूसर तेरी य रोनी मूरत दयकर चक्कर आ गया मुझे ता। पानी पिएगी पीले थोडा-मा, लानी हू।

अपनी फूल का हा ना कुछ सुन बिना ही मगला रसाईपर के बाहर चली गई। बड़ी बहू छिन भर ता दरवाजे की तरफ दयनी रही, फिर चुनी को गादी स उठाकर अपनी छाती स चिरका लिया। चुमकारन लगी—'आ-आ आ ।'

चुनी बहननी नहा। अब ता रोया भी नहीं जाता। हाफ रही है। यनी बहू ने हारकर अपनी छाती खालकर उमका मुह लगा दिया। चुनी चुप हो गई। दूध उतरता नहीं। भूख की बावली नहीं सी जान मा का स्नन घोष मींचकर अपना गूराव के लिए जान लडाए रही है। मा की

तकलीफ हो रही है लेकिन यह तकलीफ इस वकत बरदाशन कर सकती है। बड़े जा पाप करत है, उसका य फल भोग रह हैं। लेकिन इस रिचारी वच्ची ने ऐसा कौन सा पाप किया है जो घरती पर आने ही ये अकाल के निन देखने पड़े।

‘ले पानी। मगला ने पानी का गिलास लिए हुए रसोईघर म प्रवेश किया।

बड़ी बहू की बिचार धारा टूटी। फीकीहमी हसकर गिलास के लिए हाथ बढ़ान हुए बोली— हम लोग तो पानी पी पीकर जी लेंगे फूल पर इसका क्या होगा ?

क्या होगा ? इस प्रश्न का उत्तर दोना जानती है यही नहीं बल्कि उह मालूम है सारा गाव जानता है सारा बगान जानता है फिर भी मौत का नाम लेते हुए हर एक की अबान नटखडाती है। दिल दहल उठता है।

मगला चुप हो गई। गम्भीर हो गई। भख का व्रत का बहाना देकर सारा घर आज चार निन से टाल रहा है। घर म अनाज भरा हो तो चार दिन क्या, आठ दिन भी व्रत रखा जा सकता है पर यहा ? कुछ नहा आन हाग चावल लेकर।

अर अभी आने हाग चावल लेकर। तू घबराती क्या है ? मगला माखना देनी हुई बोली— भगवान मय ठीक करणे। ला चुनी को मुये दे। खीच-खीचकर जान निवाल लगी नेरी।

पास आकर चुनी का बच्ची बहू की गाद स लेकर मुस्करान हुए चुनी की ओर देखकर मगना वानी— अरी बम कर। सब दूध तू ही मन पी जा कुछ अपन हान बाल भाई-बहिना के लिए भी छोड़ दे।’

उसन चुनी का अपनी गा\* म खाच लिया। घुराक पान क उम भूधे महार को चुनी किमा तरह भी छाप्ना नहा चाहना थी। वह पूरी ताबत स मा का छानी का अपन ममूना स दबाकर जाक का तरह चिपनी हा र्नी। बच्ची बहू का भ्रूमा और बमदार तन इस वर्गनिन कर सरा।

तिलमिला उठी—'सो आह कमवपत मर!"

गानी देना चाहती थी। तमाम हिंदुस्तानी माताओं की तरह बड़ी बहू को भी अपन बच्चा को गालिया देन की आदत थी। "मर जा। भाड म जा। बगरह किस्म के आशीर्वाद वह दिन म पचासा बार अपन बच्चा को दिया करती थी। और अगर कोई इसपर कुछ कहता तो जवाब देती—'मा की गालिया से ही बच्चे अगर मरते ता य दुनिया आज न दिलाइ देती।' मगर आज चूनी का मर जाने की गाली देते हुए बड़ी बहू की आत्मा बेसाधना चीख उठी। यों बिना बुनाए ही मौत हर घड़ी मेहमान बनने को तयार रहती है। जबान से उफ निकालने म सात के तार टूटते हैं। तब भला ये गाली ।

बड़ी बहू का जी उम गाली को वापस लेने वा बे असर करने के लिए अदर ही अदर बेताब हो घुटने लगा—'ये बच्चे सलामत रहे। सब जादमी सलामत रहे। मुमीबन तो आती जाती रहती है। राम करे सबकी मौन मुये ।

मौत जब दूर थी गाव म कभी-कभी किसीके महा आया करती थी, तब उसम इनना डर न लगता था, लेकिन आज मौत सिर पर नाच रही है। इम लडाई और अकाल का लाम उठाकर मौत अपनी मूख को बेतरह से इजाफा दे रही है, इसलिए आज बड़ी बहू बच्चा से लेकर अपने तक, किसीके लिए भी, मौत नहीं चाहती। वह मौत से भागना चाहती है, जान चुराना चाहती है।

तभी सदर दरवाजे पर शिवू की जावाज सुनाई पड़ी—'नि शक हाक मोशाई! मैं तुम्हारा लीडर होकर एस० डी० जो० के महा चलूगा आमि गभरमेट के बालबो जे शाना तूमि आमार देश को भूखा मार डालोगे?" शिवू के साथ और दो-तीन लोग दहलीज पारकर अब दालान म आ चुके थे। शिवू आग उसके पीछे सोमेन, पाचू का अननय मित्र। वह अब सर पाचू के साथ घर आता है। बड़ी बहू मगला सभी उस जानते हैं। शिवू सबको ऊपर अपने कमरे मे लिए जा रहा था।



चुनी अभी भी रो रही थी। शिवू ने रोव जमाया— 'अरे क्या रा रही है चुनी ? उस दूध पिला दा—और ?'

शिवू ने अपने साधिया की तरफ देगकर कहा— 'तुइ चाय खाभी शोभेन ? अच्छा चार पाच प्याला चाय भी बना देना। जोर थोडा सा नारता भी—हलुवा बना लेना। और कुछ नमकीन भी ? अच्छा नमकीन भी सही सुता। हा तो बाट आई वाज म्पीक हा गभरमेठ'

शिवू और उसके साथी साधिया चढ़कर ऊपर जा चुके थे। मगला और बडी बहू एक दूसरे को देखकर मुस्कराने लगी। बडी बहू बोली— 'चाय बनाओ रानी ! और हलुवा भी बना लेना। भंडारघर खाली हा जाए तो मोताइ के महा स रवा जोर शक्कर के बोरे खुलवा लेना। कल तुम्हारे ज्याठा राजा तगड बनकर गुराज लेन जाएंग।

'स्वराज ? अरे जाई नो तूमि मागो स्वराज,—एण्ड द बाले जे तुम शाला हिन्दुस्तानी लोक ए वाण्ट स्वराज ? आच्छा शाजा आमि तोमाक जमराज देवो।' ऊपर शिवू जी लीडराना मूड म चढ़क रहे थे— 'अर बाबा आमि जानी एइ तो गभरमेठेर पालिसी। एइ शाला चालीस कोटि भारत मातार शोत्तान खिटे पेये विल डाई केमीन विल एण्ड और तब शाला तू आस्क स्वराज ? श बोलबे आमि ब्रिटिश गभरमेठ ! इण्डिया इज अवर यिग—आमार बोस्तु !'

शिवू की लीडरी म एक शान है—दस हा, हज़ार हा दस हज़ार हा किसीको बोलन नहा देता। यह काम बहू मिफ अपन डिम्भ ही रगता है। सोगा का लीडर की उम्मत हा या न टा, मगर शिवू मुगर्जों हर वकन लीडर ह। काग्रम स लेकर कम्युनिस्ट पार्टी तक और हिंदू मन्मभाम लेकर मुक्तिम लीग तक मनुष्य मात्र क जमजात लीडर निवगापाल मुगर्जों अभी कुछ दर पल अचानक ही घापपाण अवाल निवारिणा महाममिति क उम्तर म पन्च गए थ। सामेन उम्का सगयक मशी है। दपतर म कुछ मुक्क बठ हूण तय कर रण थ नि एक डपुशेसन लतर एम० डा० आ० म भिता जाए। गिबू फौजे लीडर बन गया।

एक बार लीडरी सभाल लेने पर शिवू मुखर्जी को फिर कोई टस से मस नहीं कर सकता। सन् ४२ के अगस्त आदोलन में पहली बार शिवू मुखर्जी को लीडरी का खयाल आया था। पाचू का स्कूल उस वकन जोरा से चल रहा था। सात गावा में पाचू के नाम का फरा लगता था। पाचू का बड़ा भाइ होने के कारण शिवू अपने का स्वाभाविक रूप से बड़ नाम और बड़ काम करने का अधिकारी समझता था। अगस्त आदोलन ने स्फूर्ति दी। देश हित के लिए शिवू मुखर्जी ने बहुत अच्छा उपाय साच निकाला।

आदोलनकारिया पर लाठिया और गालिया कौन बरसाता है ?— पुलिस। इसलिए अगर पुलिस को रोक दिया जाए तो आदोलन सफल हो जाए। यह सोचकर शिवू मुखर्जी ने एक फावना लिया और जाकर कोनवाली के सामने की सड़क खोलने लगे। पकड़े गए तो 'इक्लाव जिंदावाद का नारा लगाया। फिर पुलिस वालों का अपने प्रचंड रूप का परिचय देकर डराना चाहा—'आमा के ठीक कर बूझो ना तूमि भावचि। ताइ जयेइ जानाच्चि जे कलिजुगे आमि चानक्येर अवतार। श्राहोनि शाप्तान आमि। एके बारे जाइ खोद डालेगा शाला।''

वाद में जब बेंत पढ़ने लग तो दूसरे ही बेंत पर पुलिस अफसर के पर पकड़ लिए। माफी मागने लगे। छोड़े गए। बात फौल गई। लोग चिढ़ात हैं, मगर इससे उनकी लीडरी पर जरा भी आच नहीं आती।

सोमन जाजिड़ आ चुका था। पाचू के कारण सोमन भी शिवू का अदब करता है। मगर अदब की भी एक हद होती है। शिवू किसी हद को मानता ही नहीं। ज्वाल निवारिणी महासमिति के सब सदस्य शिवू के आते ही एक एक करके चले गए। सोमन बचारा फस गया। पास के गाव से दस युवक उससे मलाह मशविरा करन आए थे उन्हें भी उसका साथ ही साथ परेशान होना पडा। जान छुटाने के लिए सामने न दपनर बद किया तो दादा उसे और उसके साथियों को जबदस्ती अपने घर ले आए। रास्ते-घर अंग्रेजा की पालिमी स्वराज्य सेन व नुम्हे और एम० डा० आ० को

पत्नी और बच्चा को बल पछाह भज रह है। भुखमरा की बन्ती हुई लुट पाट और हमला से दयाल भी डरत है। डानू को डाकुआ का डर है। पचास भोजपुरिये लठल और दा-दो बद्रूके पास रखकर भी सपना म चौक चौक उठने है कि कही ।

दयाल बग क प्रति पाचू का निष्प्रिय विद्रोह अपनी असमर्थता पर व्यग्य बनकर उसके मस्तिष्क म चुभ रहा था। अतर्कित मन म छिपा हुआ यह यम्य पाचू को चिढा रहा था। अपनी इस सीझ का उलट पुचटकर अनेक पहनुआ से देखत हुए सोचने लगा कि हमारा कमजोरी न ही उहे बढावा दिया है। हमारे निष्प्रिय त्याग और सहनशीलता ने ही इनकी स्वार्थी प्रवृत्तियों को हमपर अधिकाधिक भत्याचार करने का उकसाया है। सदिया की आदत न इहे एक झूठा बल दे दिया है। मदाग्नि राग स पीडित चर्बी बडे हुए फुसफुस बदन के मसनगी गद्दा के आगे नगड से तगडा पहलवान भी एडिया रगडने लगता है। बड स बडा बुद्धिमान भी इन कुदजेहन पैसे खारा की अक्च को इनकी तिजारी का तरह बडी बता कर अपन अस्तित्व को साफ भुला देने म अपनी रक्षा समझता है। यह सब इसलिए न कि इनके पास पसा है।

एक दयाल एक मोनाई, गाव भर का अनाज खा जाता है गाव भर के कपड पहन लेता है। हमारी पूराक, हमारे तन दकन के कपड उनकी तिजोरियों म नोटों के बडल सोन चादी और हीरे-जवाहिरात के तोडा की शकल म हिफाजत स रखे हैं। उनकी हिफाजत क लिए भोजपुरिये लठल हैं बद्रूके हैं पुलिस है कानून है—और हमारी हिफाजत ?

पाचू की झुकी हुई आँखें मोहनपुर की ओर उठी। दयाल जमींदार की हवेली गाव हद के पार थी। पाचू अब मोहनपुर म प्रवेश कर रहा था। वापडिया लिखाई पडने लगीं। अब तो इहे झोपडिया कहना भी पाप हागा—मिष्टी की चार टूटी हुई दीवाला के दूह, त्रिनके बाम त्रिके, छप्पर बिके चिघड गुदड बिके, घर-गृहस्थी लुटी।

दा बच्चा की नगी लाग पनी हुई था रामू की वापडी क पास। बच्चे

शायद रामू के ही हैं। पाचू से रहा न गया। पास जाकर देखा, मौत अभी बच्चा के साथ खेत ही रही थी। घड़ी-पल के महमान हैं। रामू की बहू बहुत पतले ही भाग गई थी और रामू लुभेरो म भिच गया था। घर बार, मा-बाप, सब साथ छोड़ गए, बस ये थकी थकी साँसें, एक एक कर पल दिन गिनती, किसी तरह अपना फव पूरा होने तक साथ दिए जा रही हैं।

पाचू मौन का बहुत नजदीक स देख रहा था। बहुत गौर से देख रहा था। इस अकाल म यही हालत एक दिन उसकी और उसके घरवाला की। लेकिन अभी तो उसका पास चावल हैं। घरवाले उसकी प्रतीक्षा पर रहे हाग—दीनू परेश, नही सी चुन्नी, बनक

पाचू फौरन ही बहा से हट आया और तबो से अपन घर की तरफ चलने लगा।

यह फजलू काका अपनी झापनी से तीन निकाल रहे हैं, बेचने के लिए। और यह पेड के नीचे बूने खेतमनि कपर म एक जपोटी लगाए दाना हाया से मिट्टी की एक हडिया घामे, सिर झुवाए छोई हुई सी बठी है। कभी गाव भर की परिक्रमा किया करती थी। पाचू ने इसका नाम नारदजी रख छोडा था। ब्राह्मणा के टीले से यह मछुआ की बस्ती की आर कैमे चली आई? यह भी एक दिन यों ही बैठे बैठ मर जाएगी। रामू के बच्चे तो शायद अब तक मर गए हों। उन्हें कौन उठाएगा? याही नाशों सडती रहेगी? क्या आत्मिया की लाशें या ही सडती रहेंगी। क्या एक दिन उसकी भी लाश इसी तरह ?

पाचू ठिठका। उसकी तबीयत हुई कि लौटकर बच्चों की देख आण। लेकिन उमे घर जाना है। दीनू-परेश, चुन्नी-बनक सब भूखे होंगे।

रामू के बच्चा को नावारिस लाशा से लेकर अपनी बरूपना तक, मारी विचार धारा से हठपूर्वक मन मोडकर वह आगे बढ़ा। कदम तेजी मे आगे बढ़ रहे थे।

यह बेनी की झापडी है। बेनी को बठा है। अपने घुटना पर सर झुकाए उनकी पत्नी बठी है। दो महीन पहले ही उसका ग्याह हुआ था।

नई जवानी, नई उममें और यह धरात । बगी बजा म बनी अगना गाना नयी रघना था । पांचू न देगा दाना की जवानी सूड़ी हो गई है । गाग-गाग बठ रहन पर भी न औरत को म का होग है न म का औरत का । पांचू सोचने लगा, अराल धीन्ति नय दम्पनी का यह मधुचन्द्र उम मगना की याद आई—वे रापा भरी जाय उगता अहृदपा उमका मुस्तराह

चार दिन से वह भी भूयी है । पांचू के कर्म जोर तज पडा लग ।

जाघा के गामन थोड़ी ही दूर पर मोनाई की दूकान थी । मांस का पतली पतली मिल्लिया म चमकती हुई गुला का गुलाई डगमगान हुए कमा से दधर उधर डाल रही थी । गडडा म धसी हुई डगर डगर आये घर घूरकर जग के एक दान की तालाश म मानाई की दूकान क आम-गाम महरा रही थी । कितन ही नर-नवाल द्रुक हुए जमीन म धावल की मिफ एक कनी को खोज रहे थे । बेतरतीबी के साथ उनकी दाण्या बनी हुई थी । औरता के बाल अस्त-व्यस्त तमाम जिस्म की नमें और हडिडया बमक रही थी । बच्चे इंसान के बच्चे नहीं मालूम पडते—ये समूची बस्ती ही इंसान की बस्ती नहीं मालूम पडती ।

झुटपुटी साश धीरे धीरे घिर रही थी । उसके मद्धिम उजाले म ये हिलते डोलते प्राणी

पांचू सोचने लगा ' रईसा और अपसरो की दुनिया म क्या इन इंसानो को कोई इंसान मानेगा ? वे इ ह भूत कहेग भूत । हालाकि वे खुद मुर्दा इंसानियत के भूत बनकर हमारे सिरा पर सवार हैं । हमारी भूख की नीव पर उहोन अपनी सोने की हवेलिया बनवाई हैं । आदमखोर हैवान । "

शहर के राजनीतिक वातावरण म पनपा हुआ पांचू का दिमाग इस समय शौकिया तीर पर जाश खा रहा था । उसके पास इस समय पाच सेर चावल है । वह आज खाना खाएगा । चावल पाने के पहले वह भी भूख मरा मे से एफ था । वह भी भूख की तकलीफ को उसी तरह महसूस कर रहा था जैसे कि ये चलते फिरते नर ककाल । लेकिन यह सतोप कि उसे

और उसके परिवार को आज भोजन मिलेगा उसे तमाम भुखमरा से अलग किए दे रहा है। इसके साथ ही साथ वह यह भी जानता है कि उसका यह सतोप अस्थायी है। उसका मन इसलिए इन भुखमरे साथिया का साथ छोड़ने से इन्कार करता है। परसों से उसके परिवार का भविष्य भी इन्हीं की तरह कटार हो जाएगा। लेकिन इस वक्त तो वह खुश है। फिर भी, अपने साथ ईमानदारी बरतत हुए वह अपने आनन्द को अस्थायी बना देनेवाले दयाल और दयाल-वग के लोग पर, बौद्धिक चढ़प्पन के साथ झुझला रहा है। खाने के मामले में आज वह दयाल और मोनार्ड के बराबर का ही दर्जा रखता है। फिर क्यों न वह उनपर झुझलाए, और क्या न अपने भविष्य के साथिया का पक्ष ले ?

सहसा पाचू का ध्यान टूटा। मोनार्ड की दूकान के सामने पाच छ जीवित काल एक को घेरे हुए छीना पश्टी और हावापाई कर रहे थे। उनकी अस्पष्ट और भयावह आवाजा के सामूहिक स्वर साक्ष की बढ़ती हुई अधियारी को मनहूसियत का गहरा रंग दे रहा था। फिर पाच न देखा, उस घेरे हुए आदमी की चीख इस मनहूम शोर में एक दद पदा करती हुई अचानक घुट-सी गई और वह घिरा हुआ आदमी गिर पडा। पाचू दौडकर पास पहुंचा। उसने देखा, मुनीर बडई था। सास नही चल रही थी। मर गया। हाट फेल हो गया शायद। मुनीर की लाश के जास-यास चावल बिलर्रा था, जिसे बटोरने के लिए लोग गिड्डो की तरह टूट पड थे। उन्हें इस बात का कोई खयाल न था कि उनके पास ही एक आदमी की—उनके ही एक मायी की—लाश पडी हुई है। वे इस समय पूरे उत्साह के साथ ज्यादा चावल बटोर लेने के प्रयत्न में थे। एक बार लाश को, फिर एक बार पाचू को कुछ खोई हुई दृष्टि से देखकर वे अपने काम में लग गए। उनके हाथ छीना पश्टी करने लगे। पाचू चिल्लाया— मार डाला न तुम लोग ने इस बेचार को। पाचू की आवाज सुन जीवित ककालो के चेहरे उठे। उनके चेहर पर एक भाव था। वे सूखी हुई झुरिया, ब धंसी हुई आखें गोया

अनवर रही थी— 'क्या बकता है। हम अपना काम कर रहे हैं।'

दो एक निगाहे पाच के हाथ की पाटली पर भी गड़। पाचू सब काया। वह उठ खड़ा हुआ। उसन एक वार मुनीर की लाश की तरफ गया। मुनीर ने उसके स्कूल की बिल्डिंग म सक्डी का बहुत-सा काम किया था। बड़ा भला आदमी था बेचारा।

लेकिन मन कह रहा था, कहीं उसके चावल के लिए भी छीना झपटी न करे। उसे यह चिन्ता नह थी कि उसका चावल में लोग छीन सकेंगे बल्कि इस छीना झपटी में उसके घबक से अगर एकाध और मर गया तो ?

एक लाश और बढ़ जाएगी। लाशें—मुनीर की लाश, रामू के लावारिस बच्चा की लाशें और एक दिन वह पुत्र भी

नहीं नहीं वह इसे दफनाने का प्रबन्ध करेगा। इसानियत का तकाजा है। और फिर मुनीर ने उसके साथ स्कूल म काम किया था।

बढ़ई नूरद्दीन आज चार दिनों से दोना जून पेट पर हाथ फरकर डकार ले रहा है। अजीम के घर भेटमान है। साझ होते ही बड़े सुरीले गले से टीप लगाता है—

जीबनेर आज फूल फूटे छे

आशवे बोले शाझ बेलाय

बेफित्री से गुजता हुआ स्वर पडोस के भूखे घरों की दीवालों से टकराकर लोगों के लिला म टीसैं उठाता है। नूरद्दीन के घर म कोई नहीं। बाप बहुत पहले ही मर चुका था। एक बहन थी, जिसकी शादी हा चुकी थी। मा थी तो पिछले हफ्ते एक रोज सात दिन की भूख का गुस्ता नूरद्दीन ने उसके गले पर उतार लिया। गला घुटते ही भूखी लागर बुढिया की रह तडपकर अशें मोअल्ला को छेत्ती हुई खुताबद करीम से परियाद करन पहुच गई। मा के मरते ही गुस्से की लगाम

बाबू म आद, लेखित भूख म साझीदार के लिए नफरत इतनी थी कि गुनाह को गुनाह न समझा। भूख म मर गई, इस तरह मन को समझा कर, अजीम की मदद से, उसे दफनान का इन्जाम किया। उस दिन अजीम ने उसे अपने घर खाना भी खिलाया।

अजीम मोनाई का गहिना हाथ है। बचपन से ही उसकी दुकान पर नौकर है। अकाल कभी उसके घर आकने की हिम्मत भी नहीं कर सकता। नूरद्दीन ठहरा उसका लगेटिया यार, एक जान दो बालिव। मुसीबत म दोस्ती का हक अदा करण इंसान का फज है। अलावा इसके नूरद्दीन बड़ काम का आदमी है। अजीम समयना है, जम रोज गार-बपार म वह दूर की बीड़ी ले आता है, वंस ही नूरद्दीन भी वहां तो राजा इन्टर के घर से पगी निकालकर ले आए। अजीम को जब से मोनाई का विश्वासपात्र और प्रधान मंत्री का पद मिला है वह आने को (मोनाई के बाद) गाव क बड़े जादमिया म समयने लगा है।

नूरद्दीन की दास्ती से अजीम का भी कभी कभी शेर के शिकार म सियार की जूठन मिल जाया करती है। इसीलिए उसम दबता है। नूरद्दीन के साथ रहने रहने बहुत दिन पहले एक बार खुद उसन भी मुनीर की बीबी के साथ छेड़ छाड़ करने की हिम्मत की थी, पर मुह की पाई। तब स उस औरत पर उसके दात हैं। पर जूठन चाटने की तबोमत अब नहीं होनी। इसीलिए नूरद्दीन से उसने मुनीर की बीबी के लिए फरियाद न की।

औरता के सामने ही नूरद्दीन मजाब मजाब म उमका पानी उतार दिया करता था। इस बार वह पक म आया है। एहसान का फज पाटने का जब्जा मौका हाथ गगा है। अजाम ने मोनाई के यहा उसका घर और चार घोधे जमीन तिकवाकर पचवीस रुपय उसे त्तिना दिए अपने घर लाकर उस रग्ना नाना बक्त भरपट खाना भी उस खिलाया। इसके एवज म अजीम न नूरद्दीन से मुनीर की बीबी तमय की। साथ ही उसकी यह शन भी थी कि इस बार शेर वन् खुद बनेगा और सियार नूरद्दीन। यह शन



नूहदीन के लिए सख्त थी, मगर अजाम ने उम्र चावल मिनत था। अलावा इसके वे पच्चीस रुपये भी अभी अजाम ही के पास थे।

नूहदीन के चक्कर मुनीर के घर की तरफ लगने लग।

सात दिन से मुनीर के यहाँ किसीके मुहम अन का एक दाग भान पड़चा था। दो छोटी छोटी लड़कियाँ घाद और रुनिया अन बिना मुँसे सीपडी रहती थी। मुनीर भूल के साथ-साथ मतरिया स भी लट रहा था। लेकिन मुनीर की बीबी को आज भी पाचा वक्त की नमाज का सहारा था।

नूहदीन हमदर्दी दिखाने आया। पर मुनीर की बीबी उसकी परस म खरी उतरी।

नूहदीन ने दाव पलटा। मुनीर की बीबी के खुदा म साथ लगाया। इलहाम के चर्चे होने लगे।

मारगज की मसजिद मोहनपुर और मीरगज की हद पर थी। पीढियो से भूतो की मसजिद के नाम से मशहूर थी। नूहदीन ने बताया— “यहाँ एक भूत सबाब करता है। पिछले हफ्त में उधर से आ रहा था। छ रोज से फाके हो रहे थे। शाम की नमाज का वकत। फिर साचा भूता के डर स खुला बहुत बड़ा है। जी बडा करके वही नमाज पडी। नमाज पढकर मसजिद स बाहर आया, तो देखा कि जीने पर एक कले के पत्ते पर भात और भुनी हुई मछलिया रखी है। मैं चकराया। मुहम पानी भर आया मगर भूतो का डर था। सभी कही से आवाज आई— ए खुदा के बदे ये तेरे ही वास्ते हैं। दाईं सौ बगस के वाट तू ही एक ऐसा इंसान मिला जिसने खुदा के खोफ को हमस बडा माना। आज की दुनिया म अजाब बड गया है। दुनिया, खुला को भुला बठा है। मगर जो खुदा को नहीं भुलाता उसको खुदा प्यार करता है। ले ला ले। जी रोज आकर यहाँ नमाज पड। तुझे कोई खोफ नहीं। मैं भूता का तरदार हू। खुदा के हुकम से खुला के वक्तो का इम्तिहान लेता हू। तुझे यंग रोज खाना मिलगा। खुदा के बदे कभी भूसे नहीं रह सकते।”

नूरद्दीन एक दिन शाम को यह करिश्मा दिखाने के लिए मुनीर की बीबी को ले गया। नमाज़ के बाद ममज़िद के ज़ीन पर दो आदमियां ब लिए खाना परोसा हुआ मिला।

उम दिन, पूरे सात दिना के बाद, मुनीर की बीबी न भर पट खाना खाया था।

बच्चिया का खयाल आता था बीमार और भूखे मुनीर का खयाल आता था मगर नूरद्दीन ने साफ जता लिया था कि खुदा की मर्ज़ी के बिना अपना हक अपने प्यारे से प्यारे को भी तुम देा के हकदार नहीं।

अपना भूखी बटियो और बीमार पति के सामन खुदा के घर स खाना पाकर लौटने पर मुनीर की बीबी की आँखें न उठनी थी। जी बेहद क्लपता था, मगर शाम होन ही नमाज़ के बाद परोसी हुई पत्तल का खयाल आता, जिमम गुना व हुकम से उसके मिवा और किमीका हक ही नहा।

गुना के खीफ न मुनीर की बीबी को झठ बोलना सिखाया। आत्मा मोने लगी, स्वाध जगन लगा।

मुनीर की बीबी रोज नमाज़ पढन जान लगी।

नूरद्दीन थाली परोस चुका था। अज़ीम आज पाने पहुचगा। चालाक नूरद्दीन जानता था, वह हर तरह से अज़ीम के हाथ म है। उमने मुनीर की बीबी को अपना हथियार बनाया। पहले अपने पच्चीस म्पय वमूल किए और सोचा कि शहर जाकर मिलिटरी म बन्द का काम टूंगा। उसके लिए औज़ार चाहिए। अपने औज़ार, घर की तमाम चीज़ा व साथ बचकर पहले ही वह अपना और अपनी मा का पट जय तक चला भरता रहा। उसन सोचा भूखे मुनीर से औज़ार खरीदे जा सकत है।

नूरद्दीन मुनीर क घर आया। उसकी बीबी से बोला—'अपना हक भी आज स तुम्ह दता हू। मैं शहर जाऊगा। मेरा हक खुदा की मर्ज़ी स तुम्हारी बच्चिया और तुम्हारे शौहर को मिलगा।

मुनीर की बीबी खुशी गुनी नमाज़ पढन गई।

यह पहला मौका था जब नूरद्दीन नहीं गया और अजीम को शेर बनन का मौका मिला। आज अजीम सुन खाना लेकर मसजिद पहुँचनेवाला था। अपने पच्चीस रुपये वसूल करने के बाद नूरद्दीन ने उसे सब कुछ ममता दिया— भूखी बच्चियों और शौहर से चुराकर अबेले खाने की आदत डलवाकर मैंने उसका जमीर चर चर कर लिया है। अब सच्चाई और पाक दिली की वह अक्ड उमम नहीं रही है। थाली दिखाकर सामन से घसोट लना। वह तुम्हारे पीछे पीछे चली आएगी। सबज बाग दिखाना सबज बाग।

मुनीर की बीवी नमाज पढ़ने गई। इधर नूरद्दीन ने अपना जाल फँसाया। भूख हाथ काटने के लिए तयार हो गई। मुनीर ने सिर्फ एक अठनी के लिए सारे जीजार बेच दिए। अठनी पाकर बारह रोज के भूख और बीमार मुनीर के डगमगाते हुए कमजोर पर जल्द से जल्द मोनाई की दूकान पर पहुँच जाने के लिए उतावले हो उठ थे।

मुनीर की लाश को उठाकर ले चलने के लिए पाच न अपनी ही तरह के सहृदय और मृत्यु भोरु दो मजबूत मरभुखा को राजी कर लिया। चावल की गठरी अपन गले से बांधकर पीठ की तरफ कर ली। चलने में पाच सर चावलो की गठरी इधर उधर हिलती और उमका गला घुटन लगता। हाथों पर एक आदमी की लाश का बोझ और मन भारी बड़ी मुश्किल से रास्ता तय हुआ। चाद और रकिया बाप की लाश को देख कर बहाल हो गई। भूख की कमजारी और बाप की मौत का गम नहीं तो रकिया की वार्शिन से बाहर हो गया। वह बेहोश हो गई। चाद दम दरम की वी रकिया से ज्यादा समझदार बाहोश और इसलिए ज्यादा नरतीफ म।

मा घर पर नहीं है बाप की लाश घर पर आई है और छोटी बहन बहाल पत्नी है बहू क्या कर ? बिनाब बिलखकर रा रही है दम घुटन

लगता है, एक दुःख म हजार दुःख राग आ रह है। जवना गए थे चावल खाने जोर वाली हाथा, या आए। हाथ अठ्ठा !

अन्ना की याद म भूख की तड़प थी जो उस वक्त अठ्ठा की तरह ही अजीब—अठ्ठा स भी ज्यादा अजीब थी।

भूतो की मसजिद के पास झाड़ी की आड म, मुनीर की बीबी खाना खा रही थी। और अजीम उसके पास ही बठा उसके बदन पर हाथ फेर रहा था। अजीम की आंखो म वह शत थी उतावलापन था। जून की शिदत से बीच-बीच म हाठ काटने लगता था। उसकी जाँचे चढ जाते थे। मुनीर की बीबी के वस्त्र पर उसका हाथा का दबाव सग्न हाता जाता था और मुनीर की बीबी—वह खाना खा रही थी और उसीम अपने को सोए रखना चाहती थी।

नूस्दीन मुनीर के मरने की खबर सुनकर उसके घर आ पहुंचा। वगला भगनी मुन्ध्वत बगैर आमुजो के उसे जोर जोर स रना रही थी। निमाग म पच पढ रहे थे—'श्रीरत खाली हुई है। गहर ले चलें। इस तरह म अपन काम आएगी। दो लडकिया की मा हो जाने पर भां अभी बती नहीं है। काठी जचठी है रमनी। चार दिन जोर अच्छी तरह स रसकी पिलाई पिलाई करुगा, निखर उठगी।'

मुनीर की लाग उठाकर खानेवाले तीना आदमियो म से किसीम इतनी तादत नहीं थी कि लाश को कब्रिस्तान तक ल जा सके। घर के पिछवाड़े जरा दूर पर एक ऊमर भेत था। नूस्दीन वही से फावडा ले आया। किसी तरह जमान खाद रहा था। साथ ही साथ उसका निमाग भी चल रहा था—'लौटकर जाए तो दाव फरू। कही भटकी हुई न था। फुमलाना चाहिए। दो रुपय दू। मुसीबत म हमर्दी। मगर हाथ तो शायद अजोमा भी दे। या तो घाव है मगर अजोमा क मामले म माले की जकन पास चलने चली जाती है। और फिर इसपर ता महीना स तदीयन आद थी। से ता ऊपर ही रुपय दगा यह। तब फिर? लौडियों को हवियार बनाना चाहिए। भा था दिन सूटन क लिए सबसे अच्छा मही

तरीका होता है। वरें क्या? खिलाओ र है। मास्टर बाबू की गठरी में अनाज म चाहिए। मगर टटाल तो लिया जाए। देखें नूरद्दीन न फावडा रख दिया। हाफन गया हा। दूसरा आदमी उठा। आप पाच ६ म बहाने से गठरी पर हाथ रखकर टट 'उठाना चाहिए। ऐसे तो हाथ नहीं आएगा को उकसा दें। पन्ने लिखे तो बेवकूफ होते ही इनम। और जिसम मास्टर बाबू तो बम और रकिया को उकसा दें कि मास्टर बाबू च जाए खाना भागें। बस फिर गठरी में घरव न पसीजें तो? यकीन तो नहीं होता। अगर तो या लाश लेकर न आत। नहीं, दाव खाल। तो कौड़ी चित ही पड़ेगी। और जब व तसल्ली बडा काम दगी। बस फिर बाबू म इह साथ ले जाना तो बेवकूफी होगी। ले कि या जाएगा? खर, यह फिर सोच लेंगे। गठरी "

नूरद्दीन ने झट से एक लम्बी आह छ बोला— 'इसकी बीबी बेचारी मसजिद म नम कर देखेगी तो (गला भर आया। आसू पाद म मुह छिपाकर दो एक सुबकिया भी ले डाल बाबू खुदा जान क्या-क्या दिखान वाला है ३ तो मैं मुनीर को दो रुपय दकर गया था। आप मेरी तो कोई औकात ही नहीं पर अपनी सी ६ दस रोख खान को न मिला। मा बिचारी म रुपय लाया था सो उसम से पहले इसे दो रुपय

किम्मत ! बचारा अपनी जान से गया । हाय ! आज बारह दिन से पाक हो रहे हैं उसके यहाँ । जब से रुपये लेकर मोनाई की दुकान की तरफ गया था, लड़कियाँ बेचारी आम लगाए बठी थी कि अब अन्ना चावल लेक आत होंगे । (गलत फिर भरत लगा) बचारिया को यह मालुम नहीं था कि अन्न अब सामें भी साथ लेकर न लौटेंगे । हाय !' (फिर मुन्निया और रोना ।)

पाचू स्तब्ध । अपन जीवन म मुनीर की इस घटना का समावश कर वह दख रहा था । जिस तरह बरफ का टुकड़ा देर तक हाथ म रखा रहता वह हाय मुना पड जाना है उसी तरह मृत्यु का भय पाचू के हृदय पर हम समय तक पूरी तरह से छाकर उस स्तब्ध कर चुका था । मुनीर की लाश के म्यान पर वह अपनी सास देख रहा था । नूरद्दीन की एक एक बात उसके मन की ऊपरी सतह का छूती हुई, उस उस तरह लग रही थी जस उसका मर जाने के बाद उसकी तथा उसके परिवार की कहानी, नूरद्दीन किसी दूमर का मुता रहा है ।

पाचू मुनीर की लाश की तरफ देखता रहा । उसम वह अपनी लाश देख रहा था । गडवा खुद गया । बगर कपन के लाश दफना दी गई । मिट्टी पड रही है । पाचू की लाश पर मिट्टी पड रही है । पाचू छडा देख रहा है । लाश है । दख रही है । मिट्टी का थोड़ा लाश पर पडता जाता है । लाश अब िखाई नहीं देती । गडवा भर रहा है । मुनीर की लड़कियाँ के रोने की आवाज उसके काना को मुनाई दे रही है । नूरद्दीन का जोर जोर से बाह भरना भी वह सुन रहा है ।

गडवा भर गया । लोग फावडे और पैरा से मिट्टी दबा रहे हैं ।

मुनीर इस सत्तार से चला गया । मुनीर अब सत्तार मे िखाई नहीं दगा । मुनीर ने उसके स्कूल की बेंचें घनाइ थी ब्लैक-बोर्ड बनाया था । मुनीर हसता था बालता था, चलता फिरता था काम करता था । थोड़ी देर पहले तक उसका शुमार है म किया जाता था अब था' मे िया जाएगा । एक कहानी बन गया । कालिदास था शकमपियर था, अकबर, सीजर, चन्द्रगुप्त था । मुहम्मद था ईसा था, बुद्ध था, राम, कृष्ण—

परिवार को तडपकर मरना होगा ।

पीडा जोर क्रोध से उसके परा की निरहृश्य गति और भी अधिक शिथिल हो गई । पाच सेर चावला की गठरी लेकर आत वकन उसम उत्साह था । पाच सेर चावला की गठरी के वजन न मुनीर की लाश को उसके घर तक पहुचाने क लिए उस जो शक्ति प्रदान की थी वह इस समय छिन चुकी था । चार दिन की भूख निराशा जोर कमजारी के साथ ही माथ लाश उठाते और ले जान की थकान उसे इस समय तक अत्यधिक अशक्त कर चुकी थी । और उसके ऊपर से ताजी चाट यह आत्मग्लानि और निराशा उस चक्कर आ गया, उसके पर लडपडाए—बटी मुश्किल से उसने अपने को गिरने से बचाया ।

पाचू क आस पास कुछ दूर पर उसीकी तरह जीवित ककास डाल रहे थे । उसे उनस घणा हो गई । उसे अपन से घणा हो गई । उस तमाम अकाल पीडिता से घणा हो गई । उस मर हुण मुनीर से भी घणा हो गई । बम्बखन को उसके ही रास्त म आकर मरना था । और अगर मरना ही था तो किसी दूसरे वकन न मरा—जब वह चावल लेकर आ रहा था, तभी साल को भीत आई ।

पाचू को मुनीर की लडकी पर क्रोध आ रहा था नूरहीन पर क्रोध आ रहा था उन शास्त्रबारा पर क्रोध आ रहा था जिन्होंने शव को छूने स उसकी पाच सेर चावला की गठरी क अपवित्र हो जाने का विधान बनाया । उने अपन ब्राह्मण जोर आब्रूदार होने पर क्रोध आ रहा था । नपुंसक क्रोध क कारण पाचू की आखा स आसू बहने लगे । पर इस बार उस अपन आसुआ पर क्रोध न आया । उसे इस समय राने म ही शान्ति मिल रही थी ।

आसू जोर पकडते गए । अपनी हीन और असहाय अवस्था के ध्यान स रह रहकर पाच के अह का चाट लगती । रह रहकर पीडा के दोर-से उठन जिसस उमका मानस तूफानी समुद्र की तरह उमडन लगता । आसू हुमत् हुमडकर आखा स बहने लगे ।

पाच फूट फूटकर रा रहा था। सुबकिया सास खीच खीचकर उठने लगी।

पाचू के परांभ दम न था। वह वहीं, सेता के पास ही जमीन पर घम्म से बैठ गया। मन म राम राम की रटन थी। नि सहाय अवस्था म वह 'निबल के बल राम' से सहारे की प्रार्थना कर रहा था। अनात शक्ति के नाम का सहारा पाचू का धैर्य धारण करन म सहायता देने लगा। आसू रक् सुबकिया खत्म हुई। आखें खुश्व हुई, दो एक सद आह दिल स निकली।

मगर फिर चिन्ता— 'आखिर इस तरह से बाहर भी क्या नक रहा जा सकता है। मुनीर के यहा चावल दे आने की बात भी शायद घर म सबको मालूम हो चुकी होगी। मैं अब तक नहीं पहुँचा, इससे और भी चिन्ता हाती होगी। लेकिन खाली हाथों—घर म अघेरा और मसजिद म दिया बालकर "

तभी, अचानक ही उसे खयाल आया स्कूल का कुछ फर्नीचर मोनाई के हाथ बेचकर वह उससे चावल खरीद सकता है।

विचार न उसे एकदम स्फूर्ति दी। नया उत्साह आया नया बल आया। पाचू एकदम मे उठ खडा हुआ। मानाड के घर की तरफ चला।

रास्त म वह साँच रहा था, स्कूल की चीजें बच दन का उस हक ही क्या है? वह उसकी निजी सम्पत्ति तो है नहीं। लेकिन कौन पूछता है? और फिर उसस? अगर वह चाहे तो सारा स्कूल ही उठा के बेच दे। उमने ही ता इस स्कूल को बनाया है। इसकी एक-एक इट म उसने जीवन का त्याग टिपा है। दिन और रात एक करव उसन ही य चीजें इकटठा की। और वहीं इसे बच भी दगा।

आत्मा कह रही थी यह चोरी है। पर आत्मा के इस उपदेश पर इस समय उस झुंझलाहट आ गई। वह खाएगा क्या? उसका परिवार भूखा रहेगा? य आदश, धम, पाप पुण्य सब पेट भरे की लीला है। अकाल पडन पर विश्वामित्र ने भी डोम के घर मास चुराकर खाया था। उहाने



तो बाहर चोरी की थी, यह तो अपने ही स्कूल में चोरी करेगा। दरअसल यह चोरी है ही नहीं। दीमकें लग गई हैं। अगर ये दसकेें अगरह र्ग्याग् दिन तक स्कूल में रही तो तमाम स्कूल का ग्ग जाएगा। इन दसकेें का न बेचने से सक्डः दग्गया का स्कूल बिल्डिंग नष्ट हो जाएगी।

डेस्केें बचने के पक्ष में यह दलील पाचू को मन ही मन और भी अधिक् उत्साहित कर रही थी। अपने आपका दस सपाईं से घोग्ग देने का तरण उसे दस समय अपनी बुद्धि पर घमण्ड हा रहा था। नारा घर भूग्ग के भून से छूटकारा पा जाएगा। और दस बहान तो जरूरत पडन पर एक एक, दो-ग्गे करके स्कूल की बहुत सी चीजें बची जा सकनी हैं। इस तरह यह अपने परिवार के साथ बहुत दिना तक अवाल से लड सक्ता है।

मोनाई का घर दस कदम पर सामने था। पाचू ठिठका—स्कूल की डेस्केें बेचने की बात वह मोनाई से कस कहगा? मोनाई उसके बारे में क्या सोचेगा? मोनाई उसका बडा अदब करता है। आज उसकी आंखें सदा के लिए मोनाई के सामने नीची हो जाएगी। घर की बात गुल जाएगी—उसकी चोरी खुल जाएगी। हा चोरी तो यह है ही। पं नक् के पक्ष का अपने लिए उपयोग करना। मोनाई अगर यह सवाल कर बठा ता ?

सारा जोश ठडा पड गया। निराशा सिर में चक्कर बनकर छाने लगी। लेकिन वह लडखडाया नहीं, हिंसा डुला तक नहीं पत्थर की मूर्ति की तरह निश्चल, स्त घ खडा रहा। उसकी आंखा के आगे तारे छूट रहे थे, और कुछ भी नहीं सूक्ष रहा था—कुछ भी नहीं। उस क्षण वह चेतना-शू य हो गया था।

‘अहा! मास्टर बाबू हैं?’

पाचू के बानो में मोनाई की आवाज पडी। जोश न फिर से उसे अपने कब्जे में लिया। पाचू चौका। देखा, मोनाई अपने घर के दरवाजे पर खडा था।

‘बहो, इस बखत यहां कैसे?’

“कुछ नहीं। अरे पा ही चला आया।”

मोनाई पास आया। बोला—“मुनीर बेचारे की मिट्टी ठिकाने स लगा दी तुमने। दूसरा कोई होता तो नजर भी न डालता।

पाच चुप। वह सांच रहा था, अपनी बात मोनाई से कहे कि न कहे।

मोनाई उसे चुप देखकर आगे बढ़ा—‘सुना, बेचारे की लडकियों को चावल भी दिया है तुमने? नरू जस गा रहा था तुम्हारा। बया घरम धरत हो मास्टर बाबू! नहीं तो आजकल का जमाना! गोपीवृष्ण, कोई किसीका नहीं। भगवान जी ने क्या जमाना दिखाया है! राध राध कस नया पार लगगा!’”

मोनाई ने एक निश्वास छोड़ी। पाचू न भी एक निश्वास छोड़ी—उह मोनाइ से अपनी बात कहने का विचार त्याग रहा था। कसे कहेगा, यही सबसे बड़ी उलझन थी यही उसके त्याग का कारण था। लेकिन घर भर भूला भरण। तो फिर

मोनाई की व्यावहारिक बुद्धि भावने लगी। चहरे का भाव पढ़ना चाहता था जघन म दिखाइ नहीं पड रहा था। हाथ जोड़कर बोला—“जब यहा तक आए हो तो मेरे घर म भी अपने परो की धूलि डालते जाओ। आओ न।’

मोनाई के पीछे पीछे पाचू चला। दहलीज म चारपाई पर बठाकर लालटेन की रोशनी म मोनाइ बतें बग्ने लगा। आप नीचे जमीन पर बंठा, पाचू को मान दिया। मास्टर बाबू आए किसी पच स है, मोनाइ ताडन लगा लेकिन मौका साधकर पाचू स ही दिल की बात निकलवानी है। दम देन लगा—“ओर इखवार म आज क्या क्या खबरें हैं मास्टर बाबू? लडाई की क्या खबर है? भाव कुछ ओर चल्गा?”

पाचू को मोनाइ स घणा हुइ। स्वार्थी अभी ओर भी सुटना चाहता है। गाव वाचा की लाशें भी गता जाएंगी क्या? घणा व्यग्न बनकर फूटी—“खबरें क्या, चादी है तुम्हारी।’

बुडू की तरह मोनाइ न हाथ मलत हुए खीसं निपारी—‘हैं हैं ह’

चादी क्या मास्टर बाबू भरा तो जी कलपता है। गीता जी मे जो अरजुन जी न भगवान जी स कहा था कि जब अपने ही न रहेंगे तो तीन तिलाक का राजपाट लेके मैं क्या करूंगा सो ही गत अपनी है मास्टर बाबू। कठी की कसम दिये तले बठा हू झूठ नहीं कहूंगा। मुह म कीर नहीं दिया जाना। पर भगवान जी न कहा है कि करम करो अपना, मरना जीना सिसार का घघा ही है। वस यही सोचके (जाह भरी) राधे राधे।”

देखा पाच अब भी चुप है खामा हुआ है। बोला—‘आज बहुत उदास हो मास्टर बाबू। अरे मुनीर का गम न करो क्यादा। जाया था चला गया। देवो, परभू जी की लीला। मुझसे आठ थान का चावल खरीदा, मैंने उस ज्याण तौलकर दिया। मेरी आदत गुप्त दान करने की है मास्टर बाबू। पर सा भी उसके भाग म नहीं था। कौडी कौडी पर मोहर है भगवान जी न सच कहा है। लेकिन वो तुमने मास्टर बाबू चावल कहा स खरीदा था ?

‘दयाल बाबू के यहा से।

हा। मोनाई ने गम्भीर होकर एक पल के लिए सिर झुकाया। फिर पूछा—‘क्या भाव दिया ?

गए हुए की बात पूछ रहा है कम्बल। जले पर नमक छिटक रहा है। पाचू बेरुखी से बोला—‘क्या करोगे भाव पूछकर ? तुम सब एक ही थैली के चटटे बटटे तो हो।

नहीं बाबू फरक है मोनाई जार देकर बोला—‘जमीनार बाबू से दो पैसे कम पर दूंगा। तुम घर के आत्मी हो, जितना कहो उठा कर दे दू।

पाच खुश हुआ। उस लगा जैसे मोनाई न सचमुच ही उसके आग चावल की बोरिया लाकर टेर कर दी हा।

मोनाई अपनी धुन म कह जा रहा था—‘य जमीनार बाबू अब हमस काट करन लग हैं। इ ह अब यह डर लगता है कि मोनाई अब आघ का साभीनार बन गया है। अर, इहाने सरकार का मूनन बोट बुलवाया है

यह। अपना धान सीधा सिरकार में ही बचा। अड़निय को एक पैसा लिया दिया नहीं। और अब इस बात में है कि यूनन बाट में उस रुपये मन के भाव से विकवाएंगे, जिसमें मैं चोपट हो जाऊँ। पर इन्हें यह पता नहीं है कि मैं भी केवट का बच्चा हूँ। वो पास मारुगा कि जमींदार बाबू देगल हो रहे जायेंगे। हाँ।

मोनाई ने दभ के साथ पनयी बदली और अदर के दरबाजे की तरफ मुह करके आवाज लगाई—“अर याडा र, जरा चिलमतो ले आ बटा।”

पाचू के मन में फिर आशा जगी। तिकड़म और दात्र पच के अछाड में खुश भी कुछ कर दिवान की तबीयत हुई—“अर, मैं जानता हूँ मोनाई। दयाल बाबू क्या खाके तुम्हारा मुकाबला करेंगे। और मुझ क्या मालूम नहीं है, इस वक्त तुम्हारी हैसियत उनसे ज्यादा है।”

मोनाई के मकलन लगा। गदगद हो कर पाचू के पर छुए और बोला—  
सब भगवान जी की न्याय है भान्टर बाबू। मोनाई केवट ने जब से बठी ली तब से किसी बामन, साधू और गोमाता का बुरा नहीं चेता, मास्टर बाबू। सत कहता हूँ तुमसे। फिर मेरा बुरा कौन चन सकता है?”

‘ठीक है। ठीक कहते हो। पाचू जरा उल्लाह म था—’ बड़ा दया धर्म है तुम्हारे मन में। मैं क्या जानता नहीं हूँ।

मोनाई का हुक्का लेकर पाडा आया। देखा मास्टर माशाय बठे हैं। हडबडाकर हुक्का रक्खा, और पाचू के पैर छुए।

शिक्षक का अभिमान जागा। रीव से पूछा—‘क्यों र, आज स्कूल नहा आया तू?’

‘बाडा सबकवा गया। बाप बोला— मैं ही नहीं भेजा था इस। आज दांनि से इसकी मां जरा बीमार है। हूँ हूँ कुछ भगवान जी की दया होने वाली है घर में—हूँ हूँ।’

गुनामलाना तीर पर उल्लसित हाकर पाचू बोला— अच्छा कब?’

‘अभी तो दिन हैं। छठा महीना है। बाकी मिर भारी रत्ता है

जाजकल उमना—सो नडक स बढकर मा की सवा और कौन कर सकता है, मैंन साचा ।

यह मानाई की तीसरी पत्नी है । याडा दूसरी का है । सौतली मा ठहरी बूडे की जवान बीवी । बेट से डटकर सेवा करती है ।

मोनाई याडा की तरफ देखकर बोला— जा र, मा के पास जाकर बठ । और वही बठकर पठ ।

याडा सिर खुकाए चला गया । बश खाचने हुए मोनाइ बोला— य याग एक बार बीए पास हो जाए बस ! भगवान जी ! अत्र ता तुम्हारा स्कूल बन्द ही हो गया समझे । आहा ! तुमने भी क्या चमत्कार कर दिखाया मास्टर बाबू ! गाव की सात पीढी म तुम्हार जसा कोई नहीं हुआ । सत कहता हू ।

पाचू ने एक निश्वास छोडी बोला— हा पर अब दीमकें सारी डस्केँ चाट डालती हैं ।

राधे राधे ! मरी मानो तो कुछ कहू ।

पाचू चौंका । शायद अब बात बन जाए । उत्साहित होकर बोला— बहा कहो !

मरे हाथ बेच डालो न लकड़ी का सामान । दीमकें चाट डालें उसम क्या ? अर अवाल के बाद तुम्हें बिचें यो ही बचवानी पड़ेगी । यो स्कूल के लान म पचीस-पचास लिखा ता मकोगे ।

बिल्ली के भागों छोका टूट रहा था पर अभी एक मज्जिल और थी— आज का खावन । पाच अब ता गया ब किनारे जा ही गया था । प्यामा हरगिड नहा लौटेगा— कहन तो ठीक हो । पर

पर मोनाई ने पर निकाल बोना— मैंने ता स्कूल के भन की बात कही थी बाकी मैं जोर नहा दना । मुझे गरज नहीं है । सत कहता हू । म नाई साथे कहकर टुक म लवनीन हो गया ।

पाचू का नगा उतरा । बात बनते-बनन किगडन गाए । हृष्ट्यडाकर गुन पडा— 'नहीं मुन' कार नहीं । लकिन बात य थी कि तुम ता

जानत ही हा लूट मार का जमाना है, इसलिए घर में बैसा कौड़ी नहीं रखते। ढाका क'क म जमा है। और इस वकन अ हाथ जरा तगो म आ गया है। तुम तो समझने ही हो, यह स्कूल बन्द हो गया और "

मोनाइ ने हुक्का गुन्गुगते हुए ? समझदारी के पूरे बोझ से गदन हिलाने हुए बटा— सब ममनता हू, मास्टर बाबू ! मोनाई के बट न भी अघरे उजाते दिन देखे है। मैं चावल देने को भी तैयार हू।"

पाचू ने दगा मोनाइ ने नस पकड ली। बड़ी सेंप मालूम हुई। बात बनाने के लिए रोव जमाया— "हा, अभी तो त ही लूगा। पर यह रकम तुम उधार ही समझो। जो तुममें फर्नीचर बचकर पाऊगा, उतनी रकम बक से लाकर घात में जमा कर दूंगा।"

बाग कहते कहते पाचू ने खुद ही महमूस किया कि वह 'बगैर जूरुगत के सफाई दे रहा है। मोनाई ने एक बार गौर से पाचू के मुह की तरफ देखा, फिर गदन झुकाकर हुक्का गुन्गुगाने लगा। उसने धाह का अनुमान किया। अनुमान पक्का करने की गरज से वाला— "अच्छी बात है, ता फिर दो तीन दिन में कभी चलकर लकड़ी देख लूंगा। सौदा हो जाएगा।"

पाचू ने देखा, हाथ आए चावल फिर दूर खिसके जा रहे हैं। वह एक-दम से अधीर हो उठा। मन का सत्य उबन पडा। घबराकर दीनता भर स्वर में बाल उठा— 'आज ही सौदा कर लो न मोनाई। घर में चावल की एक कनी भी नहीं है। पाचू सेर की गठरी मुसलमान का मुर्दा छुकर बरबाद कर दो। मैं धम-सकट में पडा हू।"

मोनाई चुप। हुक्का गुन्गुग कर रहा है। पाचू की आंखें भिखारी बन कर एकटक मोनाई के चेहरे पर ही अड़ी हुई हैं। अपनी आबरू मोनाई के हाथों समर्पित कर, वह उससे सुरक्षण की भील माग रहा है। पाचू अनुभव कर रहा है वह गिर गया। सदा से पापित उसका स्वाभिमान इस समय मिटटी के तिलौन की तरह गिरकर चूर चूर हो गया। इतना महान त्याग करने के बाद भी अगर मोनाई न ना कह दी तो ? नहीं-नहा वह एमान होने दगा। एसी नौबत जान पर वह मोनाई के बट के पैरों पर अपना

सिर झुका देगा। भूखे घर में चावल की गठरी के साथ प्रवेश करने के लिए वह आज हर तरह का अपमान सहने के लिए तयार है।

तभी मोनाई हुक्का सरकाते हुए बोला— मैं अभी ही तुम्हें दस-पाच सेर दिए देता हूँ। इस बखत का धाम चलने दो फिर पीछे हिसाब किताब कर ले-दे लिया जाएगा। कोई फिकर मत करो। यह कहकर मोनाई उठा। अन्दर जाने जाते दरवाजे पर ही ठिठककर बोला— 'इसकून की कुजी न हो, मुझे ही दे दो मास्टर बाबू। रातोरान बेंच निकलवाती हागी जिसमें तुम्हारी इज्जत पर कोई आच न जाने पाए।

मोनाई की इस आत्मीयता ने तो पाच का हृदय जीत लिया। पीरन ही तालिया का गुच्छा निकालकर मोनाई को दे दिया— मेजा म जो बागज-पत्तर और रजिस्टर बगरह है उह तुम मेहरबानी करके अपने सामने ही करीने स अलग रखवा देना। समझे !

पाचू के स्वर में अत्यधिक दीनता थी।

मोनाई तालिया का गुच्छा लेते हुए बोला— तुम निसाग्रातिर रहो। मैं अभी दस सेर चावल साए देना हूँ।

मोनाई अन्दर चला गया। वह खुश था भगवान जी न बड़े-बड़े ही य पचास-साठ रुपय का फायदा करा लिया। दस सेर चावल दे के सारी बेंचें अपनी। फिर कौन देता है कौन लता है ? मास्टर बाबू की नजर तो उठेगी नहीं उसके सामने— भगवान जी तुम धन्न हा ! राध राध !

और पाचू मोच रहा था— 'भगवान बड़ा दयालू है। पाच मर गिरे दस सेर पाए। और भा आगे मिलगा। दो मन तो मिन ही जाएगा कम म कम मानाई देवता है। बड़े आटे बस काम आया !

४

बड़ी त्रिफायत के साथ, आधा चौथाई पेट खान पर भी, छ सेर चावल चार दिन म निवट गए। पाचू मोनाई स दस सेर लाया था। मोनाई ने अब तक शायद स्कूल का फर्नीचर औने पौने कर दिया होगा। पाचू ने मोचा—' चलकर मानाई से हिसाब समझ लिया जाए। वसे है तो नवरी काइया, दस के दो टिकाएगा। पर जो कुछ भी इस वक्त मिल जाए उस ही बड़ी रकम समझो। अडतालीस बेंचें और उतनी ही डेस्कें हैं। कम स कम पचास तो दगा ही। न सही पचास चालीस ही दे। इतन म एक मन चावल आ जाएगा। एक महीना तो थानद से पार हा ही जाएगा। वसे माल तो ज्यादा का है। दो मन न सही, डेढ मन चावल तो इतने फर्नीचर म मिलना ही चाहिए। यो तो आज कट्रोल का डिडोरा भी पिट गया है। उसके हिसाब से तो उसे दस रुपये मन बेचना पडगा। पर शायद इस सरकारी हुकम म भी वह कोई पख लगा द। पक्का चार सौ बीस है म मोनाई। खर। मैं उमके नकद रुपये ले लूगा। मानाई कहता ही था—दो-एक रोज म यूनियन घोड का चावल जान वाला हागा। तब तो चालीस रुपये म चार मन चावल मिलेंगे। ठाठ से चार पाच महीनो तक मूछों पर ताव देकर डकार लेंगे। आगे फिर राम मालिक है। जरे हा, जिसने मुह चीरा है वही खान को भी देगा।

दूसरे ही क्षण पाचू को यह बहावत निस्सार जचने लगी। इतने भर गए, और भूषा ही मरे। लोगो ने व्यय ही ईश्वर को इतना दयालु समझ रक्खा है। ईश्वर कहा है? क्या वह घट घट व्यापी अतर्कामी, अपनी आखा से इन भूखों मरते हुए लाखा निर्दोष जीवा को नही दख पाता? अगर वो है तो उसने ही इन सबो के मुह भी चीरे हैं लकिन इह खान को नही दता।

×

×

×



पाच की आखा के सामने जीरित कवाल—मद, औरत, बच्च अपन कमजोर तन की सारी स्फूर्ति को बटारकर दौन्त हुए चल जा रह थे। उनकी मन्दा म घसी हुई आखा म आज खुशी की चमक थी, सूखी हुई हडिडिया म आज उत्साह नजर जा रहा था। किसीके हाथ म फटे चियट है कोई एलुमुनियम या पीतल ताव के घिस घिसाए बतन लिए हुए मानाई की दुकान की तरफ भागा जा रहा है। चारपाइ के पाय हल के फाल मछली पकटने के जाल और काटे वटई जोर लुहारा के जोजार—जिसके घर म जो कुछ भी बचा था उस लिए हुए वह दौडा चला जा रहा था।

आज गाव म कटोल का डिडारा पिटा था। दुजभी चर्वा नया भी आज अरमे बाद चावल खरीदन म समरथ हुई है। अब अकाल के पाव उछडे। सरकार म सुनवाई हो गई। सुना है कुछ गिनो बाद अनाज मुफ्त म बाटा जाणगा। अब फिर से अच्छे दिन बहुरगे। इस बार ईश्वर ने चाहा तो फसल पहले से भी अच्छी होगी। जब कटेगी तो सारा देश फिर स स्वग वन जाणगा।

कटोल का आडर मोत से लडती हुई इन जिदा लाशा मे फिर स ताजगी ले जाया है। पाच सोच रहा था— 'हमारे दश के निवासी कितने सरल हृदय के हैं। उह खुश करन के लिए सिफ बहाना ही काफी होता है। एक लगोटी जोर मुठ्ठी भर अन्न तक ही उह भ्वग के सुखा की चाह है। उह न मोटरें चाहिए जोर त महल। पाचू को याद आया, एक दिन दयाल बाबू ने स्वाच हिस्की की एक दजन बोटलें मगवाने के लिए एक आदमी को खास तौर पर कलकत्ते भेजा था। मगर अस्सी रुपय फी बोटल तक खच करने के लिए तयार होन पर भी ब्लैक मार्केट म न मिली। दयाल बाबू कितने परेशान नजर आते थे। कितने दद के साथ कहा था—'दखिए मास्टर बाबू क्या जमाना आ लगा है। अस्सी रुपय खच करने पर भी स्वाच नहा मिन रही।

'दयाल जमीदार को शराब की एक बूद तडपा रही थी, और दयाल की प्रजा को चादल की एक बनी। कसा विचित्र साम्य था। उसक

कुछ दिना के बाद जब कट्रोल से तीस रुपये पर स्टांच मिलने की खबर दयाल बाबू को मिली थी तब वे कितने उत्साह में आए थे। आज चावल पर कट्रोल हुआ है। प्रजा का उत्साह देखो। मोनाई का उत्साह देखा।”

मोनाई की दुकान के आगे भीड़ लगी हुई थी। बान पडे बात न सुनाई देती थी। नाक पर चांदी की बमानी का चश्मा चढाए मोनाई एक एक धिधड गुन्डे को उपेक्षा के साथ देखते हुए उनकी परीक्षा में यस्त था। अजीम पास ही बैठा हुआ इस कबाडखाने की प्रदर्शनी का हिसाब मोनाई के आदेशानुसार खाने पर टाकता जाता था।

मोनाई की दुकान से दस कदम दूर, बायें मोड़ पर एक पेड़ था, जिसकी पत्तिया इंसान के पट की आगे की बुझान के काम आ चुकी थी, जिसकी कई डालें इंसान की भूख से उलझ कर टूट चुकी थी, और जिसका नगा कबाल भूखे बगाल का प्रतिनिधि बनकर मोनाई की दुकान के सामने गूंग गवाह की तरह खड़ा था। पाबू उसके नीचे खड़ा खड़ा मोनाई की दुकान के सामने का तमाशा देखने लगा।

‘दा कटोरे और एक घोती। ये घोती है? हि ससरी फोकट में भी महगी है। लिख ले, लिख ले, ६ पसे भोलू के नाम। साला कट्रोल का भात खाएगा।’ कटोर बतनो और घोती-कपडा के ढेर पर फँकते हुए मोनाई न अजीम से कहा।

अजीम की न रकनेवाली कलम आगे बढ़ी। सिर झुकाए हुए, लिखते लिखते वह बोलता भी जाता था—‘भालू—६ पसे।’

भोलू नाम के नर कबाल की वापती हुई धीमी आवाज गिड गिडाई—‘पट न भरेंगा मोनाई। चार आने चार आने तो लिख लो। दस दिन के भूखे हैं।’

मोनाई डपट पड़ा—‘अरे तू भूखा है तो यहाँ कौन पेट भरके खाता है? तुम लोगा की दशा दख देख के सास तक तो अमाती नहीं पेट में। ६ पसे कम हैं व? साला का जित्ता जादा दा उता ही हाथ पसारेंगे।’

भगवान् जी ने गीता जी में कहा है कि सनीय से काम लो सो नहीं होना । हु ! ये अनमुनिया का बटोरा और थाली चार डबन पटन के नाम ।”

बचन घाले की सौदा करन का हुक न था । छरीदनवाला मनमान दाम लगा रहा था । तांग जल् स जल् अपनी चीजें बेचकर चावल पाना चाहत थे । सत्तर जस्ती आदमी सडे थे । मोनाई की दुकान में कपटो का डेर था टूटे पुराने बतना का डेर था, तोहान्नगड मछुआ के जाल चारपाई व पाय बगैरा जमा हो रहे थे । चावल वहीं भी नहीं दिखाइ देता था । मोनाई का कश बाकस भी वहाँ नहीं था । मानाई बकता था, गालिया देता था माल रखता था और अजीम स चिटठे में दाम टक्काता चतता था । सबके नाम लिखकर बाण में पसे वगरह बाटे जाएंगे यह सबसे कह दिया गया था ।

हर शकम जल्दी में था । हर शकम यह चाहता था कि उसकी चीजें पहले खरीनी ली जाए । चिटठ पर अपना नाम और दाम टक् जाने के बाद हर आदमी अपने चावल पाने के अधिकार की सुरक्षित समझता था । भूख की बेचनी जरा दर क लिए बुच-मी जाती थी । चिटठे पर नाम लिख जान के बाद लोग दुकान से हटकर धासपास ही धरती पर या तो लेट जात थे या तो चार की टोली में बटकर बाने मठारते थे । कोई आठ कोई दस, कोई बारह दिना से भूख के शिकञ्ज में अपने परिवार के साथ जकडा हुआ, पास आती हुई मृत्यु की भयानक, भयानकतर भयानकतम रूप से देख देखकर, भय और चिंता के जड स्वरूप की अनुभव करत हुए शूय में लगे रहा था । पैरा तले दबी हुई चीटी का तरह, सत्ता के भार से दबा हुआ गुलाम इसान बडी ही मुश्किल से जीवन का मोह तोडकर अन्तिम क्षण की प्रतीक्षा में अपनी सारी मनोवक्तियों को बडी लाचारी के साथ मृत्यु में एकाग्र कर रहा था । बटोल की शह पाने हा वह मृत्यु के पज से जान छुटाकर भाग निकला । जीने क लिए अगर प्राणी को एक पल भी और मिल जाए तो इससे बटकर मुशी की दूसरी बात ही क्या हा

सकती है ?

पाचू के सहारे टिककर खड़ा हुआ पाचू यह तमाशा देख रहा था। अपनेपन को इन तमाम लज्जती हुई जानी भे लीन कर, एकात्म भाव से अपनी चेतना और बुद्धि का वह इस तस्वीर में एकाग्र कर चुका था। हर आनी-जानी शह के साथ उसकी निगाह दौड़ती, निमाग दौड़ता। शहर के राजनीतिक समाज में पनपा हुआ बगानी, दिमाग मजबूरी की ज़ज़ीरा में गले गले तक जकड़ हुए, भूखे-नगे गुलाम (मगर इंसान) की हालत पर गौर कर रहा था— इसे बर्हिसा का आदश भी तो नहीं कह सकते। इस यागा का मोहत्याग भी नहीं कहा जा सकता। कुत्ते बिल्ली की मौत !” फिर सोचा— कुत्ते बिल्ली भी आमानों के साथ अपने पेट के हक से हटाए नहीं जा सकते। वे मरते मरत भी अपनी पूरी ताकत और आवाज के साथ मौत बनकर सामने आने वाले हर जुल्म से डटकर मोर्चा लेंगे। मगर हम तो भुनगो की मौत मर रहे हैं न आवाज, न जोर !”

पाचू मोच रहा था—‘क्या दुनिया के किसी देश, किसी कोम का आदमी अपने लिए यह मौन पसंद करेगा ? फिर क्यों नहीं उस अजाम का मयाल आता ! वह क्यों यह भूल जाता है कि जो अत्याचार मनुष्य अपनी सत्ता के जोम में किमी दूसरे पर करता है, वे ही उलटकर कभी उसके ऊपर भी हो सकते हैं ?”

पाचू तस्वीर को उलटकर देखने लगा। मोनाई की दूकान पर, समझो कि उसकी जगह पर भोलू, पटल, तिनकौडी या कोई भूख का सताया हुआ आदमी जबरदस्ती चक्कर बठ गया हो, और मोनाई को वह अपनी ही तरह दस बारह रोज तक भूखा रखने के बाद चावल की भास दिसा दिलाकर ललचा रहा हो उस हालत में कबकाल मात्र मोनाई किस तरह गिट-गिटया, परेशान होगा—इसकी कल्पना करने से पाचू को एक तरह की खुशी हुई। उसकी इच्छा होने लगी कि एक बार भूखा रखनवाला को भूखे रखकर उनका तमाशा दिया जाए।

दयाल बाबू राय भुवनमोहन सरकार मिस्टर् जाडन, लेडी चटर्जी,

लाड—पाचू की कल्पना हर एक बड़ आत्मी की भूख से तडपन हुए चित्र देख देखकर हिसक जान लूटने लगी। व्यक्तिगत सत्ता के लिए लड़ने वाले एक बार भूख से भी तो लडकर देखें। दुनिया को राहन की नमन वगने का दावा रखनेवाले ये बने हुए मसीहा खुद अपने पेट से भा तो एक सवाल पूछकर देखें—क्या वे पेट की गाली बर्णन कर सकेंगे ? कोइ कर सका है ? तब फिर वे किसी दूसरे का क्या देना चाहते हैं क्या द रहे हैं ?

शाली के पानी में चाद को छार बहने हुए बच्चे की तरह घमंड को उभारती हुई खुशी की तमक पाचू के चेहरे पर छा गई। अपने सामने अपने ही बडपन की डील द देकर बगन हुए अपनी ही आवाज को वह एक महान आत्मा की वाणी की तरह सुन रहा था।

उस वक्त पाचू मास्टर का पेट भरा हुआ था। मोनाई से बेंवा का हिमायत रिनाब समझने के लिए आया था तो यह भूखरा का हिमायत सामने आ गया। उसके आम-नाम चारा तरफ टानिया में जगट जगट फनकर बंटा हुआ जन-गमूट चावल की आस में मतोप मुख का स्पश पाकर बह रहा था। या तो आजकल हर वक्त, हर रोज आत्मी बहना ही रहता है मगर आज अलग क वाज उरा गुंभी में बहता।

बीच बीच में चारा तरफ निगाह दौटाकर पार सागा क चहरा पर खुशी का भ्रमण लगा रहा था। उसकी पीठ पीछ ही, पड क पल्ली तरफ, केप्टा नती भ्रने पड़े हुए स्तर को अपनी पूरी ताकत खन करके, पुराने ब्रमान की गुं अपनी ही बुनद आवाज क स्पष्ट तक ऊठा उठाने की कोशिश कर रहा था। बहावन थी कि बप्टो बों ता मीर पाट तक आवाज जाए। अपनी पूरी आवाज क माय बानन की कोशिश में जती जती हांफता हुआ बप्टा बह रहा था— उसने मरी बहन को पर से निजाम दिया। बह दिया हमारे पर में तर लिए खान को नहीं है। बटा, भाई क जा जब बखान खनम हा जाए तो सीट आइयो। अर पूजा... में भाई हू ता क्या नू खनन को नहीं ? ऐं ! घरम की भाना ता नू ता

उसका पनि है—स्वामी । तूने उसका हाथ पकड़कर जीवन मरन की गाठ बांधी । और जब विपत्ता पड़ी तो वही हाथ पकड़कर उसे घर से बाहर निकाल दिया । एँ ! इससे बढ़कर नीचता और क्या हो सकती है ? उस यखत, सच्ची माना निमाई, इत्ती धिरना हुई कि देखो, आदमी कित्ता नीचे गिर गया है ! मन म बड़ा बैराग उपजा, तुमारी कसम । इस सनसार से चित्त फट गया मेरा । मगर, भमझे, निमाई ? उत्ती बला अपना धरम करन से में भी नहीं चका । चट से मैंन भी उसी दम कुमू नोनी की मा को हात पकड़कर घर से बाहर निकाल दिया । वो साला समचता होगा कि उसके निकाल देने से मेरी बहन का काई ठिकाना न रहगा । अर, केष्टो नदी अपनी जान देके भी अपनी बहन को बचाएगा । मैंने गिनी से सफा कह दिया कि बिंदो अपने भाई के आई है, तू अपने भाइ के जा । चल निकल । मरा बटा समझता होगा कि वही अकेला अपनी गिनी का निकाल सकता है । अर मैं उससे भी बढकर साढे सान हात का कलेजा रखता हू । केष्टो नदी अपनी जान का पक्का है—हास्य । '

पाच ने अनुभव किया कि अन्तिम वाक्य कहने हुए केष्टा नदी न अपनी आवाज को खीच-ब्याचकर, किसी तरह अपनी बुलंदी का फिर से नया रिकार्ड स्थापित कर ही दिया । वह सोचन लगा—'शम जब अपनी हृद से गुजरकर वेशर्मी बनती है तब उसकी चेतना से बचने के लिए आत्मी अपनी असलियत का जोर शार से टिटोरा पीटकर उसे 'याययुवन सिद्ध करता है । चेतना प्रेशर्मी का घाना छोड, 'याय और सत्य का अभिमान धनकर इंसान को हीनभावना की नजरों में बचाती है । इस बात को वह अपने गाव के आदमियों में इधर बराबर नाट कर रहा है । हर आदमी जिसके शरीर में जर्रा भी तावत है—और आवरुदार तो करीब-करीब सभी एक विस्म की नूटी जकड की आढ में दद का छिपाए हुए मन ही मन मचत रह हैं । खाने को मिलना नहीं । परिवार के पुरप अपनी जिम्मेदारी को महसूस करत-करत, अपनी मजदूरिया का ध्यान करत करत, पागल हुए जा रहे हैं । आया के सामने देत रहे हैं—बच्चा की हडिडया दिन ब-

मिथ प्रेम ही जा रही है और मांग मूकता जाता है। पगनिया क उभार म  
पेट स्वा घना जाता है। आँखें पनी अघेरी बोठरी म मिथिमान हुए मिथ  
की तरह गड्ढा म सिगाई देती है। हाथ-पद मूकतर सज्दी हा गए हैं।  
घाने की आम मरती जा रही है—और बच्चा भा। यह दय्यतर कौन गगा  
याप होगा जिगवी मर्णांगी पर सातत त भरस जानी हागी। अपना और  
अपना आश्रित्त का पट त भर साने की मजबूरी मिसरा बजजा पकठकर  
न मसोस दती होगी ? यह अपन बच्चा का पेट नहीं भर सकता, अपना  
पत्नी, यूके मा याप, आश्रित भाई-बहता को खाना नहीं द सकता यह गु  
अपने को भी नहीं खिला सकता। और फिर भी यह जी रहा है। यही  
उस राल रहा है।

जीवन की सबसे बड़ी असफलता का तमाचा खानर इतान तिल  
मिला उठा है। ईश्वर स लकर अपन सब, यह हर एव के प्रति विद्रोह का  
भाव रखता है। जीवन की टूटती हुई ठोर और जीवन के माह म बराबर  
खीचतान चल रही है। मुबह होती है हर रोज आदमी अपने खयालो म  
ताजगी लेकर उठता है कि आज खाना मिलेगा—कही से अचानक कुछ  
करिदमा हो जाणगा जोर सबसे सामने घाने की घालिया आ जाएगी।  
जो कही ऐसा हो जाए तो चारा तरफ खुशी की लहर दौड जाए। गाव का  
चेहरा पलट जाए। मोनाई का मू इत्ता-सा होके रह जाए कि अर, मेरा  
अब माल कौन खरीदेगा ?

आदमी दिन भर अपने को आस दिला दिलाकर बहलाना रहता है।  
ज्यों-ज्यों दिन ढलता है, रात आती है उसकी उम्मीदो पर भी अघेरा मड  
राने नगता है। वह गम्भीर और फिर चिडचिडा होने लगता है। मौत क  
आजम म तारो को भूखी निगाहा से देखत हुए किसी दद भरे की खीख  
बेसास्ता कराह उठती है। अघेरी रात मे दूर-दूर तक चीखने और कराहने  
की आवाजें आती है। हिस्टीरिया के दौरे म गेते चीखत और इधर उधर  
भागते हुए इंसानो के साथ कुत्ता का शोर मौत की दहशत से लोग का  
दिल हिला दता है। रात जाखा म कटता है और धीरे धीरे चमत्कार

की तरह आनेवाले ग्पहरी उजाले की शह पाकर सूनी शाखा पर चिड़िया चहचहा उटती है।

आस का टूटना हुआ दखकर आदमी चिड़चिड़ा रहा था। भूख बआमग बमहारा हो गई थी। भूख का ध्यान छोडकर भोग किसी और तरफ अपना ध्यान लगाना चाहते थे, मगर उमके लिए भी कोई चारा न था। स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध शारीरिक बल के साथ-साथ टूटता जा रहा था। बहुत उन्नेजना हाने पर एक दूसर के शरीर से नोचा पसोटी कर के हाफ जान थे। यह पस्ती भूख की परती के साथ-साथ दिल की आग को दुबाला करक भडकानी थी। मन के किसी पने मे शारीरिक सुष का मोह हाने पर भी अपनी पूरी चेतना के साथ, मनुष्य स्त्री पुरुष के शारीरिक योग म नफल करन लगा था। किलने ही घरा स पत्निया निवाली गई और कितनी ही पत्निया अपन पतिया को छोडकर चली गई। औरता और छोटे बच्चा स रिश्ता टूटने लगे। मा बाप, बहन भाई भी खलन लगे। एक दूसर की सूरत दखत ही आखा म खन उतर आता। हर आत्मी यह सोचने लगा कि अगर दुनिया म वही अकेला होता तो कभी भूखा न मरता। आदमा आदमी का अपना जानी दुश्मन समयन लगा। पन्ामी और जान गाने क योग तान तीन पीडियो की छोटी स छापी वाता का याद कर एक-दूसर स लडने के मौके पोजने लगे।

मध्यवर्गीय आवरदार अपने दिल के गुवारो को आबरू की फगी चादर म बाधकर, गाव भर म उमे बिलेरत हुए चलने। इनकी दगा और भी बुरी थी। नगे पूमन पर भातिपुरी घोती जोडा की बाने कग्ना, बाबाराज के उतीस पक्काना का बच्चा। हर एक आवरदार के दादा या परदादा के यहा दयान जमीदार का दादा या परदादा गुमायता रह चुका था—भूख से तडपत हुए पट की बडी बगी वाता मे बहनाकर अपन दद का दिन ही दिल म बस रखन की हर काशिश पानो की तरह बह जाती थी।

पाचु अपन ही घर म दखना है, पास पडोस म भी देखना है आदमी भूख स ब्यादा अपनी आबरू की रक्षा करन के लिए परेगान है। तरह-



तरह के उपाय सोचता है, और उसके सारे उपायों में मनसूबों पर पानी फिर जाता है।

हारान भट्टाचार्य के घर में तीन दिनों से काँके हो रहे थे। अपने घर के दरवाज़े बंद रखने पर भी उस बराबर यही शक बना रहा कि दुनिया वालों का उसके यहाँ अकाल जाने की खबर लग गई है। यह चीज़ उस बराबर परेशान करती रही। तीसरे दिन एक उपाय सूझा। घर से बाहर निकलना और लोग सब बात निकाल निकालकर यह जाहिर किया कि उसे घदहर्मी हो गई है और वह बाहुज्ये भोग्याय के यहाँ चरन लेने जा रहा है।

रिश्ते बहुत खल रहे थे। परेश घोपाल ने एक दिन जवानक ही अपने छोटे भाई और विधवा बहन पर अनधिक सबंध का तोपारापण कर देना को घर से निकाल दिया।

कानार्द घटक के बाप मर गए थे। जाबरू की रक्षा के लिए धाढ़ करना जरूरी था। कानार्द ने दयाल के एक समृद्ध गुमास्त परान हाजदार से सौदा तय किया अपनी पत्नी का जब्तस्ती बश्या बनने पर मजबूर किया। और जब परान बगैर पसा-बोड़ी लिए हुए ही जान लगाता यह गुस्सा सपागल हो गया। दाना की गाली-गलौज़ और चीप गुत्तार मुनकर मकान में आमपाम के लोग की भाँट जमा हो गई। जिम थाबरू को बचाने के लिए उनमें अपने ही हाथों अपना पत्नी की आरम्भ मवाद था, यह दग्धन भेग्न ही चुट गई। कानार्द की भुग्मरी पत्नी भी सपिरा हुई अपना साज़ की लाग को मा मदन हुए भेग्न रनी थी। कानार्द घटक का पक्का देखर जमानार का गुमास्ता परान हाजदार भी चीरकर खतना बना। कानार्द आज पागल होकर घूमता है। पागलपन में वह जिमाको नुतगान नगपत्ताना गिफ अपनी आरम्भ की गरी बपारता है।

हृ एन के घर का बहानी हर एक का मानूस है। फिर भा आरम्भ का गरी गान का महारा नहा छोला जाता।

धम्मा प्रतिशत भन घरा का बटू बटिया मजबूर किए जान पर पमा मा रान के सामच न अदश भग् और चिनात्रा का उनगन न हत्थर

दो घड़ी गम गलन करने की नीयत से बेश्याए हो चुकी हैं।

जातिया मिफ नाम लेने के लिए ही रह गई हैं। वण भेद को कोई टक मेर भी नहीं पूछता। हिंदू मुसलमान का भेद मिट चुका है। सभी भूखे हैं सबकी ग्वा सी ही हालत है। सब लोग दुनिया से परेशान नजर आत हुए भी दरअसल खुद अपन से ही परेशान हैं।

पाचू सोच रहा था, अगर उसका घर म भी कभी बहुत दिना तक धकाल पडने की नीयत आई तो क्या रिश्ते आवर, अपन परामे का ममता मोह शील विनय—क्या यह सब कुछ उसके घर म टिक सकेंगे ?

इम प्रश्न न पाचू को मन ही मन चौंका लिया, दहला लिया। मन म एक बार यह बात उठ जाने पर इससे बचना भी पाचू की भुविबल मातूम हो रहा था। इम नग्न सत्य के तज का वह वशित नहीं कर पाता था। वह अपने घर क हर आदमी को, दुनिया की रफ्तार दस्तत हुए आने वाले समय के तराज पर तोलने लगा।

सबसे पहले उसका ध्यान शिशू की ओर ही गया। घर मे जो कुछ भी बुराईया आएगी तो वह दाग के ही कारण। मा तो ऐसी दशा होन से पहले ही मर जाएगी—जहर मर जाएगी। उस मर ही जाना चाहिए। भावज को दादा बश्या बनान पर मजबूर कर सकत हैं—हालाकि बोधी एमी है नहीं। वह बड ही दृढचरित्र की हैं। तुलसी के आसार या भी अच्छे नजर नहीं आ रह। मगला बनलाती थी कि वह काकी नवर धाठ के भाई से कुछ गडबड कर आई है। और मगला ? नहीं, नहीं, न न

इम दिशा म कल्पना की ढील पाकर पाचू का मन एमदम से अस्थिर हो उठा। उसके सिर की नमें तन गइ। दिमाग पर जहरत स फसादा बोध पड गया। मन की बचनी न पागल-खूनी की तरह हिंसक रूप से उत्तजित होकर उस बुरी तरह से अस्थिर कर लिया। उमकी धाखा मे खून उतर आया, भुटिठया तन गइ जबडे मिच गए—उसका सारा शरीर आतरिक उत्तजना के वेग से काप उठा। उसकी चेतना और विचार शक्ति कुछ

क्षणों के लिए तुप्त हो गई। तभी सहसा उसका ध्यान बाहर की एक घटना की तरफ बरबस खिंच गया। और वह बच गया।

उमके पास ही, थोड़ी दूर पर दृगामा मचा हुआ था। तुलसी बोटम अपनी पत्नी की फटी हुई धोती खींच रहा था। और वह अपनी शक्ति भर चीख चीखकर रोती हुई उस हजार जगह से फटी हुई मली धोती को अपने तन से चिपकाए रखना चाहती थी।

तुलसी कहता था—“अपनी धोती दे दे। मोनाई स चावल लूगा।

उसकी पत्नी कहती थी कि तुम अपनी धोती क्यों नहीं बच देते ?

तुलसी का कहना था कि मैं मरतू हूँ दस बार बाहर भीतर नौड धूप करूंगा तो खाना मिल भी सकेगा। तू औरत बानी तेरा क्या दरवाजा बन्द करके कोठरी में पड़ी भी रह सकती है।

तमाशाइ दानों तरह के थे। तुलसी के पक्ष वाले ही ज्यादा थे। नज़ीरों पश की जा रही थी—कद्यों के घरा में औरत इस तरह नगी बठी है।

पुष्प शक्ति के आग अंत में स्त्री को झुकना ही पडा। गहरी चोट खाकर अशक्त नागिन की तरह तुलसी की पत्नी अपनी लाचारगी पर फुफकार कर उठी। कुचला जान पर अह उत्तजित होकर उसके भूये शरीर में फुर्ती ले जाया था। आसुआने बहुत तिनो से धाखा में जाना छान दिया था मगर लाजस विना लत हुए आज उसका दिल पानी पानी हाकर बहा रागा। जान जान कह गई— औरत की राज भी बचकर खा लो ! क तिन पेट भर लागे ?

तिनकौड़ी अच्छे तिनो में नम्बरी पियकरुडो में गिना जाता था। जाज भी उमी रिन्दी फिनासफी में अपने तिल के दद को छिपाए रखना है। तुलसी की घरवाली के फिकरे पर उमने आखिरी घुटकी छोड़ी— लाज ही नहीं नकवी, औरतें भी विकेंगी। बाकी रहा पट—  
हे S हे S हे S !

गले में बनावटी हसी निवालकर तिनकीटी ने सचाइ को मनदृसियत का जामा पहना दिया ।

बोलाहल ! गला घुटते हुए कमजोर मजबूर जगली जानवरा का बस गुप्से स भरा हुआ करण आनना ।

अपने खयाला स चौककर पाचू ने मोनाइ की दूफान की तरफ दखा । नोग आप मन थे । दूफान पर चडे लीटन थे । नोश म अपना को भी मुबतते हुए बढ रहे थे । अपनी ममा तक पीटा और शोध को जताने के लिए उहे अपनी हजारा दरस की भाषा म ले दो अच्छर भी न मिले, आदिम युग के मनुष्य की तरह, अपन प्राकृतिक रूप म, व्यक्ति की पीडा समाज बनकर चीख उठी ।

ठठरीनुमा पड के नीच बठे हुए पाचू के बाना से लेकर आत्मा तक, उस चीख की ग्लि पर आग सा चलानी हुई गूज स बिध गई ।

हजारा साल की अनुभवी मस्कृति के नीचे दबी हुई भाषा को मानव न दड लिया—चारा तरफ से मोनाई को घेरकर गालिया और सख्त बात मुनाई जाने लगीं ।

दूर स कुछ भी समझ म नहा आता था । पाचू सोचन लगा मे माजरा क्या है ? जान पडता है मोनाइ ने कोई नया टारपीडो चलाया है । वह उठकर दुकान के पास गया । आसपास के दूसरे तमाम लोग भी दुकान की तरफ भागे ।

मोनाई कहता था, ' रावल तो सरकार के पास ह । पस ले जाओ । '

लेकिन पैसा का हागा क्या ? पस छाए नहीं जा सकत । उन्हें देख-देखकर अपना जी भने ही भर ली । साना चादी हीरे जवाहरात—ये सब पेट भरे वा दबोसता है । भूखे के लिए इनका कोई माल नहीं । लाम्बा अरवा का हीरा अगर ला लिया जाए तो वह जान का दुश्मन बन जाता है । जहर को जादमी ने बोहेनूर का रतवा दिया है । पुदी के प्यार म



ही लोग एक कदम पीछे हट गए थे, मगर ठगे जान की खीझ लोग म मोनाई के रोब स भी ज्यादा तज थी। भूखे भेडिया की तरह लोग उसके ऊपर टूट पडे। बुरी तरह से उसकी गत बनान लगे। हर चीज फेंकनी शुरू कर दी। कुछ लोग उसक घर के दरवाजे तोडने लगे। अजीम अपनी जान बचाकर भाग निकला।

बदले क जाश म भीड मोनाइ के घर के अदर भी जा घुसी। घर की हर चीज ताडी फाडी जान लगी। मोनाई की पत्नी छाती कूट कूटकर लोगा को कोसने लगी। उसपर भी मार पडी। याडा पिटा। मोनाई पर तो लोग ने धूका, उसक बाल नोचे उस बुरी तरह स मारा। घर म लूट पाट मचा दी। जो चीज सामने आई उसीपर गुस्सा उतारा जान लगा। कुछ लोग रसोईघर म घुस गए। तयार रसोइ को खाने क लिए आपस म भी चल गई। सारा अन्न इधर उधर बिखर गया। घर की एक एक कोठरी उलटकर रख दी गई। कुछ लोग ने सहखान का पता पा लिया। भय की सम्मिलित शक्ति ने दरवाजे तोड दिए।

गोदाम म बारिया पर बोरिया चुनी हुई थी। सारा गाव महीनों खाए और अनन चुके—इतनी। उह देखकर जनता खुशी से पागल हो उठी। चारो जोर कोलाहल और भयानक अट्टहास गूज उठा।

मोनाई की पत्नी और याडा चीख चिन्ला रह थे। मानाई पिटा पिटाकर, चुपचाप निविकार मुग्ण से खडा खटा अपने घर की लूट पाट को देखता रहा। चावलों की बोरिया चीरी जा रही थी। चावल गोदाम म बिखर रहा था। जनता हस रही थी।

अचाक् हसी की गूज मे गोलियो की आवाज गूज उठी। कई लोगो के लगी। लोगो ने देखा, दयाल के सिपाही गोलिया दाग रहे थे डडे बरसा रह थे।

खुशी मौन की चीखो कराहा म बदल गई।

अजीम दयाल जमींदार के लठठ और बडूकधारी सिपाहियो को लेकर लौटा था। बह बड जोश स सिपाहियो को लागो पर डडे और गोलिया

दरगाहों की गार्गी कर रहा था।

चारों तरफ घंटाघरों की आवाजें गूँगी थीं। गूँगी की आवाजें मोर्चा के चारों तरफ गूँगी थीं। दरगाहों की गार्गी के चारों तरफ गूँगी थीं। गार्गी की आवाजें मोर्चा के चारों तरफ गूँगी थीं। गार्गी की आवाजें मोर्चा के चारों तरफ गूँगी थीं।

मोर्चा के चारों तरफ गूँगी थीं। गार्गी की आवाजें मोर्चा के चारों तरफ गूँगी थीं। गार्गी की आवाजें मोर्चा के चारों तरफ गूँगी थीं। गार्गी की आवाजें मोर्चा के चारों तरफ गूँगी थीं। गार्गी की आवाजें मोर्चा के चारों तरफ गूँगी थीं।

पांचू दूर एक कोठे में खड़ा हुआ। वह सारा काँट देख रहा था। जनता का भीषण विद्रोह भी देखे और उसका अमातुदिक दम भी। आवरू और स्वामी ने उसे कायर बताया था। मध्यम का कुत्ते की संप्रत्यक्ष अप्रती पढ़ा लिखा हडमास्टर भला इन छोट लोका का साथ कैसे दे सकता है? जब लोग 'साथ' के लिए लड़ रहे थे तब भी वह दुबरा हुआ खड़ा रहा और जब लोग पर अत्याय की मार पड़ने लगी तब भी वह यही सुरक्षा रहा। हा, जिमागी जोर बराबर दिया जाता रहा। जब साग मोर्चा के यहाँ सूट पाट मचा रहे थे तब पांचू जोश के साथ गुन था और जब उनपर साठिया, गोलिया बरसने लगी तो वह जोश के साथ मोर्चा जमीम और दयाल के साधियों का गला घोटने की बात सोच सोचकर अपने मन को मसोसकर खड़ा रहा। वह बुद्धिमान आत्मी है। उसका दिल में आवरू का डर है। अपने घरवाला से और खुद अपने से उसे प्यार है। बेचारा जनपक्ष का साथ कैसे दे सकता है? मोर्चा से तो उस चाकर लेना है। जनपक्ष का साथ देने से उस और उसके परिवार को भूला मरना पड़ेगा। लिहाजा वह अपना स्वाय और आवरू सभाल हुए, दुबरा खड़ा रहा। हा तमाशा देखने के शौक में वह अब तक यहाँ खड़ा रहा,

यह क्या कुछ कम बीरता है ? अपनी कायरता के प्रति अचेतन, पूजापतिया के अत्याचार और श्रमजीवी किसानों की दीन दशा के लिए उसके मन में म्लानि और दुःख की लहरें उठ रही थी ।

मोनाई अन्न परिस्थिति का राजा बन गया था । उसके गोदाम में, उसने थागन और दानान में खूब सनी हुई लाशें पटी थी । उसका सारा घर अस्त-वस्त हो गया था, चीजें टूटी फूटी और तुटी हुई पटी थी । उसके घर में रुई जड़मो पड़े थे । गून बह रहा था । बड़िया के जीव निकलने से पहने तल्प रहे थे, प्राण छोड़ने की पीडा कराह कराहकर शीवारों में भी दद पदा कर रही थी ।

अपने चारा आर का घानावरण देखकर मोनाई मन ही मन काप उठा । इन जटिमया और मुदों को देख देखकर उसका दिल दहल रहा था । मन ही मन में वह प्रार्थी था— भगवान् जी ! मरा कुछ भी दोष नहीं है । तुम तो घट घटवासी, सब कुछ देखनेदार हो, अतरजामी हो दीन-दयाला ! ”

अजीम अपनी शैली बघार रहा था कि किम तरह उसने दयाल जमींदार से जाकर मदद मागी, और इन सिपाहियों का लेकर यहा आया ।

दयाल के सिपाही अपनी बहादुरी की डाय हाबकर मूछा पर ताज द रहे थे । लाशा को गालियां द रहे थे और मोनाई से अपनी बहादुरी के लिए इनाम माग रहे थे । मोनाई ने चांग सिपाहियों को पाच-पाच रुपये दिए । सिपाही उसपर रौब जमाकर पाच-पाच और मागने लगे । मोनाई अपने नुकसान की दुहाई देने लगा गाव जाना को, अपने घर में पड़े हुए जटिमया का लाशा को गालियां देने लगा, गिडगिन्ने लगा— मगर उसे पाच पाच रुपये और देने हा पड ।

मोनाई पाचू की तरफ दग्वकर कहने लगा—‘ देख निया माम्तर वाचू य है ऐमान का जमाना ! हम करन हाय जल गए । मरे मन में तो घरम उपजा कि लाओ चार डवन का नुकसान ही सही इनके बिचम मुण्ड घरीद लू निचारे बहा स कटोन का चावन नाके अपना पेट भर -



तो मन में विचारे विचारे बहू और य ससरे एत पापी निकल कि उपचार का बदना मुझे या निया ।

पाचू चुपचाप सडा रहा ।

अपनी पीठ सहलान हुए मोनाई बोला—' धरम का जमाना नहीं रहा बाबू । सत्त कहता हू । माला न एसी मार मारी है कि हडिडिया कडक्याय क धर दी । बमीन ससरे जमान भर क पापी—मसुर घर की औरता की इज्जत तन ता बचके खा गए । इत्ता पापाचार फलाया कि भगवान जी भी तिराह तिराह करने लगे । सत्त कहता हू । भला यताओ कित्ती नीचता है कि मेरी घरवाली विचारी पर भी हाथ उठा दिया । दुरदसा कर डाली विचारी जबला की । मेरे पाडा को पीटा । राच्छस कही क ।

क्या हुआ मोनाई ?' दरवाजे से एक रौबदार आवाज आई ।

मानाई अजीम पाच और वे सब गोलीमार लटठमार सिपाहा चौककर दरवाजे की ओर देखने लगे अदब से खडे हो गए । मोनाई हाथ जाडकर गिडगिडाने हुए आगे बढ़ा । दयाल जमीदार आए थे ।

मलमल का चुना हुआ कुरता कलावतू किनार की चुनी हुई बारीक धोनी गले में बिना शिकन पडा हुआ रेशमी दुपट्टा, बाइ कलाई में सोने की घडी दाना हाथो की उगलियो में चार नगीन जड़ी हुई अगूठिया दमक रही थी । दाहिने हाथ में हाथीपात की मूठमाली खुशनुमा छडी परा मपम्प शू काना में इन की फुरहरी मुह में पान आया में रात की पी हुई मद का खुमार साथ में चार हाली मुहाली—दयाल जमीदार ने अपनी चरणरज से मानाई कदक का घर पवित्र किया था । दालान, तहखान और भागन में पडी हुई लाशा और घर की टूटी फूटी चीजा का उठाने निरीक्षण किया । मोनाई बराबर हाथ जाँ हुए उनके पीछे पीछे घूमता और बीच बीच में राकर कहता जाता— मैं तो लुट गया अनदाता ।

दयाल जमीदार ने तहकीकात की । सारा हाल सुना । बदमाश गाव वाला का गालिया दीं और यह भी बताया कि दारागा साहब का खबर भेज दी गई है । दारागा के आन से पहले दयाल ने मोनाई का सलाह दी,

कि तहपान से लाशा को हटवाकर चावल के गोदाम में छिपा दिया जाए।

फौरन ही तहपान बाबू के लिए एक चौकी पर ऊंची गद्दी लगा दी गई। वे उसपर बैठ गए। दयाल का छतरीवरदार छतरी को बगल में दबाकर उनका पखा झलने लगा। एक नौकर ने पान का डिब्बा पेश किया। दूमरा उगालदान लेकर आगे बटा। दयाल बाबू ने मुह में दबी हुई गिलीरी उगालदान में धुकी, दो नये पान जमाए चुटकी भर जर्दा खाया। नौकर ने रेशमी रुमाल पेश किया, दयाल बाबू ने हाथ पाछ लिए। फिर पाच मास्टर का इरजत बखशी अपने पास बुलाकर बिठाया, दो पान खिलाए और सख्त गर्मी की शिकायत करने लगे। पनेवाल ने चार से पखा झलना शुरू किया।

दलाज जमींदार से आदर पाकर पाबू के दबे हुए बडप्पन को बनाववा मिला। वह सोचने लगा कि एक लक्ष्मी का पुत्र है और दूसरा सरस्वती का पुत्र—दाना एक ही आसन पर बैठने के योग्य हैं।

लक्ष्मी के पुत्र की गंगा जमुनी पनहुव्वी सकेवड में बसाए गए पान क बोड खाकर सरस्वती के पुत्र ने अभिमान से मस्तक उठाकर अपने चारा जोर दया। मानार्थ दयाल जमींदार के परा के पास जमीन पर बैठा हुआ था। उसकी मुद्रा बड़ी ही दयनीय थी और वह जमींदार का हाथ जाड रहा था। पल भर के लिए बड़ी ही हिंकारत के साथ पाच की नजरें मानाई पर ठहरी फिर उसे अपनी चारी की याद आ गई। मोनाई एसा नीच उमक चारी से स्कूल की बेंचें बचने के राज का जानता है। आवर के भय ने पांडित्य के अभिमान को ताक पर रख दिया।

गद्दी पर बठा हुआ पाचू सिहर उठा। नजरें फिरा ली। सामने, धूप भर आगन में मरभुगा की लाशें जमीन को अपने दून का तपण देकर दयाल जमींदार की आखा के सामने पडी थी—उसकी आखा के सामने भी थी। वह दयाल जमींदार के साथ बठा था।

पाच का बदन काप उठा। अपनी बमीज की बाहा को छुनी हुई दयाल जमादार के दुरत की चुनट उस हतना बडा बघन मालूम पडने

गयी कि वह उमम दुना होने के लिए अर्थात् हा उना । मगर मरकक यह जाणना क्या ? दयालु जमीनार को यह है पुरी खोली पर टांग प तारक और पाचू भी है खोली के शब्द हिंस्र म का म दुबहार ।

पाचू अब मरगूम करने लगा कि उमम शर्त ममात्र म न्याय उमा मर के बराबर नहीं है । न्याय जमीनार को पूरा म हा पर दम खोली पर बटकर पाव के म भा म पा म मोभाग्य प्राप्त कर गया है ।

पाचू की तजर मातर् का मरग गई । और उमम माता कि उमम न्याय मानाई के बराबर भा रहा है । मातर् मगर मरमान कर मरना है मरिज ऊन जाति और नीप जाति को उबमन गाठ म मध पात के कारण मानाई उसका आनर करी का बाध्य भा है । पाचू मानाई के मरमल म सपट लूण मरमरीध जूला स महुड बनता है । उमम वादिस का बाधा सगता है । उमा महरो बलार को पाव मरना है । उमा कमउ जीरा को पाव लगती है और उमकी कुमानता का मरग दुग हाता है । पीरन ही घुणा उमकी । उमने गावा—मपरत के माव गावा नाथ भा हा लडिन यह मोनाई की तरह कितीक सामने हाथ जडवर विमिलाना हुआ हरगिज नहीं बडेगा ।

अनी चारित्रिक उचना स पाचू के अह को सहारा मिला । उमन मररे किरा ली । नहीं उसका स्यान मोनाई के बराबर हरगिज नहीं ।

सामन आगत म अधनगी उममा स भरी हुई लाशा की जोर पाचू न देखा, हठपूर्वक देखता रहा । इह दयालु जमीनार के लिए आज अन्ध का होश नहीं । इनके ऊपर आज मानाई के कोई एहमान नहीं । इह मूख का होश नहीं अपना होश नहीं । ये लाशें उन मनुष्या की हैं जो ईश्वर स मिला हुआ अपना अधिकार वापस पाने के लिए लडते-लडत मरे । कम वीरा स बढकर जग म बाइ ऊचा नहीं । इसलिए आज ये लाशें मोनाइ स ऊची हैं न्याय जमीनार से ऊची है, जाहा-मघाटो स भी ऊची है, दुनिया की हर चीज से ऊची उठ गई है । इनके ऊपर आज किसीका जोर नहीं रहा है । ये आज आजाद हो गई है ।

बाश कि हक को पहचानने की समझ कुछ जोर पहले जा गई हाती । यह ही नहीं, सारे दश को अगर यह समय आ गई हाती तो आज यह दुःशा भी न हाती । गुलामी का तोर पहचान कर मरना मानवता के नियम के विशद है । हम अगर प्राण नहीं ल सकें तो बाइ हक नहीं । लेकिन हमम प्राण दन की ता शक्ति है । जोर यह शक्ति बहुत बडी शक्ति है । प्राण लेन ज्ञान उस पीन को सपन म भा नहा जान पाता जिमको प्राण दनजाना अनुभव करना है । प्राण दनेवाला एक अनुभव लेकर मरता है, जिमसे उसे सतोप होता है । जोर प्राण हरनवाला ? वह बहुत बडा कायर है । वह अपनी कायगता का बार बार हयाए करके छिपाता है इसलिए बिता कभी उमका भाव नहीं छाडती । दिन रात एकाग्र होकर सिफ अपन शोध रोज का ही सभानन रहना—भला यह भी काई जीवन है । एक धण के लिए भी मुक्ति नहीं, शांति नहीं, डर से घिर हुए—हु । गद्दी के गुनाम ।

एक ही नजर म दयाल बाबू पाचू को बहुत लुच्छ दिखने लग । अपन बडप्पन पर अभिमान हुआ । दयाल बाबू के तन्त्रिय पर कोहनी टेककर वह जरा अकडकर बठ गया ।

पाचू फिर साचन लगा, यह मिट्टी का माधो, मदा झूटी तारीफा की दुनिया म रहनवाला, यह अवन का दुश्मन मुक्तस हज्जार दर्जा नीचे है । बिरामत म दौलत मिल जान स कोइ आदमी बडा नहीं हो सकना । बटा वह है जो अपन हक क लिए लडत लटने प्राण देन की हिम्मत रखे ।

फिर पाचू ने अपने-आपम महसूस किया कि वह प्राण देन की हिम्मत रखता है । "मरा स्थान धूप म तपनी हुई इन लाशा के बराबर है ।"

पाचू फिर गौर से लाशा की तरफ देखन लगा । फिर उस लगा कि नहा, उसम और इन लाशा म थोडा सा भेद है । इन लाशा मे प्राण दन का विश्राम अगर समय पर आ गया होता—ता ? ता भी ये मरत ही मगर दनना भुगतकर नहीं । वे आज एसी मौन मरत,जैमी कि जसी कि मैं अपन लिए चाहता हू ।

फिर पाचू उन तमाम बडे-बडे ननाभा की शमशान-यात्रा नगर

जबूसा की बात याद करने लगा जिह्वा तो उसने जाखांस देता था या पढा सुना था। वह अपने लिए बड़ी आदरणीय मृत्यु की कल्पना करने लगा और उसीम द्वा गया।

## ५

मोनाई के मंदिर के द्वारे घूरे पर मला लगा था। चील जीर वीए वासमान पर कुत्ते और आत्मियो की फीज जमीन पर थी और घूरे पर पडी हुई जूठी पत्तला व लिए युद्ध चल रहा था।

मोनाई ने प्रेत भोज किया था। दस दिन पहले उसने घर पर चौबीस हत्याए हुई थी। उन भूम प्रता का शात करने के लिए कटी-बसर छाप भगत मोनाई ने हर एक के नाम पर बाम्हन चान थे।

गाव के बन्धुने त्रिगज परिवार का पूरा पूरा तन जामन आया था। नान गान के साग आण थे, मोनाई नाग भी आण थे। गत्तर अम्ना आत्मिया का भोजन था।

मरभुगे सब थे तबिन ब्राह्मण गये नगी। मरभुगा और ब्राह्मणा म भेरे है यह मोनाई के भात्र न ब्याया। अकान न जाना ता कभा इमना पता भा नगी घटना कि कवटा के यत्र ब्राह्मणा का भात्रन करना शास्त्र सम्मत है। जब म भगवान रामचन्द्र का चरणामृत कवटा न पान किया है तब म ये पवित्र हो गए हैं। मान-मान आठ-आठ रात्र के भूम ब्राह्मण परिवार माना कवटा के मंदिर म भात्रन करने जा रहे थे। जिन भगा आंग्रे उन्हें मरचार्ड का दृष्टि म देना थी। ता पछला सप्त गिवादा मंदिर के दरवाजे पर गए थे। अन्त न गंगा गाग न्दवाव पर गए हातर गिवा भात्रन करने के दृष्ट का स्थान बना भूम थे। कवटा न अन्त म गिवाका

घाते हुए नहीं देखा था, लेकिन उन पछाट के लठता की बड़ी-बड़ी मूछा, लाल लाल आंसा, जबदस्त घुड़कियों और लाठी की टटटट से किसीका सामने की तरफ जाने का माहूस न होता था।

लडका की टोली जिसम पाच मे लेकर दस-बारह बरस तब के लटके शामिल थे घूम फिरकर डगमगान हुए परा से मंदिर के दरवाजे के सामने जाने थे। नग घडग हाथ-भर सूखे हुए, पट आगे डगर डगर आया स भोजपुरिये लठता को देखकर जगूठे बूसत थ। पत्तला पर पत्तलें बाहर जा आकर पटनी थीं। ऊपर आसमान पर चीनें मडराती थी। कौए बुड के झुड आ-आकर मंदिर की मुडेरों पर बठन और अपन दाब की घात म घूरे की तरफ देखने हुए काब काब करत थे। जमीन पर आदमिया जीर कुत्ता म बाजी लगी थी। चीनो की चाचें बभी-बभी जूठी पत्तला से चूब-बर बुके हुए आदमियो की खोपडियो पर अपनी पूरी शक्ति के साथ पडती थी। कुत्तों के पजे जीर जबडे अपन हक के लिए जान लडा रह थे। जीर भूखा मानव उन सबसे लडकर तथा स्वाथ के लिए अपने से भी लडकर, एक मुट्ठी जूठा अन्न पाने के लिए जी-जान से भिडा हुआ था।

मुनवर यह दृश्य देखने के लिए पाचू भी बहा आ पहुंचा। परिवार के साथ आज छ रोज से पाचू भी भूखा है। मोनाइ न उस दिन उसके गले पर भी छुरी फेर दी थी। हिंसाय मागने पर मोनाइ ने साफ बह दिया— 'मरा तो पैसा डूब गया बाबू! सारी किचें मडो भई थी। जलाने की लकड़ी के भाव से भी खरीदन को काई तैयार न हुआ। दस रुपय भी न निकल। बदे से मेरे दो सेर चावन तुमपर चट गए लेकिन हम यह समयके गम खा लगे कि चलो बाम्हन ठाकुर की भी थोटी बहुत सेवा हो गई।'

इस नये मखमनी बमरोघे ने तो पाचू की गोपडी पिचका दी। पन भर तो वह चौककर मोनाई के मुट् की तरफ ही देखता रहा। पन भर शिबन तक नहीं, कोई निबडम नहीं। वही भोला भाला तिलक छाप गया हुआ चेहरा, हाठो पर वही एवर रेडी दयनीय मुमकान और बात बरने के ढग म वही दीनता, वही दृढता, सग की तरह आमने सामने देखकर

मान करना कहा स भी ग्राह नहीं, कहीं स मराज या जानमाजी की बूनहा ।

पाचू स्नग्ध रह गया । गिराणा न उम गार। जार स पर लिया । आघा म आंगू छनछनाने की घमकी दन लगे । लकिन पाचू अपनी हार किगीर सामन लिघाना पसन् नहा करना और मोनाई को जराव दवर पर भी क्या ? राजी स घट बाट्टर घना आया ।

प्रत भाज की बान पाचू क गामने ही त्याग जमीनार न उटाई थी । दारागा साहब भी बही बठ थ । दा हजार नक्क दारागा साहब का पाचू हजार रुपय वार पड म जोर प्रत भाग का दड मिर पर नवर मानाई का दयाल जमीदार के समाज और दारागा साहब की सरकार स किसी तरह क्षमा मिल गई । रपट म दग का ब्यारा दज हो गया । गवाहा म हेडमास्टर पाचू गोपाल मुखर्जी का नाम लिघा गया । खीर चलत समय मास्टर मोशाय क ऊवर मोनाईने दो सेर चाबला का एहसान भी जमा लिया था ।

दूर बास के पुल के पास बठा हुआ पाचू मोनाई के मंदिर के सामन जूठी पत्तलो क लिए चील कीए और आदमी म होनेवाली लन्गई की देख रहा था । पागला की तरह हिसक दृष्टि स हर एक को देखते हुए लोग लड रह थे । चील की चाच स गक बच्चे के सिर म घाव हो गया । वह वही मिर पडा । लोग उस रोदन हुए घूरे पर चड दौड ।

पाच ने बठ बठ यह अनुमान लगा लिया कि बच्चा मर गया होगा । पास स देखने के लिए उठकर जान की तबीयत न हुई । लेकिन बट सोचने लगा लडके की चीख नही सुनाइ दी । दूसरा विचार फौरन ही आया, आवाजो म अब दम ही कहा रहा है ? जान छोडत हुए, अपने भरसक पूरे जोर क साथ चीखा होगा, लकिन उसकी चीख म फलानि भरतक भी पहुंचन की शक्ति न रही हागी ।

मौत पाचू के लिए अब बहुत आकपण नही रखती । राखें कायद स आदी हो गद हैं । छ रोज स भूख की तकलीफ को भोगते हुए उम अपन दिल को बहद सग्न बनाना पडा है । पिछली वार दयाल जमीदार का आसरा था—जास बधी हुई थी । फिर मोनाई से मिल गया । लकिन इस

चार तो उसे कहीं से भी चावल पाने की आशा ही न थी। घर में दो चार मामूली से सोने चादी के गहने पड़े तो हैं लेकिन उन्हें बेचे किसके हाथ ? मानाई के यहाँ जाओ तो चौपाई नाम भी न मिलेंगे। दयाल जमींदार में सौदा कर ही नहीं सकते, जो उठाकर दे दें उसे ही सर माये पर चढ़ाना पड़ता है। और जहाँ तक बम चलता है दयाल जमींदार कीटी को भी माहुर की तरह दाता से पकड़ने हैं। मधुपुर की हाट में सराफा और पुलिस के मिपाटिया ने मिलकर एक नई तरीका निकाल रखी है। जो गहने बचने जाता है उसीको पुलिस चार करार देती है। भरे बाजार में जाकर जान के भय से लोगो को आधी रकम पुलिस को भेंट करनी पड़ती है, और आधी में दूकानदार घिसौनी और गलाइ निकाल लेता है। सास लेन पर भी रिश्वत और लूट देनी पड़ती है। घर में यह तय हुआ था कि जब मुसीबत बर्दाश्त से बाहर हो जाएगी तब एक दिन वे बचे-खुचे गहने बचकर खा लेंगे। मगर उनकी बिक्री से सिर्फ एक ही दिन खाया जा सकता है इसलिए मामला हर रोज दूसरे दिन पर टल जाता था। पावती मा कहती थी— एक ही दिन का तो सहारा है लेकिन इस सहारे की आस में दिन गुजर जाते हैं।

सन्सा पाचू के पास से ही एक मादरजाद नगी औरन दीन्ती हुई घूर की तरफ चली गई। सभ्यता के एवरेस्ट युग में जन्म लेकर पाचू खुले आम दिन गृहाडे, एसी बशर्तों से भरी हुई घटना को देखने का आदी न था। पाचू ने देखा, उम औरत में चीला बीआ, कुत्ता और आदमिया से जवाबदह जोश था। जब वह पूरे के पास पहुँची तो सब अलग हो गए।

धीत हुए दिना की चेतना, अनहोना घटनाएँ देखकर बार-बार चौकनी है मगर छिन भर के लिए ही। दस दिन पहले कट्रोल के भाव में मानाई से चावल पान की आशा में बहुत-सा लागाने धरनी स्त्रिया क तन से फट चिपडे तब उतारकर फेंक दिए थे। बाद में चावल भी न मिला और कपडे भी खने गए।

पुरवा न उजड़ हुए घरा में रहना ही छाड़ दिया था।



मजबूर होकर चारदीवारी के अंदर बंद होकर बैठना पना । व घर स बाहर नहीं निकल सकता । किसीको दण्ड मुनकर अपना गम गात करन स ही बचित कर दी गई है । कोठरी के अंदर बंद, उा चार माहूम दीवारा को निहारा करो—निहारा करो—और कोई चारा भी तो नहा ? भूख की उलझन क ऊपर लाज की यह कठोर भी जुल्म ढा रही थी । पिछले पाच छ रोज से जगह जगह घरो म औरता क आपस म लडन खगन्न की जावाजें दिन रात सुनाई देती ह । अच्छी अच्छी औरतें एक दूसर क लिए उन गालिया का प्रयोग करती है जिह कभी धोखे स मुन लेन पर भी उनके गाल कानो तक लाल हो उठने थे । पाचू उन औरता की बात सोचता था जो अपने घरो म अकेली ही बंद हैं । जहा दो चार हैं व आपस म लड खगडकर गाली गलौज करक किसी तरह अपना बक्न तो पूरा कर लेती हैं लेकिन जो अकेली बंद होगी उन बेचारियों का तो बक्न भी न बटता होगा—वही दीवारें वही दरवाजे कोठरी की हर चाञ्च वही । किसान क घर की छोटी सी दुनिया म यह एक कोठरी न जाने कितनी ही सुखद और दु खद स्मृतियों से भरी हुई होगी । पाचू इसपर कल्पना करने लगा—नबबधू बनकर घर की स्त्री ने शायद इसी कोठरी म अपन पति के साथ सुहाभरात मनाई होगी अपने बच्चो को जम देकर मा बनने का सौभाग्य उस शायद इसी कोठरी म प्राप्त हुआ था फिर अकाल क शुरु म इसी कोठरी से किसान के घर की 'बहुमूल्य चीजें एक एक कर बिकने गई हागी । आज वहां कोठरी लाज की मारी भूखी बक्स औरतो का दम मोत की तरह घोट रही होगी ।

जूटन की खबर मुनकर यह औरत अगर लाज की बंद को तोडकर बाहर चली आई ता उधने कुछ बुरा नहीं किया । हमारी बाख इसम गुनाह क्या देखनी ह ? गुलाम पुरुष अपनी गुलामी का पूरा बाञ्च स्त्रिया पर डालकर हल्का होना चाहता है—औरत की यह गुनामी पाचू को बुरी तरह स खलने लगी । उस गुस्ता था गया ।

मोनाई के मन्दिर से ब्राह्मण चेहरे पर जबदस्ती तपन का भाव लादकर निकल गह थे। उनकी हानन, पाचू ने देखा और भी घराय थी। अपनी कई कई रोज की भूख का ब्राह्मण ने आज पूरा-पूरा मोभावजा देन का मौका पाया था। नागान इस बदर बदनियत हाकर खान की कागिण की थी कि वह भाजन ही उनक लिए जहर बन गया। मन्दिर से उतरकर दम बदम चलन हो कमजोर आता पर अन का प्रोन पडन के कारण बहया व पेट न जार का दन हान नगा। क्या का चकरन आन गया और बहनों का कं हान लगी।

पाचू की आक्षा व मामन दा दृश्य थ। घूरे व पास ब्राह्मण मर भुखा और जानवरा की लगन, तथा दूसरी आर इन पट भरे हण ब्राह्मण का यह हाल। जगह जगह लोग पन जान है उठन की ताव नहीं। जगह जगह लोग कं कर रह ह। और सबसे अधिक बीभत्स दृश्य पाचू ने यह दखा कि एक की कं पर दूसरा मरभुसा उसे चाटने के लिए बड़ी आतुरता व साथ टूट पडा।

पाचू से यह देखा न गया। वह एकदम बहा स हट जाया। दम दृश्य न उनके मन्दिण का उत्तेजित कर दिया। आदमी को गुलाम बानेवाले पहले मत्तावादी मानव व क्या कभी यह मोना था कि जिम बीज को वह वा रहा है उसकी जडें कितनी गहरी और कितनी दूर तक अपना अधिकार जमाएगी। गुलामी किस हन तक मनुष्य को स्वामी बनाकर उसक जह का पोषण करती रहगी और दूसर को कय तक इस तरह मजबूर करती रहगी कि किसीकी क स उगली हुई गिलाजन को खाने क लिए भी वह खुशी स तयार हा जाए ?

भूख का दीरा बड़ी जार के साथ पाचू को महसूस हुआ। साथ ही उबकाइया भी आने लगी। आतें उलटी उलटी पन्ती थी। पेट पकड़कर यह वही गठ गया और अपने मन का जबदस्ती उम दृश्य स हटा लेने की कागिण करन लगा। घूणा स भी कही प्यारा मज्जाजनक यह दृश्य था।

पाचू साबन गया, क्या काई भी पट भरा आत्मो अपने लिए

ग्नि की कल्पना कर सताता है जब उस इसी तरह निगोकी गिनाउन चाटन के लिए मजबूर होना पड़ेगा। हठ के साथ पाचू सोच रहा था— यह बान सोचना इस वकन उमकी राम म सबसे ज़रूरी था—हर आत्मी को, जो गुनाम है ऐसे ग्नि देखने के लिए हर वकन तयार रहना चाहिए। दुनिया म जब तक गुलामी रहगो इसानियत उसी तरह ठुकराई जाएगी जिस तरह ईसा राम उज्ज मुहम्मद, बुद्ध के अनुयायी उनके पर छू छू कर उनकी छातिया पर ठोकरें मार रहे हैं।

उस दश्य के साथ उपजी हुई भूख और उस दश्य को देखने के कारण खाली पेट जी मिचलाने से जो तक्लीफ होती थी उससे बचने के लिए पाचू बच्चा के रोत की पूरी गभारता के साथ अपनी बुद्धि से खेल रहा था।

एक चीज इधर पाचू को परेशान करने लगी है कि पाचू जिस बात को भुलाने की बांशिश करता है उस वह भुला नहीं पाता बल्कि एक को भुलाने की बांशिश म सब एक समय याद आने लगती हैं। खेलते-खेलते मन कुम्हला जाता है।

एकाएक हटो बचो होने लगी। पाचू अपने सयालो स चौंका। अपने हाना महासिया के साथ दयाल जमीदार जा रहे थे।

अरे राम राम राम राम! ये बचान सबके सब बीमार पड गए! मोनाई ने ऐसा क्या खिला लिया! कहा है मोनाई?

दयाल बाबू की दृष्टि घूरे के जमघट पर गई। दया उमडी।

मेरी प्रता पर यह जत्याचार कि जूठन चटाई जा रही है! आखिर ठहरा तो बंवट का बच्चा! नीच जाति! चार पस टेंट म करके चन्द्रमा को छूने चला है। कहा है? पण्ड के लाओ उसे।

मोनाई हाथ जोडे तब तक मंदिर से भागा हुआ चला आ रहा था। दयाल जमीदार न एक बार सिर स पर तक दखकर नफरत के साथ कहा— इनकम टैंक्स बहुत बचा लिया है शायद!

मोनाई जातरिक भय क साथ कापने हुए और भी अधिक गिडगिपान लगा। भारी शरीर के साथ इतनी दूर तक दौडके आने की यकान और

हाफनी भी चढ़ी थी।

“तही तो अन्नदाता ! हैं-हैं ! अ अ जाप बडे हैं ! हैं, ह !”

“इन लोगो को क्या हो गया है ?” हाथीदात की लकड़ी की नोक म बीमार ब्राह्मणा को दिखात हुए दयाल जमीदार वाले।

अपराधी की तरह उन ब्राह्मणा को एक नजर देखत हुए, मोनाइ हाथ जाडकर बोला— ‘मैंने तो बहुत चाहा था अन्नदाता पर ये लोग जादा खान हो चले गए। मैं निरदोस हू अन्नदाता ! और इन सब बचारा का भी दोस नहीं ! सब भगवान जी की लीला है।’

मोनाई की बात काटकर दयाल जमीदार गरम ह्रा गए।

अभी इतन बटे भगत नहीं हुए कि दयाल जमीदार को भागवत सुना सका। हमारा नाम मुना है न तुमन ?’

नाम की गाली सीधे मानाई के दिल पर लगी थीर लाप सफाई दिखात हुए भी उसके चेहरे पर डर की लकीरें खिच गई। दयाल जमीदार के परो को दूर स चुक्कर नमस्कार करते हुए बडे सयत भाव से बोला— “आप मालिक है। हमारा जीवन मरन आपके हाथ म है। बाकी और क्या कहू अ नदाता ! मेरा भाग ही खोग है। भगवानजी जानते हैं, होम करत हाथ जल गए।”

‘इन लोगो की दवा दारू के लिए कौन दाम खच करेगा ?’

मोनाइ इसपर बडा जोर से चौका। दयाल जमीदार के चेहरे को एक बार देखकर जरा हकलाते हुए बोला— “द द-दवा-दारू ?”

‘इन सबको दवा दारू के लिए एक एक रुपया दो। बेचारे बीमार ह्रा तुम्हारी बजह स और सारा दुख इह ही भोगना पडे। याद रखना मोनाई, मेरी प्रजा को यदि कभी कष्ट दिया तो तुम्हें पत्र भर ही म तुम्हारे बाप की हैसियत पर पहुचा दूगा। दा इन सबका एक एक रुपया।

बडी सम्नी से अपन चेहरे को निर्विकार रखते हुए मोनाई तनकर खच रहा। दयाल जमीदार के दोसारा हुक्म करत ही इशारे स अजीम को घर की तरफ दौडा दिया।

धूर की तरफ जग बन्त हुए दयाल जमीन्दार न माह्वार मोनाइ केवट को दूसरी पटखनी दी।

मेरी भूखी प्रजा को जठन खिला खिलाकर तुम तुच्छ बनाना चाहत हो ? धम कम लोप कर देने का इरादा है क्या ? तुम नीच व मगर मुझम तो कह सकते थे। मैं अपनी प्रजा को कम से कम इस तरह जूठन ता न चाटने देता। गाव के हर एक जादमी का सर नेर भर चावल मेरी तरफ से वाग्यो। आज शाम तक यह काम हो जाना चाहिए ममझे।

हुकम दकर दयाल जमीन्दार न अपने पानवरदार की तरफ दखा। फौरन ही चाणी की गवा जमुनी डिविया पेश की गई। पान याकर दयाल बाबू मुठे। पुल के पास पाचू बठा था। दयाल की नजर पडी।

कहिए मास्टर बाबू। कहकर दयाल उसकी तरफ दो बगम आग बडे।

छ दिन का भूखा पाचू यह निश्चय किए बठा था कि अब न तो वह दयाल से ही किसी तरह का सम्भ्र रवेगा और न मानाई स। ये सब स्वार्थी है नीच हैं पेट भरे मक्कार हैं। अगर इनका अपन पस का घमड है तो हमको भी अपनी मुफतिसी पर नाज है।

पाचू बच्चे की तरह मह फुलाए बठा था। दयाल न मोनाई को सकंठे म ला घसीटा उस बडा रुशी हुई। कोद दयाल को भी इसी तरह दया के रगड दे ता मजा आ जाण। जी म जाया गया न स पूछे कि तुमने हा अपनी प्रजा को वोन सा निहाल कर लिया जो या अकृत हो। शरम भी नही आनी कम्बख्त को। मरघट जम गाव म छला बनकर धूम रहा है।

तभी दयाल की आवाज कानो म पगी नजरें मिला जीर मिलत ही सारा विद्रोह गायब। हाठा पर मुस्कराहट आखा न दीनता वही तपाक स उठरर अदब सरन की आगत—गाहक का दगन ही जस लटाई पहल के दूकानदार अपनी पटट कबायद शर कर दत थ। पाचू यह सब नहा करना चाहता था। मगर अपन-आपपर उसका जोर नही। लाख अनिच्छा हान पर भी नजरें मिलत ही पाचू मन्गरी क तमाशे की तरह इशार स

बघा हुआ नाने लगा। यही हिफाजत के साथ अग्ने शीशमहल म रख हुए स्वाभिमान को हर पल कबड की टेस से बचाता हुआ, (साथ ही साथ उसका परिचय देने की दबी धमकी भी दता हुआ) वह दयाल बाबू से मुह-देखी बरतन लगा।

‘यो ही देखन चरा आया य सब।’

‘अजी कुछ पूछिए मग’ बाजीजी के दुबलेपन की धदा लिए हुए दयाल जमीदार तुनकवर बाले—“देखा आपने? इन चोर बाजार वाला न यसी लूट मचा रखी है—और या, दिन-दहाडे। गवरमेंट क पिटठू हैं साहब। अग्रेज भी कोई मामूली खोपटी नहीं है बाबू। क्या पोलीसी भिटाई है कि आप ता सस्ते दामा पर अढतिय सनाज से गए और पबलिक का कोई सवाल ही नहीं किया। एक तरफ ता इन बनिया का जाग्मी के खून का चस्का लगने का मौका देने हैं और फिर जब पबलिक चिल्लाती है तो कट्रोल आडर लगाते हैं। समझा मजाक आपने? माल तो इन मोनाइ जसा के गाग्मा म है, कट्रोल किसपर करोगे।”

बहुत हुए दयाल बाबू की आखा भयमड और चालाकी यी चमक आ गई। चेहरे पर रोय दुवाला होकर झलका। तब विजेता की दृष्टि से एक बार पाचू को देखकर उहाने अपने पानवरदार की तरफ जरा हाथ बग्याया। पल की देर न लगी, पान हाजिर जर्दा हाजिर, हाथ पाठने के त्रिए रेशमी रुमान हाजिर। इशारे की जरूरत न थी खानदानी रईस के नीकर मास्टर बाबू का अदब करन के लिए झुकें।

छ तिन के भूग मास्टर बाबू के सामने खाने के नाम पर पान पेश हुए थ। कुछ भी सही। जो ता चाहता था कि डिब्ब के सारे पान प्रकरी की तरह चगान ही चले जाए मगर आवरू के बायदे आड मे आते थे। केबडे म बसाए दो पान मुह म रखकर पाचू ने बड जोश के साथ उह चवाना शुफ किया।

दयाल बाबू बहुत चले— अजी साहब इसीका नाम है ब्रिटिश पानीसी। हिंदुस्तान का गला हिंदुस्तानी से ही कटवा रह हैं। बाद म

कह देंगे हम तो अपनी हिटलरी मुसीबत में मुँह लाधा। बंगाल में हिन्दुस्तानी मिनिस्टरी, हिन्दुस्तानी कारोबार, हिन्दुस्तानी [अफसर— फिर जब आप खुद ही अपने भाइया को भूखा मार रहे हैं तो इसमें हमारा क्या दोष? आप लोग स्वराज्य के काबिल नहीं। चलिए माहूब साप भी मर गया और लाठी भी न टटी। और आप गुलाम के गुलाम बने रहे।”

पान की गिलौरियों को दयाल बाबू ने एक गाल से दूसरे की तरफ फेरा।

पाचू अपने मुँह के पान अब तक खत्म कर चुका था। भूख भड़क गई थी।

दयाल बाबू बोले— असल बात तो यह है कि हममें एका नहीं। एकता होती तो आज हिन्दुस्तान की यह दशा न होती।

पाचू दयाल बाबू के मुँह की तरफ देख रहा था। उनके रीबील चहरे को देख देखकर उसकी भूख और भी बढ़ रही थी। वह बराबर सोच रहा था, दयाल घर से साना खाकर आया होगा। क्या-क्या खाया होगा? चरपटे मसालों की सुगंध कहीं से उड़कर उसकी नाक में बसने लगी। पाचू को पहले तो अच्छा लगा, फिर तबीयत धवराने लगी। गुस्सा चढ़ा। महा स्वार्थी और निक्कमा एकता की दुहाई दे रहा है। उरा जोश आ गया जबान अपने-आप खुल गई—

‘एकता की दुहाई देना भी आजकल का एक फेशन है। चिल्लाते सब हैं, लेकिन कोई उस सही तरीके से महसूस नहीं करता।’

कहन-कहन पाचू के चेहरे पर सच्चाई की तमक आ गई। वह अनुभव करने लगा जस उसका बोध हल्का हो गया हो। इसमें उम सन्ताप हुआ।

दयाल उमात्कार यह सुनकर चौंक पड़े। पाचू के चहरे का गौर स देखने लगा।

पाचू का हीमला और बढ़ा। बढ़ बढ़ता चला गया—‘देश की

गुलामा तभी दूर हो सकती है जब हमारे भद्र लोग अपने मूर्खतापूर्ण स्वार्थ और बूढ़े अभिमान का छोड़कर बुद्धि से काम लें। गुलामी के बोध से मुक्त हुई जिन्दगी को भद्रवर्ग अपनी खानगी मानी है। मियन और अपनी मातृभारता की छपछिपाई व सहार खड़ा कर कागज के कुम्भकरण-मा अवल जाता है। यह कहकर हम अंग्रेजों की बराबरी करना चाहते हैं कि भारतवर्ष में एकता नहीं है। अगर किसी स्वाधीन देश का कोई पुरुष यह मवाल कर तो ठीक है, लेकिन हम किसमें यह मवाल करते हैं? क्या हम भारतवर्ष में शासित नहीं? तब फिर वह कमजोरी, जो हम सबमें घननाश है—क्या यह खुद हमारे भ नहीं है? अपनी कमजोरी को दूर किए बिना हम पत्थरों की धार उगता अठान व ह्वदार्ग नहीं। हरगिष्ठ नहीं।

पाचू यह सब कह तो गया, दसवीं म सुनी थी, मगर दयाल ना दर भा माय-साय लगा रहा। गुला मान रह हों। उह ठेगे म। मगर बुग तो मान ही रह हाय। पर अब ता एक बार तीर बमान स निवन् शीशका है। जम सत्यानास बस मां सत्यानास। कोई फामी चढ़ा ता नह। उगे दयाल जमागार। और उनमें किसी तरह के लाभ, का भी आना नहीं। तब फिर पाचू दयाल बाबू म क्या दवे? मगर दबता ता है ही। बात कहते हुए हमीलिए दम अदर ही अदर बिसका जा रहा था। अपने रीव की सतह का एन-सा रखने व लिए पाचू अपने स्वाभाविक तरीक से न बोलकर एन तरह से दयाल बाबू व सामने धान रहा था, जैसे क्लानम एम म लखे पड़ा रहा हो—और वह भी दसपेक्टर के सामने। कह चुकन के बाद एक-दम से नदरे आमन मामने हा। पर वह धबरा उठा। उम धवगहट का छिपान के लिए वह तगारते हुए दूसरी तरफ मुह घुमाकर यूकन लगा। नाम मुह का सामोपन कुछ हटका हुआ।

कलेक्टर और जॉन माहुर तक पहुंचनमाला जाइमो, विद्वान, फिर तब रल केन शास्त्री का बग—दयाल बाबू पर भी पाच का रीव था। इसके अलावा अपने नदर पर पर दयाल बाबू दम दयाल



तो तीने फिर जरा जग झेंप भी मासूम हुई। कुछ जवाब न मूसता था, घिसपान न घड सोचन रह। बीच म नीकर क हाथ स पात लत हुए बान मुनन मुनत डिविया भी ल ला। पात मुट मरग तिए मगर डिविया बाना की री म उहीक पास रही। जब पाचू न अपना बात घरम की तो दयाल बाबू न बात का उया स्टार्ट दन क लिए चौकर पहल ता अपन दाहिन हाथ म पनडि की का महसूस किया फिर डिविया गान बसना हटाकर पाचू के आगे पान पश किए।

पान पाली पट म गगत थ। पाच नही खाना चाहता था। दयाल जमानार अपनापन लिखतान हुए जार दर मस्तानी आवाज म बहन लमे— अर पालो जी! हमको तुम्हारी म भगतजाजी ज्यादा जमती नही उस्ताद।”

हाथी क बिनारा पर मुस्कराए और सुमार भरी जाखो म शिवायन दरसाकर दयाल बाबू घुन। पाचू पिघल गया। घमड दिमाग म बिजला की बारीक लकीर की तरह बौध गया। भूख क फीके चेहरे पर दप और खुशी का चमक आ गई। पाचू ने मुस्कराकर डिविया से पान निकाले और कहा— खिसा ता रहे ह। मगर याद रखिए शौक लग जाएगा तो आप ही क पटा जाकर दिन भर पान खाया कहगा। आजकल ईश्वर की दया स देकारी के महकमे म तो हू ही दिन भर।’

पाचू दयाल बाबू का तुम’ कहकर पुकारना चाहता था। ताख चाहन पर भी जाभ न लीटी। फिर भा दयाल जमीदार पर अपनापन और हक जताकर पाचू न बराबरी का दरजा तो पक्का कर ही लिया। अब वह दयाल बाबू से तुम की बतवस्तुफी तक रिश्ता बाधकर मोनाई का अपना प्रभाव लिखलाना चाहता था।

मानाई कुछ दूर पर जरा अकेला सा खडा था। बराबरी का दरजा लाख समर्थवान हो जाने पर भी उस हासिल नही। एक तो भगवान जी न ही उस घाटा घनाके घरनी पर भेजा है दूसरे वह पग लिखा गही। पर इन दाना बाता म भी मुक्त बात बेप लिखे रह जान की आती है।

उमाना 'गुड्डमानी डैमपूज' का है। गाव म और भी क्विने ब्राह्मण के लडके पड हैं, उह कोई टके सेर भी नही प्छना और एक पाव है जिसके वारन हम मड भए गाव म कलक्टर जम वर घट अप्रेज आत हैं। वड वट उमीनार, दयान उमीदार ऐमे ऐस लोग, पाव को हम-हस के मिलाए रया है। ये बिद्या का परताप है।

यात्रा को आदिम फाजिल बनाकर मोनाई अपनी इस कमी का पूरा करना चाहता था। तिन रात उसकी पढाई के पीछे दीवाना। जत्र से गाव म स्कूल गुला है, गरीब यात्रा का लटटू इतवार के दिन भी ताक म नहीं उतर पाता। सुबह जब उठो तब स लकर रात मे जब तक सा न जाओ बराबर पन्न रहो, पढाई की ही बातें सोचते रहा। जिस तरह मोनाई सुबह से रात तक अपना रोजगार करना रहना है रोजगार की ही बातें सोचता रहना है उसी तरह वह अपने लडके को भी कमठ देखना चाहता है। जब वह यात्रा की उमर का था, तभा से उसने काम की फिकर नमानी थी इसलिये वह यात्रा का भी उस काविल समझता है। जब गाव के अच्छे दिन थे, सुबह गोविन्द मारटर दा घटे घर आकर पढाते थ। उनके बाद स्कूल जाता था। साझ को स्कूल से लौटकर आते ही, हाथ मुह धाकर, जरा पानी मिलाव क बाद, फिर अपनी कितान सेवर जोर जोर से धोखने बैठ जाता था। जहा आवाज गिरी कि मोनाई ने डाटा। थाडो दर बाद वानाइ मास्टर आकर डपट जात थे। मोनाई ने उन्हें इस मनलय से रखा था कि वह यात्रा का स्कूल की सारी कितायें रटा रटाकर माद करा दें, जिससे यात्रा इम्तहान म फस्ट आवा कने मोनाई मोचता था भगवान जी का दिया बहुत है, यात्रा पढ लिखकर एक बार विलायत पास करके आवे तो बडा मरकारी अपसर बन जाएगा। फिर सभी बडे वर लोगो म मेरी रसाई हो जाएगी। करोडा बना लूंगा।

मोनाई केवट की यह सबसे बडी इच्छा थी कि मरने मे पहले वह एक प्रहून बडी जर्मनारी खरीद ले, कलजता के बड बडे र्थपारियो म उसकी साथ पुज जाए, कलकत्ते म ऊची ऊची बिल्डिंगें बन जाए और एक करोड

की पुटिया मुट्टी भरा। वह भरा भी यह तम ना पूरी कर सकता था। अगर जरूरत पड़ेगी तो भाग्य होगा। गांव में पना जाता—और फिर कपट के पर में पना होता—एक मधम बड़ा अभिजात या त्रिगण साय गिर पत्रकन पर भी मोटाई मुक्त नहीं है। तारागा था। परंपरा से त्रिगण जगह पर दबता था था था है। यहाँ ऊपर उठा के त्रिगण उम गहारा था। त्रिगण साय हो जाते। मगर कुम्भीतारा के बगारे पर एक से भी पर पना है। त्रिगण हीन भावना के गहरे छद्म में गिर जाता पटना है। अपना कपटपत्र त्रिगण हूँ। तब छोटे के त्रिगण मोटाई कटा सार कपटपत्र बना सन्नि उमग कपटन अपना मत ही बदल गया, कोई याता पायता त पट्टा। गांव में पना मन्त्र भी बाधा त्रिगण। उमग बाण भी गरीब से गरीब बामन-बादय के द्वार पर जाकर उस जमीन पर ही बटता तसीब हुआ। त्रिगण और सरपरा अधसर की जात पूछ जाती है। इसलिए मानाद याता को पत्रकन के प्रति गतक था।

इस वक्त दयाल जमींदार ने उस गहरी पट्टनी दी थी। पित्त भा मेरी, पट भी मरी वाला हिगाव कर त्रिगण था। आप ही परेत भाग का डड भी मरे त्रिगण पर लाग और अब एक एक रुपया भी दो। ये याव करन आए हैं साल। और ऊपर से गाव भर में एक एक सर चावल बाटा। जैसे बाप का माल हो, उठा के दे दिया। हा भई बाप का माल तो है ही उसकी जमींदारी में रहते हैं। वह इस जगह का राजा है। जो चाहे कर सकता है।

सब मिलाकर दयाल जमींदार के कारण छ-सात सौ की कपट पट गई। अब तब तो इन्हें मौका नहीं मिला था, उस दिन की वारन्त से जरा सा रस्ता पाय गए हैं, सो धुरें उठाय के घर देंगे। गाव के आधे पटट अब मेरे नाम पर हैं, यह साले को चलता है। भगवान जी ने मुझे लिए सो भोगता हूँ। इस साल को जलन क्या होती है? किसीकी बन्ती आखा से नहीं देख सकते ये बड़े लोग। समुर एकता एकता चिल्लाते हैं। अपने गरीब भाइयों का तो गला काटके रख देने है। सुराज का क्या

अचार पडेगा ? अर, यह लोग भी क दिन और ये अर्याचार कर सवेंगे ? इनका भी तो अन्न आवेगा किमी दिन । भगवान जी सबका पालन करते हैं । उनको लीला हो गई तो किमी दिन दयान की सारी जमींदारी में मरीनूगा और इसीकी हवेली में जाके रहूंगा । कर ले, आज इसका जमाना है ।

मोनाई ने एक दबी उसास भरी कमर पर दाना हाथ टेककर जरा नन गया । घर की तरफ देखने लगा—अजीमा नहीं आया अभी तक । पटक दू रुपया समुरे के आगे इज्जत बचे । मगर कमर तोड़ डाली साले ने । और अब तो जमराज डयोडी सूध गया है, जो घाने तक चढ़ बठा तो मुझे जेहन करा व ही मानेगा—कपफन तक सूट के खा जाएगा मरा । मगर पुलिम में ही देना था मुझे, तो उस दिन दारागा जी के सामने मेरा गुनाम दबो-ढको क्या करवा दिया ? जरा सी सिकत में तो मेरे ऊपर साढ़े सानी चढ़ जाती । तब फिर चाल क्या है इसकी ? दयान जमींदार बेफजूल में हमदर्दी वाल जीव नहीं । कुछ समय में नहीं आना । बाकी य पक्की मानो, कही ऐसे में छुरी भावेगा मुझे जहा पानी भी न मिले । भगवान जी, इत्ती सेवा करता हू तुम्हारी । फिर भी तुम्हारे भगत की छाती पर दुश्मन सवार हा जाए ? कहा गए गज के पद छहानेवाले ? मेरी बेर इत्ती दर क्या लगाई ? अजीमा साला कहा मर गया कम्बखन ! य दयाल समुरा अभी मेरी इज्जत टके सेर बचने लगेगा । ये देखो, फिर वमका सा ना ।

बाप का जमाना भूल गया है शायद ।" दयाल जमींदार की आवाज काना में आई—छेदाशेंग ! हरामजादा का अक्कन में भागा भाक देखो । बोला शाला के जे दयाल तोमार बावार प्रजा नेई जे तीन घाटा तक दर बाजे पर खडा रहेगा ।'

एक सेरड के लिए मोनाई की आंखें मिच गई । जिन्दगी भरकी आनन्द गई जो एक पड एजापटा ! ह भगवान-परभूनाथ ! अजीमा साला आया ! 'बो आ गया राजा बहादर !'

मोनाई ने गतोप की एक गहरी सास ली और छत्रामिह स बनरा कर हाथ जोड़े हुए जमीन्दार की ओर बढ़ा। वह हाफ गया था। कहने लगा—'मरी इत्ती मजाल कि आपको खटा रखू ? भगवानजी ने यह दिन तो दिवाया कि सरकार की गालिया सुनन को मिली। अब भरोसा भया कि हज़ूर ने मुझे अपनी सरनागत म ले निपा है। मानिक जत्र गालिया दें तो समझा कि दास का अष्टाभाग है।'

दयाल जमीन्दार क चेहरे पर सारे भाव तन गए थे। गदन म भी तनाव जा गया था। पान चबाते हुए जबड़े चल रहे थ पाना को घबो पर हाठा की दप भरो मुस्कान दव ळबकर शनक मार रही थी। वाय हाथ म हाथीदात की छन्नी के सहारे कमर जरा चुकी हुई थी और दाहिने हाथ म अगूठियो के नगीने दमक रहे थे। मोनाई की तरफ स मुह फिराकर न्याल जमीदार जरा ऊचे आसमान को घेरकर फली हुई बसाख की धूप को देख रहे थे।

मोनाई उनके चरण छने को आगे बन्ग। दयाल जमीदार ने पैर खिमका लिए। न्याल जमीदार मन ही मन पून लठे। आ गया ठिकान पर। चौपट करवे फँक दूगा साल को। इसक गोदाम म दो हज़ार रोरे से कम न होंगे। काट पीटकर भी डेढ क लाख बघा लेगा पट्टा। कहा-कहा स छिपाकर धान इकटठा किया है इसने ! मुझे रस्ती भर भी खबर न लगने पाई, बडा काइया है।'

मोनाई की खुशामत्त दयाल के निमाग को अपने हथकड निपाने के लिए उकसा रहा थी। मोनाई की वाते काना म पडकर दयाल के खयाला की सनह को छकर निक्ल जानी थी। 'पुलिस म दे लूगा तो मरे पल्ले कुछ न पड़ेगा। पुलिस वाले सब हडप कर जाएंग। मिलिटरी वाते दो हज़ार बोरा के निण पाच सौ इमम बयो न झडप लू ? बुरा क्या है ? अगर अभी मैं पुलिस म रिपोट कर दू तो कौन्नी का भी न रह जाएगा और जल म चक्की पीसनी पडगी सो अलग ! या पाच ही सौ बोरे तो दो पड़ेगे मुने। फिर भी डड क हज़ार चारे के करीब बच रहग साले के पास। लाख



लगी थी जनाब को। मुझसे दयाल जमींदार स, टक्कर लेने के लिए वह मेरी प्रजा को भूया मार मारकर अपनी ताकत दिखाता चाहता था। ले बच्चू अब देख ले कि कौन शक्तिशाली है। सारा गांव धाखें खोल कर देख रहा है कि अपनी प्रजा पर अत्याचार करनेवाले दुष्ट को दयाल जमींदार कितना कठोर दण्ड देत है। देख ले प्रजा जमींदार अब भा अपनी प्रजा का कितना पालन कर सकता है? नमकहराम है साले सब के सब।

जिनके लिए खुद दयाल जमींदार इतना कष्ट उठाकर यहा पधारे, जिनके एक बड़े भारी शत्रु को उहाने चुटकियो म परास्त कर दिखाया, जूठन चाटनेवाला की अन्न और रोगिया को दवा दिलाई क्या कुछ न कर दिखाया दयाल जमींदार ने। लेकिन जिसके लिए उ हाने यह सब कुछ किया उसी महामुख जनता पर काइ भी असर पडता नही दीखता। किसी न उनकी जय जयकार भी नही बोली? उनके उस हसनवाले प्रशसक न भी नही। कम्बख्त जब तो इधर देख भी नही रहा। घूरे की जूठन खान म जुटा हुआ है। कमीने है सबके सब। और नालायक। आज तो मुझे प्रणाम भी करने नही आए। हरामखोर।'

दयाल जमींदार की आखा के सामने सबसे पहल मोनाई का मंदिर आता था। फिर वे पेट भरे मरभुखे मरीज, जिजमानो की दया के टुकडा पर पतनेवाले भिखारी ब्राह्मण—जो उनसे और सबसे जाति म उच्च हाने के कारण पूज्य थे मगर शक्ति म कितने नगण्य कितने हीन। 'और उन घूरे चाटनेवाले कगलो म बड़े बड दिग्गज ब्राह्मण भी तो दिखाई पड रहे है। य अपन दिवू भट्टाचाज्य का पोता—क्या भला सा नाम है—खर होगा, जान दा। कितन नाम याद रह, और वह भी इन पापिया के? सब पूछो तो ब्राह्मण न ही भारतवर्ष का सत्यानाश किया है।' दयाल बाबू जाश म आकर सोचन लग— जय से य गिरे हिंदू धम का लोप हो गया। जब हमार पूय ही गिर गए ता अनिय वचारे अकल बहो तक अपन देश की सवा करत रहगे? फिर भी, क्षमिया न दश के लिए क्या क्या

नहा किया ? भगवान रामचन्द्र, श्रीकृष्ण, बुद्ध महावीर ऐसे बड़े-बड़े अवतार, जोर भीम, अजुन, राणा प्रताप, वीर शिवाजी से लेकर पृथ्वी राज चौहान तक सब महापुरुष क्षत्रिय ही थे, जो शब्दवेधी वाण तक चला सकते थे। जमनी ने बंद चुरा लिए हमारे, नहीं तो आज इस पृथ्वी पर क्षत्रिया का ही चक्रवर्ती साम्राज्य होता। पर आपस को फूट खा गई। नहीं तो आज हमारे भारतवर्ष में अंग्रेज भला राज कर सकते थे ? वनिये भी कभी राजा हो सकते हैं ? मगर अब कलियुग में तो हो ही रहे हैं। देखो, गांधी जमा महात्मा बंधुओं में जन्म लेना है। शास्त्रान्तर ही लिखा है घोर कलियुग आ गया, चारा चरण रख दिए। तभी तो हिंदू धर्म की यह दुःशा हो रही है। ऊंची जात की मर्यादा लाप होती जा रही है। मुस्लीमों की ताज का यह हाल है कि घूरे की जूटन लोग गुल आम चाटते हैं। हाथ रे हिंदू धर्म ! कितना पतन हो गया है हमारे भारतवर्ष का !”

दयाल जमींदार महत्सा महमूस करने लगे कि एक उनको छोड़कर सारा भारतवर्ष, सारी दुनिया रमातल की ओर चली जा रही है। पतन के सड्डु की ओर आधे मूदकर बटनी हुई महामूस मानवता के प्रति उनके हृदय में अपार करुणा का श्रान फूट पडा। दयाल जमींदार सारे ससार के बह्याण की चिन्ता करने लगे। पतितों के उद्धार की प्रबल आकांक्षा उनके मन में उत्पन्न हुई। सोचने लगे, बड़े काम करने से अपना भी बड़ा नाम होगा और हिंदू धर्म का, देश का उद्धार भी हो जाएगा। फिर साचा, कौन-सा बड़ा काम किया जाए। मंदिर धर्मशाला बनवाने से अब नाम नहीं होता। ये साल कौरी चमार केबट भी मंदिर बनवाने लगे हैं अब तो।

बड़े होने का कोई उपाय नहीं मूस पडता था। दयाल जमींदार का जो कुछ कुछ सट्टा हान लगा। सोचने लगे, मैं अपनी सारी चिन्दीगी



बर्बाद कर दी। मुझे कुछ काम करना चाहिए। बस कर तो रहा हूँ— अभी अभी ही भूया को अन्न जिनवाया गोनिया का ज्वा जिनवा दो इस चिलचिलाती हुई धूप में घटा-गटा अपने गाय को सगा कर रहा हूँ। दुनिया के सामने एक महान आत्म उपस्थित कर दिया है मैं। अग्न अग्नवारा में छप जाए तो सारा दुनिया जात लगी कि श्री दयाल खाँ विश्वास दश के महान जमीन्दारों में से हैं। जोर जा नाम हान लग ता यम मीघे पोलीटिक्स में नेता बन जाऊंगा। इस बार चुनाव हा तो उत्तम भी घटा हा जाऊंगा। हिंदू महासभा में टिकट पर चला हा जाऊंगा। कांग्रेस के टिकट पर भी चला हो सकता हूँ मगर उत्तम जल जाना पटना है। हिंदू महासभा ही ठीक है। नाम का नाम हागा और परम पवित्र सनातन धर्म की रक्षा भी होती रहेगी। बस यही ठीक है। अब जीवन में जरा आगे बढ़ना चाहिए। इतिहास में नाम आना चाहिए। मास्टर बाबू के जरिये यह काम हो सकता है। बड़े काम का है यह लड़का। इसमें अपनी प्रशंसा के लेख लिखवाकर छपना होगा। मैं क्या यही मास्टरवा छपा देगा। हीले बहाने से दस-बीस पचास इसकी जेब में झुका दिया करूंगा। बस फिर तो यह अपनी सारी अंग्रेजी की नालिज मेरे ऊपर घट्ट कर देगा। बड़ा विद्वान आदमी है यह पाचू भी। मगर है पट्टा पमड़ी। घर। कोई बुरी बात नहीं। विद्या पर तो गव होना ही चाहिए। लक्ष्मी और सरस्वती—यही तो गव करने लायक है। मेरे पास धनबल है इसके पास बुद्धिबल है। यह मुझे अलवारों में प्रसिद्ध कर देगा मैं इसके और इसके परिवार को इस अकाल से मुक्त कर दूंगा।

दयाल जमींदार के मन में नई आशा, नया उत्साह जागा। उ होने पाचू की तरफ दखा।

पाचू सिर झुकाए किसी गहरे खयाल में डूबा हुआ था।

पान चबाते हुए पाचू दयाल जमींदार से बराबरी की कल्पना अवश्य

कर रहा था, किन्तु उमका भूखा पेट व्यग्य बनकर मन म निरंतर  
 चुभता रहा।

इधर जब कभी वह दयाल या मोनाई के सामने जाता था तो लाख  
 सतक रहने पर भी उमे अपनी लघुता का भास हान लगता था। व्यय  
 हार की दुनिया ने धीरे धीरे उसे यह महसूस करा दिया कि विद्या जीव  
 बुद्धि के बल पर आदमी अपने बडप्पन की साख नहीं पुजा सकता। साख  
 पुजाने के लिए पसा चाहिए। पैसा सबसे बडी शक्ति है। दूसरे ही क्षण पाचू  
 अपने इन विचारा को हीन मानकर उन्हें उपक्षा की दृष्टि से देखता था।  
 यह सोचकर उमे बडा बल मिलता था कि दुनिया म सदा से ही बुद्धि का  
 धन से भी ऊंचा स्थान मिला है। वह सोचना कि अगर बाल्मीकि न  
 होन तो राजा रामचन्द्र का कौन जानना ? रवी द्रनाय यदि कवि न होन  
 तो प्रिम द्वारकानाय टैगोर के नाती के रूप म उन्हें कौन पूजता ? वह  
 खुद अगर पन्ना लिखा न होता तो दयाल क्या उसकी इस तरह लल्लो पत्तो  
 करत ?

लेकिन यह सब होने हुए भी वह दयाल के आगे कितना शक्ति-  
 हीन, कितना नगण्य है !

समुद्र की लहरो की तरह ऊंचे-नीचे विचार आगे बढ़ते और फिर  
 पीछे हट जाते थे। वह साचने लगता कि शिक्षित निधन न होकर अगर वह  
 मूख घनी होता तो सुखी रहता। सम्भ्य समाज म मूख घनी का स्थान शिक्षित  
 निधन से अधिक सुरक्षित होना है। वह और उसने विद्वान पिता अपन  
 परिवार के साथ गाव के किसी भी दूसरे गवार की तरह ही भूखा मर रह  
 हैं, जबकि दयाल जमीदार ताद पर हाथ फेरकर गुलछरों उडाता है।  
 दयाल, मानाई शक्तिमान हैं—केवल इसीलिए कि उनके पास पैसा है।

मन के अघेरे म पाचू डूबन गगा। दम घुटने लगा। एक आह गले  
 म अटकनी हुई बाहर निकली और फिर वैसे ही दबा दी गई। पाचू का सिर  
 चुका हुआ था, हथेली से ठुडडी पकडे हुए बाया हाथ कमर पर टिका  
 हुआ, दाहिना पर एक कदम पीछे और बाया आगे जमाकर वह इतनी देर

ने गडा हुआ था। मजबूरी की इस दम घाटनवाली भावना से शरीर अस्थिर हो उठा। हाथ टूटती से हटकर नीचे आ गया। दाना हाथ कमर के पीछे जाकर बंध गए और लाना पाव बराबर आ गए। वह अनमना ही गया।

चीला कौआ लौर कुत्ता ने सामूहिक शोर के प्रति उमक बान चतन हुए। पाचू ने सिर उठाकर नामने दगा—मोनाई अमीम एक तरफ दयाल जमीदार अपने हासी महालिया व साथ दूसरी तरफ इन दाना के वाच से गुजरकर पाचू की नजरें मोनाई के मन्दिर तक पड़ रही थीं। पाचू न दगा मन्दिर के दरवाजे पर पछाही लठत अब पहरा नहीं द रह थे। मन्दिर के सामने पड़े हुए ब्राह्मणा पर आंघ फिसलती थीं, मगर वह पहरे घूरे की ही देखना चाहता था। वहा भी भीड इस वक्त तक तितर बितर हो चुकी थी, इनका दुक्का आदमी चील, कौआ और कुत्ता के जमघट म एक शनितहीन शत्रु बनकर घूर को घूरता हुआ दिखाई दे रहा था।

पाचू को यह दृश्य अच्छा न लगा। घूरा इस वक्त उसे भरघट की तरह मनहूग लग रहा था। पहले आदमिया का मेला लगा हुआ था। लोग पर लोग टूट रहे थे। चील कौए और कुत्ता से घमासन लडाई छिनी हुई थी। आदमी लगडा पड रहा था। उस दृश्य मे कितना जीवन था, कितनी क्रियाशीलता थी। और अब ? वह मैदान छोडकर चला गया है। क्या, बात क्या है ? घूरे पर की जठन भी अभी खत्म नहीं हुई। कुछ देर पहले झुड के झुड आदमी पेट के लिए आपस म जितना लड रहे थे, उतना वे अपना पेट भर नहीं मके थे। तब फिर वे चले क्यों गए ?

तुरत ही पाचू को मोनाई के घर की गोलियों और लाठियों की याद आ गई। सारी बात उसके दिमाग म साफ झलक उठी। आदमी भूख का तबलीक सहते सहते टूट जरूर गया है परंतु इतने दिनों तक अह के साथ पीडा के सहवास ने उसे एक तरह से इसका आदी भी बना दिया है। जन्न पाने की झूठी आशा लिए हुए भूख से लडकर दिन गुजारत हुए भी वह

जीवित है परन्तु गोलिया और लाठिया से लटने जाकर उसे तुरन्त ही अपनी जिन्दगी स हाथ धोना पड़ना। आदमी जीवन स प्यार करता है, मौन से, जहा तक बन पड़ता है वह दूर हो रहना चाहता है।

मौन के ठेकेदार जमींदार दयाल विजयाम को सामने देखकर भूख हट गए थे। उनके पर हट जान के लिए सामूहिक रूप स अपने आप उठ पड़े थे। अन्न चीलों और कौआ के समान शत्रु रह गए थे। इनका शोर और काव-काव हवा के जुरें-जुरें स भर गया था। कान उस शोर के इस बदर आशी हो चुके थे कि ध्यान दिए बगर वे आवाजें अब खलती नहीं थी—एक तरह से मुनाई ही नहीं देती थी।

एक बार पहले भी जब इस हुगामे स आदमिया की चीख चिल्लाहट और बरहकमहोन-हान मिटन लगी थी, तब पाचू के कानो ने जागकर उस बर्मी को महमूम किया था, उसकी आंखें फौरन ही उठ गई थीं। लोगो के हटकर चले जाने पर भी उसका ध्यान गया था। मगर उस वकन दयाल जमींदार बड़े जोरा के साथ मोनाई के घुरें उड़ा रहे थे। पाचू की दिलचस्पी उस वकन उसम ही थी। उन भूख के मनवाला का नजर-अदाज करके, वह दयाल जमींदार के रोब स मानाई पर अपनी विजय का अनुभव करने स फसा हुआ था। बाद स यह नशा धीरे धीरे उतर चला। वह फिर सिर झुकाकर सोचने लगा था कि इन हारनेवाले और हरानवाले दो पूजीशाहा के सामने उसकी हस्ती ही क्या है? चाहने पर पल भर स दयाल जमींदार उसका भी पानी इसी तरह खड़े-गड उतार सकता है। चाहने पर मोनाई भी उसे मलमल स लपटकर दस मार सकता है। और पाचू चाहने पर भी इन दोना स स किसीका कुछ भी नहीं कह सकता, क्योंकि वह बायर है। गाब व कमनरीन इसा भी पाचू स अच्छे हैं। वे अब दयाल या मोनाई की सलामतें खुशामदें ता नहीं करत।

कान्हू के प्रल की तरह हीनता के बक्कर स घूमता हुआ पाचू अपन थपाहिअपन से खीझ उठा। लेकिन इन हार शम और बेचनी स भागकर बच जा ही बहा सकता है? अपने अदर से वह इस गतिरोध को क्योंकर

दूर करे ? उसके विभाग की ऊपरी सतह में जनेका उतड़ उतड़े से विचार तात्पर्य के साफ पानी के अन्दर तेजी से आती-जाती बतराती हुई मछलियाँ की तरह झलकत तो थे मगर चतन बुद्धि की पकड़ में वे नहीं आ रहे थे । पांच विचार शून्य सिर झुकाए रखा था ।

दयाल जमींदार पाचू से अपनी पब्लिसिटी कराने का निश्चय कर उसको ओर देखने लगे । उन्होंने सांचा किसी गहर पयान में डूबा हुआ है ।

उसका ध्यान अपनी जोर आकृष्ट करते हुए दयाल जमींदार बोले—  
' देख लिया मास्टर, ये है अपने देशभाई । सातों चूसकर इक्यावन रुपय की गुठली बूक रहे हैं जैसे दश पर बड़ा भारी एहसान कर रहे हैं ।

कहते हुए दयाल ने रुपया को पर से ठुकरा दिया । तब म आकर बोला—' चार पैसे कमाकर नवाबजादा हो गया है साला । वो दिन भूल गया जब घर में खाने के भी लाल पडे हुए थे ।

मोनाई सिर झुकाए हाथ जोड़े, चुपचाप खड़ा था । दयाल कहते गए— एक तो सडा हुआ अन खिलाकर इतने ब्राह्मणा को मौत के मुह में डाल दिया और अब इक्यावन रुपये देकर घनश्यामदास बिडला बनना चाहता है, कमीना ! इससे पूछो भला इक्यावन रुपस्ली में डाक्टर क्या अपने हाड-मांस से जिलाणगा इतने मरीजा को ?

मोनाई ने देखा, देवता सतुष्ट नहीं हुए । वह पहले से ही जानता था । विनयपूर्वक बोला— 'मेरे पास रुपय होते तो अपनी जान तक देने से न चूकता । बामन ठाकुर की सेवा में अगर तन की चमड़ी भी अरपन कर दू तो भी उरिन नहीं हो सकता । राजा बहादुर तो जानते ही है कि उस दिन की बारदात में जो दो चार पैसे वाल बच्ची के लिए कमाए थे सो भी भगवान जी ने ले लिए । दुक्खम सुक्खम किसी तरह '

दुक्खम सुक्खम ! हिं ! ' दयाल ने मुह बनाया फिर आवाज में तेजी लाए—' और वे हजारों बार जो तुम्हारे तहखाने में चुन हुए हैं ?'

मोनाई इसका जवाब देने के लिए तैयार था । फौरन बोला—' वो आपके है मालिक । आपके राज में जो कुछ भी है वो सब हज़ूर का

ही है।”

यह कहकर मोनाई न एक दबी निसास छोड़ी जो दयाल जमींदार तक को सुनाइ दी ।

दयाल तमक्कर बोले—‘देख लिया न मास्टर इस कमीन को । एहसान मानना तो दूर उलटे ताने कसता है । साला मरी प्रजा को भूखा मार मारकर अपनी तिजोरी भरता रहा । गाव म गोलिया चलानी पडी इस इस कमीन व कारण । दारागाजी की नजरो से इसका गादाम बचाया मैंने, नहीं तो आज ज न चक्की पीसता होना । इसके अपराधो की मौमा है भला ? बादशाही होनी ता साले की खाल बिचवाकर चील गिद्धो का खिला दता । धन के लोभ म इस कमीने ने बेचार निर्दोष ब्राह्मणा पर यह अत्याचार किया । मेरा तो चलेजा फटा जाता है अपने दशवासिया की य दुदशा देख देखकर । छेदाशंग, तोड दो इसका गोदाम ।’

मोनाई की बनिया-बुद्धि जाग उठी, चाल सूझी । बिना घबराए बिना झिपके, बडी शान्ति के साथ उमने तुरन्त ही हाथ जोडकर कहा—‘इत्ती तकनीफ बाहे को बरते हैं मालिक ? चार मजदूरे मरे साथ कीजिए । आप जहा कहें तहा बोरे धरवाम दू । इस बारदान के बाद मैं तो आप घबराय उठा हू । सत्त कहता हू । उस दिन आपने तो इस दास के लिए बनी कोसिस कर दानी, मुल पुलुस वानों की निगाह आप समझ कि बडी पत्थरफोड हाती हैं । तब स तीन बार दरोगाजी का आदमी जाय चुका है मरे पास । दस हजार मागता है नहीं ता तलासी लेवेगा ।’

दयाल जमींदार चक्कर म आ गए । एक नया दुश्मन, उससे भी अधिक शक्तिशाली मोनाई के गादाम पर दात गडाए बठा है । रीब नम पडा, उतसुक होकर पूछा—‘ फिर ?’

दिल ही दिल म मोनाई की बाछें खिल गइ, मगर चेहर की एक शिकन तब न बदली । उसी तरह स उसन जवाब दिया—‘स्पय ता मेरे पाम हैं नही राजा बहादर । औ’पुलुम की नजरो म आयक फस तो गया ही हू । गिरहचक्कर है हमारा—पिरालबध फिर गई है, जौन है तौन ।’

बहलाय दिया कि बाबा, जबरजस्त का ठेंगा सिर पर, उठाय ल जाओ।'

कहकर मोनाई ने टूटकर एक भाट भरी।

दयाल जमींदार का दिल बठ रहा था। चहरे की अकड़ के ऊपर खिसियानपन की एक पत चढ़ गई। मोनाई की नज़रा से छिपा न रहा।

एक झलक दयाल के चेहरे को देखकर फिर अपनी बात जारी कर दी—

'आपके चरना की सौगंध चाय के बहता हू हजूर कि मरा तो चित्त हट गया है इस काम से। कहा तक नुकसान सहू ? मैं तो अपने बान-बच्चा को लेके बलकत्ते चला जाऊंगा। भगवानजी का ही भरोसा है अब तो !'

यह कहकर मोनाई ने फिर जोरदार निसास जोड़ी। एक बार दयाल को मास्टर बाबू का देखकर फिर अजीम की धोर देखते हुए उससे बहने लगा—'अजीमा, बेटा जरा छेदासिंह के साथ जायके गुनाम की ताली सौंप द। जब दारागा जी का आदमा आवै ता हजूर क पास भेज दना। मैं उरिन हो गया।'

दयाल जमींदार मन ही मन उबल तो बेहद रहे थे मगर पुलिस का दारोगा उनके लिए भी भारी पड़ रहा था। उन्हें मोनाई की हम बात पर यकीन तो कतई नहीं आ रहा था लेकिन यह जरूर समझत थे कि दारोगा को रिश्वत देकर मोनाई उन्हें परेशान कर सकता है। इसके साथ ही वह य भी नहीं चाहते थे कि मोनाई की घमकी भरी चान क भाग उनका सिर झुक जाए। दिमाग इस गुत्थी में अटका हुआ था। उनका रियासती मिजाज पुलिस, दारोगा और मोनाई जैसे तुच्छ कीड़ा से हार मानना हरगिज नहीं बर्दाश्त कर सकता था। अचानक उपाय सूझा। उन्होंने तय किया कि गाव में चावल जरूर ही बटवाना चाहिए। पर तब की मोनाई का बहाना लेकर दारोगा क्या, गवनर तक को नीचा दिखाया जा सकता है।

दयाल जमींदार न हुकम दिया—'छेदाशंग ! ले आजो चाभी। राउ सवरे और शाम दीन-दुखिया को चावल बाटो। गाव में डिंडोरा पिटवा दो कि आज शाम को अऽ स्कूल के बरामदे में सब लोग चावल लेने के लिए इकट्ठा हो जाए।

फिर मोनाई की तरफ देखकर बड़े रुखे स्वर में दयाल ने कहा—  
'दारोगा का आदमी आए तो कह दना कि मैं दारोगाजी को धुलवाया  
है। समझ लूंगा।'

कहकर दयाल जमींदार फौरन ही चल दिए।

'आओ मास्टर।' दयाल के कहते ही पाचू चुपचाप उसके साथ हो  
गया।

पाचू को साथ लेकर दयाल अपने घर की तरफ चले। मोनाई हाथ  
मलना रह गया।

## ६

कोठी पर पहुंचने ही दीवानजी ने जमींदार को सूचना दी कि  
यूनीयन बाड का सप्रेटरी मिस्टर दास आए हुए हैं और उन्हें गेस्ट हाउस  
में ठहराया गया है।

यह खबर सुनकर दयाल बेहद खुश हुए। पाचू से कहने लग— अगर  
दारोगा वाली बात सच भी है तब भी मेरा काश कुछ नहीं बिगाड़ सकता।  
गांव में यूनीयन बाड खुल जाएगा तब अगर चाहू तो मोनाई का सारा  
मटाक जप्त करवाकर उसी दारोगा घेठ की निगरानी में अपने यहां उठवा  
मगाऊ। सरकारी गोदाम मेरे यहां ही रहगा। सप्रेटरी और एस०  
डी० ओ० को कुछ ले-दकर दारोगा साले को ऐसा अगूठा दिखाऊ कि वो  
भी ज़िदगी भर याद करे। और मोनाई को तो मैं तबाह करके ही दम  
लूंगा। कमीना मुझे पुलिस का डर दिखाता था! समय लूंगा उसकी  
पलिस "

इसके बाद दयाल जमींदार ने पुलिस और ब्रिटिश राज की मा-बहन



के साथ गहरा रिश्ता जाड़न हुए पराई हुकूमत पर अपना गुम्सा जाहिर किया ।

पाँचू तब यह माचने लगा कि हुकूमत व हमी भी हुकूमत की कितनी बुरी नज़र से देखने है । और उसे आश्चय हुआ कि फिर भी दयाल और उसके बग के लोग दुनिया पर अपनी हुकूमत कायम रखना चाहते हैं । आदमी जिस चीज़ से नफरत करता है उसीको चाहता भी है—मनुष्य के स्वभाव में यह विरोधाभास क्या ?

दयाल ज़मींदार पाँचू को आज अपने शीश महल में ले चल । शीश महल की शोहरत दूर दूर तक फली हुई थी । पड़ोस के एक दूसरे ज़मींदार, गौरीपुरी के नवाब साहब को नीचा दिखाने के लिए ही दयाल ने यह शीश महल बनवाया था । पुरनैनी हवेली का मेहमानखाना बहुत खस्ता हो गया था । उसकी मरम्मत कराने का इरादा करते करते लाग डाट के फेर में, नय सिरे से तिमत्रिली इमारत बनवा डाली । गौरीपुर के नवाब न अंग्रेज़ी ढंग का मेहमानखाना बनवाया था । शहर से बिजली का बनेकशन तक दौड़ा मगाया । दयाल ज़मींदार ने तश खाकर कलकत्ते से इंजीनियर बुलाए । गौरीपुर के नवाब ने सिर्फ बिजली ही लगवाई थी इन्होंने टेलीफोन भी मगवा लिया । थलिया के मुह खोल दिए । फर्शी मजिल पर नई कचहरी बनी, गुमास्तों को बरमा की मसनद गद्दी छोड़कर कुर्सी मेज़ पर बठने की आदत डालनी पड़ी । दीवानजी का कमरा अलग बना । ज़मींदार की कचहरी में सिंहासननुमा कुर्सी एक बड़े जोर भोटे कालीन पर सामने रखी गई, कुलोन और सम्मानित सदस्या के लिए सिंहासन के दोना तरफ सोफा सट रख गए । बिजली की रोशनी और पत्ता की तो भरमार थी । पहली मजिल पर एक तरफ दयाल ज़मींदार की लायब्रेरी थी, और दूसरी तरफ मेहमानों के लिए कमरे । सबसे ऊपर शीशमहल बनवाया गया था । शीशमहल देखा बहुत कम लोग ने था मगर तारीफ बहुतो ने सुनी थी ।

पाँचू पहली मजिल तक से परिचित था । लायब्रेरी में वह दयाल के

लडके को पढाया करता था। मेहमानों के कमर भी उसने देखे थे और उनकी सजावट से वह प्रभावित भी हुआ था। शीशमहल देखने की इच्छा तो बहुत दिनों से थी, परंतु खुद बहकर देखना उसे पसंद नहीं था। आज दयाल जमींदार के सग बहू शीशमहल वाली मजिल पर गया। बड़े हॉल में घुसने ही दाहिनी तरफ एक बनावटी चरना और उसके साथ ही लगा हुआ फव्वारा था। झरने से लगी हुई दीवार पर, शीशो में जगल और झरने का दृश्य अंकित किया गया था। बनावटी झरने में जगह जगह रंगीन बत्त फिट किए गए थे। दीवारें शीशो पर बनी हुई रंगीन तस्वीरों से मढी हुई थी। बीच-बीच में बहू आदम आईने लगे हुए थे। पेंट की हुई छत थी जिसमें बिजली के झंड पानूस लटके हुए थे। कीमती फारसी कालीना से हाल का सगममरी फश सजाया गया था। आधे हॉल को घेरे हुए दो फुट ऊंचा गद्दा पडा था, जिसपर रेशम की चादनी बिछी हुई थी। रेडियोग्राम, पियानो हारमोनियम, तबला, सितार वीणा, वायलिन एक ओर सजाकर रखे हुए थे। शराब के लिए दो कीमती मेजें दोनों तरफ रखी हुई थीं। दरवाजों पर रेशमी परदे पडे थे। हॉल के चारों कोनों में शीशम के खूबसूरत स्टण्डों पर विभिन्न मुद्राओं में नान नारी मूर्तियां रखी हुई थी। हर दरवाजे के दोनों तरफ खूबसूरत स्टूनों पर गंगा-जमनी गमला में विलासती फूल शोभा बत्न रहे थे। हर दो तकियों के बत्न गद्दे के नीचे पीतल के बड बडे उगलदान भी रखे हुए थे। उसके बाद रास्ते के लिए थोड़ी सी जगह छोडकर हाल के दोनों तरफ दीवारा से सटाकर दो बडे बड खूबसूरत शो-केस रखे हुए थे, जिनमें दयाल और उनके कुछ पुरखों द्वारा अय जमींदारों नवाबा और अंग्रेज दोस्तों से पाए हुए उपहार सजाकर रखे गए थे। उनमें ज्यादातर चांदी और सोने के खिलौने, मूर्तियां, सागर व मोना के सट वगरह थे। उन उपहारों में एक बर्मा के बने हुए भगवान बुड भी थे जिन्हें दयाल जमींदार के एक नामी गिरामी नवाब दोस्त ने भेंट किया था। दयाल जमींदार के परदादा को मीर जाफर ने खिनाव, खिलकत व सनद दी थी, मो भी शो केस की सजावट बढा रही थी। बडे बडे अंग्रेज

अफमरा से पाए गए उपहारा में अट्टानब फीसदी उनकी दस्तखती तस्वीरें थीं, दो-तीन में साहबाबा की भी थी। पिछले क्लेक्टर की में में अपनी तस्वीर पर 'टु डियर दयाल लिख दिया था।

सामन हाथी दात व नस्काशी किए हुए अठपहलू फ्रॉम में एक कीमती घड़ी थी।

दयाल जमींदार ने बड़े उत्साह और अभिमान के साथ पाचू को हर चीज दिखाई और कहा— इस कमरे की रीयल ब्यूटी तो शाम को देखना मास्टर ! और इसके बाद वह जो अदर का रायल कमरा है न उसे भी दिखाऊंगा तुम्हें ! देखकर तुम भी कहांग कि हा किसी रईस का विलास भवन देया !”

फिर उहान हाल की हिंदुस्तानी मजावट का खाम तोर पर जिक्र करत हुए बतलाया— इसमें एक पालीसी है। कोई अंग्रेज चाहे वह लाट साहब का नाती भी क्या न हा मर शीशमहल में भागगा तो उसे हिंदुस्तानी ढंग में ही बैठना पडगा। कुर्सिया जानबूझकर ही नहा रखवाई हे मैंने। हिंदुस्तानी नाच गाना की महफिलें करवाता हू कि बेटा लुक जवर नशनल आट !”

इसके बाद दयाल जमींदार ने यह कहकर पाचू की इज्जत अफाजई का कि आयदा किसी महफिल में वह उस जरूर बुलाएगे। फिर नोकर को बुलाकर बरतवाली टकी में पाना चढान का हुक्म दिया। झाड और फानसों से गिलाफ उतरवाए। आज मास्टर बाबू की खातिरदारी में शीश महल को रोशन किया जाएगा।

पाचू का इस समय दयाल जमींदार की दोस्ती और अपने शीशमहल देखने के सौभाग्य से गव नहा हो रहा था। उसे गुस्सा आ रहा था कि दयाल व पास इतना एश्वय क्या है। उसे दयाल से नफरत हो रही थी। इसीलिए वह शुरू में ज्यादातर चुप रहा। बोलने का काम खुद दयाल जमींदार कर रहे थे। हर बात में वह अपना ही शाहनामा बखान रहे थे। पूरी बतक्लुपी बरतत हुए पाचू अकडकर मसनद पर लेटा रहा। शरबत

आया, शरवत विधा—जैसे वह उसका हक हो। पनडब्बे से पान निकाल कर खाता रहा।

मुनने मुनत जोर मन ही मन विद्रोह करते हुए पाचू थक गया। आखिर विद्रोह पूटा और बीच बीच में खुद उसने भी लनतरानिया मुनानी शुरू की। बट्ट दयाल जमींदार को पछाडना चाहता था। उसने यह प्रकट किया कि जैसे उसे रईसा से इन आराइशा और महफिलो की सदा से आदत रही है। अमेरिकन प्रिसिपन मि० जाडन का प्रिय शिष्य होने के नात उसे विलायती समाज में दुनिया देखने के हजारो मौके मिले हैं। विलायती मद और धोरना को प्यार और मुहब्बत में जी खोलकर आजादी वरतना अच्छा लगता है।

ऐश्वय का झूठा बुद्धिजीवी पाचू घनाधीश होने के कारण 'बड़े आदमी' कह जानेवाले दयाल जमींदार पर अपन बडप्पन का सिक्का जमान का प्रयत्न कर रहा था। अपनी विनासिता और रोमास की झठी कहानियो में उसने दयाल जमींदार पर अपना रंग जमा दिया।

दयाल जमींदार को कलकत्त की कुछ विलायती कसबियो का हाल तो जरूर मालूम था मगर अग्रेजी सोसाइटी का धुल मिलकर लुत्फ उठाना उन्हें कभी भी नसीब न हुआ था। हर साहब को उन्होंने दावत दी थी, लेकिन किसी साहब ने उन्हें कभी पूछा तक नहीं—अपनी तस्वीर में 'डियर दयाल लिखनेवाली पिछले कलेक्टर की मेम साहब ने भी नहीं। दयाल जमींदार पाचू के विलायती अनुभवों में रस लेने लगे। छोट छोट कर पते की बातें पूछने थे। पाचू को उठन छू लनतरानिया उन्हें होठ काटने और रह रहकर ठंडी गम सामें छोडन पर मजबूर कर रही थी।

दयान जमींदार के विनास भवन में बठकर अपने देशी विनायती रोमासों की मनगलन कहानियो से खुद पाचू को तकनीक मटसूस हाने लगी। उसका चित्त चंचल हो उठा। दयाल के प्रति निरर्थक शोध और घुणा के पपडे स्वयं उसके मन पर ही तमाचे मारने लग। तभी मोनार्ड के आने की खबर मिली। दयाल जमींदार ने

मुना लिया। मोनाई आकर तरह-तरह से गनामन-गुनामन करने लगा।

पाचू का बहू गुस्सा आ गया। यह नाम आरमभ्रमात का भाव्य प्योकर बड़ सोगा व सामने दग तरह गिदगिहाया क्या करता है? जान म परजात म सबडा स अच्छी हैतियत रगतवान इग यण्यन मयत् क परा तने सारा गांव दया पत्ता है चोन्ह पोडिया के छानगी जमागर और रईम, दग पद्रह हजार अन्नना किताना के स्वामी और अन्नना थीमान दयान खाद विश्वास की परपरागन प्रतिष्ठा की भी अपनी बड़नी हुई शक्ति स बार बार झटके देनेवाला, दुनिया का तबरा म नीन और नाचीज यह मोनाई अपनी लागी की दीनत लकर भा दयान जमीनार क सामने घुटन क्या टेक दता है? यह दयान का गुलाम क्या बन जाता है? क्या? क्या?

मोनाई की पराजय म पांचू इस समय अपनी पराजय देख रहा था। अपनी निधनता के कारण वह दयाल से हार गया था और यह चाहता था कि दयाल जमींदार जीत न पाए। खीशकर बहू साचन लगा मोनाई तो दोलतमद है फिर यह क्या दबता है ' दयाल को य मुहतोड तुकों बतुकों क्यों नहीं सुनाता? कायर कही का।

पाचू की अपनी कायरता भी झाकने लगी। उसने आभास मात्र सही वह विचलित हो उठा। वह इन दोनों के आगे कायर हो जाता था। इस ग्लानि स बचने के लिए वह जरा अक्डकर मसन पर लेट गया और लटे-लेटे ही पनडिब्बी की ओर हाथ बढ़ाया। पान सतम हो चुके थ। फौरन ही उसने दयाल के नौकर को जावाज दी। दयाल जमींदार ने पूछा—  
'क्या चाहिए मास्टर?'

'कुछ नहीं। इस डिबिया के बधय को देखकर जरा दया आ गई। पाचू ने मोनाई के सामने दयाल जमींदार से मजाक करने अभिमान का बोध किया।

हो हो हो! करक दयाल हस पड। फिर मजाक का जवाब दिया— यह विधवा नहीं सदा सुहागिन है मास्टर। दिन मसकडो आने

जान रहने हैं।”

बहकर दयाल जाप ही अपन मजाक का मजा तूटते हुए हम पड। पाचू ने भी मुर म मुर मिला दिया, कहने लगा—' इसीलिए तो और भी दया आती है। जिस दीपक के पास सैरडा पतग आत हा, वट यदि किमी समय पतगबिहीन हो जाए तो उसे कितनी पीडा होनी होगी। अरे, पान ले आओ।”

नौकर सामने खडा था। लगे हाथ पाच न उसे भी हुक्म दे डाला, और इस तरह हुक्म दनवाले का एक मौका दयाल स बटककर उस बहुत मुब हुआ।

मानाई अपनी अरजी के पंमले का इनजार बर रहा था। घुटना म मिर झुकाए हाथ बाघे बैठा था। यहा की बातो पर उसका बरा भी ध्यान न था।

छेदासिंह अपन मालिक का हुक्म पाकर दूसरे लठठा के साथ मोनाइ के गोदाम का मालिक बन बठा था। बोरे उठवाकर उसने गादाम स बाहर पिकवा दिए। उहे देखकर आसपास फिरन हुए मघे जन हिमव आह्लाद और जोश से षपटकर समीप आए। बोरे यो फेंके जा रहे थे जमे ठाकुर की मूर्तिया मंदिर से बाहर फेंकी जा रही हा। 'नोगो को सहमा विश्वास नही हो रहा था। मोनाई के गोदामा मे हजारा बोरे देखकर वही अविश्वासमय आह्लाद उमड थाया जसा कि उट्ट बहाभोज और जूटन को देखकर हुआ था। पर तु उनके पाव टिटवकर रह गए। चात्रला क इन बोरो म शही ो का खून झलक रहा था। और व खूनी ही इन बारा को बाहर फेंक रहे थे।

मुछा पर ताव देकर डपटता हुआ छेदासिंह एक तरफ तो अपन लठैनी का बोरे निकानने का हुक्म देना और दूसरी तरफ मानाइ का सान जान-आनेवाली पीन्िया के साथ अपने क्षत्रिय रक्त का मोखिक रूप म मिश्रण भी बरता जाना था।

बारह रपत्नी का नौकर, मगर जमीदार का सिपाही ठाकुर छेदासिंह

मानाई जैसे लखपती क मुह पर लात जमा सकता था। जमीदार का सिपाही होने के नाते उस प्रजा के जान माल और जावरू पर सर्वाधिकार प्राप्त था। छेदासिंह न अपने साथ क पच्चीस लठना को चार चार बारे इनाम म वाट दिए। दस बोरे चावल उसने अपने लिए रिजव किए, जिनम स पाच बारे अपने जूता के बल पर उसने मोनाई के हाथ तत्काल बचे भा जीर रूपय भी नकद वसूल किए। जूते मार मारकर मोनाई का पानी उतार दिया। फिर वही पाचा बोरे उठवाकर स्कूल म भिजवा दिए। इमक बाद उजडे हुए गाव म डिढोरा पीट दिया गया। जिदा लाशा म फिर से जीवन दमकने लगा।

मोनाई एक ही दिन की लूट म ठडा पड गया था। चावन की लूट से भी ज्याना उसे जूता की मार खाने का गम था। एक बार हाथ उठ जाने के बाद छेदासिंह अब उसे जब चाहेगा पीट लेगा और मोनाई से यह राज रोज की मार हरगिज बर्दाश्त न हो सकेगी। इसीलिए दयाल के सिपाही के जूता स बचने के लिए उस मजबूर होकर फिर दयाल की ही शरण म आना पडा था। स्वाथ न उस मजबूर कर दिया था। उसने बिना किसी शन क दयाल जमीदार के सामने जात्मसमर्पण कर दिया।

हाथ जोडकर गिडगिडाते हुए मोनाई बोला— आप तार तो तर जाऊ, और मारना चाह तो हजूर के चरन कमल म दास का सिर हाजिर है। बाकी जनदाता अब छिमा कर दीजिए। आप माई बाप है जो डड मजूर करेंगे उसे सिर माथ पर धरौंगा सरकार। मुल मरे पेट पर लात न मार राजा बहादुर—मरे रजगार की रच्छा कर लें।

मानाई की इसी पराजय स प्रसन्न हाकर दयाल बाबू पाचू मास्टर स मजाक करत हुए अपनी खुशी जाहिर कर रहे थे। अपनी शक्ति क माहात्म्य बखानन हुए उटाने यूनियन बाड के सत्रेरी के जागमन की सूचना मोनाई को द दी थी। एक नौकर को भेज भी चुक था कि सत्रेरी साहब अगर गुप्त बगरह स छट्टी पा चुक हा तो उह ऊपर बुना लाए।

मिस्टर दास तशराफ लाए। सावला रंग निहायन दुबले लबा मद,

रेशमी सूट पहने सुनहरी कमनिया का अठपहलू शीशा वाला चश्मा लगाए, हाथ में ५५५ सिगरेट का टिन लिए हुए, और हाठों में एक सिगरेट दबाकर मिस्टर दास ने जमींदार दयाल विश्वास, हेडमास्टर पाचू गोपाल और व्यापारी मानाई बोष्टम को अपने प्रथम दशन से वृत्ताय किया।

दयाल जमींदार तपाक के साथ उठकर खड़े हो गए। कुर्मी क गुलाम मोनाई ने खड़ होकर कमानी की तरह अपने को झुकाकर अदब से हाथ जोड़। पाचू भी उठकर बैठ गया। मगर खड़ा नहीं हुआ।

मिस्टर दास पहली ही झलक में पाचू का फूटी आखा न सुहाए। मिस्टर दास पतलून की श्रौंज का नजाकत के साथ सभालते हुए मसनद के सहारे बैठे। सफर की तकलीफ-आराम पर दो सवाल जवाब हुए। फिर दयाल ने मिस्टर दास का हेडमास्टर पाचू गोपाल से परिचय कराया बड़ी तारीफ की। पाचू ने अपनी तरफ से बनावटी शिष्टाचार दिखाया। उमे मिस्टर दास का बत-बनकर बोलना फूटी आखा नहीं सुहा रहा था।

मिस्टर दास का नजर अदब से हाथ बाधे और सिर झुकाकर खड़ हुए मोनाई की तरफ भी गई। मिस्टर दास को अपनी तरफ मिलाने की गरज से दयाल ने टूटी फूटी अंग्रेजी में मोनाई का चिट्ठा खोलना शुरू किया। 'दयामफन, राशकल आदि नामों से बंगाली-अंग्रेजी में मानाई को याद करते हुए दयाल जमींदार ने हस हसकर मिस्टर दास से कहा— 'आपके आन की खुशी में अपने गांव का यह सबसे उम्दा तोहफा आपको प्रेजेंट करता हूँ।' इमक ऊपर हसी हुई। पाचू हमने के खिनाफ था, लेकिन मुस्कराने पर मजबूर हुआ।

मोनाई के लिए दयाल जमींदार का मिस्टर दास से हस-हसकर अंग्रेजी में बातें करना असह्य हो उठा। बड़ी घबराहट के साथ वह सांच रहा था— भगवानजी ही जानें, कौन-सी घात साथ रह हैं ये लोग। य वार-वार मुस्कराय मुस्कराय के हमारी तरफ इमारेबाजी कर रहे हैं, इमवा जौन फन मिले तीन कम है। एक सगुर जमराज और दूसरा जमबूत— मेरे घर को सेत बनाय के चर जावगे—जहर चर जावगे।"



एक सखी बापती उतास सबर मोनाई मन ही मन म टूट गया। उग पूरा पूरा यकीन हो गया था कि—'य राहू बसू दाना मित्रर हम आज जीना न छोडग। राम जानै, कौन साइन बिगड गई रही उस त्रि। दाम तब घायल दे दना तो परजा न जैवार मनानी। न तीन गानी चलती न उमादार गुदाम देपते। हउार पात सौ नपा बमान ब केर म अब य जनम भर की बमाई लुगी जाती है। भगवानजी एसा कौन-ना पाप किया था मैंन ?

मानाई सतब हावर अपन को टटालन लगा। किमी पाप क कारण ही उसकी यह दुःशा हुई है इसका उस डर था। पाप का ध्यान आन ही पीरन उसक प्रायश्चित्त का संकल्प कर उस दशना हुडी को दिलाकर भगवान के साथ सौदा पटान की सूक्षी।

“मुल बिना पाप जात परासचित कौन सा किया जाय ? वस जब स कण्ठी ली अपनी जान म तो कौनो पाप किया नही मैंने। चीटी को चारा दता हू गो भी हैं मदिदर म ठाकुर जी और गौमाता की सेवा होनी है। पुजारी जी को इसी हन रखा है। पुजारी जी को तनखाय देता हू परब तिउहार के त्रिन जसी सरथा है वसा दान पुन भी करता ही हू—एस तरह बाह्यन की सेवा भी कर देता हू। तब कौन-सा पाप मुझस भया है नाथ ? सवेरे चार बजे माला भी जपता हू तुम्हारे नाम की। मुल परसा लेट हुइ गया रहा साढ चार बजे जाख खुली थी। मुल इमसे क्या जिस दिन गोली चली रही उस दिन तौ सारी रात जागरन करके माला जपता रहा था। हा सूतक म जपी रही। गिन्नी ने मना भी किया था कि सूतक म कठी न छूना। मुल परता का एसा भय था कि कठी हाथ से न छूटी। वस यहां पाप भया इसीसे भगवानजी का कोप मुझपर भया है। मुल भगवान जी कीडे को क्या मारते हो ? छिमा करी नाथ। नीर जो जादमी मर रहे उनका भी किरिया करम अब तौ कराय दीना। वरमभोज भी हुइ गया। और चलो, जो रहा सहा परासचित था सो भगवान जी जमीदार वावू के रूप म हमसे पूरा कराश दीना। दयो क्या माया है भगवान

जी की। जित्ती बेला जमींदार बाबू ने छेनासिंह को अडर दिया कि गाव-भर म चावल बाट देओ, उत्ती बेला ती मेरी छाती म मानौ गाली दग गई रही। मुल अब ध्यान आया कि उस दिन द्वार से मंडा भूखे लौट गए रहे। जरा से स्वारथ के फेर म हमरी मत अधी हुई गई रही। वमे इत्ते स्वारथ क्या मान ? रुजगार घघा ती करम है। भगवान जी भी कहत हैं कि करम करी अपना। गाव वाल भूखे ती जरूर रहे मुल साधू भिखारी थाड रहे। हा, साधू भिखारी द्वार से भूखा चोटना ती सबमुच बडा पाप लगता। इसम क्या ? य ती दुकनदारी ठहरी सौदा पटा ती दिया नाही ती जे राधे। उल्टे वही रोग सत्र हमारे ऊपर आयाय करने लगे। क्या भगवान जी ने नहा देखा होगा कि मोनाई बोप्टम निरदाप है ? ओ' मान लेओ कि मायामोह मे पड सिसारी जीव है काई अपराध अनजाने मे बन पडा होय, ती भगवान जी ने उसके परासचित म ये डड दे दीना—जून खाए, गालिया सुनीं तूटे गए—क्या क्या दुगत नही भई ? बहुत डड हुई चुका गाय। इ दोनदयाल, अब छिमा करी। दखी हमारा चावल ही आज भूखा को बाटा जा रहा है। दुनिया समझे कि दयान जमींदार न जन्नदान दिया मुल इ दीनानाथ, तुम ती अन्तरजामी घट घट ब्यापी हो—तुम ती सब जानते ही। मैं मसारी बोडा जरूर हौं, पर पर तुम्हारा भगत हौं। तुम्हारी सरनम दिन रात पढा रहना हौं। इन पापियों से मेरा गला छुटाओ दीनबधू ! हे नीनानाथ, नाथो के नाथ इन पापी को नाथी। कालिया नाग से कुछ कम नही है ये दयाल। इन ससर के काटे का मतर नहा है। बडे-बडे हतियाचार किए हैं इमन। इसक जुतुम से पिरयी धरिय उठी हैं, य अकान पड रहा है। जिस गाव का राजा पापी है, उसम ती जरूर ही अकाल पड़ेगा—बद सामतर तक म यन्ती बान लिमी गई है। सारे बगाल म इसक ऐसे पापी जमींदार भरे पडे हैं। ये सब साले गौरमिण्ट म मिल गए हैं। इन्ही सबों ने रपिया दे दे के गाधी महातमा और नना लोगन को जेल म बंद करवाय दीना है। पुतुस से गालिया चलवाय न अदानन दबवाया इन लोगो ने। अभी भर यहाँ भी इसी राबुस दयान के आद-

मिया ने गोलिया चलाइ । मैंने तो किसीपर एक हाथ भी नहीं उठाया । उल्टे मैं ही मार छाता रहा भगवान जी जानते हैं । य सब बड़े लाग बम अपना ही स्वारथ चाहते हैं । गरीब की बन्ती तो दण ही नहीं सकत । अरे इनका भी सत्तियानास हो जाएगा । आने दो जरा सुभाष बाबू को फौज ले ब । वो इनको बालेपानी भेजगे और इनको सरकार का भी । सब गरीब लोग ही तब सठ-साहूकार और जमीदार बनाए लिए जाएगे । अरे एक बार सुराज हुइ जान देओ तब हम गरीबो के दिन भी बढुरेंगे ।'

मोनाई के लिए इस तरह निराद्रित होकर हाथ बाधे बठा रहना असह्य हो रहा था । डेढ घटा हो गया किसीन इसकी तरफ जाख उठाकर भी न देखा । मोनाई की जान सूली पर लटकी हुई थी उसका रोजगार घघा, चाल कुचाल, सब दयाल जमीदार के फमले पर ही निर्भर करता है । मगर दयाल जमीदार पाचू मास्टर और मिस्टर दास के साथ हसी-मजाक म मगन थे । शबत और फनो का नाशता हुआ दम पर दम जोर सिगरेटें चलती रही हा हा, ही ही होती रही—बकन या ही बीतता रहा ।

शीशमहल जगमगा उठा । इन लोगो ने तब जाना कि बाहर अधेरा हो चुका है ।

कमरे भर मे रग ही रग दिग्वाई देने लगे । काच पर बनी हुई, बडी बडी तस्वीरों के पीछे बल्ब जगमगा उठे । झाड फान्सो म जोत जग गई । बीच बीच म लगे हुए बड़े बड आईनों से विस्तार पाकर शीशो से मटा हुआ हाल एक विशाल शीशमहल का भ्रम कराने लगा ।

मेहराबदार जोर जगह जगह से घुमाकर पनली सीढिया पर से उछलता हुआ सतरगी पानी का झरना बह रहा था । गहरे बजना रग के निहायत छोटे छोटे बल्बा से पहाड हरी रोशनी के दरखन और पीले लाल फून रोशन थे । सतरगी पानी का झरना उभरकर नजरा म आता था । नीचे रगीन फवारा । रग बिरगी रोशनिया को अपनाकर पानी की बूँटें ऊपर की ओर उछल रही थी । झरने के पीछे शीशे पर बना हुआ जगल और पहाडो का दृश्य (निमित्त मात्र के लिए) प्रकृति का भ्रम उत्प न करता

था। पेड़ों से झाँकते हुए चंद्रमा और तारा भरी रात में दर्रह की एक शाख पर पूना का हिंडाला डाले हुए एक-काने सुंदरी झूल रही है। एक तस्वीर, 'नूरजहा की मुहागरात' बनी थी। जहागीर के रंगमहल के दरवाजे की चौखट पर एक पर रक्मे, लाज की मूर्ति नूरजहा, बारीक घूघट में अपने मुखड़े पर बरसत हुए नूर को शाप लेने की कोशिश में टिठकी हुई खड़ी है, और शाहशाह जहागीर आप्रहपूर्वक उसका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ रहा है। एक दूसरी तस्वीर, 'विषवामित्र मेनका'—तूपानी रात में राजपि की बुटिया में आश्रय पाकर छापरूपा मेनका बेमुघ होकर मो रही है। राजपि विषवामित्र उसे गम वस्त्र उड़ाने के लिए आए हैं, आधियों से अस्नव्यस्त बसन में घूँप छाव-सी भनकनी हुई अपराजिता नारी ने महातपस्वी के नेत्रों को बाध लिया है। 'स्वग यही है—इस चित्र में अनेका अदनगन और प्रायः नग्न रूपसिया से घिरा हुआ शाहजादा बँठा है। नरय हो रहा है, दासी शराब का पात्र लिए खड़ी है, दो दासिया पला झल रही हैं और शाहजादे की बाहा में जकड़ी हुई दो मदमाती रमनिया उसे रिखा रही हैं। इनके अलावा उमर खयाम और साबी, गोपी चीरहरण भुगल हरम का स्नागह बसत, नारी का निमंत्रण—सयोग के शृंगार के मासल चित्रा से मन की वासनाएँ स्थूल होन लगीं। उनका बेग और भार हृदय में व्यग्रता उत्पन्न करने लगा।

पाचू, मिस्टर दास, मोनाई सब एकाएक शीशमहल के जगामगा उठन पर चौंकर देखने लगे। सबको चकित करनेवाले अपन वधव को दयाल जमींदार ने भी चारों ओर नजर घुमाकर देखा और उनका चेहरा खुशी और दप से चमक उठा।

नज़रें बध गई, खयाल बध गए—नग्न सुंदरिया से सेविन अलिफ लैला के शाहजादे की भाँति पाचू इस समय शीशमहल के विलासितापूर्ण बानावरण से घिरा हुआ था। उत्तेजना मन को अस्थिर करने लगी। अज्ञान्त होकर उसने सोचा—'य ऐश्वर्य दरअमल हमारे जीवन में है क्या? वह स्वप्न हम साधारण जना के जीवन में साकार ही कब हो सकता

है ? विलासिता या यह आढम्बर पस का काट है इसान के त्रिमाग की विरुति का भद्दा प्रत्यक्षन है ।

दयाल बाबू अपने ऐश्वर्य चमत्कार को त्रिगाकर अब पारा चदान लगे । मातार्द का इसाक करन के लिए बडे । जबान के तीरा स उसका रोम रोम बीध डाला । फिर नौकर का बुलाकर छत पर सामान लगाने का हुनम दिया ।

पाच के मनोभाव दयाल जमींदार व विरुद्ध जा रहे थे ।

मिस्टर दास दयाल के शीशमहल के जादू से बध हुए मुह और आँखें पाड फाडकर तस्वीरों देख रह थ ।

मोनाई जमींदार के पर पकडकर गिडगिडा रहा था । अपना अपराध स्वीकार कर वह दयाल जमींदार से डड की भीष माग रहा था । वह जानता था कि दयाल जमींदार लम्बी रिश्वत लिए विना हरगिज न मानगे । इसलिये खुद अपनी तरफ स ही बात निकासकर उसने दयाल को बतलाया कि शास्त्र के अनुसार विना डड परासचिन किए उसकी गति नही और वह हर तरह स सेवा मे हाजिर है ।

पाच सौ से बढत बढने हजार बोरा पर 'डड पूरा हुआ । बीच बीच म मोनाई ने दस हजार वार मालिक के चरणाकी सौगध खाकर भगवान और ईमान की दुहाई पीटी । सफ्टरी साहब को नजराने म दो सौ वोर देना तय हुआ । मोनाई सब कुछ खुशी और उत्साह के साथ स्वीकार करता चला गया । वह साचना था कि सब कुछ लुट जाने से तो भागने भूत की लगाटी हो भली है । अपनी चापलूसी और सुशामद से उसने जमींदार और यूनियन बाड के सेक्रेटरी को सुश कर लिया ।

पाचू अकेला पड गया था । उसका कही भी जिक्र न था । उसकी तरफ किसीका भी ध्यान न था । यूनियन बोड का यट कुहप अद्विशिक्षित और घमडी सफ्रेटरा भी उससे बडा है—पाचू इस तरह स सोचता था और यह उस खल रहा था । यह हार ब्राह्मण कुलोन्भव विद्वान पाचू मुखर्जी के हृदय को करणाद्र कर रही थी ।

मोनाई अपनी बात पर कलाई चढाते हुए, सेन्नेटरी साहब के सामने अपने अनदाता दयाल की तारीफों के पुल बाध रहा था—“ऐसा वधव सारे बगाल में किसी जमींदार का नहीं है। मालिक के सामने खास अगरेज कनिष्ठर तक किस तरह अपना टोप उतारकर गोटमनी करता है, शहर के बड़े-बड़े हाकिम डूबकाम और रईस लोग मोहनपुर के महाराज का अतुल ऐश्वर्य देखकर किस तरह चकित होते हैं, किस तरह राजा इद्र की अप्प राए मोहनपुर के महाराज के इस शीशमहल में नाचने आती हैं। वगैरह लतरानिया चबनी भर सच में बारह आने पूठ मोनाई झाड़ता चला गया।

दयाल बहुत सन्तुष्ट होकर पूण गम्भीरता के साथ सुन रहे थे। मिस्टर दास मोनाई के मुँह की तरफ देख रहे थे। लहर में आकर उहाने मोनाई से गाव के 'नमक' का हाल पूछा।

मोनाई पहले तो सकुचाया फिर बनावटी मुस्कराहट के साथ बोला—  
“सरकार राजा के घर में भला मोतिया का बाल होना है। मालिक का इसारा हुइ जाय तो आज ही भिजवाय दू।”

मालिक ने इसारा कर दिया।  
मोनाई साधकर मोनाई ने अब अपना तीर छोड़ा, कहने लगा—  
सारा रजगार-बपार चौपट हो गया है। जो कहीं गाव में घूनन बोट खुल गया तो मेर मिट्टी के मोल बिकने की नीबत जाय जाएगी, अनदाता।  
इसके बाद उसने अज्र किया कि गाव में उसके चावल का सदावत बटना बन्द हो जाण। वह यूनियन बोट का सारा चावल खरीदने को तयार है। सरकार दम रुपये के भाव से बेचेगी, वह बारह रुपये पर खरीदने को तयार है।  
दयाल और दास की नजरें मिली। दयाल को उच्च न था। दाम पत्रह के भाव पर बेचने को राजी हुए। मोनाई ने जाहिर किया कि वह लुट चुका है। वरना पत्रह भी खुशी खुशी दे देता। दास पत्रह से नीचे न हुए। मोनाई ने उस समय विशेष आग्रह न किया। दोना सरकार की सलाम तिया और जजैकारिया मनात हुए रात में अजीमा के साथ 'दो भिजवान

का वायदा करके वह चला गया ।

मोनाई के जाने के बाद बातों का दौर बदला, यार लोग फिर रगीनी में बहने लग । शीशमहल की विलासिता दिलों पर छाने लगी ।

हाँल के बाढ़ ओर बाहर पड़ती छत थी । नकली सगममर और सग मूमा का फस था, जिनपर अभी ही पानी छिड़का गया था । किनारे किनार फूला के गमले रखे हुए थे । मुंडेरो पर सफेद पत्थर की कूडिया में फूल खिल रहे थे । छत पर चार छोटी आरामकुर्तिया रखी हुई थी शराब का इंतजाम था ।

जेठ की धुली चादनी थी । दूर तक दिखाई पड़नेवाले खेतों के ऊपर पाचू एक अजीब किस्म की मनहूसियत महसूस कर रहा था । छत पर आने के बाद उसका मन और भी गिर गया ।

शराब उसने जिंदगी में कभी चखी न थी । मगर दयाल के सामने वह अपने को पक्का शराबी सिद्ध कर चुका था । लाख हीले हवाल किए मगर पकड़े जाने पर चोर के लिए सजा से छुटकारा पान की कोई सम्भावना ही नहीं रह जाती । कड़े घूट का पी जान क बाट नशे की उत्तेजना पाचू के अनुभवों में शामिल हुई । हारकर उसने अपने बारे में अच्छा-बुरा कुछ भी सोचना बंद कर दिया । थके हुए मनुष्य की तरह निश्चेष्ट होकर नशे की चढ़ती हुई तरंगों में वह बहने लगा ।

विलायती रोमांसों की बातें फिर शुरू हुई । दयाल ने पाचू को किस्से सुनाने के लिए कहा । इच्छा और अनिच्छा की विपरीत धाराओं में फसकर अनिश्चित गति से बहता हुआ पाचू बातचीत में भाग लेने लगा । उसकी इच्छा बहा से उठकर भाग जाने की होती थी मगर वह ऐसा न कर सका । वह अपने स्वभाव की असलियत से दूर जा रहा था ।

शराब के साथ कुछ मुह चलाने के लिए भा सामान आया । खान की चीजें देखकर पाचू की आंखों में चमक आ गई । पाचू का हाथ बढ़ा लेकिन तुरंत ही उसके दिमाग में सारे परिवार की भ्रम मिमट आई । उसका हाथ रुक गया । मानसिक जलमन दूनी हो गई । एकाएक वह कुर्सी छोड़कर

उठ खड़ा हुआ। दास और दयाल के पूछने पर जवाब दिया—“या ही टहनने को जी चाहता है।”

“अरे बठो भी ! यह भी कोई टहनने का वक्त है ?” दयान जमींदार न पाचू का हाथ पकड़कर बैठा दिया।

मशीन के पुर्जे की तरह पाचू बठ गया। कुछ क्षणा के लिए उसका मन उनका। मगर भूल परेशान कर रही थी। भूखे परिवार के खयाल को जमींदार की दास्ती की आड़ में छिपाकर उसका हाथ मेज की तरफ बढ़ा। पाचू खाने लगा। हर निवाला खाकर वह दिल का आवाज को दया रहा था। गुनाह को भूलने के लिए वह गुनाह करके अपन साथ यात्र कर रहा था। उमने पढ़ मुन रक्ता था कि गम गलन कर्न क लिए शराब नायाव चीज है। पाचू इसके लिए भी कोशिश कर रहा था।

“दास बहुत जोर जोर से बोलता है—बड़ी श्रेणी बधारता है” दयान जमींदार पर उसका असर कम करने की गरज से पाचू न वाता को नया रख दिया। अंग्रेजी सरकार के जुल्म—बयालीम के विद्रोह में लेकर अवाल तक—वह जोश के साथ मुनता चला गया। मरकारी नौकरा का घास तौर पर लपेट में लिया, स्वार्थी, डाकू रिश्वतखोर, राक्षस, देशद्रोही— जो कुछ भी नशे की धून में उवान पर आया, कहता चला गया।

अंग्रेज सरकार और उसके नौकरा को गालिया मुनाने में दयाल जमींदार पीछे न रह। यूनियन बोट के सेक्रेटरी मिस्टर दास भी देश प्रेम के नशे में बहन लगे। फिर उन्हें अपने ऊपर दया उमडी—‘हम भी क्या करें ? जब चारा तरफ लूट देखने हैं तो हमारी तबीयत भी ललचा उठती है। रिश्वत में साक्षा बटाने की गरज से हममें बड़े अपमरान हम दवान हैं। उनके लिए भी हम लूट लमोट करनी पडती है। आजकल दिल्ली से माल आ रहा है। ये व्यापारी लोग धलिया ल-लेकर हमारे पास आन हैं। फिर बताइए हम क्या करें ? हम कोई ऋषि मुनी तो हैं नहीं मास्टर बाबू ! ये तो जब तक माशविशम नहीं आएगा, देश की यही दशा रहगी।

“आने दो सोशलिज्म को !” पीकर दयाल जमींदार मज पर घाली



गिलास रखते हुए दहाड़े— 'साशलिजम वाण्टेड ! लाओ साशलिजम !'

नौकर जा गया समझा सरकार कुछ माग रहे हैं।

दयालज जमीदार अपनी ही धुन में कहत गए— मास्टर, तुम हमारी पर प परशसा में अच्छा अच्छा लेख लिखो। तस्वीरें छपाओ हमारी। सब अक्बारा में। समजा ? ऐं ? क्या हम काबिल नहीं हैं ? है न ! देखा, हमसे बड़ा जमीदार कौन ? कोई नइ। हम हम अपनी प्रजा को चावल बटवाया, दवा बटवाया और, जीर जब सोशलिजम बटवाऊंगा। जरूर बटवाऊंगा।"

दास और पाचू दयाल के नशे को देखने लगे। बात सोशलिजम से फिर शराब पर आई जोरता पर आई जवानी पर आई और देखते देखते ही जबाना पर पलंग बिछने लगे। शराब की तजी ने वातावरण में गर्मी पदा कर दी।

दयाल बोले— मास्टर, चांसर चांसर अ अ औरतें समझे ? दा बोतल द्बिस्की पीने बट नेहर नइहर डाउन। क्या समझे ? आ । । । ?

फिर गिलास टेबल पर रखते हुए बत्तवन को आवाज दी। यह दयाल का पाचवा पग था मिस्टर दास छठा घंटे कर रहे थे और पाचू नज्भी तक पढ़न गुनाह से ही छुटकारा नहीं पाया था। दयाल जमीदार ने मिस्टर दास के गिलास पर नजर डाली तीन चौथाई खाली हुआ था। दयाल बाल— 'अबे पी जा। पी जा। दरू आज कितना पीता है तू !'

सिगरट का आखिरी बग छींच उस फेंककर धीरे धीरे धुआ छोड़त हुए मुस्कराकर मिस्टर दास ने कहा— डाण्ट घरी सनी, मैं टू बाटल में तब नामस रहता हू।

दयाल जमीदार हस फिर हसते हुए बोले— 'अब हा हा पराय धन पर गुलछरें उडान हैं। पिए जा पिए जा जा तान ब। मरा न्ति भी तरी ब्रिनिग मररमेंट से कम न्ी है। बत्तवन ! भर जा साल का गिलास। साल का हिब मास्टर वा... नइ टिज मास्टर बट्टीज वाइन प्यार

ह्लिस्की—पिलाकर इसकी सरकार को गालिया सुनाऊगा । '

दयाल बड़ी ज़ार से ठहाका मारकर हस पड । फिर उमड—'पिया बट्टा । व दावन शाहव का मू मे बोनल का मू लागा देआ । पिया शाला, '

दयाल जमीन गर खुद उठ आए, व दावन के हाथ से बोनल झटककर मिस्टर दास की तरफ बड —' शाला, तुमको पूव पिनाऊगा । नइ नइ । शाना बोनला, दो बाटल पी जाता । हामको घमकी देता । ऐं ? पाशशी रुप्टी का नीकर शाला—दुश्मन का कुत्ता । शाला शमजता, दयाल विश्वास दो बोनल ह्लिस्की नट पिला शकता । हरामजादा, हाम तुमको दस बोनल पिलाएगा । शाला, जाके बोनना अपनी गवरमेंट को कि इडियन जमादार का दिल क्या है । '

दयाल जमीदार एक हाथ से मिस्टर दास का कंधा पकडकर उट कुर्सी से दबात हुए उनके मुह म बोनल ठूसने की कोशिश करत हुए लल बारने लग ।

मिस्टर दास आफत म फस गण थे । अपने लोना हाथो से दयाल को दूर हटान की कोशिश कर रह थे । बीच बीच म दो दो, चार चार शब्द फूट जाया करत थे—' य क्या मिस्टर विश्वास ? दखिए, दखिए । सच्ची का मजान अच्छी नहीं होती । आप बहुत पी गए । आप मेरी वेइजवती कर रह हैं । मैं बहुत घा रहा हू वरना । '

दुबले पतले मिस्टर दास कुर्सी पर ही बठे बठे हाथ पँर पटक रहे थे । गुम्से के मारे गने म आराज अटवती थी । गुलामी की जमीन पर पापन-वाली अफमरी की बू लाजवती के पौधे की तरह मुरझा गई थी ।

नशे म उभरनेवाली दयाल की उहण्डता पाचू पर भी अमर कर रही थी । वह वेहद घबरा रहा था । वह साचता था—'अमर मेरे साथ ऐमा दुव्यवहार किया तो मैं घूमा मारुगा । एसी ज़ोर स मारुगा कि यान करुगा । नहीं जहर मारुगा, फिर चाह कुछ भी हो जाए । य दास साना वाग है । बठा-बठा म म कर रहा है यह नहीं होना कि घक्का दे । मरने ला कायर का । लेकिन यह ठोक नहीं । इसके घान दयाल मेरे ऊपर टूट पडेगा ।

नशे में आदमी का क्या भरोसा ? इसे रोकना चाहिए ।”

दो-तीन बार पाचू ने अपने विचार की पुष्टि की और फिर हठान् उठकर दयाल को मिस्टर दास से अलग किया—“य क्या कर रहे हैं दयाल बाबू ?”

दयाल ने एक बार घूमकर गौर से पाचू का देखा । पाचू घबराया । दयाल बोले—‘पिला रहा हू । तुम भी पियो । इसको साल् गवरमेंट क नौकर को भी पिलाओ । पी साल् ।’

पाचू बेहद घबरा उठा था, और साथ ही उसे क्रोध भी आ रहा था दयाल को घसीटकर अलग करते हुए वह बोला—“मगर आप कर क्या रहे हैं ? अपने मेहमान के साथ ऐसा बर्ताव किया जाता है ।’

मिस्टर दास को सहारा मिला । दिल का दद उभड़ आया— देख लीजिए, देख लीजिए, मिस्टर मुखर्जी । ये कितना अत्याचार कर रहे हैं मुझपर ? ऐसे ही अत्याचारी जमींदारों के कारण ही तो हमारा देश गुलाम बना है और ऊपर से गुलाम कहता है गुलाम मुझको ।

मिस्टर दास फूट फूटकर रोने लगे रोते रोते कहा— मैं आत्महत्या कर लूंगा । य गुलामी का जीवन मुझे भार है ।’

पाचू बुरी तरह से घिर गया था । दो दो शराबी दोना ही अपने अपने रंग में गाढ़े होते चले जाते हैं—कस कससे छटकारा मिलेगा ? कहीं कुछ हो गया तो ?

पाचू अस्थिर हो उठा ।

य दावन मूर्ति की तरह चुपचाप खड़ा था । उसका सिर झुका हुआ था । अदब से हाथ बाधे खड़ा था । उसे मालिक और उनके दोस्ता की किसी जा बेजा हरकत को देखने का अधिकार नहीं उसस यह उम्मीद की जाती है कि ऐसे ऐसे मौका पर वह मालिक और उनके दोस्ता की किसी भी अच्छी या बुरी बात का नहीं सुन रहा । वह शूय रहा । बट शूय है नौकर और कुछ भी नहीं ।

पाचू न घबराकर व दावन की तरफ देखा । उसकी झुकी गदन और

निर्विकार मुद्रा देखकर वह झुथला उठा, कहा—‘ देखते क्या नहीं साहब को । सभालो उह । ’

दयाल जमींदार अब तक अपनी कुर्सी पर बठ चुके थे । दास के रोने और पाचू के डाटने में उनका पारा एक डिगरी नीचे उतर चुका था । पाचू को घबराया हुआ देखकर बोले— ‘कुछ फिकर मत करो मास्टर । जरा चढ गई है दास बाबू को ।’

मिस्टर दास गम होकर वाले— ‘मुझे नहीं आपकी चढ गई है मिस्टर विश्वास । आपने एटीकेट का—आपकी इम तरह स भेरा अपमान

दास का गला फिर भर आया । आसू उमड पडे ।

दयाल सभले । उह खयाल हा आया कि वे आनंद माने बठे हैं । दास का समझान लगे, दाशनिक मूड में आकर कहने लग— चार दिन की जिदगी में किसीसे लडना थगडना नहीं चाहिए । खाया पियो मौज करो— यही जीवन की बहार है । कल तुम कहा होगे, और हम कहा होगे । आजो पिए ।’

फिर से महफिल आवाद हा गई । दास और दयाल दोनो ही नशे में एक दूसरे के बहक जान पर हसने लग । एक दूसरे में बेहद घुल मिल गए । वृदाग्रन को खाली गिलास भरने का हुक्म हुआ । हुक्म की चाभी पर चलनेवाला पुतला बत्तावन अपना काम करने लगा ।

पाचू को डर लगा कि दयाल इस बार कही बोनल लेकर उसके सिर पर न घमक जाए । उसका पहला गिलास भी अभी तक आधे से ज्यादा खाली नहीं हुआ था । जिदगी में पहली मनवा उसने शराबिया को इतन निक्कट से देखा था । वह मन ही मन घबरा रहा था ।

वृदाग्रन दयाल के गिलास में ढाल चुकने के बाद अब दास के गिलास को हाथ में उठा चुका था । इसमें पहले कि वह पाचू की तरफ बने पाचू ने अपना आधा भरा हुआ गिलास हाथ में उठा लिया और गिलास की तरफ देखते हुए कहने लगा—‘ काश कि आभी का घुल भी इस शराब की तरह मुनहना हाना तब उसकी भी बीमन कम से कम उतनी ठी सगनी

ही जितनी कि शराब की है।

दयाल और दास पर दगका प्रभाव पडा। दाना पाचू की ओर दगने लगे। अगन विज्ञान हात क यश का लाभ उठान हुए मन्कील यात्रा का आरंभ पाचू बनकर रिकार रहा था— इग गिनाम म जिननी कीमत का पानी भरा है उसन दग आनमिया का पेट भर सकता है। मरभुगा की मौत ही इस गिलास क गुनहर पानी म नशा बनकर हम लागा का छुश कर रही है। आइए हम हजारा की मौत का एक जाम पिए।

कहकर शटवे क साथ पाचू गिलास को हाठा तक लाया। शराब न हाठा की छुआ। पाचू न गिलास रग लिया।

नाटक सफ्त हो गया। दयाल और दास दाना ही पाचू क वाक्य चमत्कार से पूरी तरह प्रभावित हो गए। बन्गवन इससे बअसर अपना काम करता रहा—गिलासा म सोडा डालन के बाद हाथ बाधकर सिर मुकाकर खडा रहा। पाचू क कहन के साथ ही दयाल और दास न भी अपने गिलासा को उठाकर हजारा की मौत के जाम पिए।

हजारा की मौत का जाम इस वाक्य न दयान और दास के भाबुक हत्या की कविता की तरह स्पश किया था। शराब स भरे गिलासा के मामन मरभुगा की बात पहले उह शटका देनवाली सिद्ध हुई थी। उह शराब म गुनाह दिखाई देने लगा था जो वह न दखना चाहन थ। लकिन जैसे ही पाचू न नाटकीय ढग म मरभुगा की मौत पर एक जाम पीन को कहा उनके लिला की बाछ खिल गई। यह थ कर सकता थ। कठोर सत्य शोक का घूट बनकर हनक के नीचे उतर गया। सहानुभूति नशा बनकर निमाग पर सवार हो गई।

दास बतान लगे कि जहा जहा वह गए उहाने किस तरह हजारा नग भूखा की महादुग्गा का अपनी इ ही आखा से देखा। किस तरह उनके दिल म अपन दश की गुलामी के लिए दद उमडा, अन्न से भरे हुए सरकारी गोदामो को दखकर किस तरह उनकी इच्छा होनी थी कि वह उन गोदामो का खाली करवाकर गरीबा को बटवा द— 'हाय हमारा प्यारा भारतवप।

हमारा बग देश। क्या दुदशा हो गई हमारी। जिम पवित्र भूमि पर दूध-  
घी की नदिया बहा करती थी, वही अब अन के एक-एक दाने के लिए  
लाग मोहताज है ?”

मिस्टर दास न देश के दुख से अति द्रविन होकर फिर शराब का एक  
घूट पिया।

दयाल जमीदार ने ठडी सास छोडी। कहने लगे—‘मास्टर सब  
बहता हू वार वार मेरी इच्छा होती है कि अपना सब कुछ इन गरीबों को  
बाट दू। हाय हाय, कितना बप्ट है इन बेचारा को।

कुछ देर क लिए सब मौन हो गए। दयाल और दास की बाता से  
पाचू न उनम मानवता की एक पलक देखी। वह सोचने लगा—‘इसा-  
नियत ऐसे लोग के दिल म भी अपनी जगह रखती है। लेकिन, फिर भी  
ये लोग इतन बठोर क्योंकर हो जात हैं ? इह अपना पाप दिखलाइ क्या  
नहीं पडता ? क्यों स्वार्थी हो जाते हैं ?’

यह साचने हुए खुद को झटका—‘उसने भी तो पाप किया है।  
घर भर भूखा है और वह यहा बठा हुआ रगरेलिया मना रहा है, खा रहा  
है, पी रहा है।

अपने स बचने के लिए पाचू को वही भी ठिकाना न था। अपनी ही  
नजरा म वह खुद इतना गिर गया था कि दूसरा के गुनाहा की तरफ आस  
उठाकर देखन की भी हिम्मत नहीं होती थी। शराब के लिए नफरत थी  
गुनाह के लिए नफरत थी, और गुनाह के खयाल से बचन के लिए दिल  
म अजहद बेचैनी भी थी। जब कोई बचाव न सूझा तो इश्वर की शरण म  
पहुंचा—‘मैं क्या करू ? इश्वर न ही मुझे इस बदर कमजोर बनाया है।  
और फिर अगर मैं गुनाह किया तो वह मेरा गुनाह नहीं।’

इम खयाल से भी पाचू को चन मिना। छटपटाहट ज्यादा महसूस  
की। झटके के साथ बुद्धि से सबध टूट गया। तेजी से हाथ बढाकर उसने  
गिलास उठाया और आखें मीचकर एक घूट निगल गया। जल्दबाजी की  
वजह से एक घूट म ज्यादा पी गया, गले म पन पडा गामी पदा हुई,

आंता म जसन और गिर की नसा म ख्याल उत्तजना हुइ ।

दम तोडकर पाचू न अपना सिर पुर्सी स टिका दिया । उस जरा भा  
वन न था ।

घड़ी के घण्टे बजने लगे । नश म शटक के साथ सिर उठाकर पाचू  
न देखा । घड़ी बमरे के जदर थी सामने स दिखाई भी नहीं देनी थी । वान  
लग गए—एक दो तीन, चार सात, आठ, नौ घण्टे बजन बदहा  
गए ।

नशे म पाचू चौका । फिर खयाल जमा—' नौ बजे हैं । बड़ी रात हो  
गई । अब उठना चाहिए । मगर मन मुह चुराता था—' कस जाऊ ?

मिस्टर दास अपन ढग से केनारा गा रह थे और दयाल जमादार जी  
खोलकर दास दे रह थे ।

बेवकूफ कही के । पाचू ने मन ही मन म कहा और आसमान की  
और दखने लगा ।

जेठ की फीकी चादनी थी । धूल भरे आकाश म तारे पाच को बड  
फीके लग रहे थे । 'आधा चंद्रमा अच्छा नहा लगता खूबसूरती मारी  
जाती है । चंद्रमा या तो पतला, नाकीला अच्छा लगता है या फिर पूनो  
की रात का । ये तो बडा भडा लगता है—एकदम मनहूस । कितनी निष्प्राण  
चादनी है ! कितनी मनहूसियन फली हुई है चारा तरफ ! दम घुटता है !  
खयाला के साथ ही उसका मन भी उखड गया ।

' मैं अब चलूंगा दयाल बाबू । बड़ी देर हो गई है ।" कहकर वह उठ  
खडा हुआ ।

मिस्टर दास और बाबू न बहम छिड गई थी । मिस्टर दास अपने गीत  
का कंदारा राग म गाया हुआ मानत थे और दयाल जमीदार उसे  
वागेशरी समझकर सराह रह थे । मिस्टर दास ने एतराज उठाया । बहस  
छिड गई । केदारा के उदाहारण देन के नक इराते स दयाल बाबू गाते गाते  
अपन गले के मुताबिक भीमपलास का ओर मुड गए । दास ने उसके  
मालकोस हाने का फतवा दे दिया । दयाल विगड पडे ।

बेदारा भीमपलाम, और मालकोस के इस थगडे क बीच म पाच उठ  
पड़ा हुआ था—' मैं चलगा अब '

दयाल और दास, दोना ने ही चौंकर पाच की तरफ दखा। दयाल  
के कुछ कहने स पहले ही एक नौकर आ गया। अदब के साथ उसने बत-  
लाया कि मोनार्द न दो औरतें भिजवाई हैं।

दास का चेहरा दमक उठा। बताव होकर वह दयाल जमीदार और  
उस नौकर की ओर देखने लगा।

दयाल न हुकम दिया—' भेज दो ।''

जोरता के साथ बजीम दरवाजे क पीछे ही खड़ा रहा। फौरन ही  
आग बढ़कर सलाम किया। लाज से सिक्नुडती हुई, घूघट से मुह ढाके दासा  
मित्रया ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

पाच न दया, दोना औरतें धुली हुई उजली धोतिया पहनकर आई  
हैं। अरसे से गाव म औरत मद, किसीके तन पर उजला कपड़ा नहीं दिखाई  
दना था। य उजली, नई धानिया पाचू की आया क लिए नुमाइशी चीज  
हो गई था।

दोना नौकर और अजीमा बाहर चले गए।

दयाल जमीदार गर्माए— हटा घूघट। हाथी की नूडें निवाल रखी  
है।'

औरता क हाथ कापर अपना घूघट हटान लगे। पाचू ने कौतूहल  
म दया—बडई मुनीर की बिधवा और और वालीराय की पत्नी।

वालीराय उसका बचपन का धनिष्ठ मित्र था। तीन महीन हुए वह  
गाव म भाग गया था। पाचू वालीराय की पत्नी का घूब जानता है। उस  
बोली कहना है। वालीराय के पिता यही है।

बोली यहा ? ' पाचू की आया के आग मिलारे घूम गए।

दयाल जमीदार ने उठकर दोना के सिर का कपड़ा खींचकर नीच  
गिरा दिया।

पाचू ने अपना मिर झुका लिया था।



दयाल जमींदार दोना को देखकर खुश हुए— मोनार्द ने अच्छा काम किया है।' मुनीर की बेवा की ठोड़ी उठाकर उसके गल में चुटकी लेते हुए बोले—' किसकी औरत है तू ? '

सवाल के साथ ही पाचू की नज़रें उठ गईं। कालीराय की पत्नी की आँखें भी सकपकाकर उठीं। उसकी आँखें जवानक पाचू की उठनी हुई आँखा से मिल गईं। उस काठ मार गया। चेहरा जड़ पड़ गया और वह आँखें उलटाकर गिर पड़ी।

पाचू तेज़ा से कमरा छोड़कर बाहर चला आया। उसके लिए जीवन थसह्रा हो उठा था। वी' दी स वी दी तक—घर तक—तुलसी मंगला

उसे होश नहीं था कि वह क्या चन रहा है किधर जा रहा है। आँखों में आँसू छलछलाए हुए तमतमाया हुआ चेहरा और परा के साथ आधिया वह रही थी। शीशमहल पार किया क्षरने के पास से गुजरकर दरवाजे के बाहर आया और तान शू य सा नीचे उतरने लगा। तेज़ी के साथ लट पड़ते हुए परा की खटाखट आवाज़ सीढियों पर मुनाई देती थी।

बन्दाबन पाचू की यह दशा देखकर समझा कि बहुत पी गए हैं। उस गिरने से बचाने के लिए वह झपटकर जाया। उसने दोना हाथों से पाचू को थाम लिया। पाचू निश्चेष्ट सा उसके ऊपर लुप्त पड़ा। उसकी आँख बन्द हो गई। बन्दाबन ने सभाला—' छोटे ठाकुर ! छोटे ठाकुर ! '

पाचू ने आँखें खाली, बन्दाबन को देखा। बन्दाबन बोला— घर पढ़ा आऊ छोटे ठाकुर ?

पाचू की श्म पर करारा तमाचा पड़ा। वह बड़ी तेज़ी के साथ सभपा, सीधा खड़ा हो गया और सिर झुकाकर बोला—' नहीं बन्दाबन मैं ठीक हूँ।

बन्दाबन के सामने भी पाचू की निगाह झुकी। पाचू के अंतर में लज्जा-जनित पीड़ा अब पहाड़ बन गई थी। अपनी अतिगहन हीन भावना पर वह बटार अनुशामन कर रहा था। वह पत्थर बन रहा था।

बन्दाबन ने पाचू के घर चले और हाथ जोड़कर बोला— छोटे

ठावुर ! बगला की पचायत म हसा वा कौन काम ? अब तक तो नहीं, मुल आज आपको हिया देख के समुझ पडा कि बलजुग आम गया । जब पहाड डौल गए, तब घन्ती कस बचेगी ? —जमी लीना भगवान की !' कहन हुए बूदावन न एक निसाम छोटी और हाथ हिलाकर, गिर लटकाए हुए एक सीढ़ी ऊपर चर गया ।

पाचू ने अपना सिर उठाया और तान लिया । बूदावन की तरफ देख-कर बोला— तुम मुझसे बडे हो बूदावन । मुझे शमा कर दा ।

बूदावन ने धूमकर पाचू का देखा । वह तेजा के साथ नीचे उतर रहा था ।

सारा ससार मुझसे बडा है । हर शकस मुझसे बग है । दुनिया की हर चीज मुझसे बडी है । मुझे किसीको भी छोटा समझन का अधिकार नहीं—कोई नीच नहीं, कोई बुरा नहीं । सारी बुराइया मुझमें हैं । मैं सबसे बुरा हूँ । मैं ही बुरा हूँ ।'

राह न पाकर तैस आया से बरस पडा । दोनो गाला पर धीर धीर जामू बह रहे थे और पाचू सिर झुकाए हुए, दयाल जमीदार की हवेली का बाहर गाव म जा रहा था ।

हठ के साथ पाचू अपने अह का छुरिया भाक रहा था । हुकम की धामी पर चलनेवाला बेजान पुनता, गुलामा का गुलाम, बूदावन इस समय उसकी नजरा म बहुत ऊंचा उठ गया था—गुर-सा महान लग रहा था ।

अकाल पढन में पहले पाचू की महत्वाकाक्षाए सघत भाव धारण किए हुए थी । बिना किसी प्रकार के मानसिक दृढ़ क उसका जीवन सघा हुआ और सीधा बन रहा था । अकाल म उसने अपनी आर्थिक परबशना और उसमें उत्पन्न जीवन की कठिनाइया का अनुभव किया । कुलीनता, आर्य उच्च शिक्षा और स्वाभिमान के सहारे वह अपनी आर्थिक हीनता से लोहा लेकर अपने का ऊंचा उठाए रखने का प्रयत्न करता था, और यहां जसपत होकर वह अस्थिर हो उठा था । और एक बार आत्मविश्वास ग्ये

बठने के बाद उसे अपने मन की चाह न मिली। वह सदैव अतड्ढ की गहराइयों में डूबता उतराता रहा। समाज में अपने स्थान के लिए वह आवश्यकता से अधिक यत्न करने लगा। व्यग्रता ने बुद्धि का समय खोया, और बड़प्पन की चाह ने ही उसे दर्याल जमींदार का मुसाहिब बनाकर आज अपनी ही नज़्म में बहद गिरा दिया। मन की इसी गिरी हुई हालत में पाचू ने दुद को दुनिया का कमतरौन इंसान स्वीकार किया। इस अप्रिय बात को स्वीकार करने के कारण उसकी आखा से आसुआ की धारा बह चली।

आमुजों में गुबार निकल जाने के बाद, धीरे धीरे बुद्धि सयत हुई। वह साबने लगा— लेकिन बड़प्पन की चाह किसमें नहीं होती ?

सवाल खुद ही जवाब भी बन गया— तब फिर किसीके बड़प्पन को दबाकर उसपर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का अधिकार भी किसी को नहीं। हर मनुष्य स्वभाव से ही बड़ा है। इसलिए हर मनुष्य समान है एक सा है—एक है।

‘ फिर यह छोटे बड़ का भेदभाव जो हर तरफ दुनिया में दिखाई देता है ?

यह उसी बुराई का परिणाम है, जिसने मुझे गिराया है।

पाचू ने अपने पतन में सत्तार के पतन का कारण देखा— ‘ दुदी के लिए सारी दुनिया तबाह हुई जा रही है। ‘ पाचू ने सोचना शुरू किया— लेकिन यह खुशी है क्या ? और क्या है ? अपने अस्तित्व की चेतना को मनुष्य सब-यापी और सामूहिक रूप में क्या नहीं देगता ? मैं जपन को सारी दुनिया से अलग रखकर क्या देखता हूँ ? दुनिया से अलग रहकर मैं अपनी असलियत का अनुभव ही क्योंकर कर सकता हूँ ? सम्मिलित रूप में समाज की प्रत्येक श्रिया प्रतिश्रिया का प्रभाव मुझपर पड़ता है और मुझ चतय बनाता है। मैं अपने हर अच्छे और बुरे काम का निणय समाज के ताराजू पर ही करता हूँ। मैं ही नहीं हर एक आदमी यही करता है। अपने हर काम में मनुष्य का दुनिया के रख बरतन की ही पिक रहती है

फिर वह अलग कैसे हा जाता है ? क्यों हो जाता है ?  
 प्रश्नों की लड़ी पूरी हुई, परन्तु उत्तर उसे नहीं मिला। पाचू का मिर  
 ऊपर उठा, मानो अपना माग खाजने का प्रयत्न कर रहा हो। लेकिन  
 सामन जा कुछ या उसे देखकर वह चीक उठा। चादनी म दूर तक—  
 सामने, बासमान लाल हो रहा है। क्या ? लपटें उठ रही हैं। आग !  
 कहा लगी ?

पाचू का कौतुहल भय के साथ साथ बढ़ा। वह तज बन्म बढ़ान  
 लगा— क्या भूख और महामारी ही बापी नही थी जा प्रवृत्ति को भी  
 बुलम ढाने की जरूरत महसूस हुई ? भयकर जाग है।

पाचू और तजी के साथ आगे बन्ने लगा।  
 मोनाइ की दूकान दिखाई देन लगी। शार और हमी मुनाई देने लगी।  
 आग की नाचती हुई लपटो से घिरा हुआ मकान दीखने लगा—' स्कूल क  
 पास है नहीं स्कूल म ही आग लगी है — पाचू के दिल की घडवन बढ  
 गई। उसने मोनाई की दूकान की तरफ देखा। दूकान सूनी पडी थी। बह  
 दौडने लगा।

आदमी चारा ओर, घेरे म उछन कूद और शोर मचा रह थे। स्कून  
 म आग लगी थी। हवा म गर्मी भरी हुई थी। अट्टहास गाना शार सब  
 मिनकर बाना म भयकर रूप से समा रहा था।

दिन ढले, शाम को छेदासिहू ठेले पर बोरे लदवाकर स्कूल म लाया  
 था। अपने और अपने साधिया के लिए जो बार उसन मोनाई से अबर-  
 दस्ती वमुल किए थे, वे भी स्कूल के ही एक कमरे म लाकर रक्ने गए थ।  
 बाटे जान वाले चावल के बोरे बाहर रक्ने गए। अपन लठन साधियो की  
 मदद से छेदासिहू ने गाव म चावल बाटना शुरू किया। उसम भी जितनी  
 बन पडी नाट पास की। फिर भी चावल सबको मिल रहा था। खुशी  
 सबने दिला म नाच रही थी।

अन का देवता आज मानव पर प्रसन हुआ था। जिसके पीछ पसा  
 टवा गया, गहना कपडा गया, घर का तार-तार बिब गया, आबरू गई,

लाज गई धरम ईमान गया मा वाप, बहिन भाई स्त्री और बच्चे तब बिछट गए— जान देकर भी जिस अन्न के देवता को मानव सतुष्ट न कर सका था वही आज छेनासिंह की मानियो के साथ लुट रहा था। जीवन का भिखारी इसान आज जाखिरकार जीवन के सहारे को पा ही गया। वह छुशी के मारे पागल हो उठा। हसी आमू चीख पुकार माने नाचने गले मिलन और धोल धप्पा बरन के रूप में छुशी बहुत दिनों बाद आज इमान के शिल की गहराश्या से निकलकर आतावरण पर छा जान क लिए वेग के साथ बढ़ रही थी। आज मोहनपुर गाव में जन का त्यौहार था। लाग नाच रहे थे चक्कर खाकर गिर पडत थे चावल बिगर जाता था लोग बीन-बीनकर छीन छीनकर गा रहे थे मुट्ठी भर भरकर चावल मुह में रखने थे— हसी फूटी पडती थी।

अडीम गुम्म न उबला पडता था। जिंग तरह आज छेनासिंह न उमके मानिक और गुरु मानाई को तथा उसकी बद्धरडती को भी उमका बन्ना लेन क निग व न्नि ही न्नि में बनाव हो रहा था। छेनासिंह और उमक माधिया की यह जान और छगी उम न पची। अधरा हान ही पोखर क पीछ स जाकर उमने स्कून क कमरे में जाग लगा दी जिसमें छेनासिंह और उमक माधिया त मूट क हिम्मा क योग को साकर रक्या था। आग जगट जगट में सगार गई और देखन ही देखन आगमान में सगरे उठन लगी।

बारा आर आग-आग का शोर मच गया। छेनासिंह और उमक माधी पधराकर बराम में वाकर भाग। चावन पान की आग में छगी हुई भी— छेनासिंह क हटा नी चावन क बारा पर टूट पड़ी। उह आग का चिन्ता नहीं थी। पर की आग का बुजाने क निग व चावन क योग में जम रहे थे।

आग की लपटों का देखकर माग गुन हुआ। उनक निग पट्टक बन बन लमागा बन गया। जिंगीजा गुन गया इग आग में चावन पहना आग। चाग और पतागत पहाणत का शोर मच गया।

बहुत स लोग टधर उधर से टूटे फूट मटके, नादें बगरह लान के लिए लपके। पोखर से पानी भरकर लान लगे। शक्ति से अधिक वह काम कर रहे थे। इस समय कमजोरी थोर थकावट के लिए कहीं भी, जरा सी भी, गुजाइश न थी।

आग की लपटें ऊंची उठ रही थी। सामने छेदासिंह और उमक साधी हनप्रभ और अवाक खड़े थे। परिस्थिति उनका रीब और दबदबा और बस का बाहर थी व चू तक करन की हिम्मत नहीं कर सकने थे।

आग के आसपास टूटी फूटी नादा और मटका में पानी भरकर चावल छांटा जा रहा था। लोग साचते थे, पक जाएगा। कुछ या ही फकी मार रहे थे। कच्चे चावल पेट में धुभन थे मरोड़ होनी थी, चीख पुकार हाती, कोई गिरता था, कोई पेट पक्कर मसलता था, कोई खुशी से नाचता था, काद थककर चूर हो गया था।

नपटा की ताल रोशनी में काली, खुरदरी झिल्लिया स गढे हुए हड्डिया के ढांचे खुशिया मना रहे थे। मिर जोर चेहर की हड्डिया के ढेर उभर नुग हिस्से, गहर गन्दों म धमी हुई आँखें दाता की बनार, दाढा और मिरा के बाल ज्यादातर उडे हुए—जगह जगह उगे हुए उनका गुच्छे, कधा की उठी हुई हड्डिया, पसलियों म पट की खोह, कमर म लिपटे हुए फटे चिथडा म चमकती हुई कूल्ह की हड्डिया, घुटनों की उठी हुई हड्डिया—लपटों की रोशनी म सिफ हड्डिया ही हड्डिया चमकती थी। जना ही रक्त मास छा छाकर मानव दहधारी जीवन जनैतिकता और अयाम के खिलाफ जेहाद बोल रहा था।

मूखी गगों, बडा पट, धस्मी बरम के बूढा की तरह झुरिया लटकी हुई गाना के मुचबुल्ले नोक की हृद तक जबडा के भीतर घस हुए हमन पर दात उस रोशनी म तलवार की धार की तरह चमकते थे—चार-पाच स लेकर दस बारह बरस तक के बच्चे, नौजवान, जवान, अघेड बूढे, खाज गर्मी बगैरह चम रागो से सडे हुए शरीर वाले टाटे-बडे, ब्राह्मण धर्मिय, बश्य, शद्र, हिन्दू मुसलमान—मानव—जीवित क

मेला लगा था। लपटा की पाश्वभूमि में भूख का त्यौहार मनाया जा रहा था। जन समूह आनंद से परिपूर्ण था। उन्हें तन्दन का होश नहीं था। अन का जीतकर उह भूख का ध्यान नहीं रहा। भूख को जीतकर उह अपना ध्यान नहीं रहा। बहुत बड़ी कीमत चुकाकर मानव जीवन आज अपना त्यौहार मना रहा था। वह मुक्त था—भय से चिंता से, भूख प्यास मान-अपमान से, बुद्धि से ज्ञान से, चेतना से।

आबरूदार (जिन्होंने सरकारी तौर पर अपने घरों में अकाल होने की घोषणा नहीं की थी मगर जिनके घरों का हाल कलकत्त जीर तमाम हिंदुस्तान के अखबारों में रोज छपता था) ज़रा दूर जगह जगह टोलियां में खड़े देख रहे थे। मौका पाकर चावल भी चुरा लाते थे।

अजीम बदला लेकर जीत गया था। मगर जब उसने मोनाई से अपने इस महान वृत्त्य का खतान किया तो उसने इस पटवारा। उसकी चाल के अनुसार यह सब चावल जनता को ही मिलता और छानसिंह हाथ मसलकर रह जाता। मगर छलक जानेवाले दूध पर पछनाना मोनाई का स्वभाव नहीं। दोनों एक कोने में खड़े हुए सामन का दृश्य देख रहे थे।

अजीम बोला— क्या नज़ारा है! भूत जसा भयावना!

मोनाई बापटम सामन देखते हुए, चेहरा निर्विकार रखकर अनि गम्भीर भाव से बोला— 'य भूत नहीं है अजीमा ये है बतमान—परतच्छ बनमान—भूत से भी जाना भयकर। ये भूख मरे गोदाम का एक दाना भी नहीं छोड़ेगी। आज की जागी हुई भूख बरसो नहीं बुझगी। गोलिया और लाटिया भी इस नहीं रोक सकती।

मोनाई की इस बात से अपन सामने वाले दृश्य की गम्भीरता का अनुभव करते हुए अजीम ने विनिन स्वर में पूछा— 'तो चाचा फिर ?

अजीम के कंधे पर हाथ रखकर, आवाज़ शवाकर मोनाई बहने लगा— 'बेटा अपन बाप से जाकर कह द तुन फुत आठ नाका का बन्दोबस्त कर दे। दुइ घंटे में सब सराजाम हुई जाए—समझे ? और देख तू लोट क

था, तब तक मैं घर पहुँचता हूँ। दुई मोरुं अटी म बाघ के जरा छुदाँमिह के पास लपक जाना। पिछनी बार ता पचाम म निपट गया था, मुल अबकी बार मामना और है। जहा तक बन कमती म पटाना—आगे फिर राम मालिक हैं। बीस आदमी लाना। पचाम बागे छाड के बाकी गनारात आज ही लदाए दता हूँ।”

अजीम न पूछा —“कहा ल जाओगे चाचा ?”

“अभी तो दबीपुर की हाट जाऊगा। औ’ हुआ से जो जुगुत बढ गई तो बलरत्ते तक निकल जाऊगा। सुना है भाव सैक पग टकार ल रहा है आजकल।”

अजीम चिन्ता प्रकट करत हुए बोला— सुना है आजकल दरिया-पुनुग बहुत बढ गई है चाचा।’

मोनाई न निश्चिन्त स्वर मे उत्तर दिया— ‘अरे बटा बडे-बडे पानी दख चुका हूँ। ये दरिया पुलुस भी देख लेऊगा। और यों तो, दती बला हारे जुआरी का दाव है मरा।’

‘पर चाचा हारे जुआरी के दाव से कस चलेगा ? बारा क साय, खुश न करे, तुम पकड लिए गए तो यहा का क्या होगा ?”

मोनाई मुस्कराया अजीम के कधे पर प्यार से हाथ रखकर बोला— ‘मेरी चिन्ता न कर बेटा। मोनाई के बट किमीकी पकडाई म आनवाला जाव नही। हा बोर भले ही पकडे जाए तो मुल सो कुछ नही भगवान जाने चाहा तो सब कुमल हाएगी। वैसे इधर का इतरजाम भी लस कर चता हौ।

अजीम को नेकर मोनाई अपन घर की ओर मृहा— यूनन बोट क मित्तरी साहव आण हैं। जमींदार साहव के यहा भेंट भई तो मैंन पानी चढ़ाया। तुम्हारी वो दानों औरत भी काम करगी। अभी पद्दा पर अडे ५, मुन माइत कल मान भी जाए। मैं बार्द की बात कह आया हूँ। नीम हज्जार रुपया गिनी का द जाऊगा। पौन पद्दा तक जाके पटाना। फिर भी न मानें तो रुपिया पटक के माल उठाय लाना। दूसरी खेप म खी



हजार बोरे भी जब निवाल आर्भोगा तब जाके पाटा पूरा होवगा । क्या समझे । बडा जखम कीना है जमीनार ससरे न भी । य साला भी मर हार्यो ।

मोनाई की बाह झिगोडकर अजीम ने धीरे स कहा—' चाचा छाट ठाकुन ।

पोखर के किनारे गडा हुआ पाचू अपने सामन के दश्य म खो गया था । वह टकटकी घाघकर अपने स्कूल स निकलती हुई लपटा का दख रहा था ।

पाचू का सपना जल रहा था । लपटें उसके दिल से उठ रही थी । राम दुलाल खूना और गाव क दूसरे बडे बूढा के विरोध से तनकर उसन इसी जमीन पर दूले वागिया क लडका को पढाना शुरू किया था । इसी जमीन पर वह बड बट जमीनारा साहूकारा रईसा अपसरो और कलेक्टर तक को ला चुका था । बच्चा का शोरगुल खेल कूद दर्जों म बठकर पढना दर्जों म बच्चा को पढात हुए कानाई और गोविन्द मास्टर गणेश—जिस दिन गणेश मरा वही पाचू के स्कूल आने का भी जाखिरी दिन था । उसी दिन मुनीर मरा था । उसी दिन मोनाई से बचो का सोना किया था । उसी दिन, जीवन म पहली बार पाचू ने आत्मविश्वास खोया था । उसी दिन जनता के पवित्र दान से सरीदी हुई बच्चा को अपने स्वाध के लिए बचकर पाचू का अभिमानी मस्तक सटा क लिए झुक गया था । स्कूल की इमारत के साथ-साथ पाचू की पुरानी स्मृतिया पाचू का गौरव पाचू का कलक भी जल रहा था ।

आग स उसकी टकटकी बध गई थी । पत्थर की मूर्ति की तरह वह खडा हुआ था— मेरा पाप जल रहा है । मरा अहकार जल रहा है ।'

साज के बघन तोटकर स्त्रिया का दल आया । चावला पर लाज विहीना स्त्रिया क घाव स आन-दमग्न पुरप-दल चौका । स्त्रिया अनावत दशा म बाहर चली आइ—पागलपन की अवस्था म भी पुहप-समाज यह देखकर चीख उठा । पुरपा को शोध आया । वे स्त्रियो पर गालिया की

बोझार करते हुए टूट पड़े। स्त्रिया भी पीछे नहीं हटी। उन्हें भी खान का हक है, उन्हें भी जीने का हक है। पुरुष इस हद तक स्त्री का अपनी दासी बनाकर नहीं दया सकता।

पाचू उन्हें देखकर साच रहा था—“हम सबका समान अधिकार स्वीकार करना ही होगा। जब तक एक भी स्त्री दासी रहेगी उसके गम से दाम ही उत्पन्न होंगे। दासता जावन की मृत्यु की जड़ना से बाध देती है। यह अकाल हमारी दासता का परिणाम है। यह अकाल मनुष्य की दासता का परिणाम है।

अपने पेट की आग को बुझाने के लिए पुरुषों ने स्त्रियों के तन को बचपन से ही उनका तन भी बच दिया—फिर नारी की कौन-सी लाज मिट जाने के भय से पुरुष इस समय मर्त है ?

दो पुरुष एक स्त्री का पीछे ढकेल रहे थे। उस स्त्री ने उनमें से एक को हाथ को श्लोघ से चबा लिया। उसका मांस उखल आया। पुरुष आर से चीखकर गिर पड़ा।

पाचू ने जाँचें मीच ली। फिर उसका मन में हुआ कि इन्हें बचाया जाए, किन्तु पाम जान का साहस न हुआ।

पाचू घर लौट चला।

वह सोच रहा था—‘मनुष्य महा तक गिर गया है। फिर वनर युग से आज में अंतर ही क्या रहा ? तो क्या मानव को आज तक की प्रगति, उसकी सभ्यता ज्ञान, विज्ञान सब गत हैं ?’

पाचू की बुद्धि इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी।

‘इस पतन का कारण उसने आगे सोचा—‘व्यक्ति का अहं है जो दूसरे को गिराकर प्रसन्न होना चाहता है। दूसरे का अपना गुनाम बनाकर पाशविक शक्ति के बल पर अपनी सत्ता चाहता है। जहाँ तक यह बलि रहेगी, जब तक दुनिया में एक भी गुलाम रहेगा, दुनिया में याही अशांति बनी रहेगी। मुक्त होने के लिए मनुष्य का अपने इस जगली सत्कार का बोझ नाश करना होगा। सभ्य बनने के अनकों प्रयागों में समाज का

एक वरत हुए, व्यक्ति हर वार अनजाने तौर पर अपने को ही महत्व देना चला गया। बौद्धिक और दार्शनिक रूप से भी उसने समाज को सदा अपना चेला बनाकर ही आगे बढ़ाया। उह अपना साथी बनाकर गाय-साथ आगे नहीं बढ़ा। व्यक्ति समाज का नाना नहीं साथी बनकर ही ठीक तरह से चल सकता है। मानव और मानवता का तभी एक रूप में देखा जा सकता है। मच पूछो तो इह दो नाम देकर अलग अलग देखना ही भ्रम है। एक ही चीज के दो नाम हैं— व्यक्ति और समाज—मानव और मानवता।

विचारा की गति से ही पाचू के पैर भी जाग बढ़ रहे थे।

## ७

इधर कई दिना से गिद्ध मकड़ा की मर्या में आसमान पर मडराया करत हैं। व बड़े निडर हो गए हैं। चलते फिरते आदमिया को छोड़कर पड़े हुए हर जिंदा और मुर्दा आदमी को वह अपना आहार मानने है। गाय, बल आदमी औरतें बच्चे बात की बात में गिद्धा सियारी और कुत्ता द्वारा ठठरिया में परिवर्तित कर दिए जात है। गाव में जगह जगह ठठरिया और अधखाई सजती हुई लाशें दिखाई देती हैं।

स्कूल की होली जलाकर चावलों से खेल चुकने के बाद गाव तबाही की अंतिम दशा को पहुंच चुका था। भूख के साथ ही साथ हैजा और मल रिया का भी जोर हुआ। पर के पर साफ होन लग।

मोनाई उसी रात माल लदवाकर बाहर चला गया। अन्नीम ने मोनाई के आदेशानुसार यूनियन बोर्ड के सत्रेठरी स हजार बोरे खरीद लिए और उह लेकर वह खुद ही सठ बन बठा। उसने अपनी नावें चलानी शुरू कर दी।

बढ़ई नूरुद्दीन मुनीर की बीबी को लेकर कलकत्ते गया है। मुनीर की

दीना निम्महाय लडकिया मा-बाप से चिछडकर बेहाल हो गई । पडोस क दीनू ने उ ह अपन घर म शरण दी । दया की भावना अब भी कभी-कभी जाग पडती थी । दीनू के घर म कोई नहीं रहता था । उसकी पत्नी अपन बच्चा को लेकर मके चली गई थी । बाद म खबर आई कि वह बच्चा का छाडकर गारा की पलटा मे अपना तन बचन लगी है । दीनू को इससे गहरा धक्का लगा । बाबी बच्चे कोबर भूख का मारा दीनू चाद जीर रकिया को अपना वात्सल्य प्रेम दकर जी बहलान लगा ।

खान को दीनू के पास कुठ था नहीं । चाद जीर रकिया की भूख देख कर वह तडप उठता था । भूख के कारण रोती हुई बच्चिया को अपन पास सुलाकर रोने रोत वह रात बिता देता था । दीनू खुद घर से निकलता था, न बच्चिया का ही कही जान देता था । धीरे धीरे उसन बोनता छाट लिया । आठा पहर वह गुम हाकर बठा रहता और लुंटे हुए घर को निहारा करता । एक दिन वह बडी देर तक चूल्ह की आर दखता रहा । देखते देखत उस विचार आया कि जिस दिन स चूल्हे म आग जलनी बंद हो गई है उमी तिन स घर की यह दुःशा हुई है । इसलिए अगर चल्हा फिर से जल जाए ता उसके घर की रौतन भी फिर से लौट आएगी । दीनू को सहसा यह विश्वास हो गया कि चूल्हा जलने ही उसकी पत्नी घर लौट आएगी बच्चे आ जाएगा, जकाल खत्म हो जाएगा और फिर से अमन चन का राज हा जाएगा ।

इस विचार न दीनू को स्फूर्ति दी । उसकी आखें चमक उठी । वह तजा स उठा अपनी चापडी के टूटे हुए छप्पर स वास निकालन लगा । उन बटो महनन करनी पडी । वास खीचन हुए उसका हाथ कट गया खून निकलने लगा लेकिन उसे इसकी परवाह न थी । फटे वास को उसन पर स दाव गवकर तोडा । छोटी टोटी लपाबिया बनाइ । हाथ का जन्म और बन्ने लगा । उसे इसका ध्यान भी नहीं था । चाद और रकिया आश्रय स उस दख रही थी । लपाबिया बनाकर दीनू न चूल्हे म रखी और उपकता हुआ बाहर गया । जस बाद दीनू घर से बाहर निकला था । अजीम का

घर पाग था। उगल दरवाजे पर हूबने-गानी व त्रिण बीज म भाग रानी था। दीनू धार की तरह ग बीजा उठाकर भागा। अमानुषिक स्तूनि व साथ दीनू काम कर रहा था। बीज को भाग चूल्हे म डाला। घाट और रकिया ग पहा — पूरों। बट्टा तिनो घाट गानू खाना था। यथाशक्ति व चूल्हे को सांग म पूजा लगी। तत्रकिया कमडोर पत्नी थी। दीनू डाकी गंगा पक्ककर गुं भा पूजा था और सहकिया का भा मजबूर परना था। दाना सहकिया डर गई थी।

याग की श्रपाकिया स लपट तिवला। दीनू गुण हीरर पाचता हुआ त्रिजगारिया मारने लगा। रकिया थापचम स उसकी आर दखन लगा। लगा। सहसा दीनू न साचा कि जब चूल्हे म जाग होनी थी तब कुछ पक्ता था और जब पक्ता था तभा घर म रौनक हानी थी। पर क्या ? उसन घर म चारा ओर नजर दोड़ाई। कुछ भी न था। लकिन कुछ न कुछ तो जरूर ही पक्ता चाहिए, घरना घर की रौनक नहा लौटगी। दीनू अधीर हान लगा। लपट जरा धीमी हान रागी थी। दीनू की व्याकुलता वग्न लगी। वह चारा आर दखन लगा। सहसा उसन सोचा— यलडकिया किस त्रिण काम आएगी ? इन्ह पकाओ—पकाओ तो घर की रौनक लौटगी पकाआ।' कमवती हुई आखो से चाद का दखत हुए सहसा बडी जार स उसकी गदन पक्की और जोर व साथ चूल्हे म उसका मुह चुका दिया। चाद चीख पडी। रकिया जार जोर स चीखन लगी। दीनू दाना हाथा स दृतापूर्वक चाद का मुह चूल्हे की आग म जलाता हा रहा। उस अपन घर की रौनक चाहिए थी। घर की रौनक आए बगैर जकास नहीं जाएगा। वह जकाल से छुटकारा चाहता है। वह सुख और शान्ति चाहता है।

अजीम रकिया की बचाओ बचाओ गुहार सुनकर दौडा आया। दीनू को चाद का मुह आग म झुलसात हुए दख वह एक क्षण के लिए सिहर कर स्तम्भित हा गया। फिर तेजी से लपककर दीनू का घसीटकर अलग किया। चाद के प्राण तिवल चुके थे। चेहरा जलकर अत्यंत विवृत हो

चुका था। चर्बी और मास मज्जा के लोयडे चमक उठे थे। दीनू गौर से दखन लगा। वह समझ नहीं सका कि यह क्या हो गया है।

गाव म पागलो की सख्या बढ रही थी। गाव दिन ब दिन सूना होता जा रहा था। छोटे बच्चे या बूढ़े औरत मर ही गाव म अधिक दिखाई देते थे। या अब उनकी सख्या भी कम होनी जा रही थी। जवान बहू देटिया बिबने गयी थी। अजीम और नूरद्दीन न यह ब्यापार शुरू कर दिया था। मोनाई से लाग डाट चल रही थी।

मोनाई जब गाव लौटकर आया ता उसने दखा कि उमका अति विश्वस्त दाहिना हाथ शिष्य और सहकारी अजीम उम तीस हज़ार रुपये का धक्का पट्टुवाकर सेठ बन चुका था। मोनाई ने अपनी पत्नी को बेहद पीटा मगर अजीम से उसका बस न चल सकना था। पित्त मारकर वह जमीन म गाडकर वह अपनी बुरी घट-दशा पर आह भरकर मरिष्य के लिए चितन करन लगा। ब्यापारी मोनाई नुकसान पर आसू नहीं बहाता, नुकसान से नफा कमान की साचना है।

उसने मुना, अजीम और नूरद्दीन गाव की जवान औरता का खरीद कर बाहर बच रह है। बडा नफा कमा रह है। मोनाई के मुह म पानी भर आया।

नूरद्दीन मुनीर की बीबी को लेकर कलकत्ता गया था। बड़े-बड़े तजबे लेकर लौटा है। नूरद्दीन ने कलकत्ते की मडको पर हज़ारा अकाल पीड़ितों को भीष मागते सडते और मरते देखा था। उसन अपन गाव के भी कुछ लोगो को उन अवाल-बीडिता की भीड म दखकर पहचाना था। उसने दो दो, चार रुपये म जवान औरता को विकते हुए दखा था। रिक्शा वाला को फौजी पलटनिया को बुना बुलाकर चक्ला म ले जात हुए देगा था। अगूठे म बडा घुघरू अटकाकर रिक्शा के हैडिल को टोकन हुए म लोग पलटनिया को देतकर टुनटुन बाबू, 'टुनटुन साहब चिल्लाने लगने

थ । यह खरमा म पासन क विण सांख्यिक विमर्श था । यह व म मन्दा गाटरो, ट्रामा और बसा स भरी हुई धायाधाना का मटाविनास नगरी की पताचोप दगकर उसकी इच्छा भी बमान का हुई । उमन परल यात्रा म दास्ती की खिगा वाला स जाग-परधान बढ़ाई बाजार का जाचना शुरू किया । उस पता लगा कि कई बड़े बड़े सेठा न सन्ना ममा म औरतें खरीदकर बचसे आवाग विण है । गुठल को इम धध म सांगीगर बनाया है पिए हुए गोरा और पलटिया की जैसे खाली करवाकर वह इम ध म स भी दा पस कमा लत है । नूरहीन का सालच लगा । मुनीर की बीवी का सोनागाछी की एक थश्या क यहा बेचकर उसने भी चकल की दलासी शुरू की । अद्य पस बनन लग । मूव 'सनीमा दया, मौजे उडाइ । अकाल पीडिता की दुःखा दयकर उसका लिल कभी-कभी पसोज भी उठना था । चकल की बहुत-सी लडकिया थीमार होकर बकार हो चुकी थी । चकल की चौधराइन स नूरहीन का सौदा तय हुआ था कि अगर वह नई लडकिया ला द तो वह चकल म साझीदार भी बन सकता है ।

नूरहीन गाव आया । उसकी टेंट म पाच सौ रुपय थ । अजीम मानाइ का धाखा दकर सठ बन चुका था । अजीम स मुलाकान हुई । कलकत्त क हाल चाल बयान किए । नूरहीन न अपने आन का आशय बताया ।

इस काम म मुनाफ की कल्पना करके अजीम के मुह म पानी भर जाया । उसने नूरहीन की ठोठी पकड़ी— चार रुप जोरत पर त करा उस्ताद । दा तुम्हारे दो हमारे । हम रुप के बजाय चावल देंग गाहक चावल दखकर फौरन जाल म आयगा । जोर रुप तुम चाह लाख लिखाओ काई तुम्ह पूछेगा भी नहीं ।

नूरहीन का समझ म बात जा गई । उसने मजूर कर लिया ।

नूरहीन न गाव म खबर फलाई कि कलकत्त म एक सठन घरमशाला खाली है जहा गरीब औरता की परवरिश होनी है । उह खाने और पहनन का दिया जाता है दीन घरम के उपदेश दिए जात हैं । नूरहीन न यह भी बतलाया कि जिसक घर की जोरतें घरमशाले म भेजी जाती है, उसका

बलवत्तै क गठ की तरफ म चावल भी मिनता है।  
 घरमशाना की हवा चली। जामपास के चार-पाच गावा तक म घम  
 शाला की घूम मच गई। दो मुट्ठी चावल के लिए औरतें बची जान लगी।  
 बुनिया का घरमशाना म दीन घरम के उपदेश सुनन क लिए भरती नहीं  
 किया जाना था। घरमशाना का रहस्य मानूम हा गया। पर जोरता की  
 अम्मत जाण ता जाए—मान को मिले। बहू बटिया का वेश्या बनन दो।  
 आग्र जानी है ता जान दो। पेट से बढकर दुनिया म काई चीज नहीं।  
 बचा ! बचा !।

नूम्हान और अजीम का रोजगार चन निकला।  
 पहनी बार नूम्हान अपने माथ बारह औरतें लेकर बलवत्ता गया।  
 मानाइ स अजीम की यह बढोतरी न दखी गई। औरता के इस नये  
 धधे म कामदनी अच्छी है। मोनाई न जाच-पटताल की हिसाब फलाकर  
 दखा, अजीम और नूम्हान को सेर भर चावल म चार औरतें पढती है।  
 चावन अगर अस्सी रुपय मन भी बेचा जाए तब भी औरता के व्यापार म  
 कम से कम उसस दुगना नफा है।

मानाइ का लालच सनाता लगा। मगर मन पटवारता था। अपन  
 गाव की भल धरकी बहू बटिया स कसब कराना बडा पाप है। मगर फिर  
 मानाइ ने माचा— या भी भूखी मर रही है विचारी। बस कम स कम साने  
 पहनन का ता मिलगा। वो सुली हाग और चार पसे मुचको भी मित  
 जाएगे। भगवान जी न अगर इम नये ब्यौपार मे अच्ये पस बनवा लिए तो  
 थाग चलकर एक अनाथाना और जामरम भी सुनवाय दूगा। यही तो  
 धरम की महमा है। मसारी जीउ माह माया म पढके अगर पाप भी कर  
 बठ ता परामचिन करके पुत्र की नया म भवमागर के पार उनर जाए।  
 जहा, धन हो भगवान जी। तुम्हारी लीला यपरमपार है। एक बार तो  
 जजुन का उपदेस दीना कि जजुन माह-माया म मत पड। और दूगरी और  
 राजपाट क लिए उमस जुद्ध भी करवा दीना। वाह वाह, एमा याव  
 भगवान जी क सिवाय और कौन कर सकता है। धरम और करम, दध और



पायी जमा कर लिया। मुन तथा दूध का दरजा हीन किया और न पाना का। जागी जतिया व निण धर्म का मारग सिगाया और कर्म की महमा सिग्यान के निण यु० आप अग्जुन के सारपी बन गए। घना हा प्रभुनाय । व० दयानु ही ।

हुका छोटकर हाथ जोड, मानाई बाळम की शोना आया स नीर वहन लगा। गद्गल हाकर मानाई भगवान जी की प्राथना करन लगा—  
ह दीगानाय । हमारे भी सारपी बन जाभा । इत्ती बला यणी महमा सिगाओ ! मैं तुच्छ हू ता क्या भया हू ता तुम्हारा भगत ही । परतच्छ दरसन दओ परभूनाय । नाय । अब मसार म पाप का हू हू गइ है । जज्ञीमा गहरी दगा द गया साला । वेद पुराना म पूठ थाड लिगा है वि कालिया नाग जीर मलच्छ दोना एक समान हैं । मैंन वडी गनी की वि जज्ञीमा का विश्वास किया । य० वू० कहन थ वि बटा महजित स निमाज का अवाज भी मुनाइ पड जाय तो चट स काना म उगती ठूस ला । वनका दीन मजब उलटा है । इनक धरम का भरोसा ही नहीं है । ठीव बन्न रह बड लोग । हम पूरव म पूजा करत हैं य पच्छिम म निमाज पत्त हैं । हमारे धरम म तो भगवान जी का भगत विचारा मेरा जसा भोला भाता होता है जो छल-बपट का नाम भी नहीं जानता, हर एक पर सीधे मन स बिसवास कर लेता है । मागता तो दस पाघ हज्जार की जमानन है दके इसकी जादत खुलवाय देता । मैंन इसे घटे की तरह प्यार किया और जत म या दगा द गया । मलेच्छ अरे भगवान जी न चाहा तो मैं भी चारा ताने गिराय दूगा । बटा जी का भी मालूम नहीं है कि गुर एक गुर सदा अपन पास जादा ही रखता है ।

मानाई की छोटी छोटी आख दप स चमक उठी । उसन फिर हुका गुन्गुडाना शुरू किया ।

दयाल पुलिस सरकारी अफसर या किसी कुलीन हिंदू स भार खा जाने म मानाई अपनी शम नहीं समझता था । मगर अजीम एक तो मुसलमान दूसरे गरीब मल्लाह का बटा तीसरे उसका नोकर और किसी हू० तब

शिष्य भी था, अजीम स मार खाकर मोनाई को किसी बगवट चन नहीं मिन रहा था। अलावा इसके, अजीम को जौरता व व्यापार म पतत पृथन दखकर उससी जलन और भी बढ गई थी। अजीम को पराम्त करन के निण मोनाइ ने घम की शरण ली।

वह दयाल की शरण म गया— हिंदू धरम डव रहा है राजा बहादर ! आपके राज म मुसलमान लाग हमारे घर की बटू बटिया का फुसलाए लिए जा रहे है।'

गो-ब्राह्मण प्रतिपालक क्षत्रिय जमीदार का वशज नश खा गया। मानाई पानी चपान गगा—'कलजुग म गाववाला की ता मन मारी गई है। धरम अधरम नहीं देखन सवकी अपन पट का हाथ पडी ह। अजीमा जोर नूट्टीन धरममाला व नाम पर औरतें घरीद रह ह।

मानाई एव प्रस्ताव लेकर गया था। सरस्वतीपुर दयाल जमीदार व इनाक म है। बहा गोरी पलटन की छावनी बन रही है। एव अनाथाला वहीं पर असचापित कर दी जाय। पलटन पास रहगी तो किमीका शिषाव नहीं पडेगा। औरता की रच्छा हानी रहगी और हिंदू धरम भा वच जाएगा। इस धरम-कारज के निण मानाइ पाच सौ एव रुपये का दान दन को भी नैयार है। इस राजा बहादर पीठ पर हाथ धरदें ता वाकी रत्तरजाम मानाई आप कर लेगा।

टेंट म पाच सौ एव खोलकर भगवदभक्त मोनाई ने गो-ब्राह्मण प्रतिपालक, घमवितार घममूर्ति श्री दयाल चाइ विश्वास व चरण कमला म सादर सविनय अर्पित करव प्रणाम किया। दयाल जमादार न हिंदू घम की रक्षा के लिए मानाइ का आश्रवामन लिया।

श्री सनातन घम जनापालय क निमित्त मानाइ न सात गावा म फरे लगाने शुरू किए। बडं जोर जोर के माय अपना काम शुरू किया। साय ही माय उसका इस बात का भी डर लगा रहता था कि घाव खाकर अजीमा वभी चुप नहीं बठा रहगा। बगाल म मुसनिम रीग का मुराज है कोइ अचरज नहीं जा कोइ सरकारी दाव चल जाए तब ? उसन लिए तीर

था। मुल भगवान जी जानत हैं य मैंन दुम्भनायगी क सबव स नहा कराया।

मुनकर अजीम त्रि उठा जरा जाग आया। तान क साथ थाना—  
'१। क्या प्यार जतान के निण कराया था ?

चट से जासमान की तरफ आखें उठाकर मोनाई न जवाब दिया—  
भगवान जी जानत है प्यार के कारन ही ये चाल चली।

अपने बंधे पर स मानाई का हाथ झटककर अजीम सखी के साथ बोला— 'प्यार ता तुम अपने सगे बटे स नही करते मुनस क्या कराग ? मुना नूरु काका न हमस प्यार जनाया है हि ।

मोनाई डपट पडा— इत्ते बरस तुम्ह तोते की तरह स पत्याया मुन अकिल जरा भी नही जाइ। दूर की सूझती ही नही ?

फिर नूरुद्दीन की तरफ देखकर कहने लगा— नूरुद्दीन तुम्ह जा अपनी चाल मुनाऊ तो कहागे कि हा काका दूर की कौडी लात हैं। य अभी क्या जाने ब्योपार की चाल। य तो गधा है। घर चल रहे हो ?'

कहकर मोनाइ चलने लगा। नूरुद्दीन और अजीम भी चुपचाप चलन लगे। मोनाई इस वक्त उनपर छा गया था।

मोनाई धीरे धीरे बोलता हुआ चलन लगा— जब हम लौटकर घर आए तो गिनी ने तुम्हारा सब हाल बताया। सच मानना मेरा कलेजा दुइ हाथ का टुइ गया। मैंन हस के तुम्हारी काकी से कहा कि लौंडा हुसि प्यार हुइ चला है। बटा रुजगार का गुर यही है कि मौका पडे तो सगे बाप को भी न छोटे। मुल एक बान कहूँ बेटा अपने बचपने भ तुम जरा चूक गए नही ता और लम्बा दाव मारते !'

मोनाई हसा। फिर कहने लगा— मैं तुम्हारी जगह हाता तो जानते हा क्या करता ?

अजीम और नूरुद्दीन दाना मोनाइ की ओर देखन लगे।

मोनाइ बोला— बेटा तुमने दाव तो सीख लिया मुल अभी सफाइ नही आई। अरे पगल काकी का पता भी न लगन देता कि बोरे तू निबाल

ले गया है। उह धाँसे म ही रखना। पहल कुछ वारे बचकर आठ-दस हजार रुप उनके हाथ म धरना, जोर फिर उनसे कहना कि वारी फनाने फनान गाव म यूनन बाट वाले इसी भाव पर दुइ हजार वारे और निकाल रहे हैं। कासा क न होन स बडा भारी लुकमान हुद रहा है। यह कहव जा एक ठडी साम और छोड दता तो बटा, तरी वाकी अपन गहन उतार कर तरे आगे धर देती।

मानाई का जादू चढ गया। अजीम और नूरुद्दीन मोनाई का वाता के टाने म बघे हुए चल रहे थे। अजीम मन ही मन अपनी गलती महसूस कर रहा था। मोनाई कहता गया— अरे औरतवानी नफ वानाम सुनत ही पानी हुई जानी। वो आठ-दस हजार रुप भी तुम्ही को दे देती और ऊपर से अपने गहने तक उतार देनी। मैं तुम्हारी जगह पर होना तो एक तीर म दो मियार करता। रजगार म सवर स काम ले और ठडे मगज से चाल साचे। वो बपारी क्या जो एक तीर स दुइ सिकार न कर सके।’

मोनाई वाका के उपदेशा को ध्यान और थप्पा के साथ सुनने की आदत अजीम को सदा स रही है। मोनाइ के प्रति थप्पा का भाव उत्पन्न होने ही अजीम का अपराधी मन आत्मतानि से पीडा पाने लगा। वह मिर मुकावर चल रहा था। नूरुद्दीन और अजीम दाना मत्रमुग्ध स चुप चाप चले जा रहे प।

मोनाई ने जरा नजर उठाकर दोना की तरफ देखा। देखा, दाना ही उसकी वाता से तलवार स बाट चुके है। हाठा की मुक्कराहट का दबाकर मोनाई ने आगे वान बढाई— ‘अब तुम्हारी दूसरी गलती तुम्ह बसाव ?’

अजीम तिसियाना सा हा गया था। शम के मारे उसका सिर नही उठ रहा था। नूरुद्दीन मोनाइ की तरफ देखने लगा। मानाई जरा हसकर नूरुद्दीन स बोला— ‘इसीको कहत हैं लडक-बुद्धी ! देखो अब सिर नही उठ रहा वनका ! अरे बेटा, अपनी एक चाल चली तो दुम्भन की दा चालें साच लो। तुम य कस भल गए कि मोनाई वाका बपारी आदमी हैं, मरी चाल पर वो भी कोई चाल जरूर चलेंगे। तुमने उधर तो ध्यान दिया

तरी और तू न साफ तू न की कीनी मत करने के लिए भांग घुंघरू घरे ।  
जग तुम गिरा धन य तू गिनी । अतिरक्त गिरा रगत रक्तगार करन पा  
ध गाएय ।

माता का गिर झर गया । तू ग्यात भी गिरा की श्रमा म था गया ।  
मोनाई फिर जरा जार ग हुआ । बाता— अब मैंने य ग्या ता य ।  
तार स हगा आई । उगा पा र गप कर दू मुझ तुमतर मांग-य ।  
मुग्गा जहल रहा । मुन जब दगा कि सीछा यटा कच्छा पातें पा रहा है  
ता योत मातो यनी दया आई । फिर य ग्यात मगद म दोटा कि आधी  
शिखा म ही पुनकर सटपा नगनी कर रहा है । इस जरा गिछा दगा  
पाहिए । नही ता आग चकार किनी वाहर वाले म करारी मान गायगा  
मरा नाम दूव जाणगा । इसीलिए य समय चाल भेलता यनी ।

अपना शिवारा पर मोनाई र फिर नजर डाली । बाता की गाडी जीर  
आग यनी । मोनाई र अब आगिरी वार किया— तुम अपन मन म  
गाचन होगे कि बाबा आई चाल चल रहे है । बेटा, अगर मुझ तुम लोग  
स चाल ही चलनी होनी तो इस बघत तुम्ह या टोक ब न बुलाना ।  
मुनसान रात तुम दाना जवान मुझ अपना दुस्मन समझन वाले जरा-सी  
दर म भरी गहन मरोडकर भरी सहास फेंक दत तो कौन जानता ? तुम  
क्या य समझते हो कि मैं बिना सोचे समझे ही तुम्हारे पीछ चला आया ?

अजीम और नूरुद्दीन दोनों चौंके । उह एव नया डर पटा हुआ ।  
तभी मोनाई अजीम के कंधे पर हाथ रखकर बडे प्यार के साथ बोला—  
‘बेटा मेरे मन म कपट हाता तो दूसरी चाल चरता । इस दम तुम्हारा  
पीछा करके तुमस बातें करने म मरा बडा गहरा मतलय है । तू तो जानता  
ही है मैं सदा एक तीर म दुइ सिकार करता हू । दयाल जमीनार स  
मिलकर तुम्ह सिच्छा भी दे दी और अपन तुम्हारे फदे के लिए एक चाल  
भी चल गया ।

अजीम और नूरुद्दीन की वाकशक्ति लुप्त हो गई थी । आधा गस्ता  
तय हो गया बालन का काम सिफ मोनाई ही करता रहा ।

सहसा मोनाई धीरे धीरे बड़े गम्भीर स्वर में कहने लगा—'नवाब साहब को हिंदू मुसलमान के झगड के लिए उबसाया ?'

जजीम और नूरद्दीन एकदम से सहम गए। जजीम की जमान लड खातर आप ही आप खुन गई— न न नही कावा, यगडा बात काटकर मोनाई बोला—'अरे वेवकूफा ठीक ता किया। डरत कयो हा ? अरे यही ता में चाहता था। हिंदू मुसलमान का झगडा डालो दसीम हमारा नूरद्दीन फदा है।'

नूरद्दीन बटी सफा दिघात हुए बोला— नही कावा गमी बान भना हम कर सकत है।'

मोनाइ फौरन ही तानामेज सहजे में बह उठा— नही ! तुम लोग तो बस घास छील सकत हा—गधे कही के। अरे मैं कहता हू कि नवाब साहब और दयाल के बीच में हिंदू मुसलमान का यगडा डाला। य लाग जब लगे तभी हम लागी का फेदा हागा। जब तक य बट बट जमीदार और राजा लोग हमारी खापडी पर सवार रहेंगे तब तक हम कुछ नही मिलेगा। क्या भइ नूरद्दीन, कुछ झूठ कहता हू में ?'

जजीम मोनाइ की इस बात का हज्म नही कर पा रहा था। उमे मोनाई का मूय बूम पर गहरा विश्वास था। और वही विश्वास इस समय उम मोनाई के प्रति अविश्वास उत्पन्न कर रहा था। यह चकित और भयभीत था। मोनाई को उसके और नवाब साहब के मिलन का कारण मान्य है—एक तरह मालूम ही है। वह भाप गया है। दयाल को अगर दमन पहने ही सचेत कर दिया तो उलटी आफत आएगी। दयाल नवाब साहब से ज्यादा अमीर है। जरा-सी लाग डाट हात ही उसने लापा खच करके शीशमहा तैयार करा डाला। इस बार भी वह नवाब साहब का पछाड सकता है। मगर मोनाई को यही करना था तो इस वक्त इस तरह यहा आकर वह मल मिनाप करने की काशिश क्या करता ? फिर दयाल और नवाब साहब के बीच में हिंदू मुसलमान का झगडा डालने की बान भी खुल ही कर रहा है। चाहता क्या है आखिर ?

जजीम और नूरद्दीन दाना मिलकर भी मोनाइ स पार नहा पा सकत । दोना खास तौर पर जजीम ता बहू घबराया हुआ था । वह कुछ साच ही नहीं पाता था । नूरद्दीन अपन का सभालकर वाला— बात ता चौकस है काका बाकी य नहीं समझ म आता कि हिंदू मुसलमान का बगडा क्या डाला जाए ? '

मानाइ ने फौरन ही गम्भीर स्वर म उत्तर दिया— इसम एक गहरी चाल है । पहल ता तुम यह समझो कि हिंदू मुसलमान का झगडा क्या हाता है ? इसलिए न कि दाना अपन अपन धम को बडा समझत हैं । और जब छुटाई बडाइ का फमला नहीं हुइ पाता तो दाना अपनी ताकत अजमात है । है कि नहीं ? कहो हा ?

नूरद्दीन ने सिर हिलाकर कहा— हा य तो सहा है ।'

'बस तो इसका तातपरज य भया कि लडाई धरम की नहीं होती घमड की होती है । क्या ममझे ? अरे धरम तो भगवान जी का मारग है चाहे उह खुटा जी कहला चाहे भगवान जी कहला । उसम कुछ भी फरक नहीं पडता । फरक ता छुटाई बडाई का है सा घमड का कारण है । अर तुम्ही लाग हो, क्या गए नराय साहब का पास ? 'सोलिए न कि तुम्हारा उनका दीन मजब एक है और तुम्ह य बान मानूम रही कि दयाल और नवाब साहब की आपस म सटकती है । दयाल ने तुम्हें नीचा गिनाया नवाब साहब की आड लक तुम उह नीचा गिनाना चाहत थ । कहा आ गई घमड की बात कि नहा ?

उक्तिन काका नूरद्दीन बोला—' हम इसतिग उनका मना नहीं गए थ । हम ता

बान काटकर मानाइ बोला—' बटा दाइ का आग पट छिपाना बेफजूल है ।

अठाम जीर नूरद्दीन भादणी अनुभव कर रह थ । एक क्षण का निर स्वर मानाई ने फिर बान का मूत्र उटाया— जीर मरणा पूछा ता बटा न ता तुम्हारा और नवाब साहब का धरम एक है न मरा और

दयाल जमींदार का। असली धरम तो हमारा-तुम्हारा एक है। हमारे लिए दयाल और नवाब दाना ही समर बिघर्नी है। अरे, कनजुग म धरम काह का ? स्वारथ का। और स्वारथ हमारा-तुम्हारा एक है। हमारा स्वारथ इसीम है, कि ये बडे लाग थापम म जूनें और हम मिलकर नफा उठाए। है कि नहीं ? अब दया या तो नवाब और जमींदार म पुरानो अन्ववन है मुल इम समै इह लडाने के लिए वाद परतच्छ कारण नहीं रहा। तुम नवाब माहब के हिरद म धरम की आग मुलगा आए। चतो, हमारा काम बन गया। बावो हम तुम जा इस आग म अपन घमड क कारण पडे ता गह के साथ घुन की तरह हम भी पिस जाएग। घमड, भया, पट भन् पर हाता है। हम-तुम ता घन के भूखे हैं काहे का घमड करेगे ? और जा इसपर भी घमड करेगे तो नासमथी म अपन पर पर आप कुल्हाडी मार लेंगे। क्या अजीमा बालो न चुप क्या हो ?'

अजीम के लिए अब काई भाग न था। सिर झुकाकर बोला—' मैं तुमसे बाहर घाडी हू काका।

मोनाई की बाछें पिली, अजीम की पीठ पर हाथ रखकर बोला—  
य ता मैं जानता हू बटा। क्या तय कर आए हा ?'

अजीम का सिर अभी भी नहीं उठ रहा था सिर झुकाए हुए ही उमने जवाब दिया—' दयाल की कोठी पर हमला होगा। '

'कब ?'

नूरु कलकत्ते जाणगा आदमी लाने।'

मोनाई बहुत गम्भीर होकर सारी बात पर गौर करत लगा— हू, कुछ पस अटक ?

पाच सी ! ' अजीम कहता नहीं चाहता था मगर जवान पर मोनाई का असर था।

मानाई बोला— उहू ! हमला दयान की हवती पर नहीं, सरसुती पुर म जहा मैंन औरतें रखी है वहा होना चाहिए। पूछा क्या ?

अजीम मोनाई के मुह की तरफ देखन लगा। उमकी मिट



गई थी।

मानार्द बोला—' अगर दयाल की हवली पर हमना भया तब इन दोना की ता ठन जाएगी बाकी हमार लिए एक तीर स दा सिक्कार न हांगे। सुनो औरता क घध म हम तीना का साजा रहेगा। जनायाल म कुछ पन्ना नही पलटनिय ससर शराब पी क अपनी मनमानी करन ह। मरी चार जोरतें मर चुकी। ठेकेदार अपना कमीसन सिर चीरकर ले लता है। जोरता की पिनाई पिलाई का खर्चा अनग देना पटना है। मैं य चाहता हू कि नूरु कलकत्त म ही सबका ठिकान लगा जाये। उसीम नफा है। इसलिए नूरु जिस दिन गुड ले के जावगा मैं ठेकेदार को कुछ ले के मीटर का इतरजाम कर रखूगा। जहा औरतें लादके रवाना का कि खाली घरा म गुडा स हल्ला मचवाय देंग। क्या समय ?

अजीम ने सवाल किया— य तो ठीक है मगर हम इसम हिन्दू मुसलमान की बात कहा आई ?

भागे आती है ! मोनाइ बोला—' सुनो इसम एकसाथ कई चान चलनी पटेंगी। नवाब साहब के रुप स जो गुडे लाजा ता उह ये समजाना कि ये दयाल जमींदार के आदमी ह। क्या समये नूरु ?

कयो कावा ? नूरुहीन न समझन की गरज से सवाल पूछा।

इसम चाल य है कि पलटनिय जब जोरतें नही पाएग तो भडकेगे। गुडो को देख के समझेंग इहीन जोरत उडा दी है। गोरी पलटन का जो जडल है उसीको मैं बाद म य पट्टी पढाऊगा कि छावनी के ठेकेदार न दयाल के साथ मिलकर औरतें उडाई हैं। सबूत दगा कि ठेकेदार की माटर ही औरता का ले गई रही। इस तरह एन ता ठेकेदार का छावनी स पत्ता कटगा दूसरे जब गुडे गिरिफ्तार होंगे तो वे यही बतावगे कि हम दयाल जमींदार के आदमी है। इस तरह गोरो की गवाही दयाल क खिलाफ होगी। सरकार म दयाल जमींदार की बन्तामी हुई जायगी। दयाल का पन्ना कमजोर होगा। इधर तो या साजूगा उधर न्याय को ये पट्टी पढाऊगा कि औरतें नवाब साहब न उडवाई ह। आपने अनायात की जोरता को

मुसलमान बनाने का आपने बदला ल रहे हैं। मैं कहूंगा कि औरतें भूना का महजिद म छिपाइ गई हैं। दयान का गुम्मा दिना के उमक लठत उघर भिजवाऊगा, क्या समझे ? और अजीमा नवाब साहब का भडकावे। य कहूंगा कि दयाल आज रात महजिद तुडवान बाने हैं। उनके लठत पहल ही महजिद म छिपाए रखना। क्या समझे अजीमा ? महजिद पर दोना पालटिया के लठेन खून खराया करेंगे बान अपन आप पुनुम और वारट तक पहुँचेगी। पलटन के जडैन भी दयाल के खिनाफ अपना बडर लिखेगे तान दोना तरफ से गच्चे म आवगा। क्या समझे ? दयान के ऊपर जादा शक पडना चाहिए। बाहू से कि तम नाग इसी गाव म रहत है। उसके ऊपर तीआसन पडे कि उमका ध्यान किमी दूमरी बान की तरफ पड ही नही। अभी हम ताग निसचित हुई के अपना रजगार कर सकेंगे। बल्के मैं तो दयाल को महा तक पट्टी पटाऊगा कि मुसलिम लीग का सुराज है नवाब साहब को वही म मदद मिल रही है। बनबसे जाय क आप भी हिंदू ममा का अ दोन कीजिए। अरे बटा दयाल अगर महा रहा ता वह मुसलमान हान के कारा तुम लोग पर सब करगा। और हस्तियाचार करेगा। मैं तुम तागा पर जरा भी शक नही जान दना चाहता। तुम लोग ता मेर लटके के समान हो।

अजीम और नूहदीन पर मानाई की बाना का जबरदस्त प्रभाव पया। अजीम न गदगद भाव से फौरन ही मोनाई के पर पकड लिए। आग्य म जामू नगकर बोला— बाना, मैं तुम्हारे साथ बनी नातायकी का है। मैं बाना पापी हू।

मानाई न फौरन ही अजीम का उठाकर अपन कलेत्र म सगा दिया। बाना— बेटा भगवान हा जानत हैं मैंन जरा भी बुग नही माना। जरे भाई नासमथी के वारत तूके कभी ऊपटाग कर बटन है। मा ब्राप भी जो एसी ही नासमथी बरके बुरा मात जाए तो फिर य ममार चत कन ? क्या नून मैं बूठ कह रहा हू बटा ?

नूहदीन सिर झुकाकर बाना— ठीक है बाना, मगर तूना ता मैं भा

जस्कर बहूगा कि तुम्हारे जसा धर्मात्मा इस दुनिया म हाना बडा कठिन है । तुमका गलत समझके हमने बडी भूत की ।

फौरन अपन कान पकडकर आजाप की आर दखत हुए मानार्द बोला — ' नही बेटा ऐसी बात मत कहो । मरा धमड बन्गा । जो कुछ करते ह सब भगवान जी करत ह । मरी क्या सकती है । अरे भगवान जी न चाहा तो य दयाल और नवाब जीर ये जित बड बट जमीदार राज महाराज है—य सब एक दिन मिटटी म मिल जाएग । और इनका मिटटी म मिल जाना ही अच्छा है । ये बडे आदमी सब राच्छस है राच्छस । इनक अतिमाचारा स पिरयी तिराह तिराह पुकार रही है बटा । देख ता लडाइया हुइ रही है । बम, तोपें और मारकाट मच रही है । हमारे इन सुरग जम गावा की जाज य दसा हुइ गई है । बस जब पाप की हट हुइ गई है । इनका नास करने क लिए भगवान जी जस्कर अबतार धारन करम । गीता जी म भगवान जी ने कहा है कि परतराना साधू नाम जीर बिनासा होवगा कुट नाम ? सा जस्कर होवगा बटा । तुम्हार कुरान जी म जरूर यही बात लिखी होगी क्याकि बेटा, धरम मजब तो सब भगवान जी के बोल ह सबम एक ही बात लिखी है । अब तो हम गरीबा का सुराज होवेगा क्याकि गरीब ही भगवान जी क सच्चे भगत हान हैं । मैं ता बटा भगवान जी क उपदेस पर चलता हू । तुम लोग मेरे प्यार हो य लाग मर दुस्मन हैं । इनका महार करूगा तुम्हारा उदार करूगा । जब य सब चाल जा भगवान जी की दया स बठ गइ ता ठेकर दयाल और नवाब उलट जावगे । फिर टेका भी मैं ही लगा । क्या समझ ? ठक्नारी दूकानगारी और य जीरता का काम ? य जीरता का काम भी बड धरम का है नूरु ! अन स बटकर कोइ धरम नही । इरजत आवरु सब दसके पीछ है । और बेमियाए जा पापिन होनी तो भगवान जी इह बनात क्या ? पट भरने क लिए भगवान जी न य सब करम बनाए है । कार्द करम करो मुन भगवान जी का नाम लो रहा फिर काइ पाप नही है । क्यासमझ ? जब मैंन गुरु जी की बटी ली तब य ग्यान की गूत बातें समग म आइ । बस इसालिए बटा य सब

घघा फैलाके अपना करम करता हू और जाग भी कुछ दिना तक करूगा ।  
तुम सब लोग हुमियार हा । जहा तुम लोगो ने मिलकर काम काज मभान  
लिया तो 'याडा और उसकी मा को बजीमा के हाथा म सुपु' करके फिर  
में म याम ल लूगा । क्या ममये ?"

बजीम खुशामद करता हुआ बाला— नही बाका अभी तुम्हारी कुछ  
उमिर थाटी हुई है ।

' नही बटा, फिर तो मैं मयास लै लूगा । करम स घरम म जाऊगा ।  
कुछ कह लो, य करम का मारग है बडा कठिन । बडे मायामाह करन पडत  
है रसम । (जाह भरकर) भगवान जी, तुम्ही हा तुम्हीं हा ।'

हृच्च स एक डकार आई । भक्तिभाव न स्पून रूप धारण कर लिया ।  
पट पर हाथ करने हुए मानाई बोला— "ससुर खटटो जगार आप रही है ।  
तुम्हारी कानी ने मीठा भान और लूचा बना" थी काज । जबरनस्ती करके  
जाग खिलाय लिया । भगवान जी भगवान जी ।'

मोहनपुर गाव का मोमा निकट आ गई थी । तीना अपनी एक बहन  
बना उलवन का मुलवाकर हन्क हो चुने थ और जत्र किमी नइ बान की  
याज म थे । खादना रान था, इसपर ध्यान गया । अपना गाव आ गया  
था, इसपर ध्यान गया । फमल तयार हो चरी थी, इसपर भी ध्यान  
गया ।

बजीम बाला— "फसल अच्छी रही है बाका । बाकी काई काटन  
बाला नही इस साल ।"

दम बदम धामे रामन म पाच छ ककाल पडे थ । जानवर माम चाट  
चुन थे । मोना न्ह देखकर बाला— 'फसल काटनबाल तो य पडे हैं,  
भया ।"

माना ने बहुत गभीर हाकर कहा था । तीना मौन हो गए । थ टट  
गिया के करीब आ पडूच थ । चमकत हुए दाना की पकिन्धा आधा के  
गड्ड, फमलियो के पिजर ताय परा की हड्डिया—मनुष्य का अप्रत्यक्ष रूप  
प्रत्यक्ष दग्वर तीनों के पर टिटप गए । उन अस्थि-यंत्रण की आड म सत्य

न मानो भागते हुए चोरो का पकड़ लिया। वे सहम गए। या तो नई बात नहीं जायें थरस स य ठठरिया देखने की अभ्यस्त हो गई, जगह जगह खिन्नाइ पड़ जाती हैं। जब सब लार्शें जलाने-फनाने की शक्ति रही लागा ने उनकी सन्गति कर दी। लेकिन अब तो लागा स अपन प्राणा का बोझ ही नहीं उठाया जा सकता फिर लार्शें कौन उठाए।

गात्र म जगह जगह ठठरिया बिखरी पड़ी हैं। हटिडया क टुकड़ तीर सिरा की गेंद कुत्ता का मनारजन बन गए हैं। टूट, उजड़ हुए मिट्टी क घर खड़ी फसल और ठठरिया की सख्या म मोहनपुर का बभव निहित था। मकड़ा तपस्विद्या की जीवन ज्वाना स तपी हुई भूमि का धुधली चादनी की शीतलता और प्रकाश स शक्ति मिल रही थी। धुधली चादनी के प्रकाश म ठठरिया रहस्यमयी सी लगती थी।

तीना दखत रहे पहले मोनाई बोला— फसलें खड़ी करनवाने तो य पड़े हैं भया फिर काटने कौन आएगा? एक शिष्य भी हमारी-नुम्हारी तरह था। इनसे साथ हमने हाट हजगार किया है हस बोल उठ बठ है। इनके साथ लडाईं बगडा भी किया है होली तीवाली और ईश भी मनाइ है। आज पहचान म भी नहीं आते कि कौन-कौन हैं? भगवान जी इहान एसा कौन सा पाप किया रहा जो ऐसी मौत पाई? और हमन एसा कौन सा पाप किया रहा जो य दिन दखना पडा।

माना की आला म जासू छलछता उठे।

अजीम बच्चा की तरह अपन सामन क श्चय म खा गया था।

तूरहीन का अपनी भूखी मा की याद आ रही थी जिस उसन भूख क जाम म गला घाटकर मार डाला था बर्ई मुनीर की याद आ रही थी। मुनीर की धीधी की याद आ रही थी जिस उसन पीट पीटकर तन फरोश बनाया था। उस मुनीर की मामूम बच्चियो की याद आ रही थी। अजीम स उसन चान क चरह म जलाए जाने का हाल मुना था रनिया की मौत की खबर मुनी थी। मुजस्सिम गुनाह बनकर वशर्मा क साथ अपन का महसूस कर रहा था। उस अपना की याद आ रही थी।

अपनी कोमल भावना का पर सपन करते हुए मोनाइ विचारक बना।  
 बाता—“मरी जि त्गी तो इन मरनेवाला की रही बेटा। ये सदा दुनिया  
 क काम आए। और मरने पर भी काम ब्या रहे हैं। हम सिच्छा द रह है—  
 इस माटी का क्या माह, मूरख ? हस अकेना जाई जाया, माटी ससरी का  
 काई पहचानेगा भी ही। बस करम क्रिया रह जावेगा। करम कर प्राणी,  
 अपना करम किए जा।”

अजीम और नूरुद्दीन दानो चुपचाप खड ये। एक क्षण रुककर मोनाइ  
 वाला—“एक बार कलकत्ते के इस्पताल म गया था मैं। वहा एम दावे  
 देस ये हमने। डागदरी के लडके इससे पठते हैं।”

नूरुद्दीन—कलकत्त का अजुमबी—फौरन बोन उठा—‘अरे मिडकल  
 कालिज म सारी पढाई इमीपर होती है। मैं अपनी आवा स देखा है।  
 जोर ससमरीजम—जाडू वाला की दुकाना म मैं बहुत-से दखे हैं। इह  
 खब मुझे डर ही लगता, काका।”

अजीम भी फौरन अकडकर बोला—“डर कर क्या, मैं तो भूता  
 को महजिद म शान भर साया हू। मुझ इनसे जरा भी डर नहीं लगता।”

मोनाइ शांत स्वर म कहने लगा—‘इनसे काह का डरना बटा ?  
 ये तो जिन्दगी भर आप ही दूसरो से डरते रहे। डरत डरते मर गए विचारे।  
 मरी य इच्छा हो ग्ही है अजीमा, कि इन विचारा की सदगति करा दी जाय।  
 जब तक जिण दूसरा क काम आण, जोर मर जाने पर भी दूसरा के काम  
 आव यही मैं चाहता हू। न जाने कित्ते लडके डासे मिच्छा पाएगे, न  
 जान कित्त कित्ते बमीकरण मय इनपर मिड किए जाएगे। पुत्र का पुन  
 है। नूरु कलकत्त ता जा ही रह ही बेटा, भाव पूछत आना इनका। क्या  
 समने ?’

नूरुद्दीन और अजीम चमक उठे। बड उत्साह क साथ अजीम वाला—  
 ‘वाह काका कभात की बात साची है तुमन। हमारा ता खयाल भी नही  
 पहुच सकता था। क्या नूरु ?’

नूरुद्दीन ता मोनाइ का भवन हो गया था। गद्गद होकर जोख

“अरे भाई, य काका की खोपड़ी है। ये जमाने भर के तजरबकार की निगाहे हैं, जो मिट्टी में भी सोना ढूँढ लेती हैं। मैं बल ही बलबत्ते जाऊंगा काका। य तुमने बड़ी दूर की सोची है। मगर ल कस जाएंगे काका ?”

मोनाई बोला— ‘ये फिर तुम्हारी नहीं, हमारी है। हम कर लग इसका इतरजाम। और सुनो बेटा ! आओ, चलते आओ। मैं य कह रहा था नुरू कि अब कुछ साझे सौदे की बात भी हुई जाय। रजगार-बपार में हिसाब कौड़ी का और बक्सीस ताख की। क्या समझे ?’

नुरूहीन जरा कुछ लापरवाही दिखाने का स्वाग करते हुए नीम रजा मदी से सिर हिलाकर बोला— ‘हा, ये तो एक तरह से ठीक है काका ! मगर

इसकी तरफ ध्यान न देते हुए मोनाई कहने लगा— ‘नवाब साहब से जो पान सौ की रकम तुम्हें गुडो के लिए मिली है उसमें तुम जा बचा लो वह तुम्हारा है। उसमें अजीमा का हिस्सा नहीं रहगा।

मोनाई मूछ खुजलाने के बहाने जरा रका धीर तिरछी नज़र से अजीम को देखा। अजीम चुप रहा। मोनाई ने आगे बात बढ़ाई— ‘यही नहीं आगे भी जो तुमका हज़ार पान सौ मिल जाए, सौ भी तुम्हारा।’

नुरूहीन जरा बनकर बात काटत हुए बोला— ‘नहीं काका अजीमा का भी हक है।’

मोनाई तड से बोल उठा— ‘दसो बटा बुरा न मानना नुरू ! अजीमा का क्या हक है और क्या नहीं इसका याव हमार सामन करन जोग तुम नहीं हो। तुम अजीमा के दास्त हो, इसलिए मेरा घरम है कि तुम्हारा भी भला चेतू। बाकी दसो बुरा मानन की बात नहीं है। अजीमा के भले और हक की बात जो मैं सोचूंगा, वो दूसरा कोई नहीं सोच सकता। क्या समझ ? अजीमा मरे दोस्त का बेटा, मरा सागिरत है। भगवान जी जानत है या और यादा को मैंने कभी अलग करके नहीं माना। इसलिए मैं जो कन्ता हू वह सुना। नवाब साहब के पास में अजीमा को मैं कोई हक नहीं दता। औरता के मामल में छ छ धान तुम दोना के, चार आन मर। इन टट

रिया के मामले भी यही फसला रहगा। ठठरियो म जा मेरी चवती रहगी उसम से एक आना मैं अजीमा को दूगा एक आना पुन के खात म और दो आने मेरे। क्या समझे ?”

“ठीक है काका। हमको खुशी है।’ नूरद्दीन सतुष्ट हावर बोला।

मानाई फिर कहने लगा—‘अच्छा, अब रही दूकान, सो उसम अजीमा की चार आने की पत्ती रहेगी। और छावनी का ठका जा लूगा, उसम दा आने तुम्हारे, चार आने अजीमा के और दस आने मरे। देखो भाई, मैं कुछ अयाव तो नहीं कर रहा हूँ ? तुम्हें कुछ सब मुभा होए तो अभी मर मुह पर ही कह दो। मैं बुरा नहीं मानूंगा। बाकी पट म न रखना। क्या समझे नूरु ?’

नूरद्दीन बाछें खिलाता हुआ हाथ जोडकर बोला—“नहीं काका, जन्ला कसम मैं तो बहुत खुश हूँ। तुम्हारे फसले म बभी गैर इसाफी नहीं हो सकती। सच कहता हूँ अजीमा आज स मैं तो काका का गुलाम हा गया हूँ, अपनी कसम।

‘और अजीमा।’ मानाई बोला—‘जा हूइ गया उसे भूल जाओ। भगवान जी जानत है मेरे मन म तुम्हारी तरफ स जरा भी मल नहीं है।

मोनाई का घर दिखाई पडने लगा।

अजीम बेहद शर्मिदा हो रहा था। बडी दीनतापूर्वक सिर झुकाकर बोला—मेरे मन म अब कुछ नहीं है काका। उस दम न जाने मरे सिर पर कौन-सा भून सवार हो गया था। अल्लाह गवाह है मरी रूह बडी तकलीफ पा रही है इस दम।

तू तो सिडी है। मानाई नहसकर अजीम के गाल पर एक हल्की सी चपन लगा दी। वह अपने घर के दरवाजे के सामन था। कहन लगा—‘चल आओ अपनी काकी स मिलत चलो। नूरद्दीन बुरा न मानना बेटा अब इस दम तो मैं अजीमा को अपन साथ लिए जा रहा हूँ। बहुत दिनों बाद—तुम तो समझत ही हा बेटा।’

“हा, हा, काका, मुझ खुशी है। अच्छा सो मैं चलता हूँ। सबरे मिलूंगा।”



नूरुद्दीन बोला ।

“अच्छी बात है सबेरे ज़रूर आना । वस फीरन स पेस्तर अब काम पर जुट जाना है । क्या समझे ? अच्छा बेटा जीत रहो भगवान जी तुम्ह वनाए रखे’ कहकर मानाद अपने घर की कुडी घटखटाने लगा ।

मोनाई का प्रमपात्र बनकर अजीम ज़रा वडप्पन का भाव लेकर नूरुद्दीन से बोला— सबेरे मिलूंगा, नूरू । अच्छा सलाम भाई !’

मोनाई की पत्नी ने दरवाजा खोला । अजीम का पति के साथ देख कर ज़रा चौकी । अजीम के प्रति उसकी घणा चेहरे पर झलक गई । उसके ही कारण बूटे पति की बडी लाडली पत्नी को पति के हाथा मार खानी पडी थी और उसे तीस हजार रुपया का गम सहना पडा था ।

काकी से तीस हजार रुपये ले जाने के बाद अजीम आज पहली बार सामन आया था । उसकी आँखें इस वक्त झुक रही थी ।

मोनाई ने परिस्थिति को दोनों तरफ से सभाल लिया । अजीम के प्रति उसकी काकी के प्रेम का बखान करना शुरू किया । बहुत याद करती रही है । काकी के हाथ का भीठा भात खाने का इस्तरार किया । अजीम की नागानी कोई बडा गुनाह नही बच्चे कर ही जाया करत हैं । मरने के पहले वह अजीम को कुछ न कुछ अवश्य ही द जाता सा उसका हक था । फिर अजीम को बतलाया कि वह दयाल को मुसीबत म डालने के बाट छेनासिह का मिलाकर उसके गोदाम म चोरी करवाने वाला है । उसम भी अजीम का साक्षा रहेगा । चोरी करके रातारात भावें लदवानी होगी ।

उसने यह भी बतलाया कि चोरी पाप नही है । दयान की डावेडनी का जवाब है । अजीम को आगाह किया कि नूरुद्दीन को इन सब बातों की हवा भी न पड्चने पाए । इमक बाट मोनाई ने अजीम और नूरुद्दीन की दोस्ती को भी नापमद किया— उमका-तुम्हारा कौन साथ ? वह उचक्का है तुम मराफ हा बपारी हा । काम निकाल लेना दूमरी बात है मुत्ता रफगा का साथ करन स बपारी की साथ उठ जाती है । क्या ममन !

अजीम का उमन फिर स गाशे म उतार लिया । नया उत्साह दकर

उसे विदा किया। मोनाई की पत्नी को अजीम पर विश्वास नहीं रहा था। उसका प्रति वह अपना शोध नहीं मिटा सकती।

मोनाइ ने समझाया—'तू तो निरी पगली है। अर, जो इस दम मिलता नहीं तो मैं ठंडा पड़ जाना। य लाग नवाब साहब के पस पर गुडागिरी करानेवाले रहे। हिंदू मुसलमान वाली चालें मेरे साथ भी चल रहे थे। दयाल का क्या है क्या आदमी है, मगर मैं तो भिखारी हो जाता। जब इसको दम पट्टी दे के साध लिया है। और वा चाल चली है कि सदा के लिए छटका ही मिट जायगा। दयाल ने जो इत्ते इत्ते हत्तिया-चार मेरे ऊपर किए हैं सो अब वह उसकी सजा पा जायगा। जब वो पस जायगा तब नूर और अजीमा को भी अलग अलग फास क मिट्टी म मिला दूंगा। जो नुकसान सहा है उसे ब्याज समेत बमूल कर लूंगा। भगवान जी सदा सहाय रहें कलकत्ते म महल चुनवाऊंगा। क्या समझती हो तुम। और तुम्हें तो गहना स लाद दूंगा, मरी लाडो। मोटर म बिठाय के कलकत्ते की सैर कराऊंगा तुम्हें। जरा इधर एक नजर देख ला मेरी तरफ। ऐ तुम्ह मरी बसम।''

बूढ़े मोनाई की तीसरी पत्नी बनखिया स उसकी तरफ देखकर मुक्करा दी।

तीसरी पत्नी का कौतुहल बड़े बड़े सबाष करता था जिसके आधार पर मोनाइ के नये-नये सपन बनत थ— वस गाव म यह आखिरी बाजी जीत लेने के बाद गाव का काला मुह करके कलकत्ते चला जाऊगा। वहां रजगार फरगा। हम तुम सेठ मेठानी बनगे। नीकर चाकर रहेग, मोटर रहपी कलकत्ते म बड़े बड़े झड़े गाडे जाएग भगवान जी न चाहा ता एक बार कलकत्ते के बड़े-बड़े घना-सेठा म अपनी साल पुजबाय लऊगा। तुम समझती क्या हो, मरी रानी! अरे, तुम्ह तो मैं सोन म मडवाय क अपनी तिजारा म बटाय दूंगा मरी मौता।

चाग्नी रात की रोमानी फिजा मरभूखो, मुर्दों क इम गाव म सब तरफ से मायूस हाकर मोनाई क आगन म खिलखिला रही थी।

बाहर, चारों दिशाओं से कुत्ता के भौंकने की और सियारा की मनहूस आवाजें जा रही थी। वहीं से हिस्टीरिया में चीखने हुए किसी इंसान का दब रात के सनाटे को चीरता हुआ हवा में कणकपी पदा कर देता था। बर्ना या मुर्तों की बस्ती में तनखसोट खूसार जानवर ही अपनी आवाज कर रहे थे।

मौत की आखिरी घडिया में जब कि इंसान शांति से दम तोड़ना चाहता है कुत्ता और सियारा उसे इस तरह मरने की मुहलम नहीं देते। जान निकलने के पहले ही कुत्ता के पने दात शरीर की चीड़ फाड़ शुरू कर देते हैं। दम क दम में जादमी लाश जीर लाश से ठठरी में बदल जाता है।

बनी बापत और डगमगाते परो से चला आ रहा था। उसके हाथ में एक गडामा है। उसकी नज़र एक लाश को खान हुए कुत्ता के झुट पर पड़ती है। कुत्ता को इस तरह पट भरते हुए देखकर वह बर्दाश्त नहीं कर सकता। उस कुत्ता पर गुम्सा आया। घर जान जान बह लौट पड़ा। न ता कमज़ोर पर काबू में थे और न त्मिमाग ही रूहानी जोग से उमके परा में आधिया और भूत्तान बघ गए थे। गडासा लिए हुए बेनी कुत्ता क मजम पर झपटा। भरपूर हाथ पड़ा। एक का सिर साफ बट गया दो-तीन ज़म्मी हुए गीर बानी तमाम कुत्ते चिल्लान हुए भाग गए।

अरसे से कुत्ता का इंसान को मारने की आत्त पड गई थी, उनसे मार पान की नहीं। कुत्ता फिर झपटे। एक की गन्त पर पूरा बार बटा, पर बनी अपने ही जीम में मुँ के बल लाग पर गिरा। किसी आत्मी की अघग्राइ लाग थी। हाठो पर कच्च माग क एक लायड न बनी का नया जायदा महमूम करायो। वर अभी ठीक तरह से इस नय अनुभव का पट्टवान भी नहीं पाया था कि कुत्ता न उमकी टाग पर हमला बान निया। बना बही जोर से चीख उठा। उमकी चीख में जा सजिन अपना परिषय दर्शा थी उमान उन उटन का सा ग निया। दाना हाथ टक्कर उमन अत्त का उगन की कागिन की। एक जय उम अघग्रा साग में अत्त नय पुन गया। हाया में छीछडे छीछट मग गए, सजिन बेनी को इगरी

घबर न थी, कोई परवाह न थी। गडासा उठाकर उसने पीछे उलटकर फेंका। वृत्ते भागे। बेनी लडखडाता हुआ उठा। उसकी बाधा स खून बरस रहा था। उसका हाथ घून और छोड़टा स सना हुआ था। उसका हाठा पर आदमी का खून निपटा हुआ था।

बनी किसी तरह अपने घर की तरफ चला।

बेनी का घर अभी भी बाकी था। मर पर छप्पर न था, न मही, मगर चार दीवारें तो बाकी थीं। घर के दरवाजे और बास बल्लिया निकालकर वह बहुत पहले बेच चुका था फिर भी उस घर के लिए उस प्यार था। लागा न घरा म रहना छोड़ दिया था मगर बनी न न छोड़ा। अपनी नव विवाहिता पत्नी के साथ वह वही रहा।

अकाल शुरू होने के दो महीने पहले बनी का विवाह हुआ था। वह अपनी पत्नी के सौंदर्य पर मुग्ध था। उसकी पत्नी भी जी जान से उसे चाहती थी। गाव भर म बेनी बसी वजाने म अपना सानी नहीं रखता था। नवोत्त को इसपर अभिमान था। व्याह की मँहदी का रंग भी फीका नहीं पटा था कि दुनिया का रंग बदल गया। गाव उजड़ने लगा। मृत्यु की विभीषिका सारे गाव को निगलने लगी। शरीर की शक्ति अमश क्षीण होने लगी। एक दूसरे के प्रति अपने प्रगाढ़ प्रेम से अकाल पीड़ित नव-वम्पनी ने जीवन के लिए एक नई प्रेरणा प्राप्त की। ससार से अपना सम्बन्ध त्रिच्छन्न कर के दोनों सबसे दूर अपने घर म ही रहने लगे। एक क्षण के लिए भी एक दूसरे स जनम न होने थे। लेकिन आज चार रोज स बेनी की पत्नी का बोन बन्द हा गया था। दृष्टिया क ढाच म एक धुकधुकी-सी चला करती है जिसे देख देखकर बेनी की व्यग्रता बढ़ती जाती है। कन तो उसकी पत्नी न आखें भी नहीं खोली। पत्नी के विछोह की कल्पना बनी का जी न नहीं दती। कल मे वह घर से भागा भागा फिर रहा है। घर आना है तो पत्नी की मृत्यु का निवृत्त आत लेखकर भय स पागल हान लगता है। बाहर की दुनिया उस जीर भी डगावनी नजर आन लगती है।



पत्नी को मरन और कुत्ता द्वारा गाल जान न बचाए। पीरन ही उमरा  
 इस भी मूष गया। इसके द्वारा टुकट करके उस बसेजे म छिया लिया  
 जाए, बस यह बच जाओगे। मौन इसे दग रही पाएगी, कुत्ते म गा नही  
 गकेंगे। यह गपान बनी का स्पर्ति और प्रमप्रना देने लगा। यह तजी स  
 उठा। उसने अपना गदामा लिया। मांस उसकी पत्नी की छाती म बही  
 धीमी चन रही थी। बनी न सोचा जल्दी कराना चाहिन। मरन स पहले  
 ही इस काटकर बनेत्र म रग लू नहीं तो यह मर जाओगी।

गदाम का पूरा पार गन पर पडा। अपन अघाघुघ जाग म यह लाप  
 को बराबर काटता हा गया। यहां तक कि बकबर गिर पडा। मांस के  
 टुकड उसकी मुठ्ठी म बाए। बनी न धीरे स हाथ उठाकर उट देना।  
 आया म फिर नई चमक आद। घाड़ी दर पहले बाहर कुत्ता को मारन बकन  
 मांस के छीछट उमके हाठ से गगे थ। उम एक नया अनुभन मिला था।  
 अपने हाथ म पत्नी के शरीर के टुकड दलकर बनी को नया उत्साह  
 आया। यह घपने हाथ को मुह के करीब लाना गया। आता की चमक  
 बराबर बढ़ रही थी। बनी ने उन टुकडो को अपन मुह म भर लिया और  
 चवान लगा।

भूष का पागन इसान अपन को मारकर भी जीवन की भूल भुलपा  
 म भटवने की दृच्छा करता था। भूष से लडते-लडते यह प्रमण भूष,  
 पीडा, शरीर बुद्धि और मृत्यु की चेतना से परे जाकर जीवन स लड गहा  
 था। मनुष्य का यह गपय स्वय उसके लिए अथहीन हो चला था। ममा  
 स भर हुए वृत्त्य निरंतर बढन चले जा रह थे।  
 मानाई के मंदिर म पुजारी जी रहत है। उनने चार वरुष के, विप्रदा  
 बहिन है पत्नी है और ब्राह्मण देवता अपन बटे परिवार का भूष  
 स लड रह है।

ब्रह्मभोज के बाद म मोनाइ ने मंदिर के भाग आरि म  
 भाग नही लिया। मोनाई तो उसी रात बाहर बल म  
 तीसरे रोज मानाई की पत्नी ने तीस हुआ म म म ।

जब पुजारी जी गए तो उसने साधा गालिया भगवा की मुनाइ, दधी, दवता और वामन ठाकुर का जी भर कोसा और फूटी कीठी दा से भी त्वार कर दिया। भगवान भूष मरने लगे। उनका पुजारी का परिवार भी भूषा मरने लगा। पहले अपने बदन मोड़े बच फिर ठाकुर जी की पूजा के बतन बच लिए। पीतल का ठाकुरा का बुनया भी दूकानदार के घर पहुंच गया। मन्दिर में बचन सायब जब पाद सामान न था। घर के सात प्राणी, पत्थर का राधा कृष्ण और मन्दिर की गाय तथा उसका बछड़ा भूष से छटपटावर तिन और रातें गुजार रहे थे। मोनाई जा भी गया मगर भोग का इतजाम फिर भी न हुआ। मोनाई अजीम और अनायालय के चक्कर में पड गया। पुजारी एक बार उसके पास जाकर गिन्गिडाया। मोनाई ने प्रस्ताव किया— 'औरता को अनायालय में भज दो। और भगवान को भोग की क्या जरूरत है। वा ता भाव के भूखे हैं। उनके लाखा भगत या रोज ही इस तरह भूखे मर रहे हैं। वे भला भाजन करेंगे।'

सबकी भूष सहन हा जाती थी मगर अपने चारो बच्चो और गाय का बछड को भूष से तडफता देखकर पुजारी प्रस्त हो उठता था। दिन पर दिन बच्च सूखते जाते थे। गाव के दूसरे बच्चा की तरह उसके बच्च भी दिन पर दिन मौत के निवाने बनते चले जा रहे थे। हारकर एक दिन उसने मोनाई के प्रस्ताव को स्वीकार करना चाहा। अपनी बहिन और पत्नी को मोनाई के अनायालय में भेजकर चार मुठठी चावल पाने का इच्छा की। उस दिन पति पत्नी में भयकर कहा सुनी हुई। पुजारी हठ करके मोनाई के आदमिया को लाने गया। लौटकर दखा, कोठरी में दो नगी लाशें टगी थी। पुजारी की पत्नी तथा बहिन ने अनायालय का भय से अपने तन की फटी धोतिया उतारकर फासी लगा ली थी। अवोध बच्चे आश्चर्य से यह तमाशा देख रहे थे।

पुजारी ने लौटकर इस दृश्य को देखा। जीने की समस्या हल होने का अजाय जोर भी उलझ गई। पत्नी जोर बहिन को सोकर पुजारी पश्चात्ताप





धनना एक पल के लिए भी लुप्त नहीं हो रहा था। दिन भर इसी गधप में बीत गया। धन में गऊ वाले दालान की तरफ चला, फिर बाहर चला जाता। कभी बच्चा को जाल से छानी से चिपटा लेता फिर गुस्सा बढ़ता। कभी भगवान की कोठरी में चला जाता, हाथ जाड़ता प्रार्थना करता रातों गिड़गिड़ाता और फिर गानिया दन लगता और जागन में आकर टहलने लगता। सारा दिन खबर काटत बीता। पुजारी के आग्रहणत्व और हिंदुत्व के सस्वारा न हार न मानी न मानी। उसका प्रोध चला गया। ठाकुर की कोठरी में जाकर उसने पहल तो भगवान के चरणों में अपना सिर फोड़ना शुरू किया और फिर भगवान का धीचकर पीटना शुरू किया।

इस बार उसने अबस्त विद्रोह किया। अटूट हठ के साथ वह गाय के दालान में गया। भूख से दुबली गाय रस्सी से बंधी बठी थी। भूख से विल विनाता हुआ बेजान बछड़ा आखों में बद किए हुए पड़ा था। कुट्टी काटन का गडासा ताक पर रखा था। पुजारी गाय की तरफ गया। उधर से हिम्मत टूटी। फिर बछड़े की तरफ आया। बछड़ों की तरफ जाते उसने अपने बच्चा का ध्यान आया। पुजारी का हठ फिर टूटन लगा। लेकिन वह नहीं चाहता था कि उसका हठ टूट जाए उसके बच्चे भूखे मर जाए। उसने तबो के साथ गडासा उतारा, बछड़े को खोलन की हिम्मत फिर भी न हुई। उसने गाय की रस्सी को खोला और उसे घसीटन लगा। गाय रभाती हुई उठी। गाय बराबर रभाने लगी। वह दयनीय आखों से पुजारी को देख रही थी। शारीरिक कमजोरी मन की निबलना और हठ पुजारी का तोड़े डाल रहा था। और इसी हार पर विजय पाने के लिए वह अबदस्ती गाय का घसी टता हुआ मन्दिर के बाहर ले चला। मन्दिर में गा बंध करने की हिम्मत उसे नहीं हो रही थी।

उत्मान में पुजारी गाय को घसीटता हुआ ले जा रहा था। गाय कम जोर थी। मृत्यु का भय जानकर के दिल को दबोचकर उसके परा का और भी कमजोर बना रहा था। किसी तरह दस कदम चलकर गाय ने आग



स्वयं प्रायश्चित्त न करूंगा तो ईश्वर दंड देकर मुझसे प्रायश्चित्त कराएंगे।'

सस्कारी, आत्माभिमानी ब्राह्मण को दंड भयानक और साथ ही अपमानजनक प्रतीत हो रहा था। पेट के लिए उसकी पत्नी और बहिन को वेश्या बनाने का पस्ताव ही उन दोनों के आत्मघात का कारण बना। ब्राह्मण पुजारी का रोम रोम इस महादंड की भयकर ज्वाला में जल रहा था। प्रायश्चित्त करना ही उचित है। किंतु अपन बच्चा को गडास स वह कस मार सकेगा? गाय की हत्या का दृश्य उसे कायर बना रहा था। और वह कायर नहीं बनना चाहता था।

सहसा उसका ध्यान कनर की चाड़ी की तरफ गया। ठाकुर के पूजा के लिए मंदिर के बाहर कुछ फूला क चाड़ लगा रखे थे। इधर अरसे से देख भाल छूट जाने के कारण क्यारिया मूख चुकी थी। कनर का दखत ही सहसा पुजारी को ध्यान आया कि इसकी जडा में विप होता है। विप द्वारा अपन बच्चा तथा अपने आपको मारना उसे सरल प्रतीत हुआ। पुजारी प्रमत्न हुआ। उसने मगवान को घ यवा निया। उसमें नया उत्साह पडा हुआ। गडासे से वह कनर की छोटी-सी झाड़ी को काटकर उनकी जड़ें साफन लगा। हाया की शक्ति जवाब दन लगी थी परन्तु प्रायश्चित्त का उत्साह उसे बल दे रहा था। उसने सारी जड़ें वगोर ली। क्यारिया की मूसा हुइ टहनिया भी बटारकर वट मंदिर में गया। गडासा बाहर ही पडा रहा।

चूल्हा बहूत दिना स ठडा पडा था। पेट की टहनिया पुजारी न चल्ह में रस दी। ताक स नियासलाइ की पटी उतारी। आठ-स तीलिया अभी भी बची थी। पुजारी न चल्हा मुलगाया। मिट्टी का छोटा सा घडा पानी स आधा भरा था। पुजारी न उस चल्ह पर रख निया। जड़ें उसीमें डालकर पुजारी अनि शात भाव स पकत हुए काठ की तरफ दगन लगा। मूखी टहनिया जल्दी-जल्दी जल रही थी। पुजारी चल्ह में बराबर नई टहनिया पाकता जाता था।

काण पक्कर तैयार हो गया। पुजारी पहन स भी अधिक शान हो गया। उसकी दन्ता और भी बट गई थी। उसने पण उगाया। ठाकुर जा

की बाठरी की तरफ बढ़ा। टाकुर जी के सामन घड़ा रखकर उसने हाथ जोड़—‘गोपाल, बहुत दिनों से तुम्हारा भोग नहीं लगाया मैंने। आज मक्खिन की बसंत पूरी हो जाणगी।’

उसने राधा-वृण के चरणा पर वह घड़ा रख दिया और उनके होठ पर थोड़ा सा जहर लगा दिया।

फिर बच्चा को जगाकर लाया। सबसे छोटे को गोद में उठाया। घाँगे पीने के नाम पर कोई चीज आज उन्हें बहुत दिनों के बाद मिल रही थी। बच्चे बहुत खुश हो रहे थे बताव हो रहे थे।

बाप का दिल फिर डगमगान लगा। पुजारी ने अपने को साधा। घड़े पर डके हुए मिट्टी के सकोरे में कनर का काड़ा भरकर अपनी गाद में बठ हुए बच्चे को उसने अपने हाथ में जहर पिलाना शुरू किया। बच्चा बड़े मत्ताप से जहर पी रहा था। बाप की आँखा में जामू छत्रछला आए। पेट-भर चारों बच्चों ने जहर पिया। काँटा खत्म होने लगा। वह खुद अपने लिए भी तो चाहता था। उसका अपना भी स्वाद था। उसने जबदस्ती बच्चों को पीने से रोक दिया।

इतने में छोटा बच्चा पट पकड़कर रोने लगा। जहर धीरे धीरे सब बच्चों पर बसर कर रहा था। बाप चुपचाप दखता रहा। बटे उसकी आँखा के जामे भर रहे थे। वे सदा के लिए सो गए। पुजारी भी सदा के लिए भा जाना चाहता था। पुजारी ने घड़े का मुँह तोड़ा जिससे पीने में आसानी हो। टूटा घड़ा हाथ में उठ आया। भगवान के चरणा में प्रणाम कर पीना ही चाहता था कि गाय का बछड़ा बापती हुई आवाज़ में रभा उठा।

पुजारी ठिठक गया। उसे बिना होने लगी। लडप-नडपकर मरेगा बिचारा। काँटा बहुत थोड़ा है, नहीं तो उसे भी पिला देता। फिर उसे ध्यान आया। अपने स्वाद के लिए एक निरीह प्राणी को बच्य देना बहुत बुरा पाप है। जिसकी माँ को मारकर वह इस समय प्रायश्चित्त करने बठा है उसको इस तरह सत्कार में सिमक सिमककर मरने के लिए छोड़ जाने का क्या अधिकार है। अपने बच्चा के लिए उसे बिना थी। क्या वह बच्चा

नहीं है ?

स्वाय और परमाय का सघप पुजारी को अपार कष्ट द रहा था। वह मरना चाहता था। उसे मारने की प्रबल इच्छा थी। जहर इस समय उसके लिए अमृत था। जीवन विष स भी अधिक बुरा था। वह जीवन नहीं चाहता। पत्नी बहिन अपने बच्चा और गऊ का हत्यारा ब्राह्मण पुजारी जिंदा नहीं रहना चाहता।

गाय का बछड़ा अपनी कापती हुई आवाज म रभा रहा था।

स्वाय और परमाय म घोर सघप चला। पुजारी कठोर बना— 'इस बच्चे का सिसक सिसककर मरने के लिए छोड़ने का मुझे क्या अधिकार है ? पाप मैंने किया है। सिसक सिसककर जियू तो मैं ! इतने दिन जियू कि मेरा जीवन पहाड़ बन जाए ? मरे ऐसे हत्यार के लिए यही सबसे बड़ा प्रायश्चित्त हागा !'

गाय क बछड़ को कष्टमय जीवन से मुक्त करन के लिए पुजारी आगे बढ़ा।

पुजारी ने अपना प्रायश्चित्त पूरा किया। परन्तु पत्नी और बहिन का आत्मघात माट्या बच्चा की लाश और गाय के बछड़े का तडपना पुजारी के प्रायश्चित्त को उमाद स न बचा सका। अपन आपत्त भयभीत होकर, चीसकर वह भागा—बतहाशा भागा।

वनक का लवटियों म अच्छा तरह मुत्ता भी न पाए थ कि गिद्धा क झुंड न चान पर छावा बाज किया। गिरू और पातू का अपनी जान के लिए दौड़कर अनग हाना पण।

आज घर में मौत का पहला दिन था। सबेरे शिवू की गोदवाली मुर्दा दम लडकी चुनी ने भूख की तड़प में आखिरी जोर लगाकर मा की छाती पर मुह मारा। उसीमें दाती बैठ गई। मा की छाती से दूध के बजाय दूध निकल आया और चुनी का दम निकल गया।

पन्द्रह राज से घर में भूख का राज था। सबसे छोटी बहन कनक को छ रोज से जूड़ी आ गई थी। चुनी की मौत देखकर वह रोते रोते बेहोश हो गई थी।

चिर प्रत्याशित मृत्यु इस घर से भी अपना हक लेने के लिए आ पट्टी थी।

शिवू और पाचू चुनी को दफनाने के लिए गए। लौटकर आए तब तक कनक का उठाने की बारी आ गई थी।

शिवू आज सबेरे से गम्भीर हो गया है। चुनी मरी घर में सभीकी आँखें पिघलन लगी। यात्रा तो जनम के कठोर है, मगर शिवू अपने जीवन में पहली ही बार आज मौन हुआ है और आँखें खुशक रही हैं।

रास्ते भर शिवू पाचू चुप रहे। बच्ची की लाश को अपने हाथों में लिए हुए शिवू मृत्यु को अति निकट से अनुभव कर रहा था।

बचपन से उसकी इच्छाओं की बल मदा सहारा लेकर बड़ी है। अपनी जवमप्यता की पालकी दूमरो के कंधा पर रखकर उसका दप आगे बढ़ना चाहता था। हठ से वह अपना दप की रक्षा करता था। उम्र बढ़ती गई बुद्धि न बढ़ी। ग्राह्यगत्य कुनीनता पिता और छोटे भाई की प्रतिष्ठा का सहारा लेकर वह बड़ा बन नहीं सकता इसे वह अच्छी तरह समझ गया। जुआ खेनकर या लीउर खनकर एव ही दाव में प्रतिष्ठा को जीत लेना कौशिल्य में वह बराबर नगा रहा, मगर कामयाबी हासिल न हुई। हठ चिद में बदलती थी चिन्म गुस्ते का रूप लेती थी और गुस्सा उसे उच्छ्वस बनाना था। उच्छ्वसलता के आचरण में वह अपनी लघुता को दब लेना चाहता था। स्वयं अपने से भी यह अपनी लघुता को छिपा लेना चाहता था।

अकाल ने पर्दा फाश कर दिया। अकाल उसकी इच्छा के खिलाफ था। हठ, चिढ़, गुस्सा और उच्छ्वलता कुछ भी काम न आ सकी। बच्ची की मृत्यु ने आज उसे पूरी तौर से हरा दिया था। अधिकाधिक कठोर बनकर शिवू अपनी इस पराजय को भी जीत रहा था। वह पत्थर ही गया था।

बच्ची को दफनाकर शिवू और पाचू घर लौटे। दोनों भाई मौन थे। घर के पास आए, रोने की आवाजें सुनाई दीं। अंदर गए देखा कनक की लाश पड़ी थी। पाचू हिल गया। शिवू वसा ही कठोर बना रहा।

पावती मा सबसे ज्यादा रो रही थी, उनका रोना देखकर जाखा भ आस आते थे।

सास ससुर—बड़ों की मौजूदगी में अपनी बच्ची के लिए रोना कुलीनो के अदब के खिलाफ माना जाता है। शिवू की बहू अपनी बच्ची से विछड़ने का दद भी ननद की मौत पर उडेल देना चाहती थी। मगर किसीम दल कर रोने की शक्ति नहीं थी। शारीरिक कमजोरी और प्रमश निक्कट आते हुए अपने अन्त का भय आसुजो को दबोच लेता था।

पास-पड़ोसी कोई नहीं आया। आवरू के हवस्त किले में कुलीनता मौत से छिपकर बैठ रही थी।

टिकटी के लिए चार बास नहीं जुडते थे। बेवसी पर शम को बुर्बान कर फटी झोली में कनक की लाश को ढाल दोनों भाई उसे फूकने ले चले।

बोझ सभाले न सभलता था। दोनों भाई उजड़ी हुई आबाणी से परे जाकर एक टूटे और उजड हुए घर से थोडा सा फूस और दो बास पाकर किसी तरह कनक की जलान की सोच रहे थे। इतनी लकडिया में लाश का जलना असम्भव था। लेकिन असम्भव को सम्भव बनाने की बवसी से भरी हुई जिद से अपनी बहन की अन्तिम धार्मिक प्रेतत्रिया करना चाहत थे। दो चार लगे लकडिया और बटार मिल गई।

गिद्ध आसमान में मडरा रहे थे। शिवू चियडे से ढकी हुई लाश के पास खटा था और पाचू उन दस-पाच लकडिया से चिता बनाने का प्रयत्न कर रहा था।





जावस्दारो का बुरा हाल था। आवरू नाम की कोई चीज इस वक्त तक उनके साथ नहीं रह गई थी। उनकी बहू बटिया भी खुले आम धम शालथा और अनाथालथा में भेजी जाने लगी थी। हरएक हरएक के घर का राज अच्छी तरह से जानता था, फिर भी आवरू शत्रु की रक्षा जबान से बराबर की जा रही थी। हरएक के घर में ही एक आध दो मौतें भी हो चुकी थी। श्राद्धादि प्रेत कम करना हरएक के लिए असम्भव हो चुका था इसलिए जो घर में मर जाता उसके लिए यह कह दिया जाता कि वह परदेस गया है। परदेस और धमशाल का मतलब हरएक आवरू दार जानता था। अपनी औरतो बेटिया को जज्जीम और मोनाई के हाथों बचकर जो चावल पाते थे उसे वे सौ रुपये मन के हिसाब से खरीदा हुआ बताते। जावरू जाए तो जाए मगर आवरू का खयाल दिल से न जाता था। मन्दिर के सामने ही कटी हुई गाय को देखकर आवरूदार हिंदू धर्म की याद करने लगा। मोनाई के साथ साथ मन्दिर के अन्दर जाकर पुजारी के चारा बच्चा और गाय के बछड़े को मरा हुआ देखा। सबके मुंह से निकले हुए नील झाग देखकर लागो ने घटना को समझ लिया। हर जावस्दार को यह मौत बहुत अच्छी लगी। जहर खाकर आवरू बचा लेना लोगो का महान जाणस का सार जचा। उनकी निगाह में जहर की इज्जत बढ़ गई। गाहत्या का तजकिरा दया लगा था। जहर की ज्वाहिश हरएक को होन लगी थी।

आज मनुष्य में अधिक आत्मियता हो जान के कारण पांच विचरित हा उठा था। मनुष्य पर वह चुल्ला रहा था। क्या इस दश में एक भी आदमी जिन्दान बचगा? क्या पृथ्वी से मनुष्य जाति ही उठ जाएगी? आज गावो में है, बल शहरा में मौत फरगी। एक दिन सारा देश मानव विहीन हो जाएगा।

पांच की कल्पना प्रमथ सागाव होन लगी। उजड़ हुए गाव, उजड़ हुए नगर उजड़ो हुई दुनिया उमरी कल्पना के रंगों में भरी जान लगी। धाड़ें-स लोग, जो कि अमीर कहतान हैं बच जाएंगे। मगर वे भी बचतान

बचे रहेंगे ? जब अन्न पैदा करनेवाला ही न बचेगा तो खानेवाला क्या खाकर जीवित रहेगा ? रपया, सोना चांदी और जमाहुरात को क्या पता से चबाया जा सकेगा । मोटरों और ऊँचे-ऊँचे महला न क्या पट का कमी न भरनेवाला गड्ढा भर पाएगा ? नहीं । य भी एक दिन मरेंगे । उह भी एक दिन मरना ही होगा । बड़े समाज का अपने म्बाद क लिए मारकर छाटा समाज भी जीवित नहीं रह सक्ता । स्वाद की व्यविनगन सना हां गलत है । हर आत्मी स्वार्थी होना माहता है । लेकिन असलियत यह है कि वह अपने म्बाय को पहचानना नहीं । अप्नि का म्बाय समाज का ही स्वाद है । जब समाज ही न रहेगा तो पकित किस जीविन बचगा ?

पाचू की कल्पना अपने गाव म लेकर कनकते तक के विनाश का दश्य देख रही थी । और कलकते तक ही नहीं उसकी कल्पना सारे विश्व को मानव शून्य देख रही थी । वह बम, तोपें, टक हमाइ जहाज, बड़ी बड़ी राजधानिया ऊँचे ऊँचे महल माटरें ट्रेनें, रेडिया टलीफोन और ज्ञान विज्ञान की सब चीजें मानव की असफरता का चिह्न बनकर शय रह जाएगी घरा में कुत्ते लाटगे । दुनिया मे जानवर ही बच जाएंगे । आत् मिमा की ठठरिया ही उनकी पाद दिमाने के लिए बच रहगी ।

मानव का एकमात्र प्रतिनिधि बनकर अपन कल्पना लोक म घूमता हुआ पाचू दुनिया को इसी तरह से देख रहा था । घर की दो मौता न उसके विचारा की गति और भी तीव्र कर दी थी । उसे एक एक करके सय मौतें देखनी हांगी, यह बात वह अपन ऊपर बटा समय करके सोच रहा था मा, बाबा, भाई, पत्नी, भावज तुलसी, दीनू परेश—दुनिया की हर चीज वह इसी तरह से ही भरकर देखन लगा, जस अब व मदा के लिए उसकी आखा स ओपन हा जाएगी ।

शिवू की सबेर से इतना गभीर और मीन देपकर पाचू का दिल धवरा रहा था । वह जानता है कि उसके भाई का हृदय बडा कीमती है । शिवू की बड़ी रो बड़ी त्यादतिया के चावजूद भी वह उसे बहुत

करता था। शिशु हमेशा जल्द से ज्यादा बोलता शर्मी बघारता, चीखता चिल्लाता, और जल्दी ही हमन या रो पान का आती था। पाच उम रूप म शिशु को देखन का आती था। शिशु की यह गभीरता उस उसके स्वभाव के विपरीत लग रही थी। उस डर का दादा के दिन को जबदस्त घाट पहुँची है। कहीं कुछ हो न जाए।

मरतु आज घर स दो प्राणी कम कर गई। दीनू और परेश भी किसी वजन जा सकत हैं। उन दोनों के हाथ परा म गूजन आ गई थी। बौदी (शिशु की बहू) पहले स ही दुखली थी अब तो बवाल मात्र ही रह गई थी। मगला कितनी फीका पड गई है बचारी ! परतु उसकी बडी-बनी म भरि आधा म अब भी चमक है। आज भी उसके हाठा पर मुस्कराहट बार बार आती है बल्कि पहले से ज्यादा आती है। पाच ने अवसर मौर किया है मगला आजकल जबदस्ती हसने और हसाने की कोशिश भी करती है। बौदी की मुस्कराहट बडी डरावनी होती है। दाता की पकितया खुलन ही अपनी त्रिकरालता का परिचय देती हैं। तुलसी बिलकुल नहा हसती। उसका ध्यान उडा उगा सा रहता है। वह ज्यादातर चलती फिरती भी नही बठी रहती है या लेटी रहती है। कमजोरी के बावजूद भी वह करवटें ज्यादा बदलती है।

मा आजकल जल्द से ज्यादा चिडचिडी हो गई हैं मगर वह चिड चिडापन निहायत ऊपरी है। उस चिडचिडेपन के बीच उनकी गभीरता छिपी हुई है। सवेरे म शाम तक वही सबसे ज्यादा धोमती, चिल्लाती और चलती फिरती हैं। बिना बात की आड लेकर घर के सब लागो पर चौखा चिल्लाया करती हैं सबको गालिया दिया करती हैं— मरो, मरो' किया करती हैं।

पाच को मा का यह स्वभाव भी बडा अस्वाभाविक-सा लगता था। आज सवेरे चुन्नी की मौत पर उन्होंने बडा तूफान मचाया। जब बडी बहू की छाती मे ही चुन्नी की दाती बठ गई थी, और छाती से खून निकलने लगा था, बडा बहू चीखकर आर्यें उलटने लगी थी। मा ने

एकदम स सबको गालिया देना शुरू कर दिया। एक सिरे से सबको 'मरा, मरो कर डाला, लेकिन उम बीच म मगला से उहोन पानी मगाया, तुलसी को बुलाकर भावज को पकड़ने के लिए कहा जबदस्ती चुनी के जबडा म अगूठे डालकर उसका मुह खोला और उसकी लाश को बूड़े की तरह आगन मे पटककर घर मे सबको चौंका दिया। षटके के साथ सभल-कर बड़ी बहू भी उघर देपने लगी। पाच निश्चयपूर्वक जानता है कि उसकी मा पागल नहीं हुई है। उस अमानुषिक-ना लगनेवाली कठोरता म मा की घृद्धि बहुत गहरे जाकर काम कर रही है। घर मे अपने वाली मत्यु को तुच्छ करके, घर भर के दिलो मे समाए हुए मौत के डर को घटका देने के लिए वह बहुत कठोर हो गई थी। मा के इस वृत्त्य ने इस समय बड़ी बहू को मरन से बचा लिया था, हरएक के जीवन म कुछ दिन और बढ़ा दिए थे।

पाच गौर कर रहा था, जब दोनो भाई चुनी को दफनाकर घर लौटे तब घर के बाहर तक रोने की आवाजें आ रही थी। सबसे ऊंची और सबसे ज्यादा ददनाक मा की आवाज थी। बनक की मौत पर मा का इस तरह से रोना जीर चलाना भी पाच को बडा ही अस्वाभाविक सा लगा था। जब य लोग घर पहुंचे तो एक बार वह दद नये जोश के साथ बडा। पाचू भी रो पडा, मगर शिवू नहीं रोया था। बनक की लाश को झोली म डालकर बाहर ले जाने से पहले मा ने पाच को एक ओर बुलाया और गभीर आवाज म कहा—“रास्ते मे अपने दादा का ध्यान रखना, बेटा।” पाच को ताज्जुब हुआ था। मा की आवाज मे जरा कपकपी न थी। पाच ने ताज्जुब के साथ इसे महसूस किया था और उसे इससे बल मिला था। आप धय घरकर मा को धैय देने की इच्छा उसके मन मे सहज ही जाग्रत हुई। वह मा को धैय बघाने लगा। मा न उत्तर दिया—“घरती माता अपना घोरज आप ही घरती हैं, बेटा। छिन छिन टूट रही हैं, पर दुनिया अब तक बची भी उहीके कारन है। तू मेरी फिकर मत कर। मैं टूट जाऊगी, पर हारूगी नहीं।”

दुर्गम बाग में वह माँ को एक मग्न रूप में देखा। मग्न था। अनि शिवा की महाभाग्यता का मंत्र उसने कृष्णगायत्री की प्रतिपादनात्प्राप्त किया था। उमा जीवित थी उमाति मधु अथवा बधना का शिवा था। पाँच घरती के रूप में अति माता को देखा था—घरती त्रिगुणात्प्राप्त शक्ति अथवा परात्मा कुचपत्नी है परन्तु उमात्प्राप्त मग्न भाँ है। मग्न पाँच सापत्नी है, दृग्गम तरुण स माँ और शिवा शिवा जी मग्न ? क्या घर पाँच सापत्नी घना भी अन्यायकार का सग्न मग्न ?

पाँच का पूरक शक्ति फिर जाग उठी— 'आत्मीयता माता शक्ति अथवा ही छाया पर घना अथवा महात्मा का स्मरण भाव, सा करती। उम अथवा दूग्गम बधना का शक्ति भी तो है। आत्मा का बुद्धि पाँच शक्ति की अनगिनत शक्तियों भी एक शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति मग्न जाणगी, घरती फिर टाना शक्ति और शक्तियन्त्री मग्न जाणगी। मानव के शक्ति का अग्नित्व साप ही जान के शक्ति घरती फिर अथवा दूग्गम बेटा—गण्डुआ और पक्षिया के लिए जीवन्तान्त्रिकी और गुग्गु वन जाणगी।'

दृग्गम विचार स पाँच के अहम् का चल मिना। फीरन ही शिव की यात्रा आ गई।

वनव का गिद्धों के हवाले छोड़ आने के बाद घोड़ी दूर जाग वनव शिव और पाँच दोनों को अलग अलग रास्ता पर चलन लग थे। गिद्ध घर की ओर चलन के बजाय ब्राह्मण पाठ के उत्तर की ओर चल दिया। यहाँ शिव की मित्र मडली के तीन सन्तस्य रहन है। शिव की उधर जाते देल पाँच कुछ न बोला। सोचा—'अच्छा है यहाँ जाकर उनका यह मौन टूटेगा। शिव का गम कुछ कम होगा। पाँच घर की ओर चला आया। घर में दोना बहुआ और तुलसी से घिरी हुई माँ मुखार स तपते हुए परेश को गोदी में लिटाकर सबको अपने पाँच बेटा की मौन के बारे में अपनी आपबीती सुना रही थी। और उस वणन में ध्वराहट में की गई अपनी देवकूपिया का जिन परते हुए वे हसती जाती थी। उस हसी के पीछे

पाचू न दया, यही जयन्त धवान छिपी हुई थी। मा व चहरे पर चमकन हुए तज म भी उम धवान को छिपा लन की शक्ति नही थी। पाचू का इम अनुभव स पीडा हुई। परन्तु उमन धय बधानवाल मा व कठोर मयम का ग्रहण करने का प्रयत्न किया। वह यावा की कोठरी म चला गया।

बाबा की चारपाई के पायतान का छूना। बाठरी म काफी उजाना नही था। चारा तरफ टाडा पर किताना व घस्त मद्धिम स दिमाइ दन धे बाबा की चारपाइ पर सामने के दरवाजे स हल्का हल्का प्रकाश जाता था। एर गौरवण अस्थि पजर आरें वन् विए पटा था। दादा जीर गिर के बड़े हुए अस्तव्यस्त वान मुग्ध की श्री का बडा रह थे। यावा एर दम निश्चेष्ट स पडे ध। पायतान किमीची महसूस करके बाबा चेतन हुए। पाचू न देखा बाबा मुनन के लिए तैयार है। पाचू फौरन ही बठवर, उनका एक पैर अपनी जाघ पर रखकर मलत हुए बहने लगा— 'कय इमका अत आग्या, बाबा ?'

बाबाज म गहराइ लिए हुए निर्विकार और शांत रहकर बाबा न उत्तर दिमा—'जब इम अत म से आदि का गिर उदय हागा। बदलन हुए युग के झकोल ता लगेंगे ही पाचू। अपने बड समाज की जगान के लिए यदि मनुष्या का यह छोटा-सा समाज तपस्या करता है तो करने दो। परन्तु इम तपस्या की कामना रहित जीर निरुद्देश्य न बनाआ। उद्देश्य-रहित की हुई तपस्या ससार म घणा उत्पन करती। घणा मत उत्पन्न करो पाचू ! कामना करा कि तुम्हारी वनि मानव म प्रेम की भावना उत्पन कर।'

बाबा का यह उत्तर उसके लिए शतोपजनक न था। उलवकर वह बाला—'घणा निरर्थक और निरुद्देश्य नही है बाबा। वह मानव की स्वाभाविक प्रतिदिषा है।'

बाबा की दाबी मूछी म हती आई। बोले—'घणा की गति है कहा ? विनाश ही म न ? तुम्हारा यह अकाल क्या है ? मनुष्य की घणा ही न ?

यह महायुद्ध क्या है ? कौन सा आदश है इसमें ? सत्य एक असत्य के साथ सधि करके दूसरे असत्य का सवनाश करने के लिए युद्ध कर रहा है । मनुष्य इस राजनीति बहकर अद्धसत्य का पापण करता है । अद्धसत्य ज्ञान का कारण है । ज्ञान प्रेम का मूल्य है । और प्रेम की गति है निमाण तक—निर्माता तक ।

हथेली से ठोड़ी को पकड़ हुए पाचू कोठरी की छत की तरफ देख रहा था । अधरा उसकी आंखों में जम गया था । धीरे धीरे आंखों की ज्योति न उस अधवार का वश में किया और छत की कड़ियाँ दिखाने पड़ने लगी ।

अपनी खिड़की के बाहर छिटकी हुई चादनी और तारा को पाचू देख रहा था । मगला उसकी छाती में मुह छिपाकर सा गई थी । वह आज बहुत भव गई थी । आज उसकी हसी भी सहम गई थी ।

सिर को टेके हुए पाचू का दाहिना हाथ थकान महसूस कर रहा था । लेकिन मगला के जाग उठने के भय से वह जरा भी न हिला डुला, चुपचाप खिड़की के बाहर छिटकी हुई चादनी और आसमान के तारा को वह देखता रहा । अपनी छाती से चिपकी हुई मगला के स्पर्श को वह अपनी थकान से अधिक मूल्यवान समझता था । वह यह महसूस करता था कि मगला दिन पर दिन कमजोर होती जा रही है । उसे यह डर था कि यह स्पर्श मुझे न जाने कब सपना ही जाए ।

महमा चीख सुनाई दी । मगला धौककर जाग पड़ी । पाचू उठकर बैठ गया । बोली क्यों चीखी ? दादा के कमरे के किवाड़ भी जोर से खुले । पीछे से दादा की आवाज भी आई— शाली चरका देकर भाग गई । घरवाले जैसे तुझे बचा ही तो लेंगे । हारामजादी तू मेरी वस्तु है । यूँ आर माइ थिंग शाली !

दिन भर के बाद दादा की आवाज सुनी थी । मगला और पाचू दोनों सहमकर एक-दूसरे की आर देखने लगे । पाचू उठकर तख्ती से नीचे की ओर चला । पीछे-पीछे मगला भी चली । आगन में शिबू अपनी पत्नी को

नगा करके उसपर बलात्कार करने पर तुना हुआ था।

बाबा तक अपनी कोठरी से बाहर आ गए थे। मा, तुलसी दीनू, परेश पाचू और मगला सबत म खड रह गए।

शिवू की बहू अपनी शक्ति भर लड रही थी। सार घर के सामने—सास समुर, ननद, दवर, देवराणी और अपने छोटे छोटे बच्चा के सामने नारी की लाज लुटी जा रही थी। और लाज का लुटेरा था स्वयं उनकी लाज का रक्षक—उसका पति।

शिवू का अपनी पत्नी के प्रति बेहद गुस्ता था। उसके पास सीधा तक था कि पत्नी पति की मित्रियत है और इसीलिए बुदरतन उसे सर्वाधिकार प्राप्त है। बच्चा अपन खिलौने को जैसे जी चाह लेते उसे तोट भी डाले—इसम खिलौने का शिकायत क्यों हो? पाचू की जिद ठीक इसी किम्म की थी।

दिन भर मृत्यु की विभीषिका ने उसे मन ही मन बहुत तपपाया था। मृत्यु का भय पत्थर की शिला बनकर उसके कलेजे पर रखा था। वह दिल ही दिल में दद से घुट रहा था। उसे उसमें बचने का कोई माग नहीं मिलता था।

रात आई पत्नी कमरे में आई। भय का जीतन की भावना त्रमश शिवू को उत्तेजित करने लगी। अपनी पत्नी के भूखे सूखे शरीर और टूटे हुए मन पर वह बलात्कार करने लगा। पत्नी को जितनी ही पीडा होता थी, शिवू का आनन्द उतना ही बढ़ता था। शिवू की पत्नी के लिए पति के अत्याचार असह्य हो उठे।

आज सबेरे ही घर में दो मौत हुई थी। अपनी बच्ची मरी थी, दोना बच्चे भी अब-तब हो रहे थे। नाद की मौत का गम था। और सबने ऊपर अपनी शारीरिक निबलता के कारण बड़ी बहू बिलकुल टूट गई थी। उसपर शिवू का यह हिंसक उमाद! सहनशीलता की सीमा से परे इस अमानुषिक अत्याचार में घबराकर बड़ी बहू जार से चीख उठी। प्राणा के भय से उसमें उस समय बहद बल आ गया था।



अपनी पत्नी के सहसा या चीख पड़ने से शिवू चौंक पड़ा। वह तुरा अलग हटा। मौका पाकर अपने प्राण बचाने के लिए बड़ी बहू धूर्तीस दरवाजे खोलकर नीचे भागी। पहले तो शिवू सहम गया बाद में अपनी असफलता पर भयकर रोध जागा। वह दयनेवाला नहीं है। वह किसीसे भा नहीं डरता। वह अपनी इच्छा जरूर पूरी करेगा। उसकी पत्नी उसकी मिलि यत है। अपना मर्जी के मुताबिक वह उसका उपभोग कर सकता है। यह विचार शिवू को त्राघ्न म पागल बनाकर अपनी पत्नी के पीछे पीछे नीचे दीडा ले गया। घर भर की परवाह न करके वह अपना अधिकार जोर बडप्पन सिद्ध करना चाहता था। शिवू अपनी पत्नी का बाबू म लाकर उसपर बलात्कार करने लगा। पाचू जोर मगना ने अपने मुह फिरा लिए। तुलसा मा को नजरे बचाकर चुपके से उधर दग लेती थी।

मा ने अपने मन को तुरत ही सभाल लिया। वह आग बनी और जब दस्ती शिवू को पीछे ढकेलन लगी। मा को आग बढत देख पाचू की चेतना लौटी। बटी लाज छोडकर भावज को इस राक्षसी अत्याचार से बचाने के लिए वह आगे बढा। मा ने बेटे का घसीटत हुए कहा— 'पापी, मा वाप की तो शम कर।'।

शिवू तश खा रहा था। पाचू उसे बसकर पीछ से पकडे हुए था अपने को पाचू के हाथा से छुडान का प्रयत्न करते हुए वह गरजकर मा से बोला—

'यह बाबा को सिखाओ जाकर। उनका जब बखत भी है शरम करन का। छोडो मुझे।

शिवू के इस उत्तर से अपनी चिर शक्ति आशका के साथ साक्षात्कार कर मा का मन अदर ही अदर लज्जा और पीडा लिए हुए जमीन म तज छरी की तरह गड गया। मा ने तुरत अपने मन को सभाल लिया और शिवू को दाना हाथा से ढकेलत हुए पाचू से चिल्लाकर कहा—'घर से बाहर निवाल दो इस चाडाल को। यह हत्यारा मरे पाप की सतान है। मरे पाप का फल है। उनको आखा म धानू भा गए थे, उनका आवाज उखड गई थी।

बाबा के तन की आख बंद थी, परंतु मन की जाचें अपन चरित्र की सबसे बड़ी दुबलना को आज आमने सामने देख रही थी। स्त्री विषय में बाबा के असयम और जघन ने उनके हर एक बच्चे को गलत तरीके से काम की चेतना दी। पात्रित्य के दीपक के नीचे इस तरह सदा अधकार बना रहा। इस समय उह ऐसे अनेक दृश्य याद आ रहे थे जब कि उनकी लापरवाही ने उनकी अवोध मताना के मन्त्रिक को विवृत करने में सबसे अधिक सहायता पहुंचाई थी। मा और बाप, दोनों ही अपनी कमजोरिया से हारकर अपन बच्चा के शत्रु बन गए।

बाबा चरित्रवान थे। जीवन में कभी किसी दूसरी स्त्री की ओर उंहाने आख उठाकर भी न गया था। पत्नी को वह पति की कामेच्छा तप्त करने का साधन मानते थे। और इस नाते वह पत्नी को सदा पति की मिल्कियत ही समझते रहे। पावती मा में भी स्वाभिमान की मात्रा कम नहीं थी। दोना ने एन-दूसरे से अपन स्वाभिमान का रक्षा करने के लिए सधि सी कर ली थी। पति की इच्छा करते ही वह अपना शरीर समर्पित कर देती और इसके मूल्य में वह अपन हठ पूरे किया करती थी।

बाबा शहर के कालेज में संस्कृत के प्रोफेसर थे। पावती मा को शहर अच्छा नहीं लगता था। वह गांव में ही रहती थी। बाबा हर गतिशुचर की काम का घर आया करते थे। पावती मा ने पांच बच्चा को खोकर शिवू को पाया था। वह उस एक पल के लिए भी अपनी आंखों से ओमल न होने देती थी। उनके लाड प्यार ने ही शिवू का जिद्दी और चिडचिडा बनाया था। बाबा हर बार इस बड़ दुख के साथ अनुभव करते थे और पावती मा से शिवू को पढ़ाने और समझदार बनाने की बात मीके मोड़े पर निकाला करते थे। शिवू की किसी भी कमजारी के बारे में किसी का कुछ भी कहना पावती मा को बहुत अखरता था। वे चिन्कर पहा—

'बचपन में मभीके लड़न जिद्दी होत हैं। रही पढ़ने की बात, सा बगत आन पर सब आप सोल नगा। अभी उसकी उमर हो गया है। पया पन बिना काम नहीं चलता ? और धन सा जा किम्मत में हाना है तो बिना

पडे भी मिल जाता है। पढ लिय के नौकरी करन स ही सबके महल नही चुना करत।

बाबा चेतावनी देत, बहूत—'तुम बडी भूल कर रही हो। बच्चे को एक उम्र स ज्यादा अगर बच्चे की तरह ही रखोगी तो उसकी गर जिम्म दारियो का सारा दोष भी तुम्हारे जिम्म आएगा। पढना सिफ नौकरी कराने के लिए ही जरूरी नही है। बिद्या से चरित्र का बिकास होता है।'

पावती मा पर बाबा की इन बातो का कभी भी काई अच्छा असर नही पटा। वे और बिड जाती। धीरे बाबा अनिश्चर की रात घराब करना नही चाहते थे।

बाबा जानी और चतय ध। परतु अपनी इस कमजोरी के प्रति वह सदा अधकार म रहे। धमपत्नी के साथ सभोग करने को उहाने कभी व्यभिचार नही समझा और इसी नासमझी म वे अपनी धमपत्नी को सब के लिए अपनी वेश्या बनाकर उसके साथ व्यभिचार करत हुए गहृस्य धम का पालन करते रहे।

अधे हो जान के बाद जब कोई काम न रह गया तब उनकी कामवत्ति और भी जोरो म उभडी। पावती मा इस जोर से सचेत रहते हुए भी पति के हाथो का खिलौना बनकर रह गई। शिबू की बात ने आज बाबा और पावती मा, दोना की ही आखें खोल दी। मगर अब इससे लाभ ही क्या ?

पावती मा मर जाना चाहती थी। अपने ऊपर का सारा शोध वे रो रोकर शिबू पर उतार रही थी—'घर से निवाल दो इस चाडाल को। मेरी आखो के सामन से हटा दो इसे।

बोदी और सुलसी को पावती मा अपनी कोठरी म ले गई और अदर से दरवाजा बंद कर दिया।

शिबू के डर से मगला भी अपने कमरे मे चली गई थी। शिबू आपे से बाहर होकर चीख रहा था। अपनी परवशता पर विगडकर वह हर एक को गालिया दे रहा था। और गालिया देकर वद आप ही घर से

बाहर जाने लगा। पाचू सामने खड़ा था। जान म पहले पाचू को मा और वहन की गालिया दन हुए उसने उस कस-कसकर दो तमाचे मारे और घर से बाहर चला गया।

पाचू मार पार भी चुपचाप सड़ा रहा। उसके मन १ आज बड़ी करारी मार खाई थी। अकाल की समस्त पटनाए और याननाए आज की इस घटना के सामने तुच्छ हो गई थी। बाहर की घटना-जा से पीडा पान पर उसका मन घर म शानि पामा करता था। परन्तु आज के बाद उसके घर से भी शानि चली गई थी। आज की घटना के बाद वह विच लिन हो उठा था। शिबू के लिए कुछ भी अमभव न था। बेनी न अपनी वह का खन कर डाला। गाय तब का वध किया जा चुका था। हथियार पान पर शिबू भी अपन सारे घर का वध कर सकता है। शिबू घर म आग लगा सकता है। उससे कुछ भी बईद नहीं। लेकिन क्या पाचू उन सब दृश्यों को अपनी आखा से देन मकेगा—क्या पाचू अपने परिवार को नष्ट होने देख सकेगा ?

पाचू घर से भाग जाना चाहता था। वह फिर साचता, मेरे जाने के बाद घर को दादा के आयाचारों से बचाने के लिए कोई भी नहीं बचा है। यह विचार मन म बार-बार उठकर भी पाचू का हौसना न बढा सका। घर घर रहना अपना कतव्य समझकर भी वह घर से भाग जाना चाहता था—' मैं कोई बुरी बान अपनी आँखों मे होने न देखूंगा। मेरे बाद भने ही कुछ भी हा जाण। आँखों से न देख सकूंगा तो दु ख भी न होगा।

कतव्य से विमुक्त होकर पाचू कायरता को ओर बढ रहा था और अपनी इस कायरता को वह बहानो म छिपा लेना चाहता था—' मैं अगर यहा रहू, तब भी कुछ नहीं हो सकता। धूसार पागल का कौन रोक सकता है ? कहा बाहर जाऊंगा। कलकत्ते बलकत्ते वहीं चना जाऊंगा। कोई ठीकरी दूंगा। मिन गई तो घरवालों की भी कुछ रक्षा हो जाएगी।'

पाचू ने भागने का निश्चय कर लिया। और इस निश्चय के साथ ही साथ उसके मन म एक भीषण द्वन्द्व छिड गया। यह घर, मा, बाबा, मगला,

सभी एकमाथ उससे छूट रहे थे। शिवू, बौदी, तुलसी मा भतीजा का ध्यान मुख्य रूप से उसके मन में नहीं था। मा की याद पीड़ा देनेवाली थी। बाबा से उसका सम्बन्ध पिता पुत्र से अधिक गुरु शिष्य का रहा। उसकी पराक बौद्धिक समस्या के साथ बाबा का घनिष्ठ सम्बन्ध था। लेकिन इस के साथ ही साथ उसके भीतरी मन में कहीं यह विचार भी मौजूद था कि बाबा अब केवल कुछ ही दिनों के मेहमान हैं। मा बाप से सबका सम्बन्ध एक दिन छूटता ही है। उसके चल जाने से बाबा और मा को बड़ा कष्ट होगा यह विचार भी पाचू को बड़ा यत्न कर रहा था। सबसे अधिक उसे मगला की याद आ रही थी। उसकी जोर से वह बहुत चिन्तित था। उसका क्या होगा ? मगला में उसके चित्त की सारी वस्तियाँ एकाग्र हो गई थी। एक बार उसकी इच्छा हुई कि वह मगला को भी अपने साथ लेता चले। विचारने उस एक क्षण के लिए स्फूर्ति भी दी परन्तु फौरन ही उसके मन में डर समाया, मगला उसे जाने से रोक लेगी। मा और बौदों को छोड़कर मगला कभी भी न जाएगी। घर में रक्न के लिए पाचू बिलकुल तयार न था। सारे ससुराल से भागकर उसे घर में शांति मिलती थी और जब उस घर ही महान अशांति का केन्द्र स्थल दिखाई देता था। घर के प्रति उसकी विरक्ति इस समय इतनी बढ़ गई थी कि पाचू घर छोड़ने दन के विचार को अपनी आत्मा का आशेष मानता था। उस विश्वास था कि किसीमें उसका कल्याण होगा। मगला का आकषण उस अपनी ओर घाना न दे भी नियत हो चला था।

पाचू के पर धार धीरे दरवाजे की तरफ बढ़ने गए। उसकी इच्छा हुई कि जान में पहन वह एक बार मगला देख सता। पाचू लौटा। अपने कमर की साँझिया तक पहुँचकर पर फिर ठिठक गए—मगला कहीं न जाग रही हो।

चार की तरह पाचू दन परा सनीव उतर आया। मा की बोगरी का दरवाजा बंद था। बाबा अपनी चारपाई पर बड़े हुए थे। घुटना में उनका मूह छिपा हुआ था। दूर ही से—मन ही मन—पाचू ने प्रणाम किया।

स्मृति महराज का सामन लाकर उमने मरे मन से सबसे विदा ली । आलों से आसुओ की धारा बहन लगी ।

पात्र का निश्चय डगमगाने लगा । फौरन ही पात्र सतक हो गया । वह घर के दरवाजे की तरफ चला । चौखल लाघत ही पर ठिठके । उस घर में वह अब शायद लौटकर न आएगा । कदम घर से बाहर पड़ा । घर उसकी आला के सामन था । दुमजिले पर उसके कमरे की खिडकी खुली हुई थी ।

पात्र का ध्यान उठकर अपने कमरे की तरफ चला गया । घाड़ी देर पहल तक वह इसी कमरे में पड़ा हुआ चादनी रात और तारा को देख रहा था । मगला उसकी छाती में मुह छिपाकर बाह टाले सा रहो थी । कितना सुख था उस स्पश में । और उस सुख का ध्यान आत ही फौरन बड़ी बहू की चीख और वाद का सारा काड उसके मन को दहलाने लगा । मगला कही खिडकी में देख न रही हो । पात्र और ज्यादा डरा । फौरन ही सामने से हटकर घर की दीवाल के किनारे किनारे से जल्नी जल्दी कतराता हुआ वह जाने बड़ा ।

घर घीरे घीरे दूर हाना चला जा रहा था । चादनी रात के प्रकाश में घर धुधला हात हाने मिट गया । पेडा की आड आ गई, गाव की हद आ गई । पात्र स्व गया । वह अपनी जन्मभूमि को छोड रहा था । छोडने से पहल एक बार आखें भरकर वह अपने गाव को दख रहा था—वह अपना सारा जीवन देख रहा था । इन्हीं सेता में वह मेला बूदा है । बडा हुआ है । अनज मुबन्दुखा के नाम इसी भूमि पर उसके साथ जुटे हैं । माहनपुर उसकी जन्मभूमि, कर्मभूमि, समरभूमि रही है । अकाल के इन त्रिना की सारी अनिश्चयता को लिए हुए भी उमक जावन की एक निश्चिन गति साथ भी रही है । घर गाव छूटने के साथ ही साथ पात्र का उम निश्चिन जीवन के साथ भी नाता टूट रहा है । सारे ससार से भूमकर वह उस गाव में लौटता था यहा उसका घर था । जन्म के साथ बधा हुआ उसका आवरण केन्द्र नष्ट हो रहा है । सबरे जब मा को पता लगेगा,

करगी, सारा घर गुनगा ?

चुम्बक शक्ति का यह आतिरी खिचाव था। अपनी निबलता को परास्त करने के लिए पाचू फिर आगे बढ़ा। मगर वह जाएगा कहा ? वही भी ! घर नहीं जाऊगा। 'आषा म आसू भरकर जिद के साथ उसने अपनी सारी समस्याओं का अंतिम निणम दिया।

पाचू ने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। आषा स आसू बह रहे थे और वह आगे बढ़ रहा था। हठ के कठिन पाश में अपनी समस्त कोमल बसिया का जकड़कर वह आगे बढ़ा जा रहा था। अशांति के उद्वेग से हृदय उमंग चला आ रहा था, सिर में भारीपन के साथ बुद्धि की अगति थी आँखें आसुआ से भरी हुई थी। अपने आसपास की किसी भी वस्तु का ध्यान उस नहीं था। पथहीन लक्ष्यहीन पाचू चलता ही जा रहा था, मानो चलन का वही अंत नहीं है।

रोने की आवाज़ वही दूर से काना में आई। चेतना फिर भूमि पाकर लौटी। पाचू ने सिर उठाया, ध्यान स्थिर हुआ। पाचू ने अनुभव किया कि रोने की आवाज़ दूर नहीं, बिलकुल उसके पास ही है।

बाइ तरफ खडहर में कोई पड़ा हुआ दिखाई दिया। रोने की आवाज़ किसी बहुत छोटे बच्चे की-सी थी। पाचू को वह आवाज़ अपनी तरफ खींचने लगी। ध्यान स्थिर हो चुका था, बुद्धि फिर काम करने लगी थी। पाचू ने अपनी इच्छा का समयन किया। वह उस ओर बढ़ा। ताजा पदा हुआ बच्चा मा की एक टांग पर चढ़कर पड़ा हाथ पैर पटक रहा था और रो रहा था।

पाचू के लिए जीवन में यह एक नया अनुभव था। एक क्षण के लिए वह हतबुद्धि होकर खड़ा रहा फिर सकोच उत्पन्न हुआ। नग्न नारी सामने निश्चेष्ट पड़ी थी। बच्चा उसकी नगी टांग पर पड़ा कमजोर आवाज़ से राता हुआ धीरे धीरे हाथ-पैर पटक रहा था। नाल की लंबी डोरी मा के शरीर से जुड़ी हुई थी।

पाचू को बड़ी लज्जा मालूम हुई। घूमकर वह लौटने लगा, लेकिन पर

आग न बढे। इस असहायावस्था में एक सच जात शिशु और माँ का छोड़-कर आग बढ जाने के विचार पर उसकी आत्मा ज़ार स धिक्कारने लगी। मगर साहस न होता था, मन ही मन लज्जा से वह गडा जा रहा था।

सहसा शिशु की बचान की प्रेरणा इतनी प्रचल हो उठी थी कि पाचू का भय और सवाच टिक न सवा। पाचू दूर होकर उस ओर घूमा। वह खुवा। नारी में जीवन का कोई चिह्न नहीं मालूम होता था। अपना सदेह की मिटान में लिए पाचू स्त्री के खुले मूह और नाक के पास हाथ न गया। सास नहीं चल रही थी। साहम करके पाचू ने स्त्री की छाती के बीच हाथ रखे—घडकन भी नहीं थी। स्वयं उसका हृदय इतनी जोर स घडक रहा था कि तबीयत होती थी, उठकर भाग जाए। मगर वह उठ न सका। स्त्री के शरीर में गर्मी स अनुमान किया, स्त्री की मरे हुए अधिक स अधिक दस पंद्रह मिनट हुए हागे। फौरन ही उसका ध्यान शिशु की ओर गया। लडका था, अत्यंत दुबल गम के मल स सना हुआ, नाल खुडी हुई।

पाचू के हाथ-पैर फूल रहे थ। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह बच्चे को कैसे बचाए उसकी नात्र कैसे अलग करे? कभी दखा नहीं, अनुभव नहीं—पर से निकलते ही वह भाजव जीवन की सबसे बडी गार्हस्थिक उत्सजन में पड गया था। इतना उसने ज़रूर सुन रखा था कि नात्र काटी जाती है। वह कस काटेगा? आसपास में नज़र केवार ही घूम गई। टूटा उजडा हुआ घर था। बच्चे को बचाने की तीव्र इच्छा और घबराहट के साथ साथ अपनी असहायावस्था और अनुभवहीनता पर उसे बडी जोर स धुसलाहट आ रही थी। मृत शरीर क साथ बच्चे का सम्बन्ध अधिक देर तक नहीं रहना चाहिए उसके मन में यह बात बार-बार अपन आप ही उपज रही थी। जो कडा करके पाचू न दानो हाथा से खींचकर नाल बीच से तोड दी। बच्चा माँ के शरीर से अलग हो गया। बाधी सटकता हुई नाल समत उसने बच्चे को हाथा में उठा लिया। कमजोर बच्चा रोते रोते हाफ रहा था।

पाचू के सामने एक नई समस्या थी बच्चा बचेगा कस? इसका कोई



उत्तर उठाए पाग न था। साग से उतरा हृत्कर, बच्च का गोम म तिण हूण  
 पातू टूटी हुई दीवार के महारे धँस गया। यह मनकर पूर हा गया था।  
 दस रोज से भूना था, आत्र गयेरे गोना सागा का याग उग चुता था,  
 तिणु की रोस घाम म भी बग मेगाग बग्नी पदी भी, निर उमर बा  
 गता बगवर आया और अब यह थम ! दोशर ग गिर टिनाकर पांचू ने  
 आग्र बंद कर लीं। उस बच्ची गाति मिन रहा थी। गोम म बच्चा हादयर  
 पत्रक रहा था। तन ओर मन से अत्यग्रिण पता हुआ हान पर भी पांचू दग  
 ममय गुण और गाति का अनुभव कर रहा था। अपने अन्तर कहलक रिम्न  
 की ताडगी मटगूस कर रहा था।

पातू ने आये रानी। बच्चा का क्या होगा ? इस हुआ सग्नी होगी।  
 पातू ने अगनी बमीठ उतारकर उस उड़ा दी। बच्चा कमजोर है कम  
 बचगा ? मगर बग जाए। मत भा हो दगकी बचाना चाहिए।  
 दमे दूध मिलना चाहिए। पाएगा बटां से हनभागा ? अरे अकान म जम  
 लिया है। लोग मर रह है और यह पृथ्वा पर मृत्यु को दयने आया है। मा  
 मर गई बगार की।

पाचू का ध्यात उस स्त्री की ओर गया। बहुत दुबली नहीं थी। जान  
 पता है, कुछ रोज पहले तक इस घाते की मिलना रहा है। बपडा भी  
 बगन पर है। इस घर की महा मालूम होती। मूरत शकस से भल घर की  
 ही जान पडती है। किन्हे घर की होगी ? महा बीस आई होगी ? सारा  
 इतिहास इसकी मृत्यु के साथ ही लुप्त हो गया है।

बल्पना जधर म भटकर लौट आई। पिछली रात की चादनी के  
 उजाले म पांचू ने दगा, बच्चा गोरा है। दुबला पतला बहुत है बच्ची मर न  
 जाए। रो रहा है भूया होगा। लेकिन भूम तो समस्या है।

एक सद आह पाचू के दिल से निकली। दस रोज से भूय की पीडा  
 को सहत हुए उसे उसकी आदत पड गई है। एक तरह से भूस अब उसे  
 सनाती नहीं। हा, शरीर की कमजोरी और भूय की याद बहद सताया  
 करती है। बच्चे की भूय का खयाल कर उस पीडा हुई। मगर कोई चारा

न था। बच्चे पर ही उसने अपना सारा ध्यान केन्द्रित कर दिया। बच्चा रा रहा था। पाचू धीरे धीरे अपनी टांगें हिलाने लगा। जरा देर बाद बच्चा चुप हो गया। पाचू को शक हुआ, फौरन ही बच्चे की नाक के पास हाथ ले गया। बारीक सास की हवा उसने अपनी हथेली पर महसूस की। उस राहत हुई—“किसी तरह यह बच्चा बच जाए! अगर मैं यहाँ न आना तो? शायद इसकी जान बचाने के लिए ही मैं इधर से आ निकला। शायद इसकी जान बचाने के लिए ही मेरे घर में वह काठ हुआ और मुझे घर छोड़ना पड़ा।

यह खयाल पाचू को बड़ा अटपटा सा मालूम हुआ मगर उसके साथ ही साथ यह घटना, यह एक नया और विचित्र अनुभव भी उस एक बड़ा चमत्कार-सा मालम पड़ रहा था।

उसके खयाल एक नये दायरे में घूमने लगे। एक नये दृष्टिकोण से वह तमाम बातों को देखने लगा। मनुष्य के जीवन में घटनाओं का चक्र किस तरह से चलता है? एक के बाद एक घटना इस तरह से आ जाती है, जैसे वह पहले ही से निश्चित की गई हो। यह सब है क्या? क्या जो कुछ भा होता है, वह अपन आप होता है अकस्मान् होता है? क्या जीवन घटना मात्र ही है? कभी ये घटनाएँ हमारे जीवन में उखड़ी हुईं सी आती हैं। उनकी विशृंखलना के कारण तक की सीधी गति में बाधा पड़ती है। परंतु यही तक क्या जीवन की घटनाओं का अंत हो जाता है? क्या यह घटना नहीं कि अकाल बगाल में ही फला हुआ है। मदा का रोगग्रस्त और प्रखर बुद्धिवाता यह प्रात ही बयो सब सारी पीडाओं और यातनाओं को भोगना है? या तो सारा देश ही महान सकट और विपत्ति बाल से गुजर रहा है फिर भी बगाल के ऊपर यह काटो का ताज और बयो रख दिया गया। क्या कारण है इसका? क्या यह महायुद्ध घटना मात्र है?

यह प्रश्न पाचू के तक की शक्ति के निबट आ गया था। महायुद्ध के कारणों का बुद्धि जानती है। अपन बौद्धिक क्षेत्र में आकर उस एक तरह का मुख मिला। बच्चे की तरफ देखा, उसकी नाक पर हथेली रखकर सास

की गति मालूम की। प्यार भरी जाखा से वह बच्चे की ओर देखने लगा।

यह बच्चा जी जाए! कामनापूण मनो से बच्चे की ओर देखने हुए उस सहसा यह विश्वास होने लगा कि बच्चा जी जाएगा। अपने इस विश्वास के लिए वह मन म तक खोजने लगा। पाच ने सोचा— 'गभ से ही यह बच्चा अकाल की यातनाओं को सहने की कठोरता लेकर पदा हुआ है।'

इस तक के आधार पर पाचू साचने लगा— 'मा क मर जाने के बाद भी यह बच्चा जीवित रहा क्या यह घटना जीवन के सत्य को सिद्ध नहीं करती ?

इस विचार की पृष्ठभूमि में अकाल का चलचित्र उसे दीख रहा था। विचार उसी दिशा में आगे बढ़— "लासों आदमी मर जाने पर भी बंगाल आज जीवित है। क्या इससे जीवन अजेय सिद्ध नहीं होता ?

सवाल में ही जवाब के तौर पर ज़ारदार हा का ध्वनि छिपी थी— जो नि स्पृह नहीं थी। उसमें खुशी की गुंज थी बंगाल के जीवन को वह अपने जीवित बच्चे रहने में देख रहा था। इसीलिए समथन करने के लिए इस पश्न के साथ ही पीडा व्यग्र होकर जाखा में छलछला उठी। उसका एक हाथ बच्चे के सिर के नीचे और उसकी टांगा पर रखा था। जिस आँखें छलछलाई, वस ही हाथा में झटका खाया— हाथों ने बच्चे को पेट के पास धसीट लिया।

बच्चा जाग पड़ा रोने लगा। पाचू का ध्यान बटा। वह रान हुए बच्चे की तरफ चौंकर देखने लगा। वह झुझला गया। उस अपनी पीडा और अपने रान में इस समय मुष्ट मिल रहा था दूसरे का रोना अचर। मगर गनती चूकि अपना थी इसलिए झुझलाहट गुन अपनी गलती से हा उलझन लगी। गनती क्या है यह समझ में नहीं आती थी। उत्तमान डबन हुई गुम्मा चना। गुम्मा बुद्धि में सँघ लगाकर फिर राजनीति के क्षेत्र में कूट पना। तजों के साथ यह साचने लगा— 'अपनी सना के साथ गुभाप याचू के धान पर बंगाल कही उनके साथ मिल न जाए इसलिए बंगाल को पन्ने से नी तवाह कर लिया गया। यह अकाल भारत को गुनाम बनाए'

रखने की राजनीति है।”

पाचू जाश म आ गया। बच्चे के रोने पर ध्यान गया, जाश के साथ उसपर तरस आ गया। प्यार उमटा। उसने फिर टांगें हिलातीं शुरु की और बड़े प्यार के साथ धीरे धीरे बच्चे को थपथपान लगा। बच्चा क्रमशः सिसकिया भरते भरते फिर चुप हो गया—“छोटी छोटी आँखें भीचे पडा है। कसा प्यारा है। बच्चे कँस प्यारे लगने हैं। बच्चा किसीका भी हो, सवपर प्यार आता है।” पाचू को फौरन ही खयाल आया—‘बच्चा ही नो बडा होकर आदमी होता है। आदमी होते ही भेदभाव शुरु हो जाते हैं—श्रेय, घृणा, हिंसा।’

एर से पाचू को ध्यान आया, बल शाम हो बाबा न कहा था—  
उद्देश्य रहित बी हुई यह तपस्या सत्तार मे घणा उत्पन्न करेगी। घणा मत उत्पन्न करा पाचू। कामना करो कि तुम्हारी बलि मानव म प्रेम की भावना उत्पन्न करे।’

बल शाम को पाचू को यह उत्तर सतोपजनक न लगा था। इस समय उसने विचार चूकि उमी दिशा म बहन लगे थे इसलिए बाबा का प्रवचन तुरत ही ध्यान म आ गया। इम रूप मे अपने विचारो का समय पाकर वह पुलकित हो गया। बच्चे की आर दखने लगा, बच्चा सो रहा था। प्रेम की भावना इस समय प्रबल थी। बच्चा बहोज ही प्यारा लगा। सहसा विचार आया—‘यह प्यार कहा से आया ? इतनी ही देर म मुने इससे ममता क्या हो गई। मैंने इसे बचाया इतीलिए न ? मैंने एक जीवन को बचाया। ठीक ठीक, यो कहा जाए, कि जीवन के प्रति मेरे प्रेम ने जीवन को बचा लिया—सच !’

पाचू बहुत गुश हुआ—‘तब फिर मैं इम अपनी करनून क्या मानू ?’ इस खुशी ने दिमाग को हल्का सा नशा दिया। वह मोचन लगा—‘जीवन आप अनन को बचाता है। अनन क्या म, और अनेक स्वभावों मे एक ही जीवन रमता है।’

पाचू भी रमन लगा। वह साच रहा था—‘अपने अस्तित्व को हर

शरीर में सिद्ध करके वह अपनी सगठित एवता का परिचय देना है। यही समाप्त है।'

ये पड़े मुने तो सदा के थे, मगर गुनन आज बठे। गुनने बठे तो उनको अपना बना लिया। युगा क तराजू पर पाच गापाल अपन वाक्या को वेदवाक्या से तोलने लगे। दोना पलडे कांटा नाक सधे हूण जच। जो बडे-बडे कह गए, वही हम भी कह रहे हैं।

बुद्धि का गुमारा पूलने लगा—“इकाई की चेतना मनुष्य को भ्रमवर्ण एक ही शरीर एक ही रूप की सीमा में देखने लगी। परंतु ज्या ज्यो सत्याग्रह द्वारा मनुष्य अनुभव प्राप्त करता गया, उसने अपने का इस भ्रम से मुक्त कर कुटुम्ब और समाज की स्थापना की। इकाई की चेतना न तब सामूहिक रूप तो धारण कर लिया, मगर वह तब भी मानव समाज के बडे-बडे भागा में अलग अलग बटी रही। अज्ञान में सत्य का आनंद छिपाए ये बडे-बडे समाज आगे बडे। अनेको स्थूल दृष्टि सुगम भदभावा के कारण मनुष्य मनुष्य को अपरिचित लगा। अपरिचित से भय और भय से हिंसा। हिंसा मनुष्य के अन्दर अज्ञान से उत्पन्न है

पाच इस बात के प्रति चत य था कि वह सोच रहा है। उसके विचार उतने ऊंचे जा रहे हैं, इसकी उसकी खुशी थी इस खुशी की चेतना से उत्साह पाकर उसकी विचारधारा दिमाग की ऊपरी सतह पर बहती ही चली जा रही थी— हिंसा अज्ञान का नाश करने के हेतु उत्पन्न हुई सत्प्रेरणा की ही प्रतिक्रिया है। निर्माण द्वारा सत्य को प्राप्त करने के लिए यह ज्ञान की अति तीक्ष्ण वृत्ति अपनी ओर से चेतना विमुक्त होने के कारण ही हिंसा बन जाती है। हिंसा में भी उसका अलक्षित उद्देश्य अपनी इकाई को ही सिद्ध करना होता है। स्थूल ज्ञान को काट डालने की चेतना तो ठीक है गलत सिर्फ इतना ही है कि हिंसा द्वारा वह केवल अपनी (व्यक्तिगत) इकाई को सत्य सिद्ध करने का भ्रमपूर्ण प्रयास करता है। उपचेतन में उसे इस भ्रम का ज्ञान अवश्य रहता है क्योंकि हिंसा की भावना उत्पन्न होने से मनुष्य को कभी आनंद प्राप्त नहीं होता।' खयाल

आया, खु भी चौंके— 'हा, ये बात है ? मैंने इतनी बढ़िया बात सोच ली ।"

पाचू अपने आपको महापुरुषा के रूप में अनुभव कर रहा था । समार को बचानेवाला मसीहा, ससार को जगानेवाला पैगम्बर और मसार को आशोक देनेवाला अवतार एक अनजान बच्चे को बचाकर, दीवार के सहारे बठा हुआ लोक-कल्याण के लिए चिंतन कर रहा है । घमड़ था तो यहां तक, मगर बहुत दबा हुआ । इसकी बहुत हल्की सी चेतना से बुद्धि छोंपकर अपने विचारा को अपूर्व शांति के रूप में अनुभव करने लगी । जोर उसी अपूर्व शांति की छाया में अवतार—पैगम्बर—मसीहाने बच्चे की जोर प्यार भरी नज़रो से देखा । बच्चा उसे इतना प्यारा लगा कि उसे जगाकर लेलने की इच्छा हुई । अवतार 'एक अनजान बच्चे को खिलाकर प्यार जताकर उस मानव शिशु का महत्त्व बढ़ाना चाहता था । पौरन ही भूख का ध्यान आया । जागेगा तो रोने लगेगा । अपनी भूख का ध्यान भी आया । 'अवतार' भी दस रोज से भूखा रहने को मजबूर है । अवतार के साथ मजबूरी का खयाल कुछ जमना नहीं । गुस्सा आ गया । अकाल लानेवाले राक्षसों के ऊपर श्रेष्ठ 'अवतार' को ही आ रहा था, मगर बुद्धि और तब पाचू ने ही थे । पाचू तब होकर सोच रहा था— हमारी आजादी की मायपूवक माग के एवज में हम अकाल दिया जाता है ? सन् '४२ का दमन दिया जाता है ? सन् '४२ का भारत-दमन सामू-हिक रूप से विश्व की मानवता का शिरोच्छेदन करने का एक अति अमानुषिक प्रयास था । मनुष्य की सहज उठी हुई स्वतंत्रता की प्रेरणा को वमरतापूर्वक कुचनकर उसके मन में सत्य और जीवन के प्रति अनास्था उत्पन्न करने का राक्षसी कृत्य था वह दमन । इतना नहीं साचता मनुष्य कि जो अत्याचार वह दूसरा पर करता है वही उलटकर यदि उसके ऊपर किए जाए तो ?"

दुनिया उसके सामने कितनी नादान है, इतनी-सी बात भी नहीं समझना ! नादानों की लिस्ट में बड़-बड़े नाम अतर्कितन में थे मुमो-

लिनी, चंचिल, तोजो, हजबेस्ट, स्टालिन—य दुनिया के सूत्रधार कितने अहमक हैं जा हडमास्टर पाचू गापाल मुक्जोँ स सबक नही लेत । इम सयाल की बजह से खुशी थी, साथ ही साथ अपन ऊपर हानेवाल अत्याचारा को खयाल के बहाने अग्रेजो पर लाग कर उह अकाल-गीटित देखकर, खुशी हुई । सयाल की आड म यह सयाली तसवीर इतनी तज और तीव्री थी कि उसने गुजरते गुजरते मे अपनी आड को भी काट लिया । असलियत खुल गई । हिंसा की जिस वृत्ति का वनानिक रूप से विश्लेषण करत हुए कुछ देर पहल उसने अपने को समझाया था इस वक्त वह खुद ही उस चक्कर म पड गया । खुनी का गुब्बारा फूलत फूलत फट गया । खुद अपन आपक सामने ही बड़ी क्षय मालूम पडने लगी । 'अवतार का भूत उडन छू हा गया । उस बड़ी तकलीफ होने लगी— समझत हुए भी फिर वही भूल कर बैठा । शायद अह ने अपने मार खा जाने का कारण बुद्धि की गर जिम्मेदारी म दफना चाहा नतीजा उलटा ही हुआ । अपनी परेशानो के जवाब म उस खयाल आया— मैं जो कुछ सोचना हू, सही मानता हू उसे करता नही ।

बच्चा हिला राने लगा । पाचू का ध्यान उचटा । बच्चे को उठाकर अपने सोन स लगा लिया— 'इस बचाना चाहिए । इस वक्त इसकी बिना करना ही मरा सबसे बडा काम है ।

पाचू उठ सडा हुआ । रोत हुए बच्चे को कंधे स बिपकाकर आ जा करके चुप कराने लगा । बच्चे का गम स्पश उसक हृदय का कण्ठाद करन लगा । प्रेम न उसक बाह्यांतर का सामाचित कर लिया । मन अपनी अमीम-मा लगने वाली सामाआ क माय शान्तिमय हा गया । इतना गहरा सताप, अहम् रहित चेतना को यह शांति, अंतर क गमन छार स उदय हाकर कुछ पन के लिए उस आत्म विस्मति और आनन्द का सह्र म बहा स गई ।

पाचू इम नवीन अनुभव क प्रति चतन हुआ । अपुव अनुभव था किनना आनन्द था । चेतना उत्पन्न हान ही यह आनन्द सत्य न रहकर उसकी छाया

मात्र रह गया। कुछ भी हो, पाचू का मन इस समय छक गया था। अकाल की सारी पीड़ाओं की बकावट और बिताया का बोझ उतर गया था। वह बहुत निमल, शांत और हल्का अनुभव कर रहा था। बच्चे की पीठ पर हाथ फेरते हुए प्रसन होकर उसने सोचा— 'यह अनुभव मुझे इस बच्चे से मिला है। और मेरा यह अनुभव भी इस बच्चे की ही तरह अकुर-मात्र है। दोना साथ साथ बनें। मैं इस इसी रूप में देखूंगा। मेरा ध्यान बराबर जमा रहगा, फिर कभी गलती न होगी।

बच्चे को कंधे से चिपकाकर पाचू टहलन लगा। एक गुदगुदी-सी अनुभव करते हुए उसने सोचा— 'इसका नाम? नाम क्या रखू इसका? कैसा नाम रखू? इसकी जाति क्या है?'

पाचू ने उसकी माता की तरफ देखा। वह धरती की तरह शांत पड़ी थी। पाचू ने आगे सोचा— इसकी जानि भला क्या हो सकती है? इसकी मा कौन है? अपने को इसकी मा कहनेवाला जीव तो चला गया। आदमी का बेटा है मैं इसे आदमी ही कहूंगा। यह जाति, वण वगैरह से पाक है। यह सब तो है मगर अब इसके पालने की फिक्र करनी चाहिए। कहा ले जाऊ इसे?

रास्ता सूझता नहीं। मन जबुलाया। घर की याद आई, मगला की याद आई। वह इसे पालेगी।

मन में सकोच हुआ— 'जिसे छोड़कर चला आया, उस घर में क्या लौटकर जाऊ? इस खयाल से जो पीड़ा हुई, उसे दूर करने के लिए सतोप आया। खयाल आया— 'मुझे अब यह बड़ा घर मिल गया है। सारी दुनिया मेरा घर है।'

पैगम्बरपन से बचने के लिए फिर हल्का सा पटकवा खामा— यह सब होते हुए भी आदमी के लिए एक घर तो चाहिए ही। और क्या मेरे घरवाले इस दुनिया से अलग हैं? फिर उन्हें क्या छोड़ दू? मगर वहा तो आप ही बुरा हाल है, इस बच्चे की परवरिश क्या होगी। सब लोग सोचेंगे, मगला कहेगी, यह क्या नई बला ले आए?'



पाँचू नहीं चाहता या फिर ठगटे आत्मी को क्या समझा जाए। उन तकलीफ हुई। मगर, फिर माया—“मगला तमा नहीं मोभगी। उनका हृदय बड़ा कामन है। स्त्री का हृदय बड़ा कोमल होता है। उनमें मो की ममता सदा ही उत्पन्न होती है। मगला व अन्य सारे हृदयों में इस जलर छापी से लगा लगी।

मगला की याद आई। उन गुण हुआ। मगला व प्रति फिर नया आवरण जागा। घर सोट चमन को खोला हुआ। वह गाउन लगा— घर में भाग आता मरी कायरता थी। मैं अजन का दर स भाग आया। हा और नहीं तो क्या? मैं अजन स सदन की कोठिनी ही रहा का। गिर तकलीफ ही सहना रहा। अने गिर मागन में शम आनी थी। शम क्या आनी थी? आवर जाने व दर स। मगर वह ता विकूल है। भूख शम की बात नहा, मवका लगनी है। मैं मवकी भूख व लिए मागूंगा। सबकी भूख में मेरी भूख भी तो शामिल है। मरा घर और य आत्मी भी तो शामिल है।’

पाँचू व मन में नई आस्था जागी—‘हा मैं लूंगा। मोनार्द स दयाल स—उन सय लोगों स जिनके पास सबकी भूख व मागन छोकर जमा है।’

दिमाग में गुस्से की हल्की लहर-सी उठी। उसके विरोध में फिर फौरन ही टायल आया—‘उनका अपराध नहीं। सारे अत्याचार नासमशी की वजह स करत है। और यह नासमशी युग स हमारा साम है। क्या मुझमें नहीं है? किसमें नहीं है? कबिन यह नासमशी दूर व स हो? जिन पास विव शक्ति के बल पर मानव-समाज का सत्तावादी बग इस नासमशी का पोषण कर रहा है, क्या उसके आग सिर झुका देना ठीक होगा? क्या यह सत्य के प्रति अत्याय न होगा? जयस्य होगा? इस अत्याय की जड़ उखाड़ फेंकना ही हमारा धर्म है। यही सत्य है।’

अन मनुष्य के खाने के लिए है। अ न की कीमत वसा नहीं मनुष्य की भूख है। व्यक्ति का स्वाथ समाज की भूख को नहीं खा सकता। मनुष्य

क जम सिद्ध अधिकारो का अपहरण नहीं कर सकता।

पाचू अपने म एव नई स्फूर्ति का अनुभव करने लगा। खोया हुआ भविष्य और अकमप्य वतमान जीवन की नई भाशा और विश्वास से शक्तिशील हुआ।

उसने सोचा— हम लडेंगे। हम अ न के हर गोदाम पर बच्चा करेंगे। हम जिएंगे।”

लेकिन इस अत्याचार और बढ़ते घणा उत्पन्न होगी। और न लडने से? क्या घणा उत्पन्न नहीं होगी? आत्मपीडा पहुँचाकर तो शक्ति हागी। सत्ता की बलिवदी पर लाखों नर नारिया का जो यह अमानुषिक एक ओर सत्य की आड लेकर लडेंगी दूसरी ओर स्वाय की। सत्य स्वाय पर विजय पाएगा परंतु घणा साथ रहेगी। विजय लिप्सा प्रतिक्रियावश प्राशविक बनगी। और आदिमयुग के मानव की परम्परा से प्राप्त पशुवृत्ति का अपने अदर से नाश करना ही सच्ची श्राति है। यही नय जीवन का गतिशील करेगा।

बच्चा कुनमुताया। पाचू का ध्यान उधर गया। उसे प्यार से धपधपा कर उसी तेजी से वह सोचने लगा— हमारा बलिदान, हमारी कमप्यना और हमारी श्राति इस बच्चे की दुनिया को इसान के रहने योग्य बनाएगी, जिसमें अमीर गरीब न होंगे, रगभेद न होगा धमभेद न होगा जातीयता और राष्ट्रीयता न होंगी—एक दुनिया होगी, एक मानव समाज होगा।”

एव सुखद कल्पना पूरी हुई। उससे मन आनंद से भर उठा। मगर उसके साथ ही उसने सोचा— लेकिन इस सपने को साकार करना है। विचारो के चौराह पर खडे होकर अकमप्यता का तमाशा देखना फिजूल है। वे आदश और सिद्धांत बूटे हैं जिनपर अमल न हो सके। तब? मुझे क्या करना है?”

पूव नियबय के साथ एक एक विचार उतरने लगा, घर चलना है। इस बच्चे की जान बचानी है। मानव हृदय में जिस स्वाय प्रहित प्रेम और

वतव्य का आभास मुझे इस वक्च द्वारा मिला है, उसे कम म बदलना है—रोटी लेनी है, अपना जीने का अधिकार सुरक्षित करना है। दयाल और मोनाई वग हमारा वह अधिकार जब अपन ताव म नहीं रख सकता। यह वग हमारे ऊपर अत्याचार करता किस बल पर है? हमारे ही कुछ आदमियो को अपनी पूजा और स्वाथ मे हिस्सेदार बनाकर बहका लता है। छेदासिंह, दयाल के पछाही लठत पुलिस फौज के सिपाही यह सब कौन है? हमारे ही आदमी है पीडित मनुष्यता के ही अंग है। य हमस दूर नहीं रह सकते। हमारा समठन, हमारा नतिक बल, हमारी याव की आवाज इह बहुत दिनो तक हमसे दूर नहीं रख सकती। सत्तावादी पूजा-पतियो का वशीकरण मत्र अब अधिक दिनो तक इह अपने जादू म नहीं बाधे रह सकता। जनशक्ति जनशक्ति सत्तावादियो के स्वाथ के बिले तोड देगी। तभी हमारी शक्ति से हमको ही डरानेवाला मानव समाज का यह छोटा-सा वग अपगु होकर चेतगा। पसा ही उसकी सर्वोपरि शक्ति है। जब वह पसे से हम खरीद नहीं सकेगा तो आप सही रास्ते पर आ जाएगा? उसकी धूना का लक्ष्य भी वही होगा जो हमारा है—पूजा और सत्ता!

सवेरा हो चला था। पूरव म लाली छा रही थी। पाचू घर की तरफ बढ़ रहा था। पाचू के वत य का माग स्पष्ट और निश्चित था।

परेश रात ही मे मर चुका था। मुह अधियारे उठकर पावती मा पाचू को पुकारने के लिए सीढी तक गइ। दरवाजे के पास कोई सिर पुकाए बैठा था। अधेरा था, कुछ साफ न सूझा। पूछा— 'कौन ?'

'मैं।'

मगला की आवाज इतनी गभीर कभी नहीं सुनी। पावती मा सन रह गइ—'छोटी बहू तुम ! पाचू कहा है ?'

छोटी नहू के यहां बठ रहने का और मतलब ही क्या हो सकता है ? पावती मा झपटकर आग आइ। मगला उठकर खडी हो गई। बडी बडी

आखें ज्वरस्तो खुश्व रहना चाहती थी। मगला की चिन्ता म गहरा मान समाया था—“मुधस बिना बहे चले गए ?”

रात बड़ी दर बाद भी जब पानू ऊपर नहीं आया तब मगला को मदह हुआ। तब तब मगला अपनी 'बकुल फूल के बारे म ही सोचनी रही थी, उसक दिल म दम बकन क्या बीन रही होगी ? ज्यादा मोशाइ सदा के ऐसे ही ह। बड़ी बहू विचारो मे जाने ऐसे कौन मे पाप किए ह ? जनम की दुखियारी रहा है विचारी। भगवान भना एम किसीकी लाज लेना है ? मे तो फिर जीती न उठती।

दाती जकड गई, रागटे खड़े हो गए, सार शरीर म कपकपो सी दीड गई, मगला की आखें भर आई। ध्यान सुरत ही पाचू की तरफ दीडा, अभी तक नहीं आए ?

मगला का दिन घक् मे हो उठा। वह फिर बठी न रह सकी। उतर-वर नीचे आई। मा की कोठरी बंद थी। बाबा अपनी काठरी म पड थे। कही नहीं। दरवाजा दखा, खुला था। मगला के पैरा तले धरती निकल गई। फिर सोचा, भाई के पीछे गए हागे। मगर ज्यादा मोशाइ इस बकत आपे म पाड ही हैं। लाख बेहया हो, मगर कोई भी समझदार आदमी एसा काम हरगिज नहीं करेगा। वह जरूर पागल हो गए हैं। इनके बस के नहीं हैं। कही कुछ उलटा-सीधा न हो जाए।

मगला दरवाजे क पास पाचू के लौट आने की आस म बंठी रही। ज्या ज्यों रात बीतता जाती, अपने आसुओं को रोक्न के लिए वह पत्यर होती चली जाती। वह मान किए बठी रही— मुधस बिना बहे गए बयो ? जम बड़ी देर हो गई तो उसके मन म अनायास शका जाग उठी— 'ज्याठा माशाई के पीछे नहीं गए। वे चले गए हैं—सदा के लिए घर छोडकर चले गए हैं। अब नहीं आएगे। उनको बडा सदमा पहुंचा है। पर मुधस बहकर क्या नहीं गए ? साथ नहीं रखना चाहत थे न मनी ! मुधसे बतानर तो जान।'

पावती मा के पूछने पर मगला ज्वर न कर सकी। साथ न चाहने

पर भी उसका का गला भर आया, आँखें छलछला उठी। वह बाला—  
ज्याठा मोशाई क जान क बाद ही कही

इसस अधिक वह न बोल सकी। मुनकर मा चुपचाप घड़ी रहो।  
व पत्थर हा गई थी। एक बार राह पानर मगला क आगू फिर न सक।

सहसा बाहर की कुड़ी सटकी। पावती मा दरवाजे की आर दग्न  
लगी। मगला ने बड़ी आशा के साथ झपटकर दरवाजे की कुड़ी खोन दी।  
मगला और मा सहमकर पीछ हट गईं। शिवू न नूरद्दीन के साथ घर म  
प्रवेश किया।

मगला दरवाजे के पीछे हो रही थी। मा स शिवू की आँखें मिली।  
मा न फौरन ही मुह फेर लिया। भारी आवाज म शिवू नूरद्दीन स  
बोला— 'चले आओ भीतर।' कहकर शिवू अदर की ओर बग्न।  
नूरद्दीन पीछे पीछे चला।

पावती मा ने उन्हें अदर जात हुए देखा। मगला दरवाजे क पास ही  
सहमी हुई खड़ी थी।

शिवू ने दालान म प्रवेश किया। मा की कोठरी सामन थी। बड़ी  
वह बुन की तरह बठी थी। परेश की लाश पास ही पडी थी। दीनू और  
तुलसी पास ही सेटे हुए थे।

शिवू सीधा कोठरी म पहुचा। तुलसी सहमकर उठ बठी। बड़ी बहू न  
आख ऊपर की ओर उठाइ। वह शिवू को देखने लगी। वह भावना और  
विचार शू य हो चुकी थी। शिवू को देखकर वह न तो चौकी न सहमी—  
वस देखती हो रही। शिवू न शकिन भर कडककर हुक्म दिया— 'उठ।'

बड़ी बहू चुपचाप बठी ही रही। उसकी निगाह बराबर शिवू पर ही  
जमी रही।

मा अदर आ गई थी। शिवू से तेज आवाज म बोला— क्या जाया  
है यहा ?

शिवू न मा को कोई जवाब न दिया, उनकी तरफ देखा भी नहीं।  
तजी स बड़ी बहू का हाथ पकडकर घसीटा और झपटकर बोला— 'उठ।'

घसीट जाने के कारण बड़ी बड़ औंधी होकर जमीन पर गिर पड़ी।

मा ने आगे बढ़कर बहू का हाथ छुड़ाने की चपटा करत हुए शिवू ने कहा—“छोड़ द उसे। जा मेरे घर से चना जा।”

अपने दोनों हाथों से पावती मा शिवू को पीछे ढकेलने लगी। शिवू ने जोर से मा का धक्का देते हुए कहा—“चल हट।”

मा गिरने लगी। दीनू नीचे ही पड़ा था। चीख मारकर तुलसी झपटी और मा को दोनों हाथों से पकड़ लिया। दीनू ताबच गया मगर तुलसी न सभल सकी। मा को लिए दिए ही घरती पर गिर पड़ी।

मा घबरा गई थी। वह जल्दी उठ भी न सका। बड़ी बहू परतार की तरह बठी रहो। तुलसी नीचे ही दबो हुई थी, उठने की काशिश कर रही थी। शिवू भी एक सेकड़ के लिए सहम गया था। नूरुद्दीन कोठरी के दरवाजे पर आ गया था। उसे देखकर शिवू हास म आया। बड़ी बहू का हाथ झटककर बोला—‘उठनी है कि नहीं।’

बड़ी बहू ने एक बार बच्चों की तरफ देखा, मुह फेर लिया और चुपचाप उठ खड़ी हुई।

मा चारों तरफ से घिर गई थी। उनको समझ म कुछ भी नहीं था रहा था।

शिवू जल्दी से बनी बहू को घसीटता हुआ कोठरी के बाहर ले आया। लाओ चावल लाओ।’ बड़ी बहू को नूरु की ओर ढकेलत हुए उमने कहा।

मा से इसका आशय छिपा न रना। नूरुद्दीन को देखकर मा के मन म जा आशका उत्पन्न हुई थी, वह टोक निकली। नूरुद्दीन ने शिवू के चावल मागत ही मां का बू से बाहर होकर तदप उठी। तुलसी अभी भी उर्हें पकड़े हुए खड़ी थी। तुलसी के हाथ से स्टकर मा आगे आद। वह हिंसक रूप से मुड़ हो उठी थी। उन्होंने उछलकर दोनों हाथों म शिवू का मुला पकर लिया—‘मैं तुझे मार जाऊगी। मैं तुझे जीता न छोड़ूगी।’

पीछे से वार हुआ था। शिवू का गला घुट रहा था। नूरुद्दीन न आगे

बढ़कर शिबू का पावती मा के हाथों से मुक्त किया। शिबू हाफ़्त हुए पुन शक्ति सचय कर मा की ओर झपटते हुए बोला—“साली, मुझ मारना चाहती थी। है !”

नूरुद्दीन ने फौरन ही शिबू को पकड़ लिया—‘ ये क्या बचपना करत हो बड़े ठाकुर ! अरे चावल लो, घाओ पियो, मोज करो। ये भी अपने घरमशाले जाएगी, घाएगी, पिएगी, मोज करेंगी। गहना है कपडा है ’

“नहीं !” पावती मा ने झपटकर दोनों हाथों से तुलसी और बड़ी बहू को दबोच लिया— तेरे घर म बहू बेटिया नहीं हैं ! जा, उन्हें घरमशाले में ले जा। जा, चला जा। निकल !”

पावती मा इतने जोर से चीखी कि उनकी आवाज़ उखड़ने लगी। शिबू ने बड़ी बहू को अपनी तरफ धसीटकर कहा—“य मरी वस्तू है। मैं इसे बेचूंगा !”

‘ नहीं ! नहीं ! हट ! ’ मा हाफ़ हाफ़कर धीरे धीरे अपना विरोध जाहिर कर गफलत में डूब रही थी। वह गिरने लगी। तुलसी के कंधे पर उनका एक हाथ था। अपनी शक्ति को एकत्रित करने के लिए वह जूझ रही थी। तुलसी के कंधे पर दबाव पड़ा और वह भी मा के साथ लडखडा कर बठ रही।

शिबू की आंखें लाल हो रही थी। वह तेज होकर बोला— मैं इसे बेचूंगा। मुझे भूख लगी है भूख ! सा, चावल ला !”

बड़ी बहू पत्थर की तरह चुपचाप खड़ी थी। तुलसी मा के हाथों को अपने कंधे पर अनुभव करते हुए उसके भार को महसूस कर रही थी। उसका चेहरा तमतमा उठा था। वह अदर ही अदर अपन स लड रही थी।

नूरुद्दीन ने गठरी खोली। शिबू चावल देखकर हिंसक आह्लाद के साथ उस आर झपटा। तुलसी ने भी चावल को बड़ी भूखी दृष्टि से देखा।

मा अभी भी अपने काबू में आई थी। सास बड़ जोर से चल रही थी।

नूरुद्दीन ने दो मुट्टी चावल निकालकर धरती पर रख दिए और

पोटली बाधने लगा। शिवू ने चौंकर देखा—“बस ?”  
 ‘और क्या करू, क्या खजाना भर दू। हडिडया का टाचा तो घडा

है। हा, इसके लिए आध सेर तक दिया जा सकता है।’ नूरुद्दीन ने तुलसी की तरफ देखकर कहा।

तुलसी ने उत्साहित होकर उठना चाहा। मा ने उसे दोनों हाथों से दबोच लिया और भिखारी की तरह दयनीय दृष्टि से शिवू को देखकर कहने लगी—“बेटा, मेरी जान न ले। मेरी धारू न ले बेटा। मैं तेरे पाव पडती हूँ।”

पावती मा कहती जाती और तुलसी को दबोचती जाती। आसुओ का वेग प्रबल हो रहा था।

शिवू का ध्यान इस ओर न था। बड़ी बहू के लिए इतने कम चावल मिल सके इसी बात पर अपने सारे गुस्से का भार रखकर वह बड़ी बहू की ओर शपटा—‘साली तेरे दाम कम लगे।’

पास आने के पहले ही सूखी हडिडया की शक्ति का भरपूर तमाचा शिवू के मुह पर पडा। बड़ी बहू के हाथ से तमाचा खाकर शिवू चौंक उठा, क्रोध आया। नूरुद्दीन फौरन ही आग बढकर बड़ी बहू के आगे आते हुए, शिवू के दोनों हाथ पकडते हुए जोर देकर बोला—‘अब ये मेरी हो चुकी है, बड़े ठाकुर।’

मजबूत हाथों से पकडकर शिवू का गुस्सा सहम गया। बड़ी बहू का हाथ पकडकर नूरुद्दीन चला। मूक पशु की भांति बड़ी बहू एक मालिक से दूसरे के हाथों में चली गई।

बस रात की घटना के बाद से बड़ी बहू एक शब्द भी नहीं बोली थी। परेश मर गया। बड़ी बहू ने एक नजर से उसे देखकर मुह फेर लिया था। सारी रात घुटना को हाथा स बाधे सिबुडकर वह बठी रही थी। पटी आधा से किसी एक तरफ देखते हुए वह बकन गुजार रही थी। उसका ध्यान किसी ओर भी नहीं था। लाज छोकर वह भावगूँय हो गई थी। उसके बेतन मन में केवल घूणा के सस्वार शेष थे, उसके चित्त की



गारी मृत्तियों उगीम भय हा गद भी । यनी यद विर गई । उगा मन म धरमनाम का दरा भा भयत था । विवाह क वा म मात्र तर निवृ क प्रति उगे भगा मा म पूजा को ही पाता । निवृ ने अपनी पनी को मना दागी बी गद हा माग दिया था । जूत का घूम ज्या बार बार शारा जानी है और फिर निपट जाती है—यनी यद क ताण पनि क चरणा क गिवा दूगरी गति ही गही थी । निवृ के अत्याचारी का गिनवाह यनी यद का भगना परवगता क प्रति दित रात पूजा उत्पन कराना रहता । निवृ का भय उगवर हरम छाया रहता था । दो मुट्टी चायना क यना म विर जाने क वा म द पूण रूप स भय मुक्त हा गई थी । निवृ का समाना मारने का साहस इसीकी प्रतिनिधता थी । धमपत्नी सधमिणी, अडांगिनी आदि विशेषणा की अधिकारिणी यमपुराण पूजिता नारी व्यवहार म पुरुष की तुच्छ स तुच्छ दासी बनकर, अपने स्वामी द्वारा प्रतिदिन हानेवाल अत्याचारा की आग्नी हो गई थी । अत्याचारा के प्रति नारी का भय अपनी समस्त क्रिया प्रतिक्रिया की कची आचा का सह चुहन क वा म निस्तज हो चुका था । एक प्रकार का जीवन वितान वितान नारी जीवन का रस खा चुकी थी । फिर दासता क रूप म ही सही, लबिन नारी क जीवन म नया परिवतन आ रहा था, फिर प्रगति हो रही थी । एक क्षण के लिए ही सही, किंतु दासता की घोर अगति म परिवतन द्वारा गति का आभास पाकर नारी ने नया बल पाया था । स्वामी (पुरुष) के रूप म भय और पूजा को तमाचा मारकर नारी ने विद्रोह क्रिया विद्रोह की भावना का जाश फिर नई अगति की ओर बना ।

नरुहीन और बड़ी बहू दालान पार कर दरवाजे की ओर बढ रहे थ । अपनी बेबसी म जकडी हुई पावती मा तुलसी को अपनी बाहा म पूरा बल लगाकर कसती जा रही थी ।

चलते हुए नरुहीन ने इशारे स तुलसी को अपनी तरफ बुलाया । उसके इस नामरण म एक विचित्र मादकता थी, लालच था ।

बादी का दादा को तमाचा मारना, उनका नरुहीन के साथ आगे

बढना और नूरुद्दीन का इशारा तुलसी को खुले विद्रोह के लिए प्रेरित कर रहा था। तुलसी मा के शरीर स चिपककर दबी जा रही थी। रो रोकर पावती मा गुदा कर रही थी— अरे भरी आवरु गई। हाय। सुनत हो। तुम्हारे बटे ने मेरी आवरु ले ली।’

“मैं भी जाऊगी।’ सहसा तुलसी चीख उठी और पूरी ताकत लगाकर मा की बाहा के बधन को तोडकर, उह धक्का देते हुए तुलसी नूरुद्दीन की तरफ धाई।

पावती मा का रुतन सहसा स्तम्भित हो गया। वह आँखें फाडकर तुलसी को देखने लगी। तुलसी के पास जाने के लिए पावती मा के प्राण शरीर का मोह त्यागकर निकल आए।

शिवू चावलो के पास बठा हुआ, पहली मुट्टी फाकने जा रहा था वह चौककर तुलसी को देखने लगा।

नूरुद्दीन बडी बहू का हाथ पकडकर खडा हो गया। तुलसी के लिए उसने मुक्कराकर दूसरा हाथ बडा दिया।

शिवू बच्चे चावन चवाना छोडकर सहसा उठकर लपका। नूरुद्दीन अपने बचाव के लिए सावधान हा गया। शिवू ने पास आकर गिडगिडान हुए कहा— नूरुद्दीन इसके चावल ?”

नूरु अकडा—‘किसके चावल जी ?”

उगती के इशारे स तुलसी वा बनाकर गिडगिडाते हुए शिवू चावल मागने लगा।

नूरुद्दीन दोना औरता के साथ दरवाजे की तरफ बन्ते हुए वाला— ‘अब कैसे चावन ? ये ता अपनी खुशी से जा रही है।”

तुलसी खुशी से जा रही थी। उसने सुन रखा था कि घरमशाले भ सिफ जवान औरतें हा भरती की जाती हैं। वना उह छान को मिलता है पहरने को मिलता है बडा सुख मिनता है। तुलसी भी लाना चाहती है, कपडा चाहती है और वह सुस खाती है, जा उमे अभी तक नहीं मिला, जिसकी बहू बरमो स कल्पना करती आई है।

नूदहीन उस आगे बढ़ाकर से बना ।

शिवू रोता हुआ बच्चा की तरह मचना — मरा चावल दा !

घना घना जरा रकबर नूदहीन ने एक बार गिर स पर तब शिवू को देखा और रग पडा । बाना—'अरे य टापणित्त शिवाता किम है ? गास जा एक पूर मार दूगा तो बटा, बने पर ग बट जाएगा । घन बट पर म । उल्लू की दुम वहीं का ।

मगला अपन बमरे की साक्षिया पर छिरी हुई खडी थी । नूदहीन के दलहीन म आत ही उगन जल्दी म अपने बमरे म जाकर भीतर से बिबाड बढ कर लिए ।

मगला छिडकी से बाहर देखने लगी । घरमशाले वाला 'बकुत पुन' और दीदी मनि का लिए हुए चला जा रहा था ।

मगला जिदगी के सूनेपन म छोई हुई खडी रही ।

नूदहीन खुलसी और बडी बहू को लेकर चला गया । नूदहीन की डाट गाकर, अपनी असहायावस्था पर शिवू को बडी लिसियाहट छूटी । उसवे हाठ बापने लगे, आखें बरस पडी । शिवू रोता जाता और बीच-बीच म चावल की फकी भी लगाता जाता था । मा की तरफ देखा बहू जमीन पर झुकी हुई पडी थी । शिवू रोता हुआ मा के पास आया । मा का सिर उठाकर देखा, मुह खुला हुआ था, आखें पटी की फटी रह गई थी । बचपन से शिवू का यही एक सहारा था । जब उस दुनिया की गाद म जगहन मिलती तब मा के पास आता । इस आश्रय के प्रति उसका विश्वास इतना गहरा था कि ऊपरी तौर पर बहू उसकी परवाह करना छोड चुका था । मा को मरी हुई देखकर बहू घबरा गया । उसकी आखें उमड पडी । बहू अपनी मा की लाश स चिमट गया । सहसा मा की लाश को जमीन पर लिटाकर उमने मा का मुना हुआ मुह देखा । फिर अपनी आखें पाछी और लपकर सारा चावल मुटठी म उठा लिया । मा के खुले हुए मुह म चावल डालकर, शिवू अपनी रूठी हुई मा को मना लेना चाहता था । फिर मल्लु की चेतना हुई । शिवू का हाव रुक गया । खोए हुए बच्चे की तरह बहू

चारों ओर जाँचें फाड़ फाड़कर देखने लगा। कोठरी में दीनू पड़ा था, परेश पड़ा था। पिता का प्रेम आसुआ के साथ उमड़ रहा था। शिवू उठकर गया। देखा, परेश मर चुका था, दीनू के दिल की घड़कन धीमी धीमी चल रही थी, वह कुछ ही क्षणा का मेहमान था। शिवू कुछ देर तक आसुआ मरी आँसुओं से उसकी तरफ देखता रहा। अचानक उसने बच्चे के अघपुले होठों में थोड़े से चावल डाल दिए और उठ खड़ा हुआ। वह बाबा की कोठरी के सामने आया। बाबा कोठरी के दरवाजे का सहारा लिए खड़े थे। शिवू चुपचाप उनकी तरफ देखता रहा। सहसा उसकी मुटठी पुली। थोड़े से चावल बच रहे थे। हथेली झुकाकर, बाबा की कोठरी के सामने चावल गिराने लगा—उसकी नज़रें बाबा के चेहरे पर ही रहीं। देखने-देखते वह चीख मारकर रोता हुआ घर से भागा।

छिड़की से मगला ने देखा, ज्यादा मोशाइ चौंकर बड़ी तेज़ी के साथ भागते चले जा रहे थे।

मगला की आँखें भर आईं। शिवू उसके पति का भाई था। शिवू की आँखें मगला को अपने पति के चले जाने पर रोना आ रहा था।

मगला अपने विश्वास को तोड़ना नहीं चाहती थी। वह रोकर अपना अमंगल नहीं करना चाहती थी। उसके मन में कोई जोर दकर कह रहा था—“वह आएगा। मुझे छोड़कर वह कैसे रह सकने हैं।

आँखें पोंछकर मगला नीचे उतरती।

बाबा अपने दोनों हाथ फलाए दालान में कुछ टटोलते हुए आगे बढ़ रहे थे।

मगला ने आगे बढ़कर बाबा का हाथ पकड़ लिया।

बाबा शिंशरे। म्थी का हाथ पहचाना—‘छोटी बहू!’

ब्याहकर आई तब से आज तक कभी बाबा से बात नहीं की थी, मगला ने कबल छोटी सी हूँ कहनी।

बठार समय करत हुए भी बाबा का गना भर आया। गदगद होकर बोले—‘मा मगला! जब तू है तो जगत् का कल्याण अवश्य होगा।’

मगला चुपचाप धांगू बहाती रही। मगला क सिर पर हाथ फरत हुए बाबा बोल—“पाग का कोई अमगल नहीं होगा बगी। वह एक दिन अवश्य आएगा। अवश्य आएगा। इसी विश्वास के बल पर ही मर प्राण मुक्ति पा रहे हैं।”

मगला ने फौरन ही गल म आचन डालकर बाबा क चरण छल। उसने आंगू उनके चरणों पर टपक रह थे। बाबा रुध हुए कठ स बोल—“पगली न हो मां। चल उठ तो, मुझ अपनी मा क पास स चन।

मगला बाबा को सहारा देकर पावती मा की लाश के पान स गई। मगला का हृदय फटा जा रहा था। बाबा बठ गए। पावती मां क सिर पर हाथ फरत हुए बाबा ध्यानमग्न हो गए। अधी आधे छनछला उठा। आवेश म आ रुधे हुए कठ से बाबा ने पाठ करना आरंभ किया

का तव कान्ता कस्त पुत्र गसारो यमतीव विचित्र ।

कस्य त्व वा कुत आयातस्तव चितय तस्मि भात ॥

भज गोविन्द, भज गोपाल, गाविन्द ! गोपाल ! ! गोपाल ! ! !

बाबा पाठ कर रहे थे, मगला का हृदय फटा जा रहा था। बाबा जब पाठ करते थे, मगला और उसकी बकुल पून मुम्बराया करती थी और पावती मा को चिढ़कर, झुगलाकर अत म बाबा की कोठरी म जाना ही पडता था। बाबा का वह स पास आज सत्य को चरिताय कर रहा था। स्वर उखडने लगा, प्रमश क्षीण होने लगा और अत म हाठा का कपन भी रक गया। मृत्यु को देखने देखने मगला यद्यपि कठोर हो गई थी, फिर भी उसे इस समय भय लग रहा था। ससार म वह अकेली रह जाएगी। बाबा की आविरी सास तक घर म एक स दो का सहारा है। मगला एक टक लगाए बाबा के शरीर म प्राणा की धुबधुकी को देख रही थी। सासों जल्दी जल्दी चल रही थी—वेग प्रमश शिथिल पडने लगा—सासों टूट-टूटकर चलने लगी। हर सास की गति के बाद इति का भ्रम होन लगा—और फिर अत भी आ गया।

मगला अकेली रह गई। घर म चार सासों पडी थी। घर खाली था।

हर तरफ उमकी नज़र जाती—ईंट इंट मुर्दा मालूम पड़ रही थी। इस घर का विगत जीवन इस समय उसके ध्यान में नहीं था, भविष्य की वह देखना चाहती थी और वहीं वह निरुपाम थी, निस्सहाय थी। जी घुटकर रह जाता था।

जीवन के लिए मगला को कहीं से भी प्रेरणा नहीं मिल रही थी, फिर भी वह मरना नहीं चाहती थी। एक बार 'उनकी' देखे बिना उसे मरकर भी चैन नहीं आएगा। मन घबगना भी था। जब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, क्या आएंगे? परंतु मन अपनी एकमात्र आशा और विश्वास के साथ जीवित रहना चाहता था—जब भी आए, वह आएंगे। विकलता अति तीव्र गति से अपनी चरम सीमा पर पहुँचकर सासा से टकराने लगी। जीवन की इच्छा कठोर होकर अपनी रक्षा करने लगी। स्मृति में केवल 'उनकी' प्रतीक्षा का सस्कार-मात्र शेष था। मगला विचारशून्य, भावशून्य थी। मगला स्तब्ध थी

उसका शरीर हिला। चेतना ऊपर उठने लगी। अंतर के स्तर में उनका अति प्रिय स्वर गूँज उठा, क्रमशः सुनाई पड़ने लगा। अंदर ही अंदर मगला को भ्रम की चेतना हुई और उससे विकलता जागी। स्वर अधिक स्पष्ट हुआ।

मगला ! मगला ! !”

आखें यद्यपि खुली थीं किंतु पथरा-सी गई थीं। देवने का अतहठ तीव्र सतीव्रतम हुआ। आवृत्ति घुघली में स्पष्ट हुई। मगला ने देखा—ब्रह्म सामने खड़े थे, उनकी गोद में बच्चा था जो रो रहा था। पति को देखते ही सतोष के अतिरंज से मगला की आखा में आसूँ छलछला आण। अवरुद्ध कंठ से स्वर लड़खड़ाकर पृटा—'आ गए !'

पाखू ने देखा, मगला फिर झकीला खा रही है। पाखू को कुछ न सूझा। उसने जल्दी से मगला की गोद में बच्चे को डाल दिया और उसे पकड़कर बैठ गया।

मगला अपने से लड़कर सावधान हुई। उमन गोद फाँककर बच्चे को

ठीक तरह से मभाला, फिर उसे गौर से देखा। पाचू कहने लगा—“इसे बचाना होगा, मगला ! इसे बचाने के लिए ही मैं तुम्हारे पास लाया हूँ।”

मगला ने बच्चे को गोद में चिपका लिया। बच्चे के सम्बन्ध में कोई प्रश्न पूछन के पहले उसके मन में पाचू को घर की बात बतान की इच्छा हो रही थी। आखों में आसू भरकर मगला ने बाबा और माँ की लाशों की तरफ देखा।

पाचू ने पहले ही सब कुछ देन लिया था। घर में प्रवेश करते ही पहली नज़र डालने के साथ ही साथ उसे अपने को मजबूत बनाना पडा था। मगला बठी थी। उसने मगला को आवाज़ दी। मगला न बोली। वह पास आया दो आवाज़ें दी। मगला की आँखें खुली हुई थी। पाचू को विश्वास हुआ, वह जीवित है, नाव के पास हाथ से जाकर सास को महसूस किया। उसे आश्चर्य हुआ मगला उसे देख क्या नहीं पाती, उसकी आवाज़ क्या नहीं सुन पाती ? उसने मगला को हिलाना शुरू किया, कई आवाज़ें दी। जब मगला को होश आया, तब उसने पाचू को देखा उसकी आँखों में आसू आए और वह बोली। पाचू ने तब सताप की एक गहरी सास ली थी। बच्चे को उसकी गोद में डाल देने के बाद जब मगला ने अपने को सभालकर बच्चे को सभाल लिया तब उसे विश्वास के साथ साथ प्रसन्नता भी हुई। फिर जब वह बाबा और माँ की लाशों को देखने लगी तो पाचू धबकाया—दुःख का दौरा कहीं जीती बाज़ी फिर न हरा दे ! उसने मगला के दिल से मृत्यु का बोझ हटाना चाहा। बड़े धय के साथ उसने कहा—‘जो होना था, वह हो गया। अब इसे सभालो। इसे बचाओ ! इसे बचाने के लिए ही हम-तुम जिएंगे।’

अविश्वास के वातावरण में जीवन के प्रति विश्वास की इस दृढ़ता ने पति और पत्नी, दोना को ही, अपूर्व धय और बल दिया। स्वयं पाचू को भी अपनी इस बात द्वारा अपने अदर की अदमनीय, चिर विजयी विकासमयी शक्ति का परिचय मिला। प्रलय में सृष्टि के बीजाकुर फूटने लगे।

पाचू बोला—“मैं सब प्रबध करने जाता हूँ। बच्चे की जीवन रथा और जीवन का मृत्यु के प्रति ऋण भी उतारना है।” उसने सशक्ति स्वर में पूछा—“तुम घबराओगी तो नहीं?”

पति को आश्वामन देने हुए मंगला ने गदन हिनाइ, कहा—“अब नहीं।” फिर ममता भरी दृष्टि से वह अपनी गाद में सोन हुए बच्चे को देखने लगी।

□□□